# एकीकृत ग्रामीण विकास योजना
# (देवली तहसील का अध्ययन)
# Integrated Rural Development Planning
# (A Case Study of Deoli Tehsil)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
की पीएच.डी. (भूगोल) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध


सामाजिक विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी

निकिता मंगल

पर्यवेक्षक

डॉ. सन्दीप यादव

सहआचार्य

भूगोल विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बून्दी

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा


2018

# *C E R T I F I C A T E*

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled " **Integrated Rural Development Planning – A Case Study of Deoli Tehsil** by **Nikita Mangal** under my guidance. She has completed the following requirements as per Ph.D regulations of the University.

(a) Course work as per the university rules.

(b) Residential requirements of the university (200 days)

(c) Regularly submitted annual progress report.

(d) Presented his work in the departmental committee.

(e) Published/accepted minimum of one research paper in a referred research journal,

I recommend the submission of thesis.

Supervisor

Date:

Dr.Sandeep Yadav
Associate Professor in Geography.

# शोधसार

एकीकृत ग्रामीण विकास की संकल्पना से तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष के समग्र विकास को ध्यान में रखकर सामाजिक, आर्थिक सेवाओं को किसी सुविधाजनक स्थल पर स्थापित करने से है जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना तथा दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में उसे अभीष्टतम जीवन स्तर हेतु विविध सेवाऐं एवं सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य देवली तहसील के ग्रामीण विकास की विस्तृत योजना तैयार करना है। इसके लिए कई बिन्दुओं पर विचार किया गया है जैसे– देवली तहसील के ग्रामीण विकास में भौगोलिक तत्त्वों की भूमिका का अध्ययन, क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का वहां के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों की पूर्ति का परीक्षण, संसाधनों के संदर्भ में तहसील का क्रमबद्ध स्तरीकरण, कृषि आधारित उद्योगों के विशेष संदर्भ में उपलब्ध आर्थिक अवसरों की क्षमता ज्ञात करना आदि।

शोधकार्य का विश्लेषण मुख्यतः चार अध्यायों में किया गया है।

तृतीय अध्याय में 15 कार्यो को आधार लेते हुए उनकी उपलब्धता व अनुपलब्धता को अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में इंगित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में बताया गया है कि किस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न अधिवास भिन्न–भिन्न कार्यों के द्वारा एक–दूसरे से अन्तर्संबंधित है। इसमें सड़क यातायात की अभिगम्यता को भी प्रदर्शित किया गया है।

पंचम अध्याय में अधिवासों को उनके आकार तथा उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों तथा उपलब्ध सेवाओं के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है।

षष्ठम अध्याय में विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिये जनसंख्या का न्यूनतम स्तर निर्धारित किया गया है ताकि अध्ययन क्षेत्र में कार्यात्मक रूप से कमजोर अन्तर्सम्बंधित क्षेत्रों की पहचान की जा सके। इसके अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों द्वारा निकटवर्ती अधिवासों के लिए किए जाने वाले कार्यों की सीमा को भी अंकित किया गया है ताकि अध्ययन क्षेत्र में कार्यात्मक रिक्तता एवं कार्यात्मक अतिव्यापन के क्षेत्रों की पहचान की जा सके।

तत्पश्चात प्राप्त परिणामों के आधार पर अध्ययन के भावी विकास के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गये हैं।

# Candidate's Declaration

I, hereby, certify that the work, which is being presented in the thesis, entitled **Integrated Rural Development Planning – A Case Study of Deoli Tehsil** in partial fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor of Philosophy, carried under the supervision of Dr. Sandeep Yadav and submitted to the (University Department of Social Sciences) University of Kota, Kota represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included. I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any Institutions. I also declare that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

(Nikita Mangal)

Date:

This is to certify that the above statement made by Nikita Mangal (Enrolment No 2011/000125, Registration No. RS/574/10) is correct to the best of my knowledge.

Date:

(Research Supervisor (s))
(University Department of Social Sciences)

# आभार

मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ कि उन सभी व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त करूँ, जिनके निरन्तर सहयोग, उत्साहवर्धन तथा सहायता से यह शोध कार्य पूर्ण हो सका है।

प्रस्तुत शोधकार्य के प्रेरक आदरणीय डॉ. सन्दीप यादव, सहआचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बून्दी के प्रति लेखिका अत्यन्त श्रद्धानवत है, जिन्होंने शोधकाल में सदैव उत्सावर्धन किया, साथ ही उचित मार्गदर्शक के रूप में पाण्डुलिपि को नियोजित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। भूगोल विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बून्दी के विभागाध्यक्ष श्रद्धेय डॉ. एन.के.जेतवाल के प्रति लेखिका विशेष हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने सदैव हर सम्भव सहयोग एवं सुझाव दिया।

लेखिका विशेष आभार व्यक्त करती है भूगोल विभाग, बून्दी के सभी व्याख्याताओं व कर्मचारियों का जिनकी सतत् प्रेरणा व मार्गदर्शन से शोध का कार्य सम्पूर्णतः सम्पन्न हुआ।

लेखिका अपनी पूज्यनीय माता श्रीमती लक्ष्मी मंगल, पिता श्रीमान् शंकरलाल मंगल, नानीसास श्रीमती वसीम फातिमा, सास स्वर्गीय श्रीमती मुमताज़ रेहाना, श्वसुर श्रीमान् ईकराम उल्लाह खान की चिरऋणी है जिनके वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद से यह शोधकार्य पूरा हुआ है। लेखिका अपनी ननद जुबिया खानम्, ननदोई अंजुम ताहिर सम्मा, देवर जोहेब खान का विशेष आभार व्यक्त करती है जिनके सहयोग व प्रेरणा से शोध प्रबन्ध को पूरा करने में निरन्तर बल मिलता रहा है।

लेखिका अपने पति डॉ. जुबेर खान, अनुज रोहित मंगल का विशेष आभार व्यक्त करती है जिन्होंने शोधकार्य को पूरा करने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

अंत में उन सभी राजकीय अधिकारियों, कर्मचारियों के प्रति लेखिका हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिनके सहयोग से आवश्यक आंकड़े, मानचित्र तथा अन्य समयोचित जानकारियाँ प्राप्त होती रही हैं। मैं मानचित्रकार श्री शिवप्रकाश पांचाल को शोध प्रबन्ध के मानचित्रों को मूर्त रूप देने के लिए तथा श्री अशोक सुमन को टंकण कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित करना भी अपना कर्त्तव्य समझती हूँ।

निकिता मंगल

# अनुक्रमणिका


- प्रमाण–पत्र i
- शोधसार ii
- शोधार्थी घोषणा iii
- आभार iv
- विषय सूची v-vii
- मानचित्र सूची viii-ix
- तालिका सूची x-xii
- आरेख सूची xiii

**पृष्ठ सं.**

**अध्याय प्रथम – परिचय** 1-15

परिचय, एकीकृत ग्रामीण विकास योजना के उद्देश्य, कार्यात्मक योजना, भूगोल और एकीकृत ग्रामीण विकास, अध्ययन क्षेत्र का चयन, शोधकार्य के प्रमुख उद्देश्य, अध्ययन क्षेत्र में विकास योजना की आवश्यकता, क्षेत्र परिचय, पूर्ववर्ती शोध साहित्य, विधितंत्र, अध्ययन की रूपरेखा।

**अध्याय द्वितीय – अध्ययन क्षेत्र का सामान्य परिचय** 16-33

धरातलीय स्वरूप, भूगर्भिक रचना, अपवाह तंत्र, जलवायु, वनस्पति, मृदा, खनिज संसाधन, कृषि, सिंचाई, भूमि उपयोग, पशुधन, जनसंख्या, सहकारिता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, संचार।

**अध्याय तृतीय – कार्यों का स्थानिक वितरण** 34-67

केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना, अधिवासों का आकार व केन्द्रीयता, केन्द्रीय कार्यों का अन्तराल, शैक्षिक सुविधाएँ, स्वास्थ्य सुविधाएँ, संचार सुविधाएँ, पशु चिकित्सा सेवाएँ, आवश्यक सेवाएँ, बैंकिंग, सहकारिता, उर्वरक एवं कीटनाशक, मनोरंजन, परिवहन, व्यापार, प्रशासन, अधिवासों में सेवा कार्यों का एकत्रीकरण।

**अध्याय चतुर्थ – कार्यात्मक सम्बद्धता** 68-83

कार्यात्मक सम्बद्धता, अभिगम्यता, यातायात प्रवाह, बैंकिंग, उर्वरक एवं

कीटनाशक, सहकारी समितियाँ, पशु चिकित्सा, ईंधन आपूर्ति, साप्ताहिक बाजार, पेयजल आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, घरेलू उद्योग, वृद्धि केन्द्र और क्षेत्रीय विकास।

84-105

**अध्याय पंचम – कार्यात्मक पदानुक्रम**

सेवा केन्द्रों का अभिज्ञान, सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम, सेवाओं का पदानुक्रम, केन्द्रीयता का निर्धारण, अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीयता का निर्धारण, कार्यात्मक केन्द्रीयता और जनसंख्या आकार, पदानुक्रमीय तंत्र का स्थानिक वितरण, जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम, केन्द्रीयता व जनसंख्या आकार, केन्द्रीयता और पदानुक्रम, पदानुक्रम के स्तरों का स्थानिक वितरण, संयुक्त केन्द्रीयता के आधार पर अधिवासों का पदानुक्रम तथा अन्तिम क्रम, जनसंख्या आकार और केन्द्रीयता, केन्द्रीयता व पदानुक्रम, कार्यात्मक पदानुक्रम तथा जनसंख्या पदानुक्रम में अन्तर, कार्यात्मक पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर, जनसंख्या पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर, सारांश उल्लेख।

**अध्याय षष्ठम – प्रादेशिक सम्बद्धता का संश्लेषण तथा भावी विकास के लिए व्यूह रचना** 106-171

विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिए जनसंख्या का न्यूनतम स्तर, न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना, चयनित कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या, विधितंत्र, कार्यों के आधार पर न्यूनतम जनसंख्या (शिक्षा, स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा, खाद्य आपूर्ति केन्द्र, बैंकिंग, उर्वरक केन्द्र, साप्ताहिक बाजार), विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं की सीमा, वर्तमान कार्य के लिए उपयुक्त विधियाँ, कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र (प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, डिस्पेंसरी, डाकघर, कूरियर, उर्वरक केन्द्र, बैंकिंग, पशु चिकित्सा, सहकारिता, थोक बाजार), कार्यात्मक अल्पता का क्षेत्र (उच्च सेवाओं, मध्यम सेवाओं, निम्न सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र), प्रदेश के समग्र विकास में केन्द्र स्थल की भूमिका, वर्तमान आर्थिक अवसर, कृषि विकास योजना, औद्योगिक विकास योजना, परिवहन विकास योजना, प्रस्तावित कार्यात्मक पदानुक्रम का प्रतिरूप, समग्र क्षेत्र विकास के लिए प्रस्ताव, सारांश उल्लेख।

**अध्याय सप्तम् – निष्कर्ष एवं सुझाव** 172-184

**सरांश** 185-198

- संदर्भ सूची 199-211
- परिशिष्ट तालिकाएँ 212-229
- शोधपत्रों के प्रकाशन एवं वाचन की सूची 230-243

# मानचित्रों की सूची


| क्र.सं. | मानचित्र | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 1.1 | देवली तहसील अवस्थिति | 7 |
| 1.2 | देवली तहसील के अधिवासों की अवस्थिति | 8 |
| 2.1 | भूआकृतिक संरचना | 18 |
| 2.2 | अपवाह तंत्र | 20 |
| 2.3 | वन | 23 |
| 2.4 | पशुधन | 27 |
| 2.5 | जनसंख्या घनत्व | 29 |
| 2.6 | परिवहन तंत्र | 32 |
| 3.1 | शैक्षिक सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप | 38 |
| 3.2 | स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप | 43 |
| 3.3 | संचार सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप | 47 |
| 3.4 | पशुचिकित्सा सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप | 49 |
| 3.5 | आवश्यक सेवाओं का वितरण प्रतिरूप | 52 |
| 3.6 | बैंकिंग सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप | 54 |
| 3.7 | सहकारी समितियों का वितरण प्रतिरूप | 55 |
| 3.8 | उर्वरक केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप | 57 |
| 3.9 | मनोरंजन सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप | 58 |
| 3.10 | बस यातायात सुविधा का वितरण प्रतिरूप | 60 |
| 3.11 | बाजार केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप | 62 |
| 3.12 | प्रशासनिक सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप | 63 |
| 3.13 | कार्यों के समूह सहित अधिवास | 65 |
| 4.1 | सड़कों की अभिगम्यता | 70 |
| 4.2 | बैंक केन्द्रों द्वारा अधिवासों की अंतर्सम्बद्धता | 72 |
| 4.3 | उर्वरक केन्द्रों द्वारा अधिवासों की अंतर्सम्बद्धता | 74 |
| 4.4 | कृषि सहकारी समितियों द्वारा अधिवासों की अंतर्सम्बद्धता | 75 |
| 4.5 | पशु चिकित्सा सेवाओं द्वारा अधिवासों की अंतर्सम्बद्धता | 76 |
| 4.6 | पेट्रोल पम्पों द्वारा अधिवासों की अंतर्सम्बद्धता | 77 |
| 4.7 | साप्ताहिक बाजार केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप | 79 |
| 4.8 | घरेलू उद्योगों का वितरण प्रतिरूप | 81 |

| | | |
|---|---|---|
| 6.1 | अधिवासों की अंतर्सम्बद्धता | 123 |
| 6.2 | प्राथमिक विद्यालय कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 127 |
| 6.3 | उच्च प्राथमिक विद्यालय कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 128 |
| 6.4 | माध्यमिक विद्यालय कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 130 |
| 6.5 | उच्च माध्यमिक विद्यालय कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 131 |
| 6.6 | प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 134 |
| 6.7 | डिस्पेंसरी कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 135 |
| 6.8 | डाकघर कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 137 |
| 6.9 | कूरियर केन्द्र कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 138 |
| 6.10 | उर्वरक केन्द्र कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 140 |
| 6.11 | बैंक कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 142 |
| 6.12 | पशु चिकित्सा केन्द्र कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 143 |
| 6.13 | सहकारी समितियां कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 145 |
| 6.14 | थोक बाजार केन्द्र कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप | 146 |
| 6.15 | उच्च सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र | 149 |
| 6.16 | मध्यम सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र | 151 |
| 6.17 | निम्न सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र | 152 |
| 6.18 | वर्तमान सेवा केन्द्र | 166 |
| 6.19 | प्रस्तावित सेवा केन्द्र | 167 |

# तालिकाओं की सूची


| क्र.सं. | तालिका | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 2.1 | देवली तहसील : तापमान एवं वर्षा (2015) | 22 |
| 2.2 | प्रमुख फसलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन (2014–15) | 25 |
| 2.3 | साधनों के अनुसार कुल सिंचित क्षेत्रफल | 26 |
| 2.4 | भूमि उपयोग : 2011 | 26 |
| 2.5 | कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या | 30 |
| 3.1 | जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण (2011) | 36 |
| 3.2 | जनसंख्या आकार के अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालयों का वितरण (2011) | 37 |
| 3.3 | जनसंख्या आकार के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों का वितरण (2011) | 39 |
| 3.4 | जनसंख्या आकार के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों का वितरण (2011) | 39-40 |
| 3.5 | जनसंख्या आकार के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण (2011) | 40-41 |
| 3.6 | जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण (2011) | 41 |
| 3.7 | जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों का वितरण (2011) | 42 |
| 3.8 | जनसंख्या आकार के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों का वितरण (2011) | 44 |
| 3.9 | जनसंख्या आकार के अनुसार डाकघर का वितरण (2011) | 45 |

| | | |
|---|---|---|
| 3.10 | जनसंख्या आकार के अनुसार दूरभाष सेवाओं का वितरण (2011) | 45 |
| 3.11 | जनसंख्या आकार के अनुसार सामान्य सेवा केन्द्र/इंटरनेट कैफे का वितरण (2011) | 46 |
| 3.12 | जनसंख्या आकार के अनुसार पशु चिकित्सा केन्द्रों का वितरण (2011) | 48 |
| 3.13 | जनसंख्या आकार के अनुसार आवश्यक सेवाओं का वितरण (2011) | 50 |
| 3.14 | जनसंख्या आकार के अनुसार खाद्य आपूर्ति केन्द्रों का वितरण (2011) | 51 |
| 3.15 | जनसंख्या आकार के अनुसार बैंकों का वितरण (2011) | 53 |
| 3.16 | जनसंख्या आकार के अनुसार उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों का वितरण (2011) | 56 |
| 3.17 | जनसंख्या आकार के अनुसार टेलीविजन तथा खेल मैदानों का वितरण (2011) | 56 |
| 3.18 | जनसंख्या आकार के अनुसार परिवहन सेवाओं का वितरण (2011) | 59 |
| 3.19 | अधिवासों में कार्यों के प्रकारों की उपलब्धता में विभिन्नता | 64 |
| 5.1 | सेवाओं का कार्यिक भार | 88-89 |
| 5.2 | पदानुक्रम के स्तर के अनुसार अधिवासों की संख्या (कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक) | 90 |
| 5.3 | पदानुक्रम के स्तर के अनुसार अधिवासों की संख्या (जनसंख्या केन्द्रीयता सूचकांक) | 95 |
| 5.4 | पदानुक्रम के स्तर के अनुसार अधिवासों की संख्या (संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक) | 99 |
| 5.5 | कार्यात्मक पदानुक्रम और जनसंख्या पदानुक्रम में अन्तर | 101 |

| | | |
|---|---|---|
| 5.6 | कार्यात्मक पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर | 103 |
| 5.7 | जनसंख्या पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर | 103 |
| 6.1 | अधिवासों का जनसंख्या आकार सहित कार्यात्मक वितरण और समन्वय | 111 |
| 6.2 | सामाजिक आर्थिक कार्यः प्रस्तावित न्यूनतम जनसंख्या सहित प्रस्तावित, वर्तमान तथा आवश्यक कार्यों की संख्या | 112 |
| 6.3 | विभिन्न कार्यों/ उपकार्यों का विस्तार | 124-125 |
| 6.4 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 126 |
| 6.5 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 129 |
| 6.6 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 132 |
| 6.7 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 133 |
| 6.8 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 133 |
| 6.9 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 136 |
| 6.10 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 139 |
| 6.11 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 139 |
| 6.12 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 141 |
| 6.13 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 144 |
| 6.14 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 144 |
| 6.15 | अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या | 147 |
| 6.16 | सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक पदानुक्रम | 164 |

# आरेखों की सूची


| क्र.सं. | आरेख | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 2.1 | जलवायु संबंधी आंकडों का आरेख | 21 |
| 5.1 | जनसंख्या तथा कार्यात्मक पदानुक्रम में सहसंबंध | 91 |
| 5.2 | जनसंख्या तथा जनसंख्या केन्द्रीयता में सहसंबंध | 96 |
| 5.3 | जनसंख्या तथा संयुक्त पदानुक्रम में सहसंबंध | 100 |
| 6.1 | कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या (प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय) | 115 |
| 6.2 | कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या (प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और उपकेन्द्र, पशु चिकित्सालय, खाद्य आपूर्ति) | 118 |
| 6.3 | कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या (बैंक, उर्वरक, साप्ताहिक बाजार ) | 120 |

# अध्याय प्रथम

## परिचय

# परिचय

एकीकृत ग्रामीण विकास की संकल्पना का अभिप्राय किसी प्रदेश विशेष के समग्र विकास को ध्यान में रखकर सामाजिक, आर्थिक सेवाओं को किसी सुविधाजनक स्थल पर स्थापित करने से है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक ग्रामीण या नगरीय बस्ती सभी कार्यों को सम्पन्न नहीं कर सकती है। 'केन्द्र स्थल सिद्धान्तों' द्वारा यह प्रतिपादित किया जा चुका है कि बस्तियों में किये जाने वाले कार्य के आधार पर उनमें एक निश्चित पदानुक्रम होता है एवं उसका विशेषीकरण उस बस्ती के सेवित–प्रदेश पर निर्भर करता है। अतः सामाजिक ग्रामीण–विकास में भावी वृद्धि के लिए विकास केन्द्रों तथा उनके समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के मध्य पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों को और अधिक प्रगाढ़ करना समीचीन होगा।

देश की विद्यमान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति में ग्रामीण विकास की अनिवार्यता निर्विवाद है। भारतीय अर्थतंत्र की द्विधात्मक प्रादेशिक संरचना, जो प्रमुखतः औपनिवेशिक काल की विरासत है, वह निश्चित रूप से स्वातंत्रयोत्तर काल में प्रखर हुई है। इसका मुख्य कारण कृषि प्रधान भारतीय अर्थव्यवस्था एवं ग्रामीण अधिवासों का पिछडापन तथा उन पर समुचित ध्यान का अभाव है। औद्योगिकीकरण का प्रभाव या तो पड़ा ही नहीं है और यदि पड़ा भी है तो प्रथम विश्व के ग्रामीण अधिवासों की तुलना में अपना कोई महत्त्व स्थापित नहीं कर पाया है। इस प्रकार उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ जनसंख्या की बुनियादी आवश्यकताओं यथा स्वास्थ्य, शिक्षा आदि की पूर्ति से संबंधित सेवाओं एवं संस्थागत सुविधाओं का प्रावधान स्थानीय सहयोग और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन एवं विभिन्न सामाजिक वर्गों को विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना ग्रामीण विकास की संकल्पना है। दूसरे शब्दों में विभिन्न समुदाय तक विकास की किरण पहुंचाना ग्रामीण विकास का सर्वप्रमुख उद्देश्य है। इस प्रकार समन्वित ग्रामीण विकास की संकल्पना विविध प्रकार के समन्वय पर आधारित है जिसका चरम उद्देश्य ग्रामीण अंचल में निवास करने वाली जनसंख्या को रोजगार के पर्याप्त

अवसर उपलब्ध कराना तथा दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में उसे अभीष्टतम जीवन स्तर हेतु विविध सेवाऐं एवं सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

एकीकृत ग्रामीण विकास अध्ययन क्षेत्र में संतुलित विकास से संबंधित है जिसमें भौतिक परिवेश में सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाओं के निमित्त उपयुक्त अवस्थिति निर्धारण विशेष महत्वपूर्ण है। अतः ग्रामीण विकास का एकीकृत स्वरूप दो अर्थों से स्पष्ट किया जा सकता है। प्रथम :– यह अत्यधिक उत्पादन, अधिकतम रोजगार एवं आय के अपेक्षाकृत समान वितरण जैसे विभिन्न लक्ष्यों को सम्बोधित करता है। द्वितीय – यह निम्न आय वर्गों को उत्पादन प्रक्रिया में अधिक सहभागी बनाकर और उनके लिए विकास कार्यक्रम से होने वाले लाभों को अधिक समान वितरण सुनिश्चित कर अन्य ग्रामीण समुदाय के साथ समन्वित करने का प्रयास करता है।

**एकीकृत ग्रामीण विकास योजना (I.R.D.P.) के उद्देश्य :–**

(1) उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाना –

14 जनवरी, 1982 को घोषित 20 सूत्रीय कार्यक्रम के अनुसार उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने पर अधिक जोर दिया गया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए 1982 को ''उत्पादकता वर्ष'' तथा ''श्रमेव जयते'' का राष्ट्रीय नारा दिया गया। यहाँ अधिक उत्पादन का प्रमुख उद्देश्य विकास दर को बढ़ावा देना था। विकास दर चाहे कितनी ही अधिक क्यों न हो किन्तु केवल अधिक विकास दर से ही सम्पूर्ण समृद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती। इसलिए यह अतिआवश्यक है कि अतिरिक्त उपज के फायदो ंको समाज के पिछड़े वर्गों तक समान रूप से उपलब्ध करवाया जाये।

(2) उत्पादकता बढ़ाने के न्यूनतम मानदण्ड तय करना –

उत्पादन के हर क्षेत्र के लिए न्यूनतम मानदण्ड तय किये जाए तथा विकास कार्यों में आने वाली किसी भी बाधा को उन मानदण्डों के अनुसार दूर किया जाए।

(3) रोजगार के अवसर बढ़ाना –

अधिक उत्पादकता से ही रोजगार के अवसरों को बढ़ावा दिया जा सकता है। अधिक उत्पादन के लिए अधिक मानव संसाधनों की आवश्यकता होगी फलस्वरूप उत्पादकता बढ़ने से रोजगार के अवसरों में स्वतः ही वृद्धि हो जायेगी। विशेषकर भूमिहीन श्रमिकों को अधिकाधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

(4) वैज्ञानिक जागरूकता पैदा करना –

उत्पादकता बढ़ाने के लक्ष्यों की प्राप्ति के अलावा I.R.D.P. का उद्देश्य समाज के सामान्य तबके में वैज्ञानिक प्रवृति का विकास करना भी है।

एकीकृत ग्रामीण विकास योजना एक गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम है। गरीब, ग्रामीण तबके को ऊपर उठाने में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इसलिए कृषि वानिकी, मुर्गी पालन, पशुपालन, कृषिगत ढांचा, गाँव और लघु उद्योगों को इसके अन्तर्गत प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

व्यापारिक गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्रों से जोड़ने में भी एकीकृत ग्रामीण विकास योजना का काफी महत्त्व है। इसके द्वारा गरीब किसानों को बाहरी व्यापारियों के शोषण से मुक्ति दिलायी जा सकती है।

**कार्यात्मक योजना :–**

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं :–

(अ) अध्ययन क्षेत्र के लिए एक स्पष्ट एवं विस्तृत पंचवर्षीय योजना तैयार करना है। पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य दरिद्र ग्रामीण समूहों को ऊपर उठाने का होना चाहिए जैसा कि एकीकृत ग्रामीण विकास की आवश्यकता है। इस कार्य के लिए कृषि, वानिकी, कुक्कुट पालन, पशुपालन, कृषि की आधारभूत संरचना, ग्रामीण व कुटीर उद्योगों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

(ब) किसानों के लिए छोटे स्थानीय बाजार स्थापित किये जायें जिससे वे बिचौलियों के शोषण से मुक्त हों।

(स) यह योजना राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत रोजगारोन्मुखी प्रस्ताव भी उपलब्ध करवाये। एकीकृत ग्रामीण विकास का उद्देश्य ग्रामीण विकास के लिए चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों को पुनः स्थापित करना है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालों की पहचान कर उन्हें भी I.R.D.P. में सम्मिलित करना चाहिए।

(द) कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए क्षेत्र में एक स्वायत्त योजना संस्था स्थापित हो तथा कुशल व पूर्ण यंत्रीकृत क्षेत्रीय कर्मचारियों की नियुक्ति हो।

**भूगोल और एकीकृत ग्रामीण विकास :–**

भूगोल सामाजिक–आर्थिक कल्याण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रकृति और मानव, भूगोल के अन्तः निर्भर और अन्तर्सम्बंधित तत्त्व है। मानव आवास की प्रकृति चाहे जैसी भी हो, वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तकनीकी के प्रयोग से करने की कोशिश करता है। इस प्रकार भूदृश्य में मानव द्वारा लाये गये परिवर्तन आधुनिक भूगोलवेत्ताओं के लिए विशेष महत्त्व के बन गये हैं।

भूगोल का पारंपरिक भूदृश्य विश्लेषण का दृष्टिकोण इसके विषयक्षेत्र को प्राकृतिक व सांस्कृतिक तत्त्वों की श्रेणी तक बांध देता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार ''भूगोल पृथ्वीतल पर परिघटनाओं के वितरण व आपसी अन्तर्सम्बंधों का विज्ञान है।'' मानव की गूढ़ इच्छा के कारण पृथ्वी तल पर होने वाली घटनाओं के प्रक्रमों को समझने पर अत्यधिक बल दिया गया लेकिन पारंपरिक दृष्टिकोण में बदलाव से सामाजिक कल्याण पर बल दिये जाने की आवश्यकता है। उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विषय तेजी से इसके विश्लेषण एवं अन्तर्सम्बंधों में कार्योन्मुख व वैज्ञानिक हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप आज हमारे पास तंत्र विश्लेषक, मात्रात्मक भूगोलवेत्ता, क्षेत्रीय नियोजक, प्रयुक्त भूगोलवेत्ता और कम्प्यूटर विश्लेषक हैं। इन आधुनिक भूगोलवेत्ताओं द्वारा नई तकनीकी का प्रयोग राष्ट्रीय विकास की योजनाओं में भागीदारी निभा रहा है।

भूगोलवेत्ताओं के साथ उसके अन्तः वैज्ञानिक और अन्तर्समाकलित दृष्टिकोण, शैक्षिक प्रशिक्षण, क्षेत्र विश्लेषण आदि समस्याओं के समाधान में प्रभावी

भागीदारी के घटक हैं। नियोजन हमेशा मानव, क्षेत्र, समय व संसाधन से सम्बंधित होता है।

एक प्रशिक्षित भूगोलवेत्ता योजना के प्रत्येक चरण में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है। भूगोलवेत्ता बदलते हुए क्षेत्रीय प्रतिरूपों का विश्लेषण करता है तथा कार्य संतुलन के लिए सामुदायिक पारिस्थितिकी के सिद्धान्तों को लागू करता है ताकि अधिकतम विकास के लिए इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति हो।

एकीकृत ग्रामीण विकास का भौगोलिक पहलू सामान्य ग्रामीण विकास से भिन्न है। यह प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों के विकास व गत्यात्मकता पर अपेक्षाकृत अधिक ध्यान देता है। ग्रामीण विकास से संबंधित भूगोलवेत्ताओं का मूल उद्देश्य संसाधनों तक निष्पक्ष पहुंच व आय के उचित वितरण से होता है। एकीकृत ग्रामीण विकास के अन्तर्गत नियोजन पूर्ण कृषि विकास से कुछ अधिक है। विकास के लिए प्रयोग में लायी जाने वाली रणनीति के सिद्धान्त पूर्णतः सही–सही उच्चारित एवं समझे हुए होने चाहिए। ग्रामीण विकास के अन्तर्गत सामाजिक सुधार की सम्पूर्ण योजना को ये विचारित करता है। जब इसका क्रियान्वयन किया जाता है, तो ये समग्र प्रादेशिक क्षेत्रीय विकास का रूप धारण कर लेता है जिसमें प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण तथा जन संगठन के पहलू भी सम्मिलित होते हैं।

**अध्ययन क्षेत्र का चयन :–**

हमारे देश में संसाधनों की वृहत् विविधताओं के साथ ही सामाजिक एवं आर्थिक विकास में असमानताएँ हैं। यहाँ के निवासियों को तकनीकी विकास के लिए प्रेरित करने व सुविधाएँ प्रदान करने से अंतक्षेत्रीय व अन्तः क्षेत्रीय विषमताएँ बढ़ती हैं। साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में सूक्ष्म स्तर पर भी भविष्य की योजनाओं को भी परखा जाना चाहिए। उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु देश के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन होना चाहिए। वर्तमान अध्ययन भारत के सबसे बडे राज्य राजस्थान के

# LOCATION MAP OF DEOLI TEHSIL

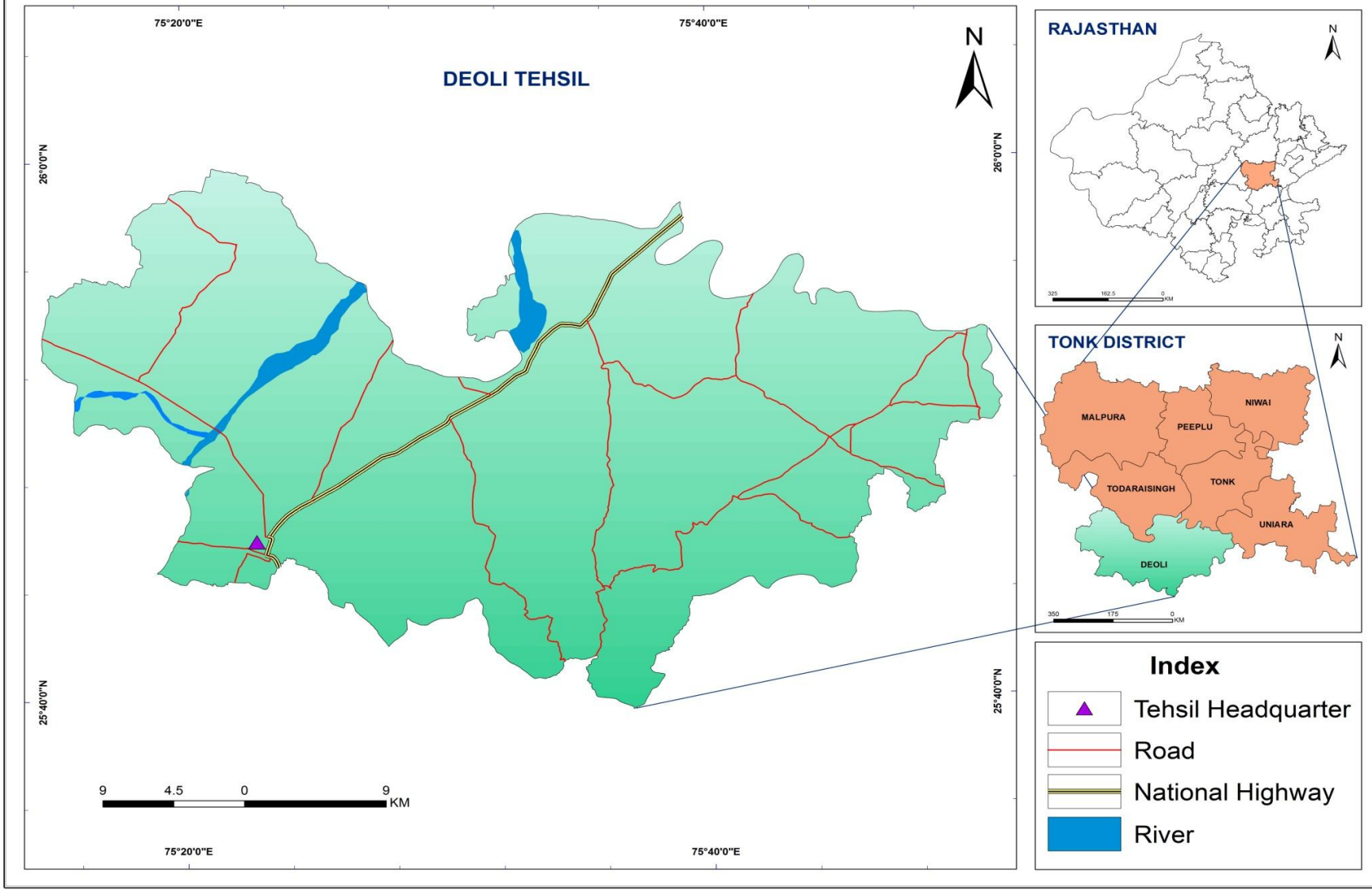

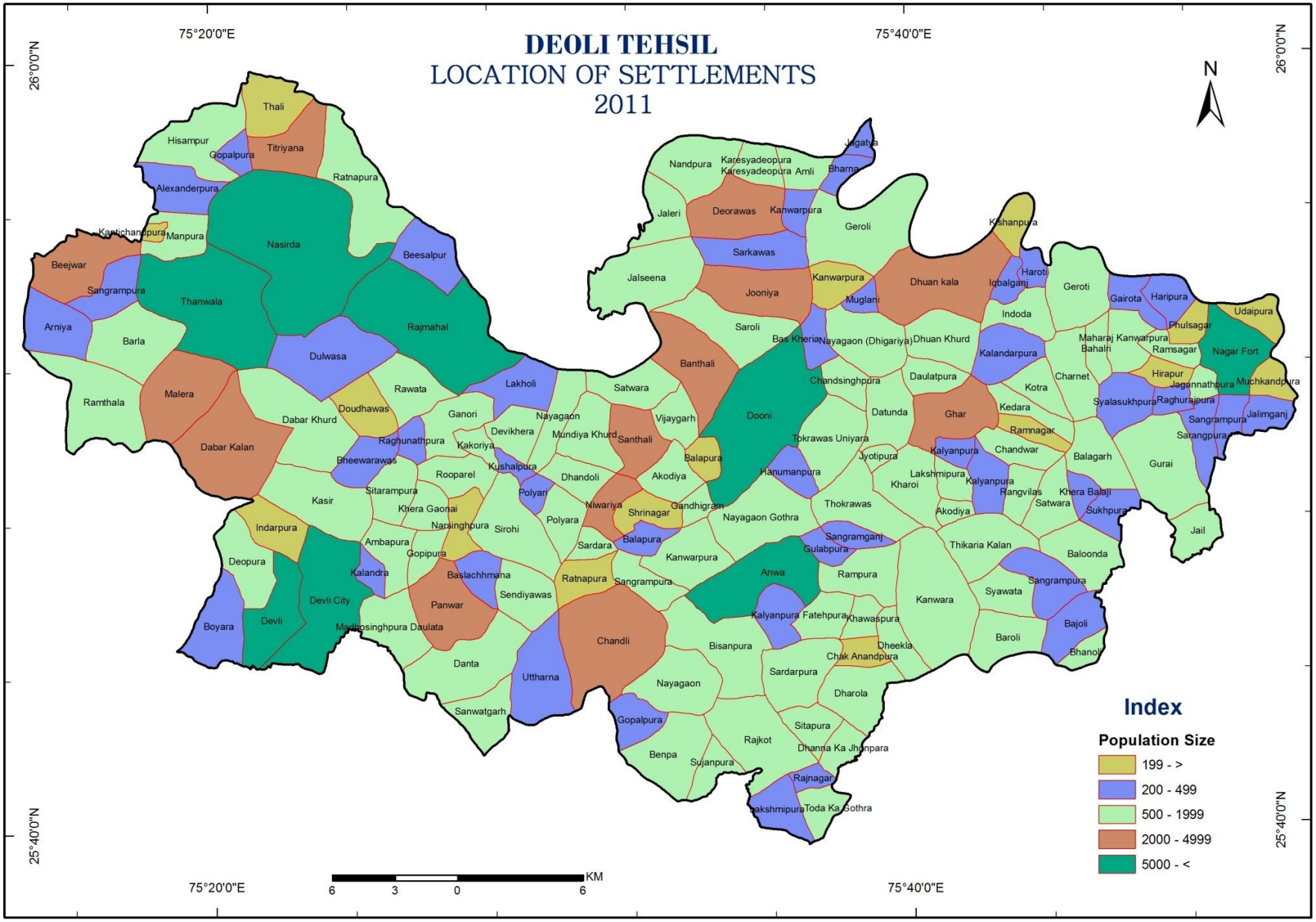

DEOLI TEHSIL
LOCATION OF SETTLEMENTS
2011
N
Index
Population Size
199 - >
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
5000 - <
KM
6
3
0
3
6
26°0'0"N
25°40'0"N
75°20'0"E
75°40'0"E
Udaipura
Nagar Fort
Muchkandpura
Jalimganj
Jagannathpura
Sangrampura
Sangpura
Phulsagar
Ramsagar
Hirapur
Raghunathpura
Haripura
Gairota
Maharaj Kanwarpura
Bahalri
Syalasukhpura
Gurai
Jail
Geroti
Charnet
Balagarh
Khera Balaji
Sukhpura
Baloonda
Bajoli
Bhanoli
Haroti
Iqbalganj
Kishanpura
Indoda
Kalandarpura
Kotra
Kedara
Ramnagar
Chandwar
Rangvilas
Satwara
Sangrampura
Kalyanpura
Syawata
Baroli
Thikaria Kalan
Dhuan kala
Dhuan Khurd
Daulatpura
Ghar
Kalyanpura
Lakshmipura
Akodiya
Kanwara
Kharoi
Datunda
Jyotipura
Nayagaon (Dhigariya)
Chandsinghpura
Muglani
Geroli
Jagatya
Bharna
Kanwarpura
Thokrawas
Rampura
Khawaspura
Dheekla
Chak Anandpura
Dharola
Dhanda Ka Jhonpara
Sangramganj
Gulabpura
Fatehpura
Sitapura
Toda Ka Gothra
Rajnagar
Lakshmipura
Bas Kheria
Nayagaon
Tokrawas Uniyara
Karesyadeopura
Karesyadeopura Amli
Kanwarpura
Deorawas
Sarkawas
Jooniya
Saroli
Dooni
Hanumanpura
Nayagaon Gothra
Anwa
Kalyanpura
Sardarpura
Rajkot
Bisanpura
Nandpura
Jaleri
Jalseena
Banthali
Balapura
Gandhigram
Kanwarpura
Sujanpura
Nayagaon
Benpa
Vijaygarh
Akodiya
Shrinagar
Balapura
Sangrampura
Chandli
Gopalpura
Satwara
Santhali
Niwariya
Sardara
Rathapura
Nayagaon
Mundiya Khurd
Dhandoli
Polyara
Uttharna
Lakholi
Devikhera
Kushalpura
Polyari
Sirohi
Sendiyawas
Ganori
Kakoriya
Rooparel
Narsinghpura
Baslachhmana
Panwar
Danta
Sanwatgarh
Beesalpur
Rajmahal
Rawata
Raghunathpura
Khera Gaonai
Gopipura
Sitarampura
Ambapura
Madhosinghpura Daulata
Kalandra
Doudhawas
Bheewarawas
Ratnapura
Dulwasa
Devli City
Kasir
Nasirda
Dabar Khurd
Indarpura
Devli
Thali
Titriyana
Gopalpura
Dabar Kalan
Deopura
Boyara
Hisampur
Alexanderpura
Manpura
Thanwala
Malera
Kanhichandpura
Sangrampura
Barla
Ramthala
Beejwar
Arniya

टोंक जिले की देवली तहसील के सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण का एक भौगोलिक प्रयास है।

देवली तहसील टोंक जिले की 7 तहसीलों में से एक है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार तहसील में 187 अधिवास है। 187 अधिवासों में से 170 अधिवास ही आबाद हैं।

**शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य :–**

शोधकार्य के मुख्य उद्देश्य देवली तहसील (जिला टोंक) के ग्रामीण विकास की विस्तृत योजना तैयार करना तथा केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं का आंकलन व विश्लेषण करना है। देवली तहसील में एकीकृत ग्रामीण विकास योजना (I.R.D.P.) के उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निम्न बिन्दु विचारणीय हैं :–

(i) देवली तहसील के ग्रामीण विकास में भौगोलिक तत्त्वों की भूमिका का अध्ययन करना।

(ii) देवली तहसील के लिए वहां उपलब्ध संसाधनों और उस क्षेत्र के विकास में उन संसाधनों के द्वारा पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर क्रमबद्ध कार्ययोजना तैयार करना।

(iii) देवली तहसील में स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों की पूर्ति का परीक्षण करना जिसमें कृषि, बाजार, वित्तीय संस्थाएँ, कृषि आधारित उद्योग, कुटीर व लघु उद्योग, यातायात, शिक्षण संस्थाएँ, स्वास्थ्य व चिकित्सा, संचार आदि आयामों का अध्ययन करना।

(iv) संसाधनों के संदर्भ में तहसील का क्रमबद्ध स्तरीकरण करना जिसमें भूमि उपयोग व कृषि भूमि, प्राकृतिक संसाधन एवं संबंधित तथ्य, अधिवास, सामाजिक सेवायें, उद्योग व अन्य सेवायें सम्मिलित हैं।

(v) यह मूल्यांकन करना कि वर्तमान प्रशासनिक स्वरूप क्या तहसील की आर्थिक विषमताओं को कम करने में सार्थक भूमिका अदा कर रहे हैं ? अतः प्रस्तुत योजना में ऐसे सम्बन्धों की खोज आवश्यक है जो उपलब्ध यातायात (सड़क) साधनों के इकाई क्षेत्र में उत्पादन, मांग, बाजार के आधुनिकीकरण के आयामों को पूरा करते हों और एकीकृत ग्रामीण विकास में अपना प्रमुख स्थान रखते हों।

(vi) देवली तहसील में कृषि आधारित उद्योगों के विशेष संदर्भ में उपलब्ध आर्थिक अवसरों की क्षमता ज्ञात करना।

(vii) प्रस्तुत योजना का मुख्य उद्देश्य तहसील में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का क्षेत्रीय विकास के लिये अधिकाधिक आदर्शतम उपयोग करना है।

**अध्ययन क्षेत्र में विकास योजना की आवश्यकता :–**

तहसील में एक ऐसी विकास योजना की आवश्यकता महसूस की गई है जो क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर अध्ययन क्षेत्र को आर्थिक गति प्रदान कर सके। प्रस्तुत योजना अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध समग्र संसाधनों के अधिकाधिक उपयोग पर जोर देती है साथ ही नये संसाधनों के विकास की संस्तुति भी करती है। अतः प्रस्तुत योजना द्वारा अध्ययन क्षेत्र के निवासियों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है।

**क्षेत्र परिचय :–**

देवली तहसील टोंक जिले के दक्षिणी छोर पर $25^0$44′ उत्तरी अक्षांश से $25^0$58′ उत्तरी अक्षांश तथा $75^0$10′ पूर्वी देशान्तर से $75^0$52′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। अध्ययन क्षेत्र की दक्षिणी सीमा पर जहाजपुर तहसील स्थित है। तहसील के पश्चिम में केकड़ी तहसील अपनी सीमा बनाती है। उत्तर में टोडारायसिंह, उनियारा व टोंक तहसीलों की सीमा अध्ययन क्षेत्र को स्पर्श करती है। पूर्व में हिंडोली तहसील अपनी सीमा बनाती है। तहसील 1228.35 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। तथा 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 214408 है।

**पूर्ववर्ती शोध साहित्य :–**

ग्रामीण विकास अध्ययन के अन्तर्गत समाज शास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, भूगोलवेत्ताओं, शोध छात्रों एवं शोध संस्थाओं आदि की अध्ययन पद्धति एवं उपागम भिन्न होते हैं, लेकिन सभी का दृष्टिकोण ग्रामीण क्षेत्र एवं ग्रामीण जनता के उत्थान से ही सम्बन्धित होता है। विश्व के लगभग प्रत्येक देश में वैज्ञानिकों, विद्वानों तथा शोध संस्थाओं द्वारा ग्रामीण विकास सम्बन्धी अध्ययन किये गये तथा अनवरत् गतिमान भी है। लगभग सभी विद्वानों द्वारा भिन्न–भिन्न उपागमों का उपयोग करके ग्रामीण समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

समाजशास्त्री जहाँ ग्रामीण विकास को सामाजिक, आर्थिक परिपेक्ष एवं विकास प्रक्रिया कार्यक्रमों से मूल्यांकन करते हैं वहीं भूगोलवेत्ता ग्रामीण विकास को भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक सुविधाओं के विकेन्द्रीयता, संसाधनों का समुचित उपयोग एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के प्रभाव आदि के संयुक्त एवं एकांकी दोनों दृष्टिकोण से अध्ययन करते हैं। राव (1985), अरोरा (1976), डेविड (1969) मेफील्ड (1963), कम्बले, भट्टाचार्य, बंसल, लक्ष्मण(1984), जैन (1977), शर्मा और मल्होत्रा एंडरसन, पर्वत्थम्मा (1987), तिवारी (1988), माथुर, जॉनसन (1965), घोष एवं प्रेम कुमार कोठारी (1991), एम.सिंह(1992), सुन्दरम् (1971), एम.सिंह. (2000) एवं यादव (2001) तथा मिश्रा एवं भारती (2002) आदि ने ग्रामीण विकास दृष्टिकोण के अन्तर्गत कृषि, शिक्षा, रोजगार, गरीबी, विकास कार्यक्रम, परिवहन, उद्योग, विपणन व्यवस्था, पेयजल आदि विभिन्न बिन्दुओं पर वैचारिक अध्ययन एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया है।

भारत में बीसवीं शताब्दी के सातवें, आठवें एवं नौवें दशकों में विभिन्न भूगोलवेत्ताओं जैसे– चतुर्वेदी (1984), सिंह (1973), मुखर्जी, माथुर एवं मिश्रा(1974) मंडल (1975), अग्रवाल (1973), मिश्रा एवं सुन्दरम् (1979), मिश्रा एवं नटराज (1981) शाह (1974), मिश्रा (1987), क्लार्क (1975), मिश्रा एवं अच्यूथा (1976), एवं मिश्रा (1972) आदि ने ग्रामीण विकास के अन्तर्गत संकल्पना, उपागम, प्रकार, सामाजिक, आर्थिक सुविधाओं का प्रभाव तथा ग्रामीण कार्यक्रम का प्रभाव आदि बिन्दुओं के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों का चयन एवं क्षेत्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है। इन अध्ययनों में समस्याग्रस्त क्षेत्रों के विकास

एवं ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु उचित दिशा–निर्देशन,सुझाव के लिए नीति, नियोजन एवं रणनीति का निर्धारण समाहित है।

सन् 1960 के दशक से लेकर वर्तमान समय तक सेवा केन्द्रों एवं ग्रामीण विकास सम्बन्धी अध्ययनों के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत किये गये हैं, जिसमें काशीनाथ सिंह (1963), एम.एस. विश्वनाथ (1966), एस.पी. मिश्रा (1981 प्रकाशित 1985), बी.एन.सिंह (1981 प्रकाशित 1988), आर.बी.सिंह (1981 प्रकाशित 1986), आर.पी. सिंह (1981), बी.डी. शुक्ल (1981), मंगला सिंह (1981), ए.के.सिंह (1983), एस.बी. पाण्डेय (1983), बी.सी. पाल (1984), के.के.सिंह (1984), एस.बी.त्रिपाठी(1985), ए.के.मिश्रा (1985), एस.सी. रॉय (1985, प्रकाशित 1988), टी.बी.सिंह (1988), पी.के.तिवारी (1988), बी.के.सिंह (1988), एस.एस.सिंह (1989), वाई.पी.डी.सिंह (1990), एस.पी.सिंह (1991), श्रीमती एस.वर्मा (1992), एस.के.सिंह यादव (1992), एस.पी.पाण्डेय (1992), राघव सिंह (1992), अलंकेश्वरी सिंह (1993), कु.एस. मिश्रा (1999), श्रीमती ए.सिंह (1999) तथा मिश्रा, सुनीता एवं अर्चना अग्रहरि (2002)

सरकारी व अर्द्धसरकारी संस्थाओं का ग्रामीण विकास सम्बन्धी अध्ययनों में एक प्रमुख योगदान है। इन संस्थाओं में कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं :–

नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेन्ट (हैदराबाद), इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन नई दिल्ली, सेन्ट्रल रिसर्च सेल एसोसिएशन ऑफ वॉलेन्टरी फॉर रूरल डेवलपमेन्ट, इण्डियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट (नई दिल्ली), समन्वित ग्रामीण क्षेत्रीय विकास केन्द्र, बी.एच.यू. (वाराणसी) एवं गांधी इंस्टीट्यूट (वाराणसी) आदि संस्थाओं द्वारा ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में विभिन्न शोध प्रबन्धों, निबन्धों एवं ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है जो क्षेत्र विशेष के अध्ययन हेतु विशेष उपयोगी है।

**विधितंत्र :–**

शोध में विश्लेषण की पूर्ति हेतु अध्ययन में निम्नलिखित आधारभूत सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया है –

1. कार्लपियर्सन का सहसंबंध गुणांक :

2. भारिता सूचकांक

$$Wi = \frac{N}{Fi}$$

W$i$ = $i$ कार्य का भार

N = अधिवासों की कुल संख्या

F$i$ = कार्य / उपकार्य वाले अधिवासों की संख्या

3. अधिवासों की केन्द्रीयता

$$C = \frac{N \times 100}{p}$$

C = अधिवासों की केन्द्रीयता

N = उस अधिवास में गैर प्राथमिक कार्य में संलग्न जनसंख्या

P = तहसील में कुल गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न जनसंख्या

4. केन्द्रीय भारिता '

$$Cj = \sum_{i=1}^{k} Wi\ Xij$$

Cj = j अधिवास के लिये संयुक्त भार

Wi = i सेवा का भार

xij = j अधिवास में i सेवा का भार

K = किसी सेवा की उपसेवाओं का योग

**अध्ययन की रूपरेखा :–**

सांख्यिकीय विश्लेषणों एवं शोधपरक व्याख्याओं को अध्यायों एवं शीर्षकों के अन्तर्गत समायोजित किया गया है। प्रत्येक अध्याय में यथास्थान तालिकाओं एवं मानचित्रों के द्वारा तथ्यों एवं निष्कर्षों की प्रमाणिकता को सिद्ध किया गया है।

**प्रथम अध्याय :–**

प्रथम अध्याय में ग्रामीण विकास की अवधारणा, ग्रामीण विकास की व्यूह रचना, भूगोल और एकीकृत ग्रामीण विकास में अन्तर्सम्बंध, देवली तहसील में प्रस्तुत योजना के उद्देश्यों तथा आवश्यकता का वर्णन किया गया है एवं पूर्वकृत कार्यों का विश्लेषण–विवेचन किया है। शोध में प्रयुक्त विधितंत्र की व्याख्या की गई है।

**द्वितीय अध्याय :–**

द्वितीय अध्याय में अध्ययन क्षेत्र के बारे में सामान्य जानकारी जैसे उच्चावच, भूगर्भिकी, अपवाह तंत्र, खनिज, वन, जलवायु, जनसंख्या, पशुधन, सहकारिता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, संचार आदि के बारे में दी गई है।

**तृतीय अध्याय :–**

तृतीय अध्याय में आवश्यक सेवाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा, जल विद्युत, खाद्य आपूर्ति, बैंकिंग, मनोरंजन आदि का वितरण एवं विश्लेषण दर्शाया गया है।

**चतुर्थ अध्याय :–**

चतुर्थ अध्याय में क्षेत्र में कार्यात्मक सम्बद्धता की भूमिका, अभिगम्यता, यातायात प्रवाह, विभिन्न कार्यों के आधार पर क्षेत्र में कार्यात्मक सम्बद्धता का अध्ययन तथा क्षेत्रीय विकास में वृद्धि केन्द्रों की भूमिका का वर्णन किया गया है।

**पंचम अध्याय :–**

पंचम अध्याय में कार्यात्मक पदानुक्रम की भूमिका, चयनित केन्द्रीय कार्यों के आधार व मूल्यांकन के आधार पर पदानुक्रम, केन्द्रीय कार्यों के भार का निर्धारण, केन्द्रीय कार्यों एवं जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम आदि का वर्णन किया गया है।

**षष्ठ्म अध्याय :–**

षष्ठ्म अध्याय में विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या, क्षेत्र में वर्तमान तथा अपेक्षित सुविधायें, स्थानिक रिक्ततायें, कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र, क्षेत्र के विकास में केन्द्रीय स्थानों की भूमिका, कृषि आधारित उद्योगों के विशेष संदर्भ में वर्तमान आर्थिक सुविधाओं का विभव, कार्यात्मक पदानुक्रम का प्रस्तावित प्रारूप, क्षेत्रीय विकास के प्रस्ताव आदि का वर्णन किया गया है।

**सप्तम् अध्याय :–**

सप्तम् अध्याय में प्रस्तुत विश्लेषणात्मक निष्कर्ष तथा क्षेत्र में अवलोकन की गई समस्याओं के समाधान के लिये सुझाव तैयार किये गये हैं।

# अध्याय द्वितीय

## अध्ययन क्षेत्र का सामान्य परिचय

देवली तहसील टोंक जिले के दक्षिणी छोर पर $25^0$44' उत्तरी अक्षांश से $25^0$58' उत्तरी अक्षांश तथा $75^0$10' पूर्वी देशान्तर से $75^0$52' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। अध्ययन क्षेत्र की दक्षिणी सीमा पर जहाजपुर तहसील स्थित है। तहसील के पश्चिम में केकड़ी तहसील अपनी सीमा बनाती है। उत्तर में टोडारायसिंह, उनियारा व टोंक तहसीलों की सीमा अध्ययन क्षेत्र को स्पर्श करती है। पूर्व में हिण्डोली तहसील अपनी सीमा बनाती है। तहसील 1228.35 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 214408 है।

**धरातलीय स्वरूप :–**

अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपजाऊ है किन्तु कुछ रेतीली जैसी है और अधो–मृदा जल भी बहुत सीमित है। यहां की पहाड़ियाँ अरावली श्रृंखला की है। एक श्रृंखला भीलवाड़ा जिले से आरंभ होकर भीलवाड़ा और बून्दी की सीमाओं के पास से गुजरती हुई टोंक जिले में, दक्षिण में, देवली तहसील के राजकोट के निकट प्रवेश करती है।

दूसरी श्रृंखला टोडारायसिंह व देवली तहसील के राजमहल के मध्य जहां बनास ने इस पहाड़ी को काटकर अपना बहाव बनाया है, स्थित है।

**भूगर्भिक रचना :–**

अध्ययन क्षेत्र में दो प्रमुख भू–वैज्ञानिक रचनाएँ – अरावली क्रम व देहली क्रम है।

अरावली क्रम :–

दूरी पर पाया जाने वाला सुभाजा अत्यधिक स्फटिकमय है तथा इसमें रक्तमणि का बाहुल्य है। अभ्रक सुभाजा व पुरानी स्फटिक शिलाओं के परिवर्तन से बनी मेखला राजमहल पर पाई जाती है।

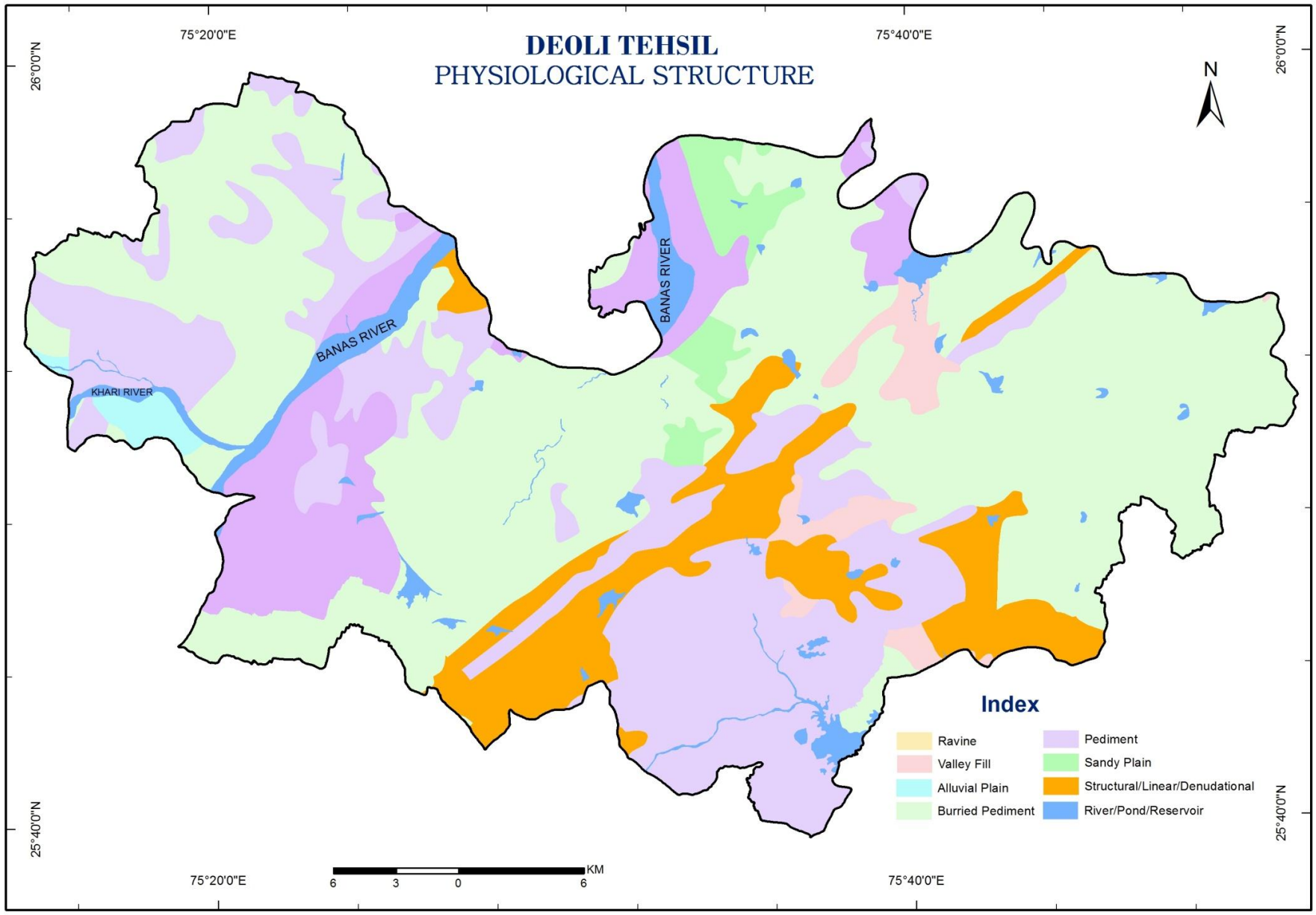
DEOLI TEHSIL
PHYSIOLOGICAL STRUCTURE
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
BANAS RIVER
BANAS RIVER
KHARI RIVER
Index
Ravine
Valley Fill
Alluvial Plain
Burried Pediment
Pediment
Sandy Plain
Structural/Linear/Denudational
River/Pond/Reservoir
6 3 0 6 KM

देहलीक्रम :–

राजमहल में संह्नत स्फटिकाश्म की एक बड़ी पहाड़ी है जो गुलाबी रंग की है तथा अलवर मेखला से मिलती–जुलती है।

**अपवाह तंत्र :–**

देवली तहसील के नदी और नाले बनास प्रणाली से सम्बद्ध है। बनास नदी टोंक जिले में देवली तहसीलान्तर्गत नेगड़िया पर प्रवेश करती है। इस नदी के किनारे पर बसे महत्त्वपूर्ण गाँव हैं – नेगड़िया, बीसलपुर, राजमहल, बंथली, नंदपुरा, देवपुरा। इसका तला रेतीली है। कहीं–कहीं पर इसमें खेती की जाती है।

खारी व डाई नदियां जो कि बनास नदी की सहायक नदियां हैं, ये अजमेर की ओर से बहती हुई देवली तहसील के क्रमशः, नेगड़िया व बीसलपुर के पास बनास में मिल जाती है।

**जलवायु :–**

सामान्यतः देवली तहसील की जलवायु शुष्क है। जलवायु का अपना एक अस्तित्व है। यह मनुष्य के व्यवसाय को निर्धारित करता है। जलवायु ही मनुष्य को बाध्य करती है कि उसका आवास कहां और कैसा हो, उसे कौनसी फसल पैदा करनी है, उसे किस प्रकार के वस्त्रों की आवश्यकता है। किसी भी क्षेत्र में किस प्रकार की पैदावार हो, उसको दो तत्त्व (मिट्टी व जलवायु) निर्धारित करते हैं।

(क) तापमान –

लगभग आधे नवम्बर के पश्चात् दिन और रात दोनों का तापमान धीरे–धीरे गिरने लगता है। यह क्रम जनवरी तक चलता है जो सामान्यतः वर्ष का शीतलतम भाग होता है। जनवरी महीने में औसत तापमान $16.4^0C$ रहता है। पश्चिमी विक्षोभ और शीतलहर के सम्मिलित प्रभाव से तापमान कभी–कभी बहुत नीचे गिर जाता है। विशेष रूप से जनवरी व फरवरी में कभी–कभी पाला भी पड़ता है। मार्च से तापमान तेजी से बढ़ने लगता है। सामान्यतः मई–जून उष्णतम महीने

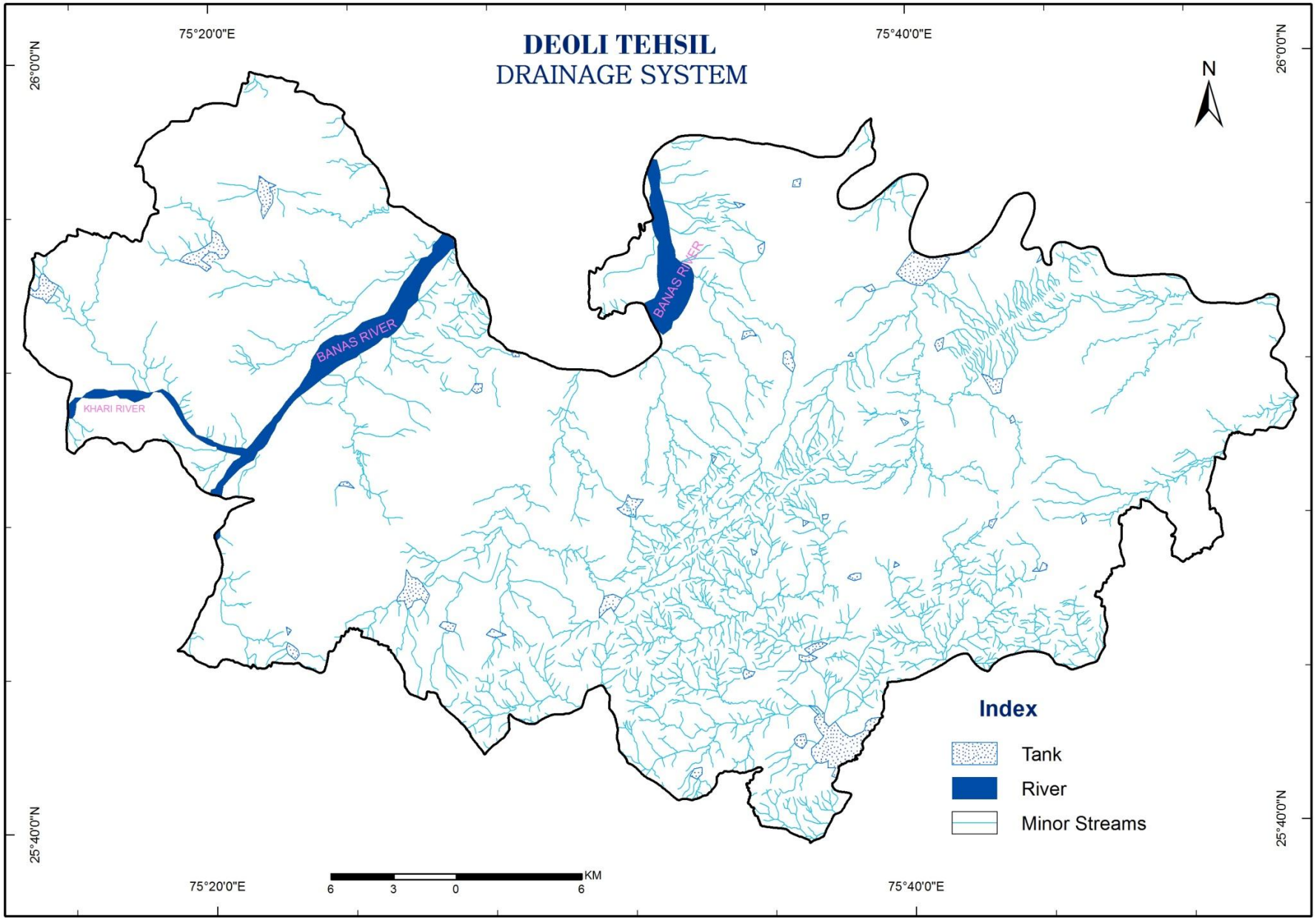

DEOLI TEHSIL
DRAINAGE SYSTEM
N
Index
Tank
River
Minor Streams
BANAS RIVER
BANAS RIVER
KHARI RIVER
6 3 0 6 KM
75°40'0"E
75°20'0"E
75°40'0"E
75°20'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
26°0'0"N
25°40'0"N

# Deoli Tehsil
# Graph of Climatic data

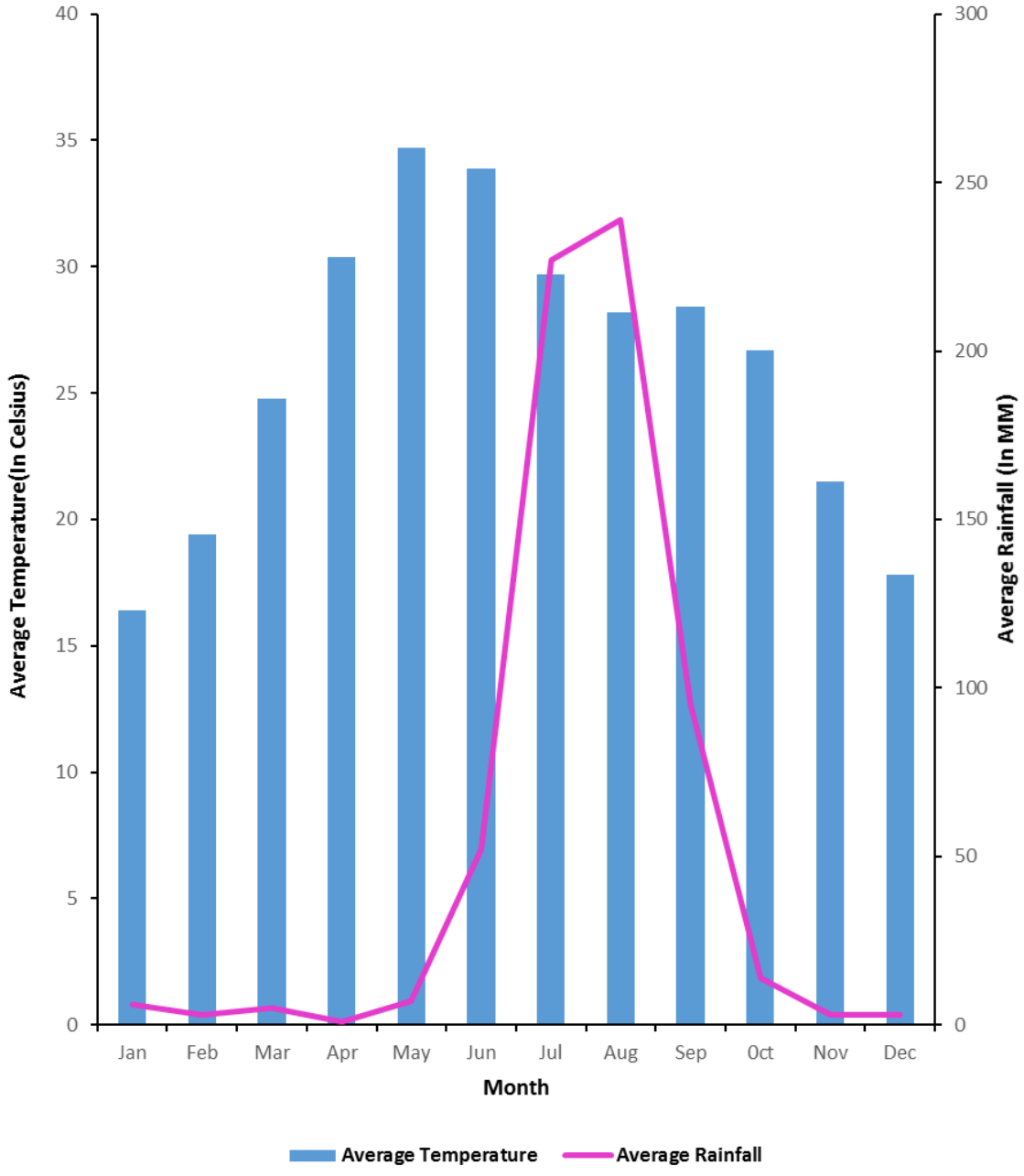

होते हैं। आधे जून के पश्चात् दक्षिण–पश्चिम मानसून की प्रगति पर तापमान में गिरावट होने लगती है।

(ख) सापेक्षित आर्द्रता –

यह वर्षा के समय अधिक होती है जो कि जून के तृतीय सप्ताह से प्रारम्भ होकर सितम्बर के मध्य तक अधिक होती है।

(ग) वर्षा –

देवली तहसील की औसत वर्षा 655 मिलीमीटर है। वर्षा का अधिकांश भाग जून से सितम्बर के मध्य प्राप्त होता है। जुलाई व अगस्त महीनों में सर्वाधिक वर्षा होती है।

**तालिका संख्या 2.1**

**देवली तहसील : तापमान एवं वर्षा (2015)**

| माह | जनवरी | फरवरी | मार्च | अप्रेल | मई | जून | जुलाई | अगस्त | सितम्बर | अक्टू. | नवंबर | दिसंबर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| औसत तापमान ($^0$C) | 16.4 | 19.4 | 24.8 | 30.4 | 34.7 | 33.9 | 29.7 | 28.2 | 28.4 | 26.7 | 21.5 | 17.8 |
| वर्षा (मि.मि.) | 6 | 3 | 5 | 1 | 7 | 52 | 227 | 239 | 95 | 14 | 3 | 3 |

स्त्रोत : कार्यालय मौसम विज्ञान केन्द्र, जयपुर।

**वनस्पति :–**

यहाँ की पादप सम्पदा मुख्यतया शुष्क पर्णपाती है। जिसमें कूमटा, बबूल, अरूंज, धौंक, खेजड़ी, कैर, बेकल या ककेड़ा, पीलू, शीशम, सिरस, थोर, गांगन आदि सम्मिलित हैं।

वर्ष 2014–15 के अनुसार

कुल वन क्षेत्र – 11697.05 हैक्टेयर

आरक्षित क्षेत्र – 325.84 हैक्टेयर

संरक्षित क्षेत्र – 11350.94 हैक्टेयर

अवर्गीकृत क्षेत्र – 20.27 हैक्टेयर

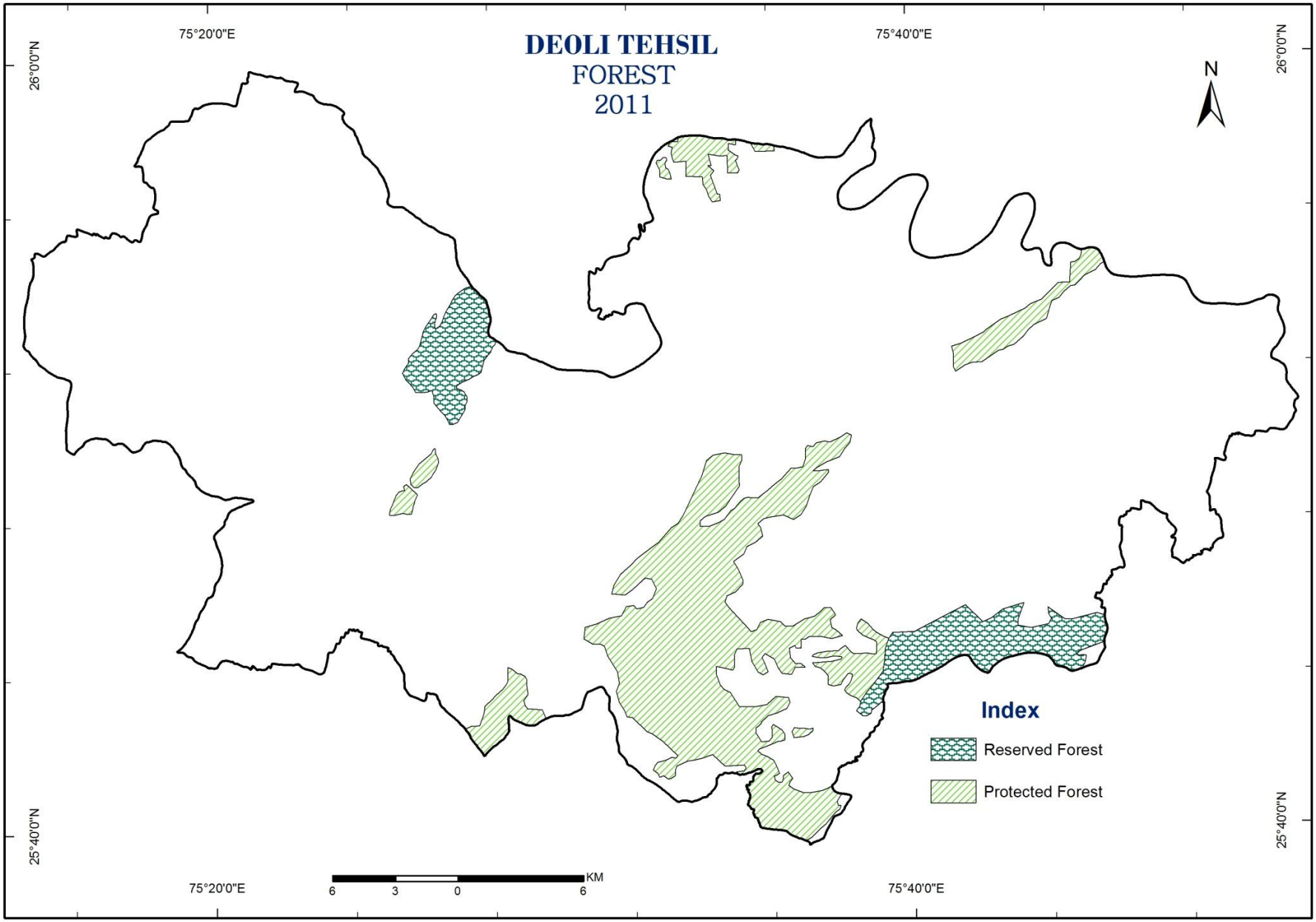
DEOLI TEHSIL
FOREST
2011
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Index
Reserved Forest
Protected Forest
6 3 0 6
KM

**मृदा :–**

देवली तहसील के दक्षिणी पूर्वी भाग में पीली भूरी मिट्टी पाई जाती है जो मध्यम उत्पादकता वाली है। बनास बेसिन इसी मिट्टी से आवृत्त है। नत्रजन एवं फास्फेट की कमी तथा ह्यूमस की पर्याप्तता वाली इस मिट्टी में बाजरा, मूंगफली, ज्वार एवं दलहन का उत्पादन होता है। देवली तहसील के पश्चिमी भाग में देवली शहर से बनास नदी तक भूरी क्षारीय मिट्टी पाई जाती है। इस मिट्टी में नमक के कणों का आधिक्य होने के कारण ऊसरपन पाया जाता है। निम्न उत्पादन क्षमता वाली इस मिट्टी में ग्वार, बाजरा एवं तिल बोया जाता है। देवली तहसील के छोटे–छोटे पहाड़ी क्षेत्रों में पहाड़ी मिट्टी पाई जाती है।

**खनिज संसाधन :–**

देवली तहसील में राजमहल, गाँवड़ी, देवखेड़ा, कुशलपुरा में गारनेट खनिज पाया जाता है। इसके अलावा पट्टी कातला खनिज बीसलपुर में, स्लेट स्टोन घाड़ में, फाइलाइट शिष्ट राजकोट व आंवा में मिलता है।[1]

**कृषि :–**

राजस्थान में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। राज्य की अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं पशुपालन से ही अपना जीविकोपार्जन करती है। कृषि न केवल ग्रामीण जनसंख्या के व्यवसाय एवं आय का आधार है बल्कि औद्योगिक कच्चे माल का स्त्रोत और राज्य की अर्थव्यवस्था की आधारशिला भी है। राजस्थान में कृषि, तापक्रम व वर्षा के वितरण, उच्चावच तथा मिट्टी की दशाओं से प्रभावित होती है।

## तालिका संख्या 2.2
## देवली तहसील : प्रमुख फसलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन (2014–15)

| क्र.सं. | फसल | क्षेत्रफल (हेक्टेयर) | उत्पादन (मैट्रिक टन) |
|---|---|---|---|
| 1. | मक्का | 2373 | 2600.80 |
| 2. | ज्वार | 4656 | 3142.8 |
| 3. | ग्वार | 226 | 77.35 |
| 4. | उड़द | 1303 | 687.484 |
| 5. | मूंग | 583 | 316.114 |
| 6. | तिल | 927 | 177.84 |
| 7. | मूंगफली | 614 | 688.13 |
| 8. | कपास | 1028 | _ |
| 9. | चरी ज्वार | 799 | _ |
| 10. | गेहूँ | 10991 | 22994.51 |
| 11. | जौ | 696 | 1214.475 |
| 12. | चना | 985 | 749.452 |
| 13. | सरसों | 44981 | 42147.197 |
| 14. | तारामीरा | 27 | 17.612 |
| 15. | जीरा | 195 | 30.1 |
| 16. | सौंफ | 132 | 22 |

स्त्रोत : कार्यालय जिला कलेक्टर, (भू अभि.) जिला टोंक।

**सिंचाई :–**

तालिका संख्या 2.3 से स्पष्ट होता है कि देवली तहसील में सर्वाधिक सिंचाई कुओं व नलकूपों द्वारा की जाती है जो कुल सिंचित क्षेत्रफल का 82.28 प्रतिशत है।

**तालिका संख्या 2.3**

**देवली तहसील : साधनों के अनुसार कुल सिंचित क्षेत्रफल**

| साधन | क्षेत्रफल (हैक्टेयर में) | क्षेत्रफल (प्रतिशत में) |
|---|---|---|
| कुएँ व नलकूप | 16851.78 | 82.28 |
| तालाब व झीलें | — | — |
| नहरें | 1960.02 | 9.57 |
| अन्य साधन | 1667.41 | 8.15 |
| योग :— | 20479.21 | 100 |

स्त्रोत : कार्यालय जिला कलेक्टर (भू. अभि.) जिला टोंक।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि तहसील में तालाब व झीलों द्वारा सिंचित क्षेत्र बिल्कुल भी नहीं है।

**भूमि उपयोग :—**

**तालिका संख्या 2.4**

**देवली तहसील : भूमि उपयोग : 2011**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | देवली (कुल भौगोलिक क्षेत्रफल ग्राम पत्रों के क्षेत्रफल हैक्टेयर के अनुसार)[2] | 115939.02 | _ |
| 2. | वन | 10147.09 | 8.75% |
| 3. | कृषि अयोग्य भूमि | 11750.34 | 10.13% |
| 4. | अन्य अकृषि भूमि (पड़त को छोड़कर) | 16881.97 | 14.56% |
| 5. | पड़त भूमि | 14696.88 | 12.67% |
| 6. | वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल (दुपज घटाकर) | 62462.74 | 53.88% |

**पशुधन :—**

पशुगणना 2012 के अनुसार देवली तहसील में पशुओं की संख्या 240657 थी जिनमें 47006 (19.53%) गाय व बैल, 66957 (27.82%) भैंस व भैंसे, 70 (.029%) ऊँट, 75508 (31.37%) बकरे व बकरियां, 40204 (16.70%) भेड़ें, 228 (0.094%) घोड़े व ट्टू, 41 (0.017%) गधे व खच्चर, 2362 (0.98%) सूअर, 140 (0.050%) खरगोश, 1421 (0.59%) कुत्ते, 6720 (2.79%) कुक्कुट थे।

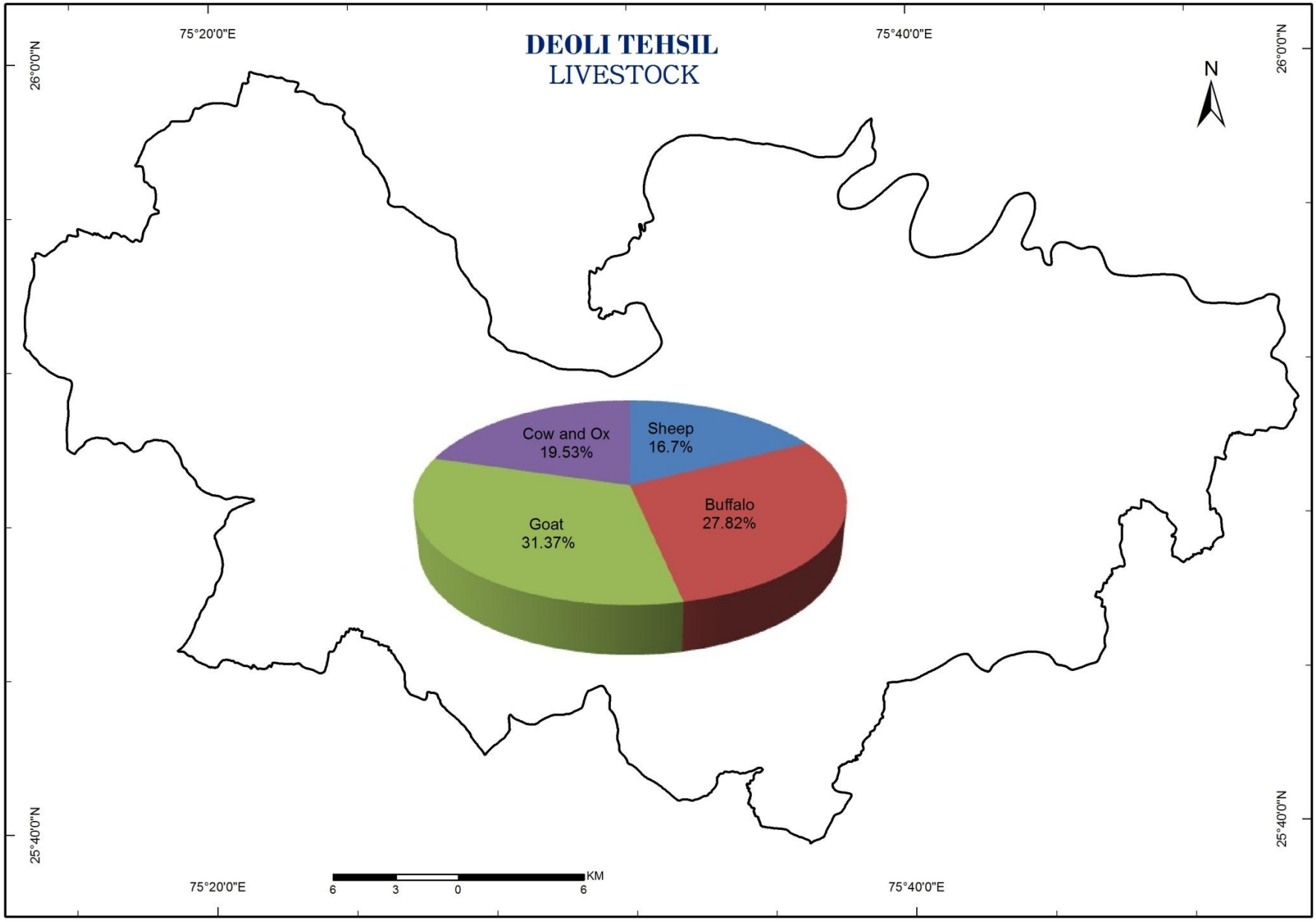
DEOLI TEHSIL
LIVESTOCK
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Cow and Ox
19.53%
Sheep
16.7%
Buffalo
27.82%
Goat
31.37%
6
3
0
6
KM

**जनसंख्या :–**

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार देवली तहसील की जनसंख्या 214408 है, जिसमें 110648 पुरूष तथा 103760 स्त्रियाँ हैं।[3] इस तहसील की जनसंख्या समस्त जिले की जनसंख्या का 15.08 प्रतिशत है। जिले में देवली तहसील का जनसंख्या की दृष्टि से चौथा स्थान है। प्रशासनिक व्यवस्था की दृष्टि से टोंक जिले में सात उपखण्ड– देवली, मालपुरा, निवाई, टोडारायसिंह, टोंक, उनियारा, पीपलू तथा सात तहसीलें हैं। देवली तहसील देवली उपखण्ड के अन्तर्गत आती है।

तहसील की जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या का बाहुल्य है। क्योंकि तहसील की कुल जनसंख्या की 89.70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में तथा 10.30 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है।

सन् 2001 में देवली तहसील की जनसंख्या 189297 थी जो बढ़कर सन् 2011 में 13.27 प्रतिशत वृद्धि दर के साथ 214408 हो गयी। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में 13. 63 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्रों में 10.18 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

देवली तहसील का कुल क्षेत्रफल टोंक जिले के कुल क्षेत्रफल का 17.07 प्रतिशत है। तहसील में जहां 2001 में जनसंख्या घनत्व 154 व्यक्ति प्रति वर्गकिमी था बढ़कर सन् 2011 में 175 व्यक्ति प्रति वर्गकिमी हो गया।

अध्ययन क्षेत्र में सन् 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या 938 है जो ग्रामीण क्षेत्रों में 950 तथा नगरीय क्षेत्रों में 837 है। एक महत्वपूर्ण बात जो देखने में आयी है वह यह है कि स्त्री–पुरुष अनुपात नगरीय क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक दर्ज किया गया।

**अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति जनसंख्या :–**

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार तहसील की कुल जनसंख्या में से 45292 (21.12%) व्यक्ति अनुसूचित जाति के तथा 43738 (20.40%) व्यक्ति अनुसूचित जनजाति के हैं।

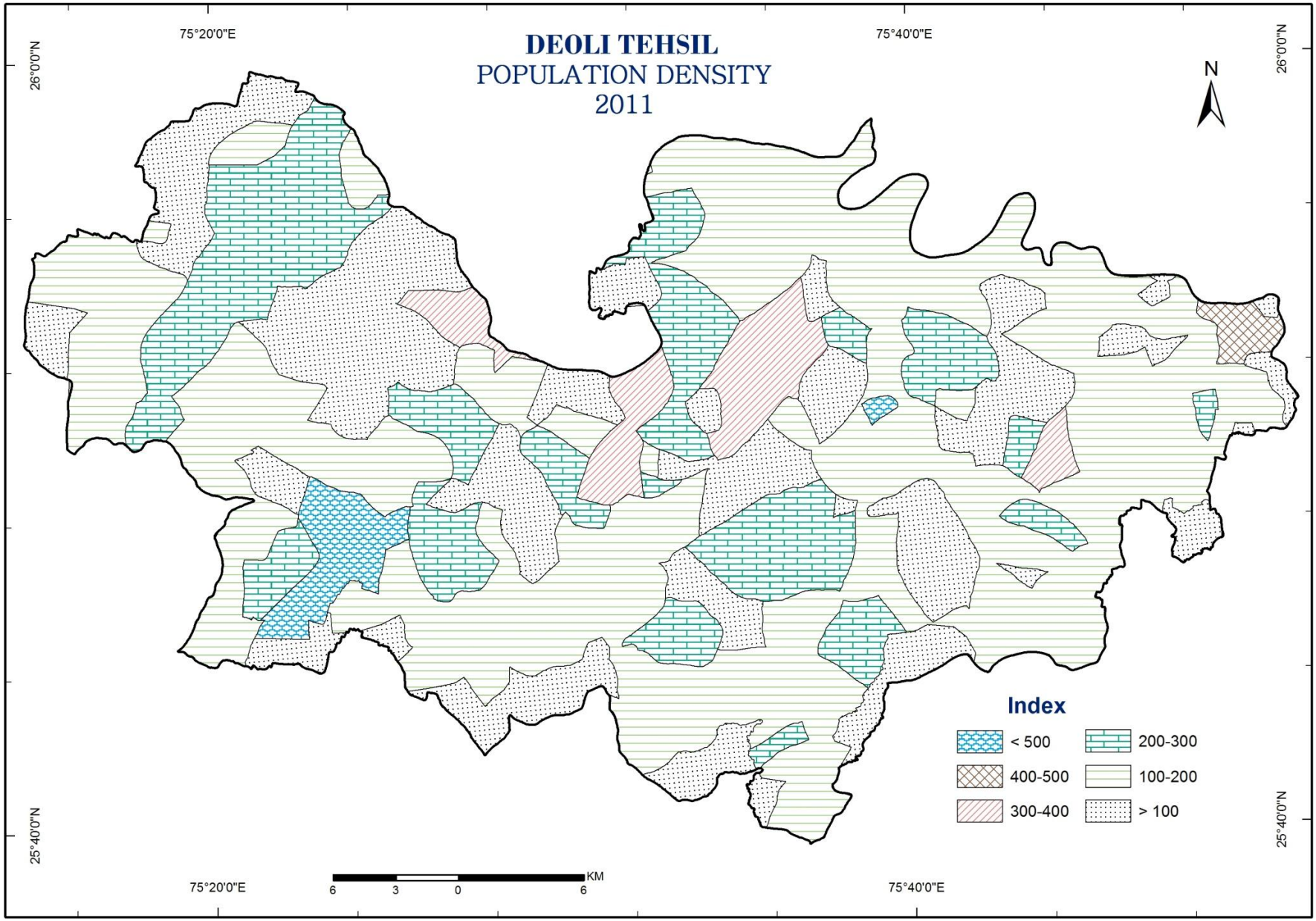
DEOLI TEHSIL
POPULATION DENSITY
2011
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Index
< 500
200-300
400-500
100-200
300-400
> 100
KM
6
3
0
6

अनुसूचित जाति की 21.40 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों तथा 18.68 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती हैं। इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति की 22.30 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में तथा 3.83 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है।

**कार्यशील व अकार्यशील जनसंख्या :–**

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार देवली तहसील की कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या 105918 तथा अकार्यशील जनसंख्या 108490 है।

**तालिका संख्या 2.5**

**देवली तहसील : कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या**

| कार्यशील | कुल | | कुल | पुरुष | स्त्रियाँ |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. कुल कार्यशील | 105918 | ग्रामीण | 98271 | 52876 | 45395 |
| | | नगरीय | 7647 | 6639 | 1008 |
| ए. मुख्य कार्यशील | 76613 | ग्रामीण | 69402 | 42797 | 26605 |
| | | नगरीय | 7211 | 6340 | 871 |
| अ. काश्तकार | 43529 | ग्रामीण | 43449 | 25400 | 18049 |
| | | नगरीय | 80 | 73 | 7 |
| ब. खेतीहर मजदूर | 9757 | ग्रामीण | 9671 | 4483 | 5188 |
| | | नगरीय | 86 | 67 | 19 |
| स. कुटुम्बी | 1440 | ग्रामीण | 960 | 670 | 290 |
| | | नगरीय | 480 | 354 | 126 |
| द. अन्य | 21887 | ग्रामीण | 15322 | 12244 | 3078 |
| | | नगरीय | 6565 | 5846 | 719 |
| बी. सीमान्त कार्य करने वाले | 29305 | ग्रामीण | 28869 | 10079 | 18790 |
| | | नगरीय | 436 | 299 | 137 |
| अ. काश्तकार | 12272 | ग्रामीण | 12267 | 3548 | 8719 |
| | | नगरीय | 5 | 2 | 3 |
| ब. खेतीहर मजदूर | 10064 | ग्रामीण | 10026 | 3142 | 6884 |
| | | नगरीय | 38 | 36 | 2 |
| स. कुटुम्बी | 608 | ग्रामीण | 566 | 247 | 319 |
| | | नगरीय | 42 | 20 | 22 |
| द. अन्य | 6361 | ग्रामीण | 6010 | 3142 | 2868 |
| | | नगरीय | 351 | 248 | 103 |
| 2. अकार्यशील | 108490 | ग्रामीण | 94072 | 45761 | 48311 |
| | | नगरीय | 14418 | 5372 | 9046 |

स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 2011, राजस्थान।

**सहकारिता :–**

तहसील में कुल 29 सहकारी समितियां हैं जिनमें कृषि सहकारी समिति, अकृषि सहकारी समिति तथा अन्य सहकारी समितियां मुख्य हैं।

**चिकित्सा एवं स्वास्थ्य :–**

स्वास्थ्य सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए अध्ययन क्षेत्र में 3 सरकारी चिकित्सालय, 7 स्वास्थ्य केन्द्र, 11 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 53 प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र, 8 परिवार कल्याण केन्द्र तथा 13 डिस्पेंसरी खोली गई है। ये सभी केन्द्र तहसील के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाऐं दे रहे हैं।

**संचार :–**

अध्ययन क्षेत्र में सड़क ही आवागमन का प्रमुख साधन है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 सर्वाधिक व्यस्त मार्ग है। जो कि तहसील के मध्य से बन्थली, संथली, सरोली, अंबापुरा, पोलीयारा, सिरोही, धान्धोली, माधोसिंहपुरा, गोपीपुरा, विजयगढ़, भरना, नरसिंहपुरा अधिवासों से होकर गुजरता है।[4] रेल परिवहन का सम्पूर्ण तहसील में अभाव है। देवली तहसील से राज्य के प्रमुख जिलों के लिए नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं। संचार की अन्य सेवाओं के रूप में तहसील में 5 डाकघर, 106 अधिवासों में दूरभाष, 5 अधिवासों में कूरियर सेवा उपलब्ध है।

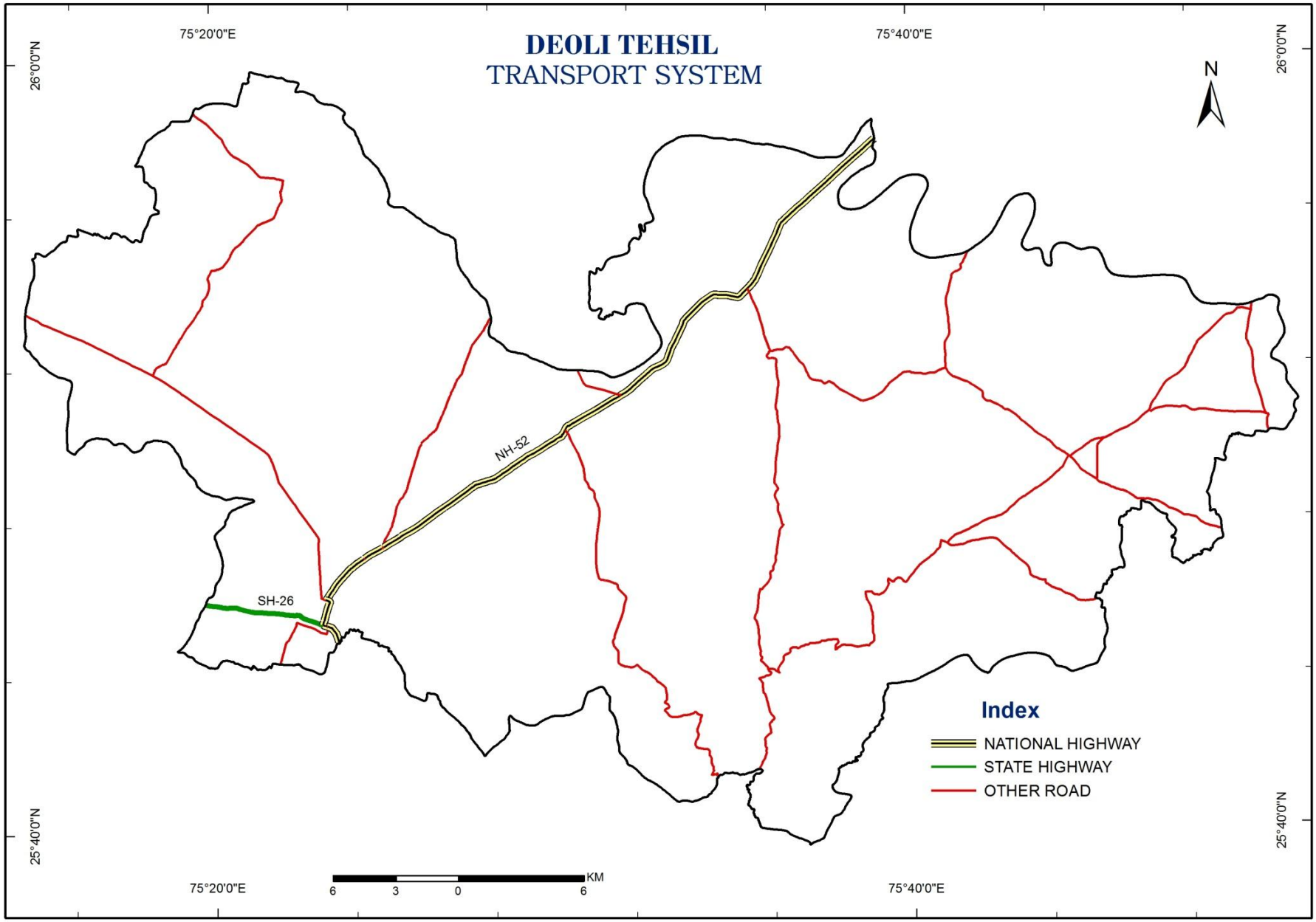

DEOLI TEHSIL
TRANSPORT SYSTEM
N
Index
NATIONAL HIGHWAY
STATE HIGHWAY
OTHER ROAD
NH-52
SH-26
26°0'0"N
25°40'0"N
75°40'0"E
75°20'0"E
6 3 0 6 KM

## संदर्भ सूची


1. स्त्रोत : कार्यालय सहायक खनिज अभियन्ता, खान एवं भूविज्ञान विभाग, टोंक।
2. स्त्रोत : कार्यालय जिला कलक्टर भू अभिलेख, टोंक।
3. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा 2011
4. स्त्रोत : कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, टोंक।

# अध्याय तृतीय

## कार्यों का स्थानिक वितरण

**केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना :–**

केन्द्रीय कार्य वे कार्य होते हैं, जो कुछ ही अधिवासों में केन्द्रीय अवस्थिति के आधार पर उपलब्ध होते हैं लेकिन जिनका उपयोग कई अधिवासों द्वारा किया जाता है।[1] स्थलाकृति, क्षेत्र की जनसंख्या, अधिवासों का आकार, केन्द्रीय कार्यों का अंतर व केन्द्रीय कार्यों का क्षेत्र, केन्द्रीय कार्यों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए निम्न पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिये। यह अध्ययन क्षेत्र में भविष्य के संतुलित विकास की योजना में अवश्य सहायक होगा।

**अधिवासों का आकार व केन्द्रीयता :–**

सामान्यतः अधिवासों का आकार ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक विकास को आकर्षित करता है। यदि सरकारी संस्थाएँ क्षेत्र विशेष में कुछ नए राजनीतिक तंत्र या आर्थिक विकास की योजनाओं को लागू करने की योजना बनाना चाहती है तो सर्वप्रथम अधिवास के आकार पर विचार किया जाता है।[2] यह प्रेक्षण किया गया है कि अध्ययन क्षेत्र में बड़े आकार के अधिवासों में सामान्यतः उच्चक्रम के केन्द्रीय कार्य मिलते हैं जबकि छोटे आकार के अधिवास जहां कोई केन्द्रीय कार्य नहीं होते वे आश्रित अधिवास कहलाते हैं जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़े आकार के अधिवासों पर आश्रित होते हैं।

**केन्द्रीय कार्यों का अन्तराल :–**

सेवा केन्द्रों का अंतराल मुख्य रूप से उनके आकार व कार्यों का विषय है। वे अधिवास जो उच्चक्रम के कार्यों को रखते हैं, अधिक दूरी तक फैले होते हैं जबकि वे जो निम्न श्रेणी के कार्यों से संबंधित होते हैं, कम दूरी तक फैले होते हैं। इसके बावजूद यह ध्यान में रखना चाहिये कि दिये गये केन्द्रीय कार्य का अपेक्षित महत्त्व क्या है ? उनके बीच की दूरी क्या है ? क्या ये उपभोक्ता

के अनुकूल हैं या नहीं ? वितरण का स्थानिक प्रतिरूप क्या है ? इन सभी का अध्ययन पूर्ण रूप से आवश्यक है।

**शैक्षिक सुविधाएँ :–**

आर्थिक विकास में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है। शिक्षा चाहे प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक किसी भी स्तर की हो क्षेत्रीय विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप :–

प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य है। कहा जाता है कि राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ठ सम्बन्ध प्राथमिक शिक्षा का है उतना माध्यमिक या उच्च माध्यमिक का नहीं।

**तालिका संख्या 3.1**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | प्राथमिक विद्यालयों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | 90 |
| 2000 - 4999 | 13 | 18 |
| 5000 से अधिक | 8 | 33 |
| योग | 170 | 141 |

स्त्रोत : कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी प्राथमिक, जिला टोंक।

तालिका संख्या 3.1 के अनुसार तहसील में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 141 है जो तहसील के 108 अधिवासों को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। तालिका के अनुसार तहसील के 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या नगण्य है। 500–1999 जनसंख्या वाले 88 अधिवासों में से केवल एक अधिवास विजयगढ़ में प्राथमिक विद्यालय नहीं है। अध्ययन क्षेत्र के कुछ बड़े अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या एक से अधिक है। जैसे– 500–1999 जनसंख्या वाले अधिवास सांवतगढ़, सैन्दियावास, चांदसिंहपुरा में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या प्रत्येक में

2 है। 2000–4999 जनसंख्या वाले अधिवास मालेड़ा, बीजवाड़, चांदली, बन्थली, डाबरकला में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या प्रत्येक में 2 है। 5000 से अधिक जनसंख्या वाले अधिवास दूनी में सर्वाधिक 7, राजमहल में 5, थांवला, नगरफोर्ट में 4–4, देवली, नासिरदा, आँवा प्रत्येक में 3 प्राथमिक विद्यालय हैं। नगरीय केन्द्र देवली में 4 प्राथमिक विद्यालय हैं।

सम्पूर्ण तहसील में प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी 2.87 किमी है।

उच्च प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.2**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालयों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | 38 |
| 2000 - 4999 | 13 | 14 |
| 5000 से अधिक | 8 | 17 |
| योग | 170 | 69 |

स्त्रोत : कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, प्राथमिक, जिला टोंक

तालिका संख्या 3.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि तहसील के कुल 170 अधिवासों में से 56 अधिवास इस सुविधा का उपभोग कर रहे हैं। तहसील के 114 अधिवास इस सुविधा से वंचित है। तहसील के 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवासों में एक भी उच्च प्राथमिक विद्यालय नहीं है। 500–1999 जनसंख्या वाले 88 अधिवासों में से 35 अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है जिनमें से सांवतगढ़, चांदसिंहपुरा, सैन्दियावास में प्रत्येक में 2 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। 2000–4999 जनसंख्या वाले सभी 13 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है जिनमें से चांदली में 2 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से आँवा व राजमहल में 3–3, दूनी व नगरफोर्ट में 2–2, देवली, नासिरदा, थांवला में 1–1–1 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। नगरीय केन्द्र देवली में 4 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं।

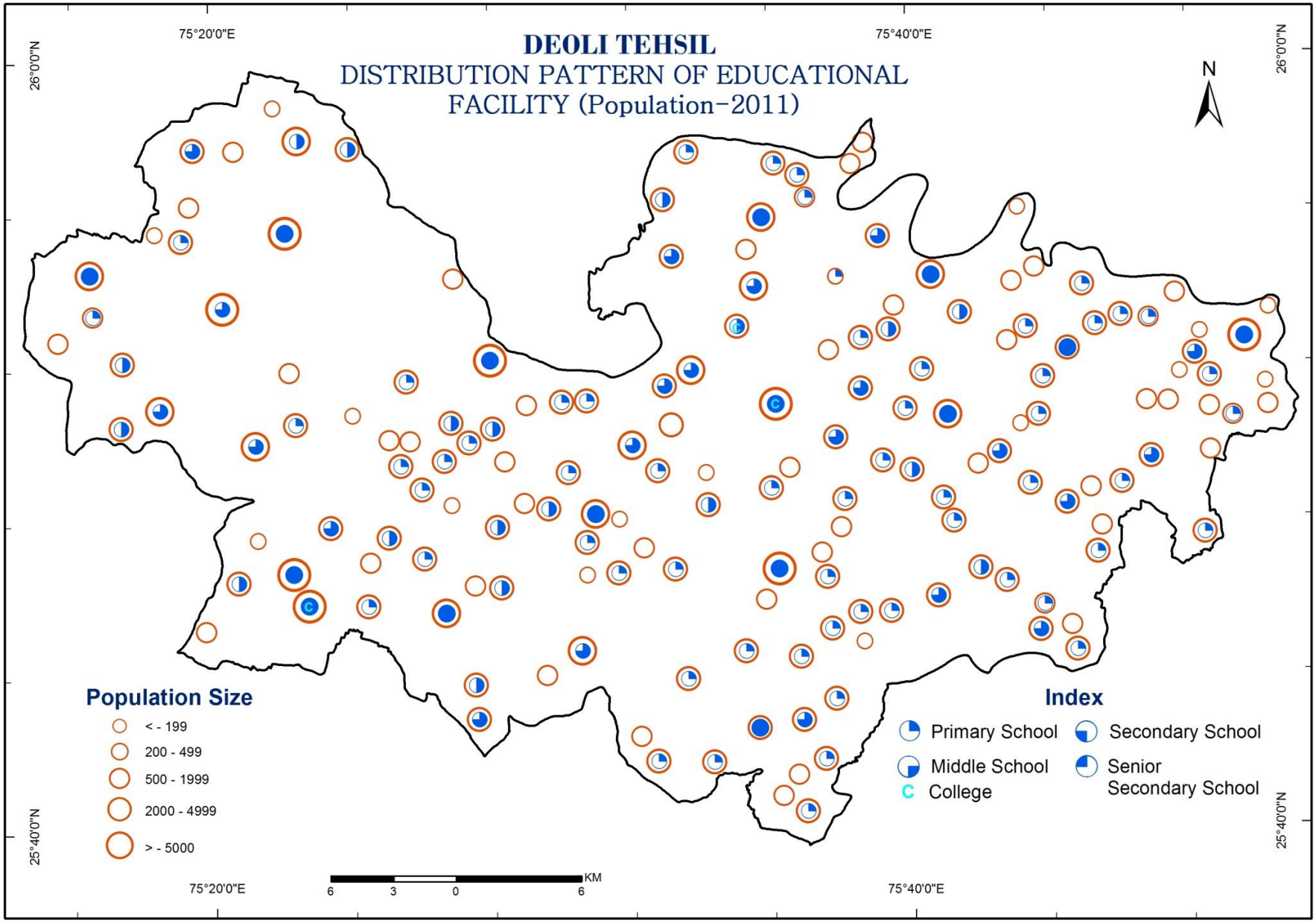
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF EDUCATIONAL FACILITY (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Primary School
Secondary School
Middle School
Senior Secondary School
C College
6 3 0 6 KM

सम्पूर्ण तहसील में उच्च प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी 4.11 किमी है।

माध्यमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.3**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | माध्यमिक विद्यालयों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | 16 |
| 2000 - 4999 | 13 | 12 |
| 5000 से अधिक | 8 | 11 |
| **योग** | **170** | **39** |

स्त्रोत : कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, जिला टोंक।

तहसील के कुल 170 अधिवासों में से 36 अधिवास ही इस सुविधा का उपभोग कर रहे हैं। तहसील के 500 से कम जनसंख्या वाले अधिवासों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या नगण्य है। 500–1999 जनसंख्या वाले 88 अधिवासों में से 16 अधिवासों में प्रत्येक में एक माध्यमिक विद्यालय है। 2000–4999 जनसंख्या वाले 13 अधिवासों में से मात्र एक अधिवास टीट्रियन में यह सुविधा नहीं है। 5000 से अधिक जनसंख्या वाले आठों अधिवासों में यह सुविधा है जिसमें से दूनी में 2 माध्यमिक विद्यालय हैं तथा नगरीय केन्द्र देवली में 3 माध्यमिक विद्यालय हैं।

सम्पूर्ण तहसील में माध्यमिक विद्यालयों की औसत दूरी 5.46 किमी है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.4**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | 02 |
| 2000 - 4999 | 13 | 06 |

| | | |
|---|---|---|
| 5000 से अधिक | 8 | 09 |
| योग | 170 | 17 |

स्त्रोत : कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, जिला टोंक।

अध्ययन क्षेत्र उच्च माध्यमिक विद्यालय सेवाओं की दृष्टि से बहुत ही पिछड़ा हुआ है। तालिका संख्या 3.4 से स्पष्ट होता है कि तहसील के कुल 170 अधिवासों में से मात्र 14 अधिवास ही इस सुविधा का लाभ उठा पा रहे हैं। 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवास इस सुविधा से वंचित हैं। 500–1999 जनसंख्या वाले 88 अधिवासों में से मात्र 2 अधिवास राजकोट व चारनेट में यह सुविधा उपलब्ध है। 2000–4999 जनसंख्या वाले 13 अधिवासों में से 6 अधिवास पनवाड़, धाड, घुंआकला, बीजवाड़, निवारियां, देवड़ावास इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से एक अधिवास दूनी में 2 उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं। नासिरदा, राजमहल, नगरफोर्ट, आँवा में प्रत्येक में 1 उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं। नगरीय केन्द्र देवली में 3 उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं।

सम्पूर्ण तहसील में उच्च माध्यमिक विद्यालयों की औसत दूरी 8.27 किमी है।

## स्वास्थ्य सुविधाएँ :–

देश की 68.8 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाएँ दयनीय दशा में हैं। देश में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता को सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न स्वास्थ्य इकाईयाँ कार्यरत हैं। अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी निम्न प्रकार है :–

स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.5**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | - |

| | | |
|---|---|---|
| 2000 - 4999 | 13 | 02 |
| 5000 से अधिक | 8 | 05 |
| **योग** | **170** | **07** |

स्त्रोत : कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला टोंक।

तहसील में स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण बहुत ही पिछड़ा हुआ है। तालिका संख्या 3.5 के अनुसार तहसील के कुल 170 अधिवासों में से मात्र 7 अधिवास ही इस सुविधा का लाभ उठा पा रहे हैं। शेष 162 अधिवास इस सुविधा से वंचित हैं। तालिका के अनुसार 2000 से कम जनसंख्या वाले कुल 149 अधिवासों में से एक भी अधिवास इस सुविधा का लाभ नहीं उठा पा रहा है। 2000–4999 जनसंख्या वाले 13 अधिवासों में से केवल दो अधिवास पनवाड़ तथा धुंआकला में यह सुविधा उपलब्ध है। 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से 5 अधिवासों दूनी, नासिरदा, थांवला, नगरफोर्ट, आँवा में यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी 12.89 किमी है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.6**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | प्राथमिक स्वा.केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | 03 |
| 2000 - 4999 | 13 | 03 |
| 5000 से अधिक | 8 | 05 |
| **योग** | **170** | **11** |

स्त्रोत : कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला टोंक। स्वास्थ्य केन्द्रों की तरह प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के वितरण की दृष्टि से भी तहसील पिछड़ी हुई है। तालिका संख्या 3.6 के अनुसार तहसील के कुल 170 अधिवासों में से मात्र 11 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है शेष 158 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवासों में से एक भी अधिवास में यह सुविधा

उपलब्ध नहीं है। 500–1999 जनसंख्या वाले 88 अधिवासों में से मात्र 3 अधिवास सीतापुरा, टोकरावास बूंदी, टोकरावास उनियारा में यह सुविधा उपलब्ध है। 2000–4999 जनसंख्या वाले 13 अधिवासों में से 3 अधिवास पनवाड़, धुंआकला, निवारियां तथा 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 5 अधिवासों दूनी, नासिरदा, राजमहल, नगरफोर्ट, आँवा में यह सुविधा उपलब्ध है। सम्पूर्ण तहसील में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी 10.28 कि.मी. है।

प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.7**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | प्राथमिक स्वा. उपकेन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | 01 |
| 200- 499 | 45 | 05 |
| 500 - 1999 | 88 | 29 |
| 2000 - 4999 | 13 | 11 |
| 5000 से अधिक | 8 | 07 |
| **योग** | **170** | **53** |

स्त्रोत : कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला टोंक।

स्वास्थ्य केन्द्रों तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की तुलना में प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों का वितरण थोड़ा अधिक है। तहसील में स्थित 170 अधिवासों में से 53 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है। 200 से कम जनसंख्या वाले मात्र एक अधिवास फूलसागर में यह सुविधा उपलब्ध है। 200–499 जनसंख्या वाले 45 अधिवासों में से मात्र 5 अधिवास रघुनाथपुरा, संग्रामपुरा, सरकावास, गोपालपुरा, बाजोली में यह सुविधा उपलब्ध है। 500–1999 जनसंख्या वाले 29 अधिवासों, 2000–4999 जनसंख्या वाले 11 अधिवासों, 5000 से अधिक जनसंख्या वाले सात अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है। देवली नगरीय केन्द्र में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है।

सम्पूर्ण तहसील में प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों की औसत दूरी 4.68 किमी है।

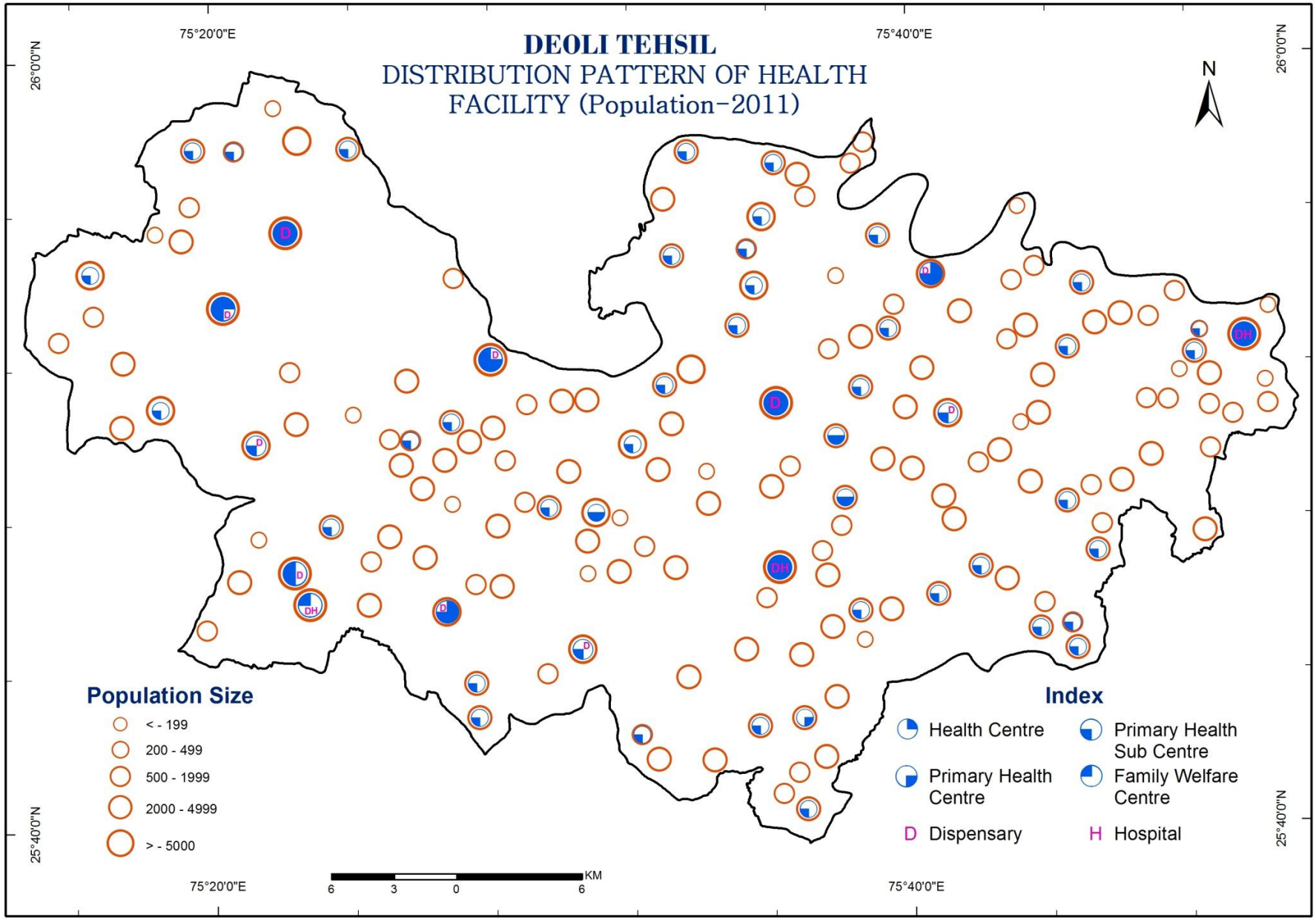

DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF HEALTH FACILITY (Population-2011)
N
26°0'0"N
25°40'0"N
75°40'0"E
75°20'0"E
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Health Centre
Primary Health Centre
D Dispensary
Primary Health Sub Centre
Family Welfare Centre
H Hospital
KM
6 3 0 6
D
DH

परिवार कल्याण केन्द्र का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.8**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | परिवार कल्याण केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | - |
| 2000 - 4999 | 13 | - |
| 5000 से अधिक | 8 | 08 |
| **योग** | **170** | **08** |

स्त्रोत : कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला टोंक।

तालिका 3.8 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में परिवार कल्याण केन्द्रों का वितरण बहुत ही दयनीय दशा में है। 5000 से कम जनसंख्या वाले 162 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। केवल 5000 से अधिक जनसंख्या वाले आठों अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में परिवार कल्याण केन्द्रों की औसत दूरी 12.06 किमी है।

उपरोक्त स्वास्थ्य सेवाओं के अलावा अध्ययन क्षेत्र में 2000–4999 जनसंख्या वाले 5 अधिवासों तथा 5000 से अधिक जनसंख्या वाले आठों अधिवासों में डिस्पेंसरी की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 3 अधिवासों, नगरफोर्ट, आँवा, देवली नगरीय केन्द्र में चिकित्सालय की सुविधा उपलब्ध है।

## संचार सुविधाएँ :–

संचार सुविधाएँ आधुनिक भारत के लिए मूलभूत ढांचा तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संचार सुविधाओं के आने से गाँवों के आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है और विकास के नए अवसर उपलब्ध होते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में संचार के विभिन्न साधनों का वितरण निम्न प्रकार है–

डाकघर का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.9**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार डाकघर का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | डाकघर की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | - |
| 2000 - 4999 | 13 | 01 |
| 5000 से अधिक | 8 | 04 |
| **योग** | **170** | **05** |

स्त्रोत : कार्यालय प्रधान डाकघर, जिला टोंक।

डाक सेवा संचार का प्राचीन साधन है। तालिका संख्या 3.9 को देखने से ज्ञात होता है कि तहसील के 2000 से कम जनसंख्या वाले 149 अधिवासों में से किसी भी अधिवास में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। 2000–4999 जनसंख्या वाले 13 अधिवासों में से एकमात्र अधिवास पनवाड़ में यह सुविधा उपलब्ध है। 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से मात्र 04 अधिवास दूनी, देवली, नासिरदा, देवली नगरीय केन्द्र में यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में डाकघरों की औसत दूरी 15.25 किमी है।

दूरभाष सेवाओं का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.10**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार दूरभाष सेवाओं का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | दूरभाष संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | 17 |
| 500 - 1999 | 88 | 68 |
| 2000 - 4999 | 13 | 13 |
| 5000 से अधिक | 8 | 08 |
| **योग** | **170** | **106** |

स्त्रोत : कार्यालय दूरसंचार विभाग, जिला टोंक।

तालिका संख्या 3.10 को देखने पर स्पष्ट होता है कि तहसील के 106 अधिवास दूरभाष सेवा का लाभ उठा रहे हैं। तालिका के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के 200 से कम जनसंख्या वाले 16 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। 200 से 499 जनसंख्या आकार के 17 अधिवास, 500 से 1999 जनसंख्या आकार के 68 अधिवास, 2000 से 4999 जनसंख्या आकार के सभी 13 अधिवास तथा 5000 से अधिक जनसंख्या वाले सभी 8 अधिवास इस सुविधा का उपभोग कर रहे हैं।

सम्पूर्ण तहसील में दूरभाष सेवा की औसत दूरी 3.31 किमी है।

कूरियर सेवाएँ :–

तहसील में कुल 170 अधिवासों में से मात्र 5 अधिवासों दूनी, देवली, नासिरदा, पनवाड़, देवली नगरीय केन्द्र में कूरियर की सेवा उपलब्ध है। तहसील के अन्य 165 अधिवास इस सुविधा से वंचित हैं।

सामान्य सेवा केन्द्र/इन्टरनेट कैफे :–

**तालिका संख्या 3.11**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार सामान्य सेवा केन्द्र/इंटरनेट कैफे का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | सामान्य सेवा केन्द्र/इंटरनेट कैफे संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | 30 |
| 2000 - 4999 | 13 | 12 |
| 5000 से अधिक | 8 | 08 |
| **योग** | **170** | **50** |

स्त्रोत : स्वयं सर्वे के आधार पर।

तालिका संख्या 3.11 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 500 से कम जनसंख्या वाले अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। 500 से 1999 जनसंख्या आकार के 30 अधिवासों, 2000–4999 जनसंख्या आकार के 12 अधिवासों

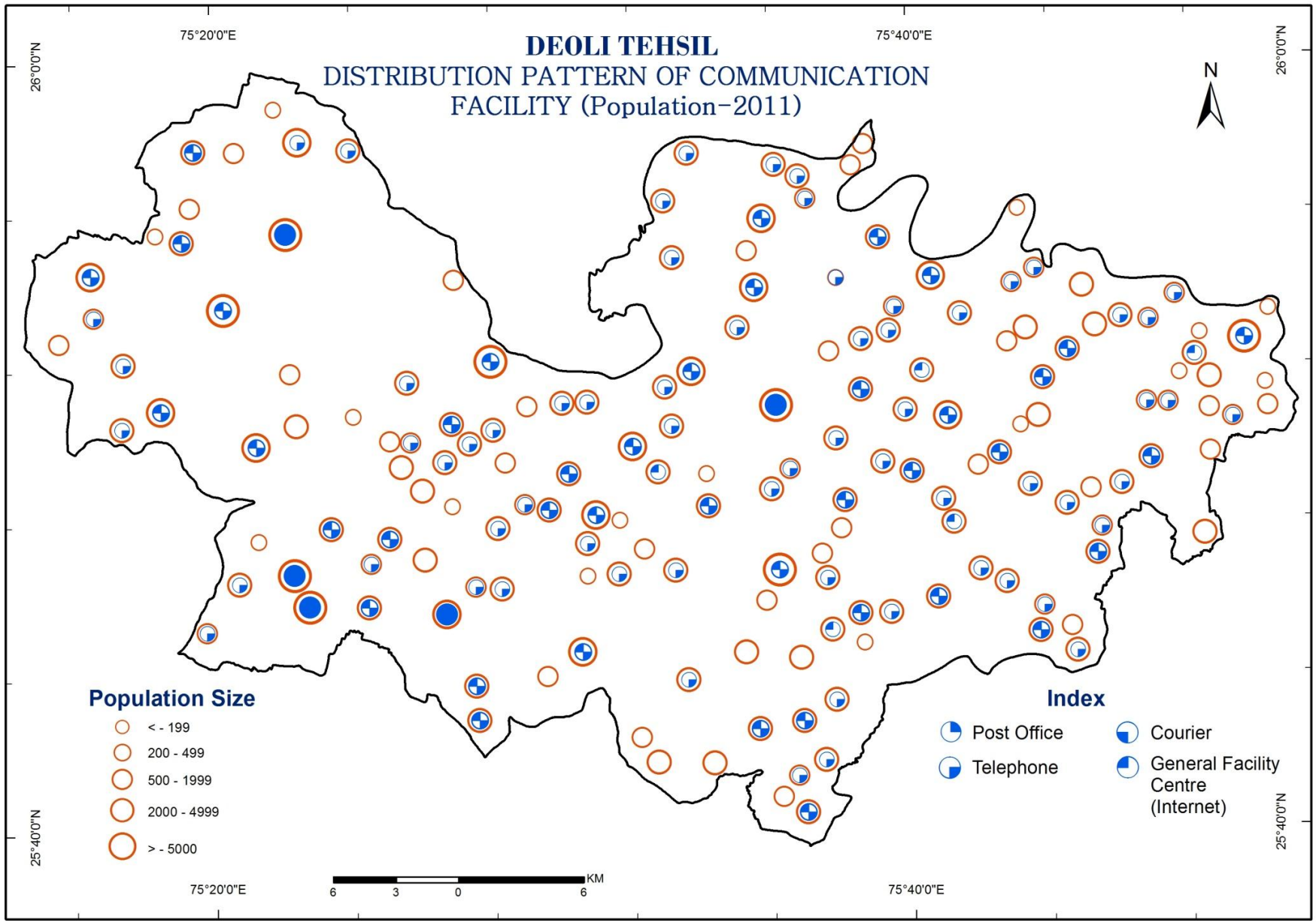
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF COMMUNICATION FACILITY (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Post Office
Telephone
Courier
General Facility Centre (Internet)
KM
6
3
0
6

तथा 5000 से अधिक जनसंख्या आकार वाले सभी आठों अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में सामान्य सेवा केन्द्रों की औसत दूरी 4.82 किमी है।

## पशु चिकित्सा सेवाएँ :–

भारत एक कृषि प्रधान देश है। किसी भी क्षेत्र का कृषि विकास किसी सीमा तक पशुओं पर निर्भर करता है। क्षेत्र में उपलब्ध पशु चिकित्सा सेवाओं को तालिका संख्या 3.12 में दर्शाया गया है।

पशु चिकित्सा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप :–

**तालिका संख्या 3.12**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार पशु चिकित्सा केन्द्रों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | पशु चिकित्सा केन्द्रों संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | 01 |
| 2000 - 4999 | 13 | 02 |
| 5000 से अधिक | 8 | 07 |
| **योग** | **170** | **10** |

स्त्रोत : कार्यालय पशु चिकित्सालय, जिला टोंक।

तालिका 3.12 से स्पष्ट होता है कि 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवासों में से किसी भी अधिवास में पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं है। 500 से 1999 के जनसंख्या आकार वाले 88 अधिवासों में से भी मात्र एक ही अधिवास कनवाड़ा इस सुविधा का लाभ उठा पा रहा है। 2000 से 4999 के जनसंख्या आकार वाले 13 अधिवासों में से 2 अधिवासों धाड़, संथली में यह सुविधा उपलब्ध है। 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से 5 अधिवास दूनी, नासिरदा, राजमहल, थांवला, नगरफोर्ट में प्रत्येक में एक तथा देवली नगरीय केन्द्र में 2 पशु चिकित्सा केन्द्र हैं।

सम्पूर्ण तहसील में पशु चिकित्सा केन्द्रों की औसत दूरी 10.78 किमी है।

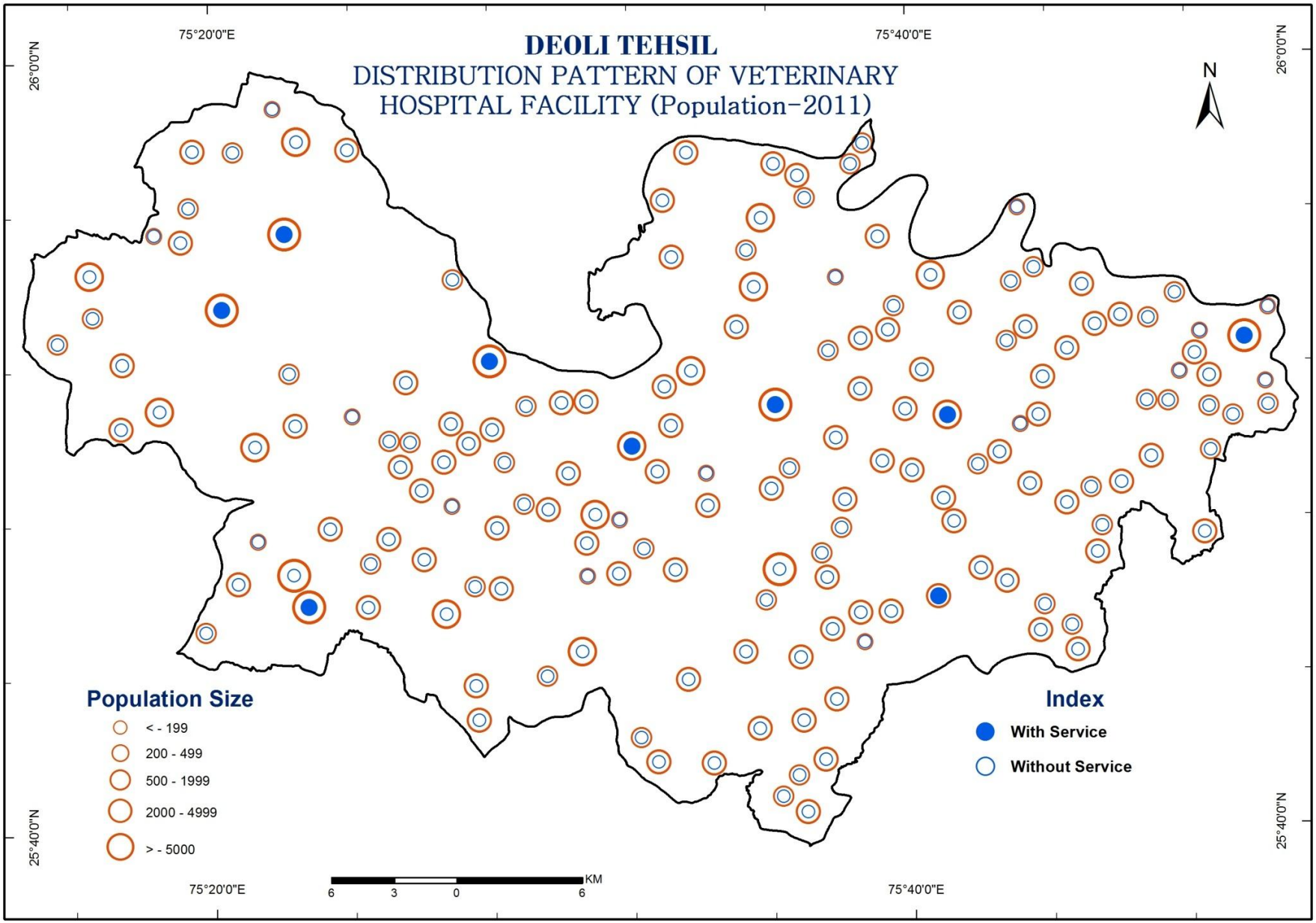
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF VETERINARY HOSPITAL FACILITY (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
With Service
Without Service
6 3 0 6 KM

**आवश्यक सेवाऐं :–**

रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकताएं हैं। इन आवश्यकताओं के अलावा भी मनुष्य की कई जरूरी आवश्यकताएँ होती हैं जैसे जल, विद्युत, राशन आदि।

**तालिका संख्या 3.13**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार आवश्यक सेवाओं का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | जल सेवाधारक अधिवास | विद्युत सेवाधारक अधिवास |
|---|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - | 14 |
| 200- 499 | 45 | - | 42 |
| 500 - 1999 | 88 | 19 | 86 |
| 2000 - 4999 | 13 | 08 | 13 |
| 5000 से अधिक | 8 | 08 | 08 |
| **योग** | **170** | **35** | **163** |

स्त्रोत : डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हेण्डबुक जिला टोंक।

तालिका संख्या 3.13 को देखकर यह स्पष्ट होता है कि तहसील के 170 अधिवासों में से मात्र 35 अधिवासों में ही जलसेवा (नल का पानी) उपलब्ध है। 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। 500 से 1999 जनसंख्या आकार के 19 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या आकार के 8 अधिवासों, 5000 से अधिक जनसंख्या आकार के सभी आठों अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है।

उपरोक्त तालिका 3.13 से यह भी स्पष्ट होता है कि 200 से कम जनसंख्या आकार के 16 अधिवासों में से 14 अधिवासों में विद्युत सेवा की सुविधा उपलब्ध है केवल 2 अधिवास देवड़ावास, नृसिंहपुरा इस सुविधा से वंचित है। 200 से 499 जनसंख्या आकार के 45 अधिवासों में से 42 अधिवास इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं केवल 3 अधिवास कल्याणपुरा, संग्रामपुरा, बाजोली इस सुविधा से वंचित हैं। 500 से 1999 जनसंख्या के 88 अधिवासों में 86 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है केवल 2 अधिवास महाराज कनवारपुरा, सुजानपुरा इस सुविधा से वंचित हैं। 2000 से 4999 जनसंख्या के सभी 13 अधिवासों तथा 5000 से अधिक जनसंख्या के सभी आठों अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में जलसेवा की औसत दूरी 5.76 किमी तथा विद्युत सेवा की औसत दूरी 2.67 किमी है।

**तालिका संख्या 3.14**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार खाद्य आपूर्ति केन्द्रों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | खाद्य आपूर्ति केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | 01 |
| 500 - 1999 | 88 | 46 |
| 2000 - 4999 | 13 | 13 |
| 5000 से अधिक | 8 | 8 |
| **योग** | **170** | **68** |

स्त्रोत : कार्यालय जिला रसद अधिकारी, जिला टोंक।

तालिका संख्या 3.14 को देखनें से यह स्पष्ट होता है कि 200 से कम जनसंख्या वाले किसी भी अधिवास में उचित मूल्य की दुकानें स्थित नहीं हैं। 200 से 499 जनसंख्या आकार के 45 अधिवासों में से मात्र 1 अधिवास बीसलपुर में यह सुविधा उपलब्ध है। 500 से 1999 जनसंख्या आकार के 46 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या आकार के सभी 13 अधिवासों, 5000 से अधिक जनसंख्या आकार के सभी आठों अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में खाद्य आपूर्ति केन्द्रों की औसत दूरी 4.14 किमी है।

**विश्राम गृह :–**

तहसील के 170 अधिवासों में से 8 अधिवासों चांदली, बीसलपुर, नगरफोर्ट, दूनी, देवली नगरीय केन्द्र, राजमहल, आँवा, देवली में विश्रामगृह स्थित है।

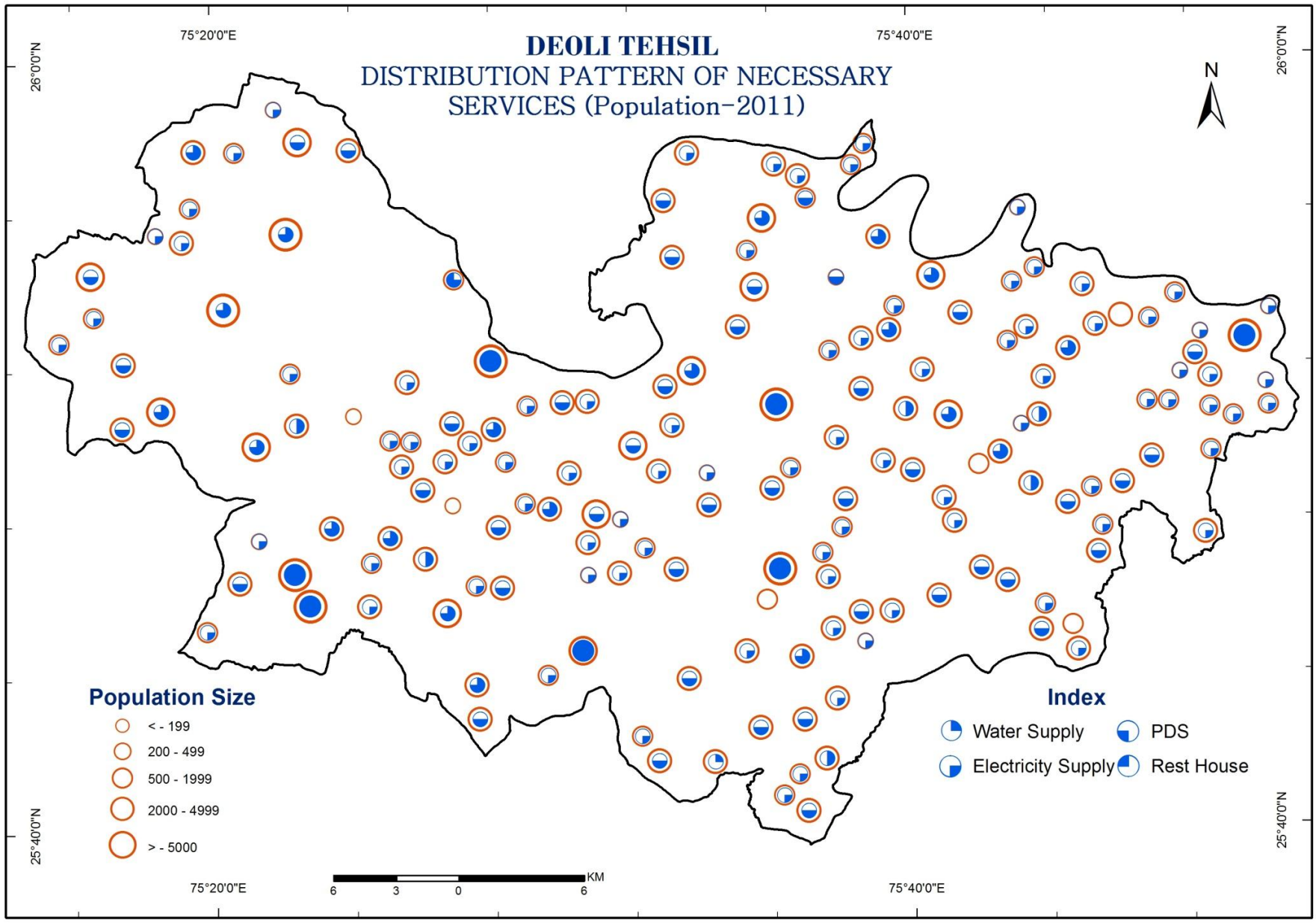
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF NECESSARY SERVICES (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Water Supply
PDS
Electricity Supply
Rest House
6
3
0
6
KM

**बैंकिंग :–**

किसी भी क्षेत्र के विकास में अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से बैंक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैंकों के वितरण की दृष्टि से तहसील बहुत ही पिछड़ी हुई है।

**तालिका संख्या 3.15**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार बैंकों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | बैंकों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | - |
| 500 - 1999 | 88 | - |
| 2000 - 4999 | 13 | 7 |
| 5000 से अधिक | 8 | 8 |
| **योग** | **170** | **15** |

स्त्रोत : डिस्ट्रक्ट सेन्सस हेण्डबुक, जिला टोंक।

तालिका संख्या 3.15 का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में बैंकिंग सेवा बहुत ही सीमित मात्रा में उपलब्ध है। यहां 2000 से कम जनसंख्या वाले किसी भी अधिवास में बैंकिंग सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। 2000 से 4999 जनसंख्या आकार के 7 अधिवासों तथा 5000 से अधिक जनसंख्या आकार के सभी आठों अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में बैंकिंग सेवा की औसत दूरी 8.81 किमी है।

**सहकारिता :–**

तहसील के 170 अधिवासों में से 29 अधिवासों में सहकारी समितियां स्थित हैं। 500 से कम जनसंख्या वाले किसी भी अधिवास में यह सुविधा नहीं है। 500 से 1999 जनसंख्या वाले 11 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या वाले 10 अधिवासों, 5000 से अधिक जनसंख्या वाले सभी आठों अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है।

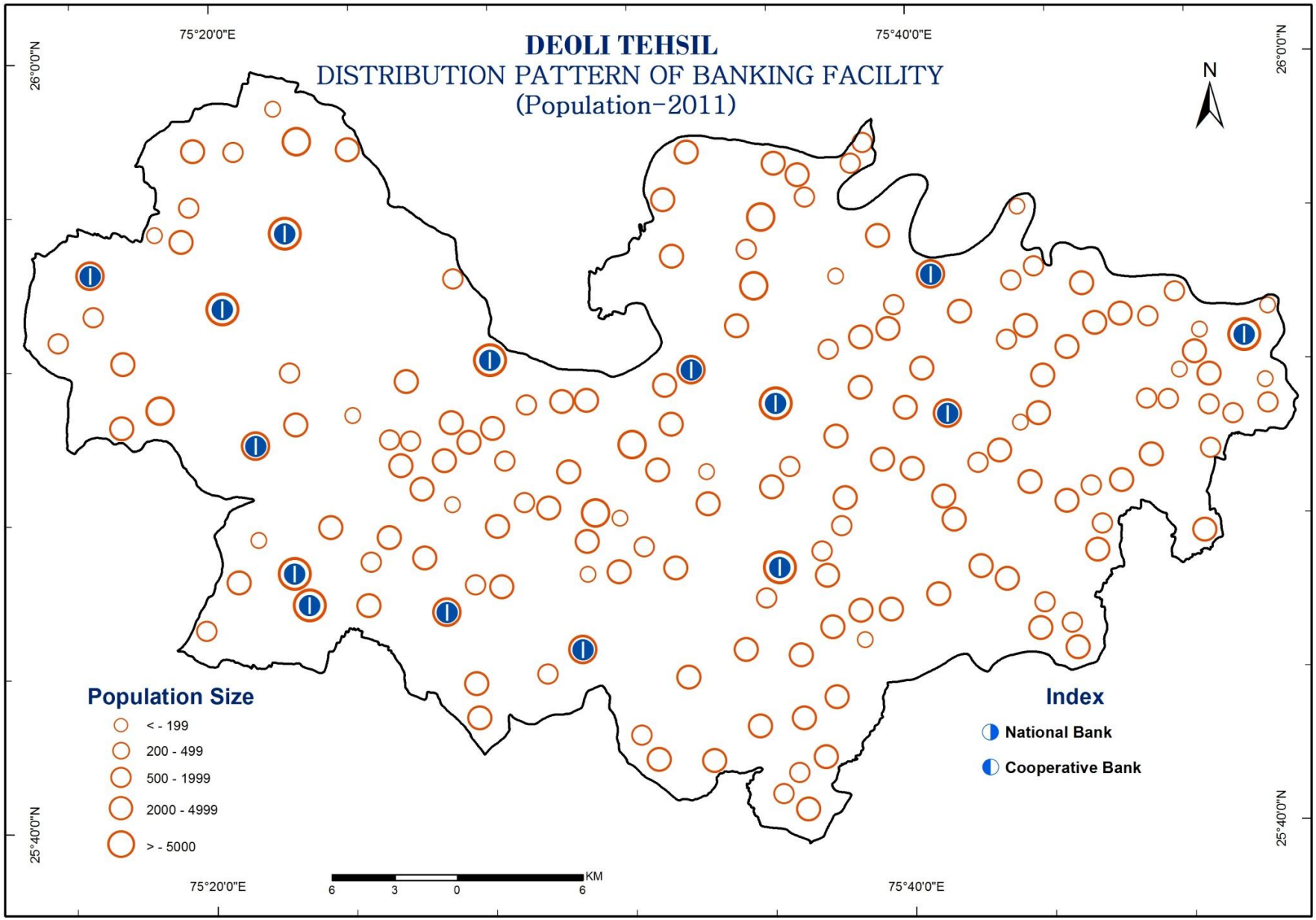
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF BANKING FACILITY
(Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
National Bank
Cooperative Bank
KM
6
3
0
6

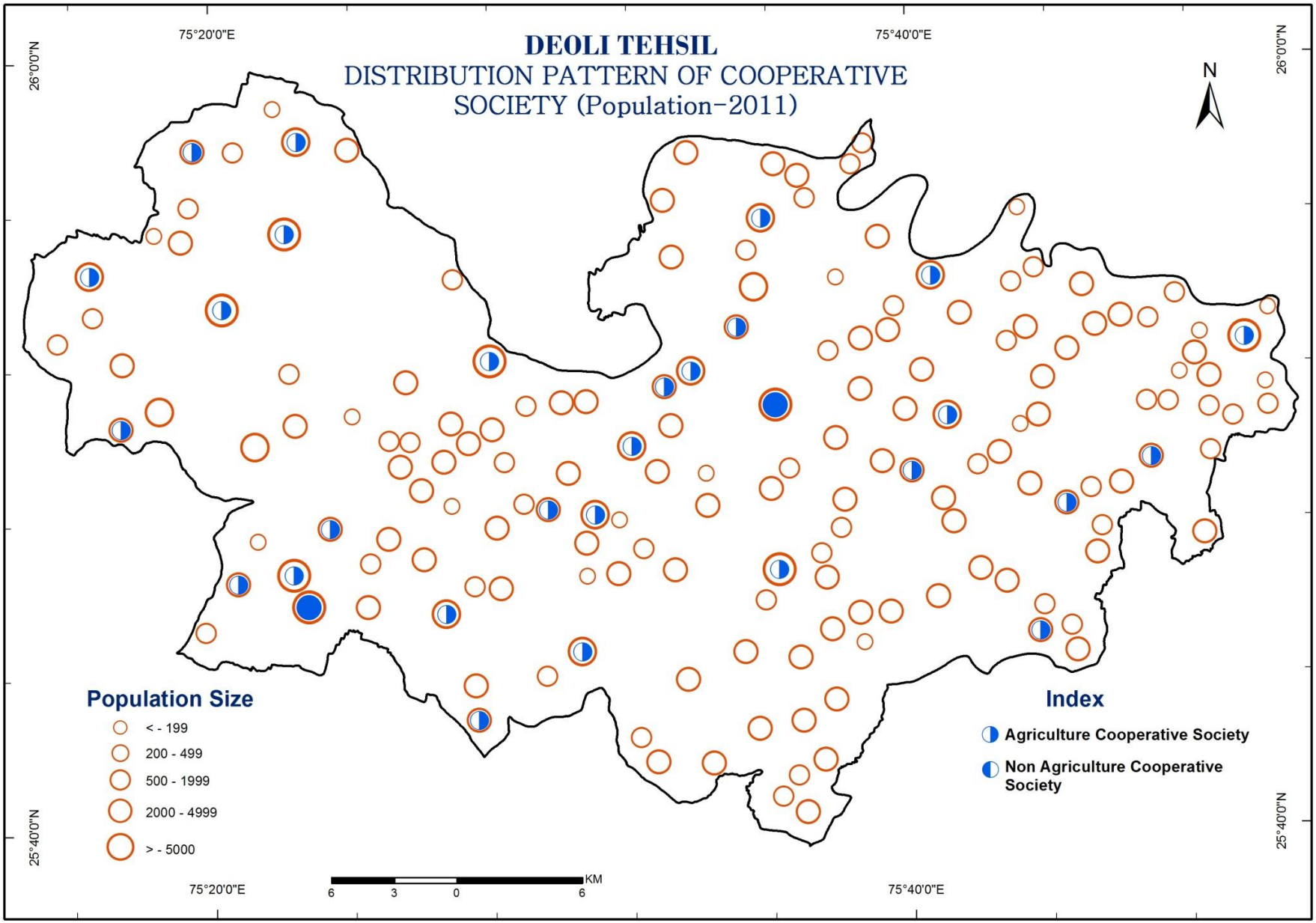
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF COOPERATIVE SOCIETY (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Agriculture Cooperative Society
Non Agriculture Cooperative Society
KM
6
3
0
6

**उर्वरक एवं कीटनाशक :–**

तालिका संख्या 3.16

**देवली तहसील :जनसंख्या आकार के अनुसार उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - |
| 200- 499 | 45 | 1 |
| 500 - 1999 | 88 | 19 |
| 2000 - 4999 | 13 | 12 |
| 5000 से अधिक | 8 | 8 |
| **योग** | **170** | **40** |

स्त्रोत : स्वयं सर्वे के आधार पर।

तहसील के 170 अधिवासों में से मात्र 40 अधिवास ही इस सुविधा का उपभोग कर रहे हैं। जबकि 130 अधिवास इस सुविधा से वंचित हैं।

तालिका संख्या 3.16 से स्पष्ट होता है कि 200 से कम जनसंख्या वाले किसी भी अधिवास में यह सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। 200 से 499 जनसंख्या वाले मात्र 1 अधिवास में, 500 से 1999 जनसंख्या वाले 19 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या वाले 19 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या वाले 12 अधिवासों, 5000 से अधिक जनसंख्या वाले सभी आठों अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों की औसत दूरी 5.39 किमी है।

**मनोरंजन :–**

तालिका संख्या 3.17

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार टेलीविजन तथा खेल मैदानों का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | टेलीविजन धारक अधिवासों की सं. | खेल मैदान धारक अधिवासों की सं. |
|---|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - | - |
| 200- 499 | 45 | - | 01 |
| 500 - 1999 | 88 | 31 | 88 |
| 2000 - 4999 | 13 | 13 | 13 |
| 5000 से अधिक | 8 | 08 | 08 |
| **योग** | **170** | **52** | **110** |

स्त्रोत : डिस्ट्रीक्ट सेन्सस हैण्डबुक जिला टोंक

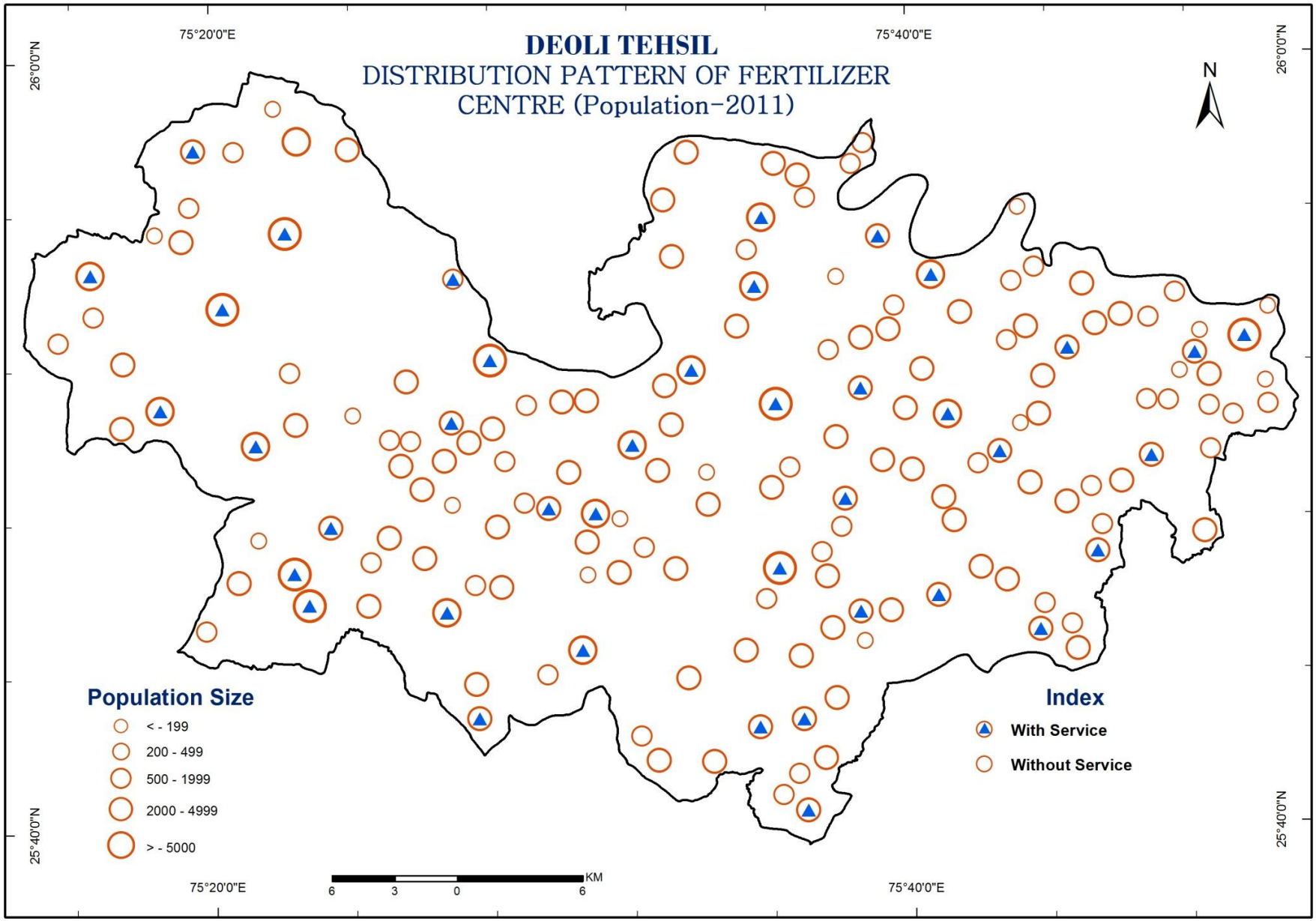
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF FERTILIZER
CENTRE (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
With Service
Without Service
6
3
0
6
KM

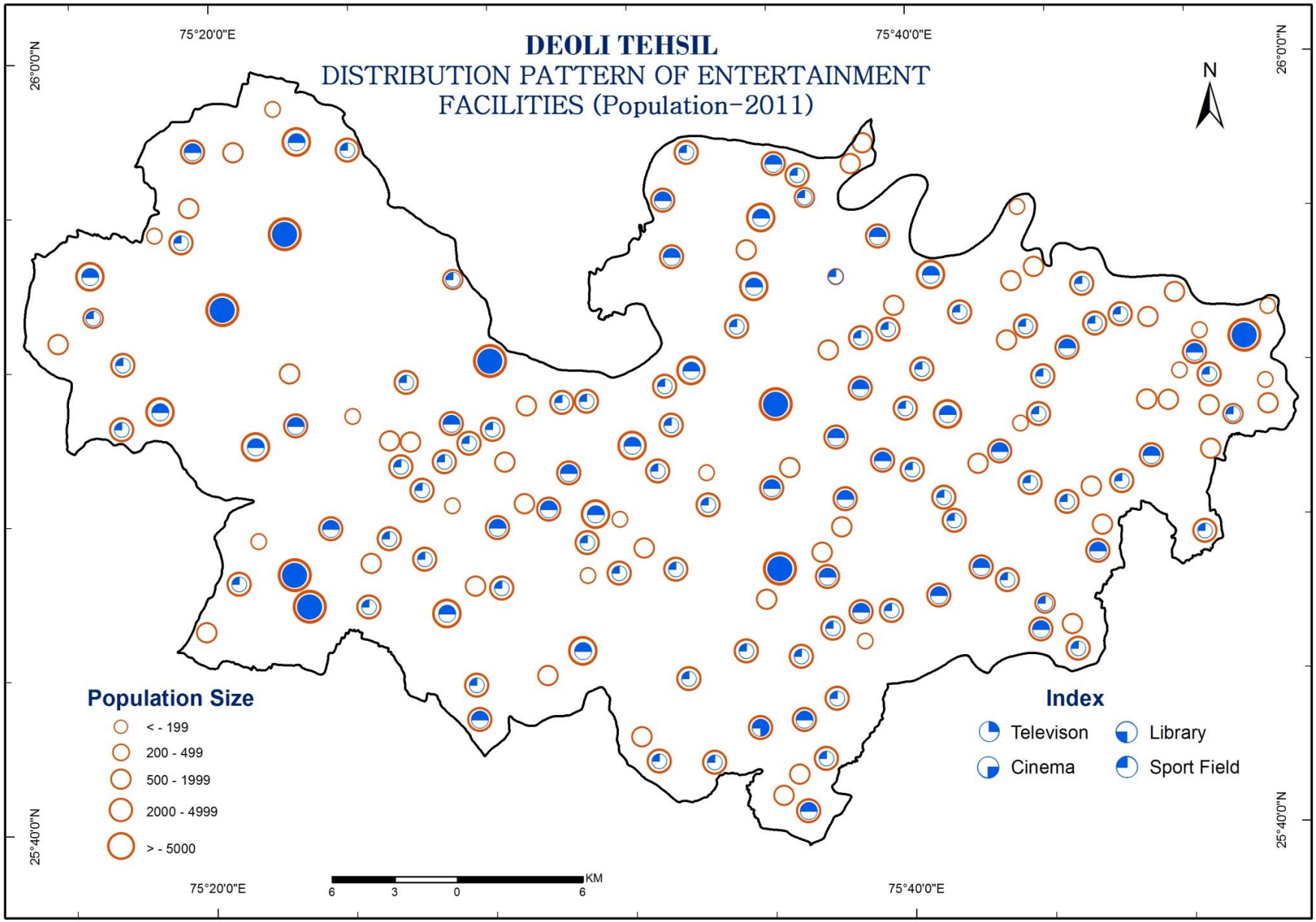
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF ENTERTAINMENT FACILITIES (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Televison
Library
Cinema
Sport Field
KM
6
3
0
6

पुस्तकें, खेल, टेलीविजन, सिनेमा आदि मनुष्य के प्रमुख मनोरंजन के साधन हैं। उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 500 से कम जनसंख्या वाले किसी भी अधिवास में टेलीविजन की सुविधा उपलब्ध नहीं है। 500 से 1999 जनसंख्या वाले 31 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या वाले सभी 13 अधिवास तथा 5000 से अधिक जनसंख्या वाले सभी 8 अधिवास इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि 200 से कम जनसंख्या वाले सभी अधिवास खेल मैदान की सुविधा से वंचित हैं। 200 से 499 जनसंख्या आकार के 45 अधिवासों में से मात्र 01 अधिवास बीसलपुर इस सुविधा का लाभ उठा रहा है। 500 से 5000 व इससे अधिक जनसंख्या वाले सभी अधिवास खेल मैदान की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त 500 से 1999 जनसंख्या आकार का एकमात्र अधिवास राजकोट तथा 5000 से अधिक जनसंख्या आकार के सभी आठों अधिवास सिनेमा की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त तहसील में सार्वजनिक पुस्तकालय की सुविधा मात्र 5000 से अधिक जनसंख्या वाले आठों अधिवासों में ही उपलब्ध है।

**परिवहन :–**

**तालिका संख्या 3.18**

**देवली तहसील : जनसंख्या आकार के अनुसार परिवहन सेवाओं का वितरण (2011)**

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | बस सेवाधारक अधिवासों की संख्या |
|---|---|---|
| 0-199 | 16 | 1 |
| 200- 499 | 45 | 2 |
| 500 - 1999 | 88 | 38 |
| 2000 - 4999 | 13 | 9 |
| 5000 से अधिक | 8 | 8 |
| **योग** | **170** | **58** |

स्त्रोत : कार्यालय जिला परिवहन अधिकारी जिला टोंक।

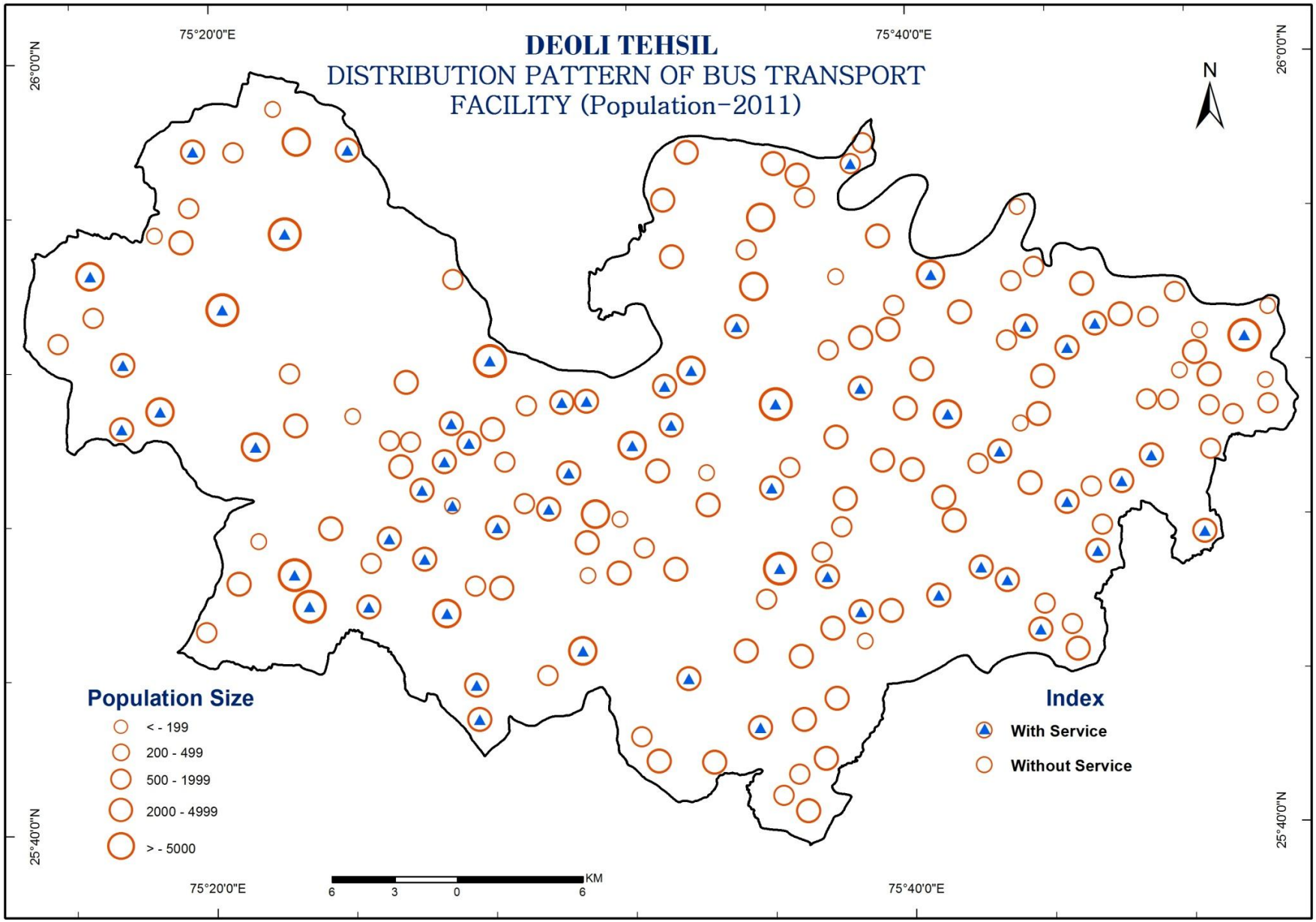
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF BUS TRANSPORT FACILITY (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
With Service
Without Service
KM
6
3
0
6

परिवहन के साधन के रूप में तहसील में मात्र बस सेवा ही उपलब्ध है। तालिका संख्या 3.18 को देखने पर ज्ञात होता है कि तहसील के 170 में से मात्र 58 अधिवासों को सीधी बस सेवा उपलब्ध है। 200 से कम जनसंख्या वाला मात्र 1 अधिवास नृसिंहपुरा ही इस सुविधा का लाभ उठा पा रहा है।

200 से 499 जनसंख्या वाले मात्र 2 अधिवासों भामा, संग्रामपुरा में यह सुविधा उपलब्ध है। 500 से 1999 जनसंख्या वाले 38 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या वाले 9 अधिवासों, 5000 से अधिक जनसंख्या वाले सभी आठों अधिवासों में बस की सुविधा उपलब्ध है।

सम्पूर्ण तहसील में बस सेवाओं की औसत दूरी 4.48 किमी है।

**व्यापार :–**

किसी भी क्षेत्र के विकास में व्यापार अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तहसील में खुदरा व्यापार की दृष्टि से तो वितरण सर्वव्यापी है परन्तु थोक व्यापार की दृष्टि से क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है। तहसील के मात्र 21 अधिवासों में थोक व्यापार केन्द्र स्थित है। 2000 से 4999 जनसंख्या वाले सभी 13 अधिवासों, 5000 से अधिक जनसंख्या वाले सभी आठों अधिवासों में थोक व्यापार केन्द्र स्थित हैं। तहसील के कुछ गांवों को छोड़कर बाकी सभी गांवों में खुदरा व्यापार केन्द्र स्थित है।

**प्रशासन :–**

प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में पंचायत समिति मुख्यालय देवली नगरीय केन्द्र तथा 39 अधिवासों में ग्राम पंचायतें स्थित हैं। तहसील में 200 से कम जनसंख्या वाले किसी भी अधिवास में ग्राम पंचायत नहीं है। 200–499 जनसंख्या के मात्र एक अधिवास बीसलपुर में ग्राम पंचायत है। 500 से 1999 जनसंख्या के 19 अधिवासों, 2000 से 4999 जनसंख्या के 12 अधिवासों तथा 5000 से अधिक जनसंख्या के सभी 7 अधिवासों में ग्राम पंचायतें स्थित हैं। देवली नगरीय केन्द्र स्वयं तहसील मुख्यालय है।

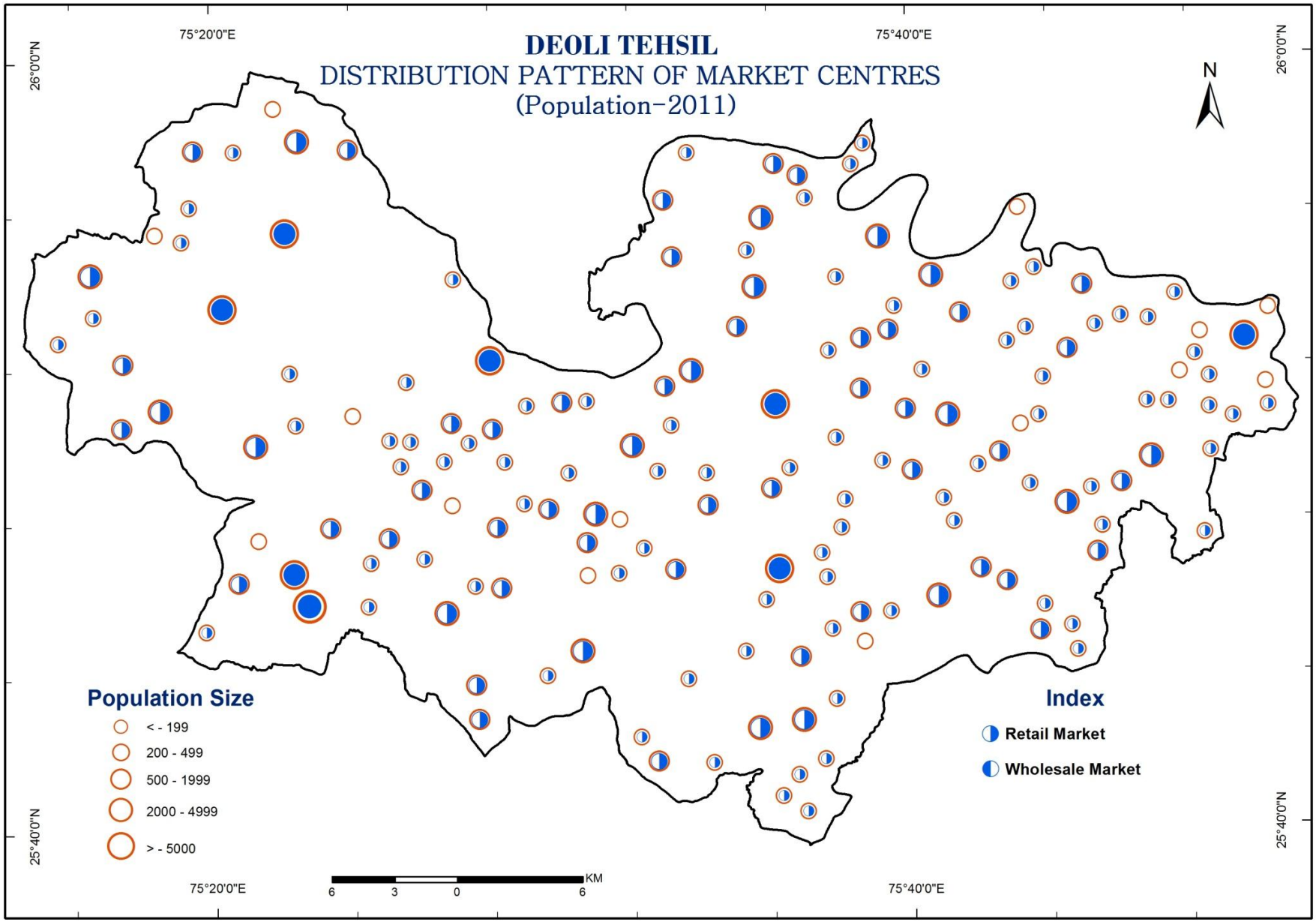
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF MARKET CENTRES
(Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Retail Market
Wholesale Market
6
3
0
6
KM

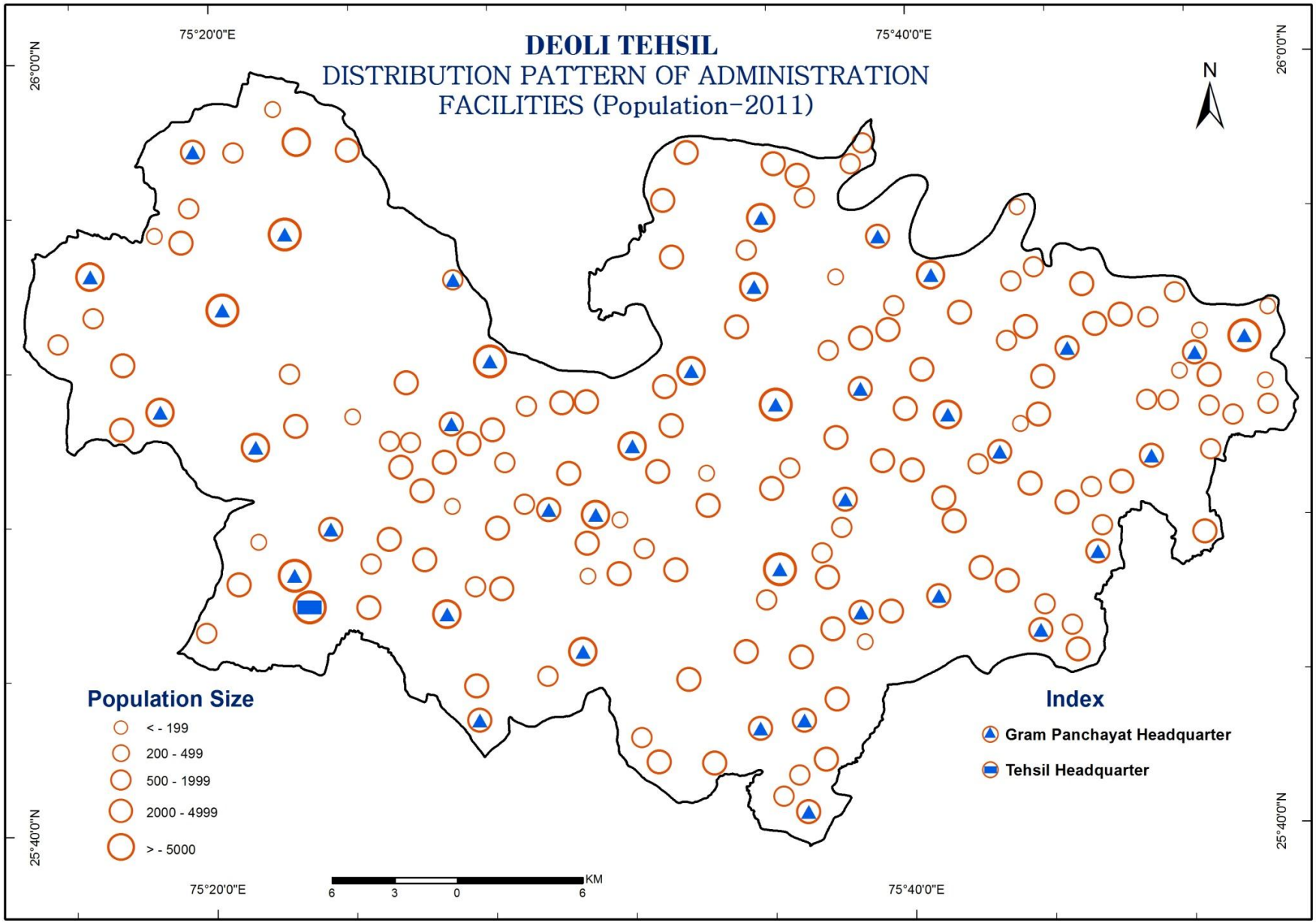
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF ADMINISTRATION FACILITIES (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Gram Panchayat Headquarter
Tehsil Headquarter
KM
6
3
0
6

## अधिवासों में सेवा कार्यों का एकत्रीकरण :–

तालिका संख्या 3.19

देवली तहसील : अधिवासों में कार्यों के प्रकारों की उपलब्धता में विभिन्नता।

| अधिवास प्रतिरूप | कुल अधिवास | व्यक्तिगत अधिवासों में उपलब्ध कार्यों की कुल संख्या | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 0 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | योग |
| 0-199 | 16 | 1 | 14 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | **16** |
| 200-499 | 45 | 0 | 2 | 21 | 19 | 2 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | **45** |
| 500-1999 | 88 | 0 | 0 | 0 | 0 | 8 | 21 | 22 | 10 | 6 | 6 | 8 | 5 | 2 | 0 | 0 | 0 | **88** |
| 2000-4999 | 13 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 2 | 4 | 2 | 2 | 0 | **13** |
| 5000 से अधिक | 8 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 | 4 | **8** |
| **योग** | **170** | **1** | **16** | **22** | **19** | **10** | **21** | **22** | **12** | **6** | **7** | **9** | **7** | **6** | **2** | **6** | **4** | **170** |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | शिक्षा | 6 | विश्रामगृह | 11 | प्रशासन |
| 2 | चिकित्सा | 7 | बैंकिंग | 12 | उर्वरक एवं कीटनाशक |
| 3 | जल | 8 | मनोरंजन | 13 | पशु चिकित्सा |
| 4 | विद्युत | 9 | संचार | 14 | परिवहन |
| 5 | खाद्य आपूर्ति | 10 | सहकारिता | 15 | बाजार |

तालिका संख्या 3.19 को देखने से स्पष्ट होता है कि तहसील के 170 अधिवासों में से 1 अधिवास देवड़ावास में किसी प्रकार की सेवा उपलब्ध नहीं है। तहसील के 200 से कम जनसंख्या वाले 16 अधिवासों में से 14 अधिवासों में मात्र एक ही सेवा विद्युत सेवा उपलब्ध है। इसी जनसंख्या आकार के 1 अधिवास फूलसागर में 2 सेवाऐं (विद्युत सेवा, चिकित्सा सेवा) उपलब्ध है।

अध्ययन क्षेत्र के 200 से 499 की जनसंख्या वाले 45 अधिवासों में से 21 अधिवासों में 2 (विद्युत,बाजार) सेवाऐं, 19 अधिवासों में तीन सेवाऐं, 2 अधिवासों (कल्याणपुरा, संग्रामपुरा) में 1 सेवा (बाजार), 2 अधिवासों में 4 सेवाएं व 1 अधिवास (बीसलपुर) में सर्वाधिक 7 सेवाऐं उपलब्ध हैं। जैसे – खाद्य आपूर्ति, मनोरंजन, विद्युत, प्रशासन, उर्वरक एवं कीटनाशक, बाजार, विश्रामगृह।

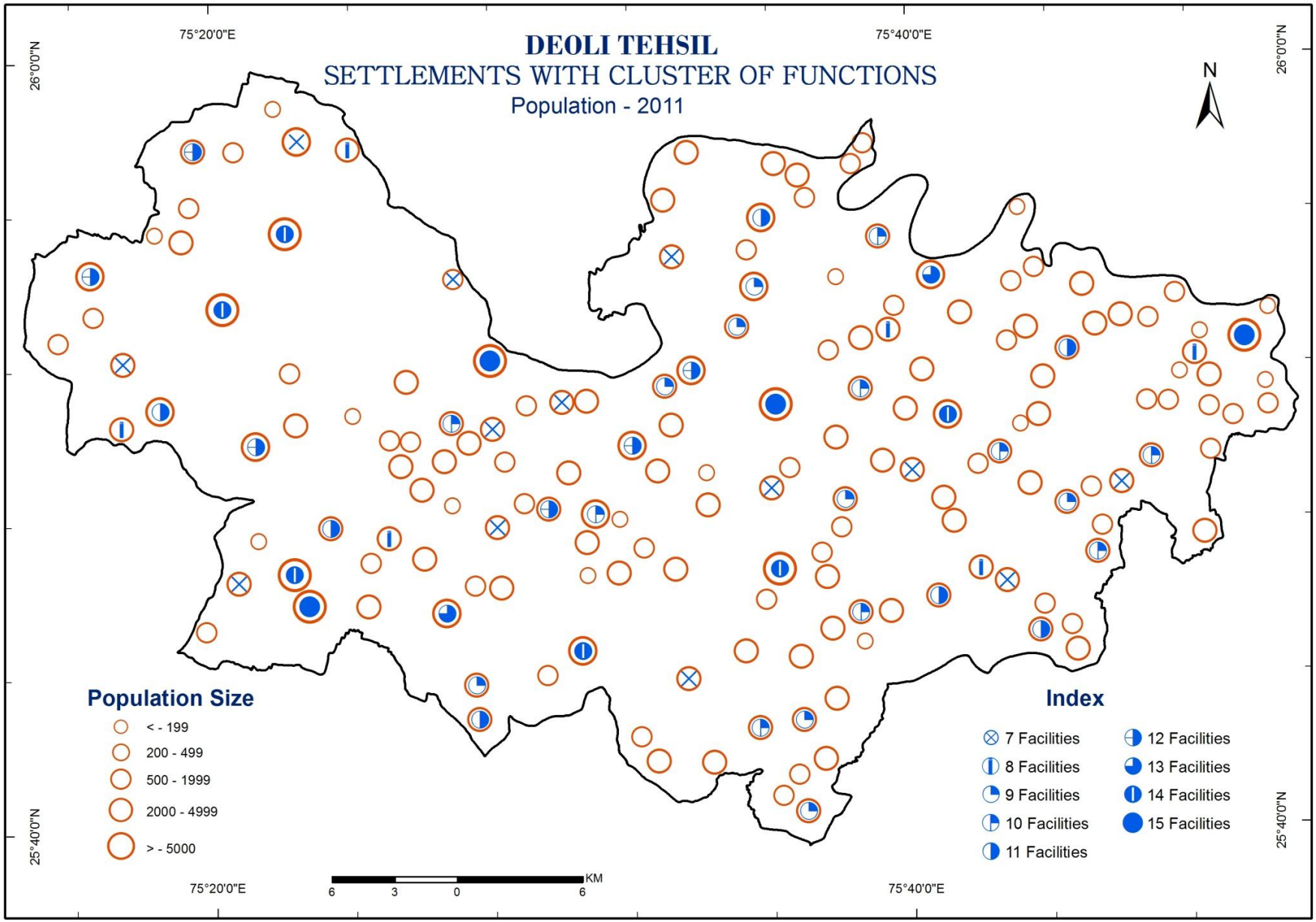
DEOLI TEHSIL
SETTLEMENTS WITH CLUSTER OF FUNCTIONS
Population - 2011
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
7 Facilities
8 Facilities
9 Facilities
10 Facilities
11 Facilities
12 Facilities
13 Facilities
14 Facilities
15 Facilities
KM
6
3
0
6

अध्ययन क्षेत्र के 500 से 1999 की जनसंख्या आकार वाले 88 अधिवासों में से 22 अधिवासों में 6 सेवाऐं, 21 अधिवासों में 5 सेवाऐं, 10 अधिवासों में 7 सेवाऐं, 8 अधिवासों में 4 सेवाऐं, 8 अधिवासों में 10 सेवाऐं, 6–6 अधिवासों में 8 व 9 सेवाऐं, 5 अधिवासों में 11 सेवाऐं, 2 अधिवासों हिसामपुर व पोलीआरा में सर्वाधिक 12 सेवाऐं उपलब्ध हैं। जैसे– शिक्षा, जल, विद्युत, खाद्य आपूर्ति, चिकित्सा, मनोरंजन, संचार, सहकारिता, प्रशासन, उर्वरक एवं कीटनाशक, परिवहन, बाजार आदि।

अध्ययन क्षेत्र के 2000 से 4999 जनसंख्या आकार वाले 13 अधिवासों में से सर्वाधिक 14 सेवाऐं 2 अधिवासों घाड़, चांदली में उपलब्ध है। 2 अधिवासों पनवाड़ व धुंआकला में 13 सेवाऐं, 4 अधिवासों में 12 सेवायें, 2 अधिवासों में 11 सेवायें, 1–1–1 अधिवास में 7–9–10 सेवायें उपलब्ध हैं।

तहसील के 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से सभी अधिवासों में, अध्ययन में शामिल की गई 15 सेवाओं में से कम से कम 14 सेवाऐं उपलब्ध हैं। अध्ययन क्षेत्र के इस जनसंख्या आकार वाले 8 बड़े अधिवासों में से 4 अधिवासों दूनी, राजमहल, नगरफोर्ट, देवली नगरीय केन्द्र में सभी 15 सेवाऐं उपलब्ध हैं तथा 4 अधिवासों देवली, नासिरदा, थांवला, आँवा में 14 सेवाएँ उपलब्ध हैं।

## संदर्भ सूची


1. Singh, N.P., 'Spatio Functional Planning A case study of Mawana Tehsil' (U.P.), 1989.
2. Shuchi, Nakayama and Harumi ; 'The Regional pattern of village size in India, in Rural Settlements in Monsoon Asia, 1972, edited by Dr. R.L. Singh, P. 422, N.G.J.I., Varanasi-5.

# अध्याय चतुर्थ

## कार्यात्मक सम्बद्धता

**कार्यात्मक सम्बद्धता :–**

कार्यात्मक सम्बद्धता से तात्पर्य है कि विभिन्न अधिवास भिन्न–भिन्न कार्यों के द्वारा एक–दूसरे से किस प्रकार अन्तर्सबंधित हैं। प्रत्येक अधिवास में सभी प्रकार की सुविधाएँ हों ऐसा होना संभव नहीं है। प्रायः छोटे अधिवास अपनी आवश्यक सुविधाओं हेतु बड़े अधिवासों पर निर्भर होते हैं। अतः एक बड़ा अधिवास अपने आस–पास के छोटे अधिवासों की आवश्यकताओं का केन्द्र होता है जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

लेकिन छोटे अधिवास इन सुविधाओं का लाभ तभी उठा पाऐंगे जब बड़े अधिवासों तक इनकी पहुंच आसान हो अर्थात् समय एवं ऊर्जा में न्यूनतम व्यय व अपेक्षाकृत कम व्यवधान के साथ सुगमतापूर्वक सम्पर्क स्थापित कर सके।[1] इन बड़े अधिवासों का अस्तित्व भी सड़कों की अभिगम्यता पर निर्भर करता है।

**अभिगम्यता :–**

ग्रामीण विकास के संदर्भ में सड़क यातायात के प्रभाव को अभिगम्यता के द्वारा मापा जा सकता है। इस प्रकार परिवहन तंत्र एवं सेवाओं के विस्तार को जब तक अभिगम्यता के द्वारा न बताया जाये, तब तक कोई भी विकास योजना पूर्ण नहीं मानी जायेगी। अध्ययन क्षेत्र में हमने सड़क मार्गों से ही अभिगम्यता का अध्ययन किया है क्योंकि क्षेत्र में रेल सेवा नहीं है।

अभिगम्यता किसी प्रदेश के परिवहन तंत्र की दक्षता एवं उसकी स्थिति का महत्वपूर्ण सूचक है। जो प्रदेश जितना अधिक गम्य होगा, वह उतना ही अधिक विकसित होगा। अभिगम्यता वास्तविक दूरियां, समय अथवा धन के अनुसार प्रदर्शित की जाती है। सड़क अभिगम्यता की संकल्पना रेल अभिगम्यता से भिन्न है। रेल्वे केवल कतिपय प्रमुख केन्द्रों को जोड़ती है, जबकि सड़कों के माध्यम से मुख्य तथा छोटे–बड़े सभी केन्द्रों को जोड़ा जा सकता है। इस प्रकार सड़क प्रणाली किसी भी केन्द्र तक पहुंचकर छोटे–छोटे उपभोक्ताओं को सेवा केन्द्रों तक जोड़ती है, साथ ही अन्य परिवहन माध्यम के लिए सहायक का कार्य करती है।[2]

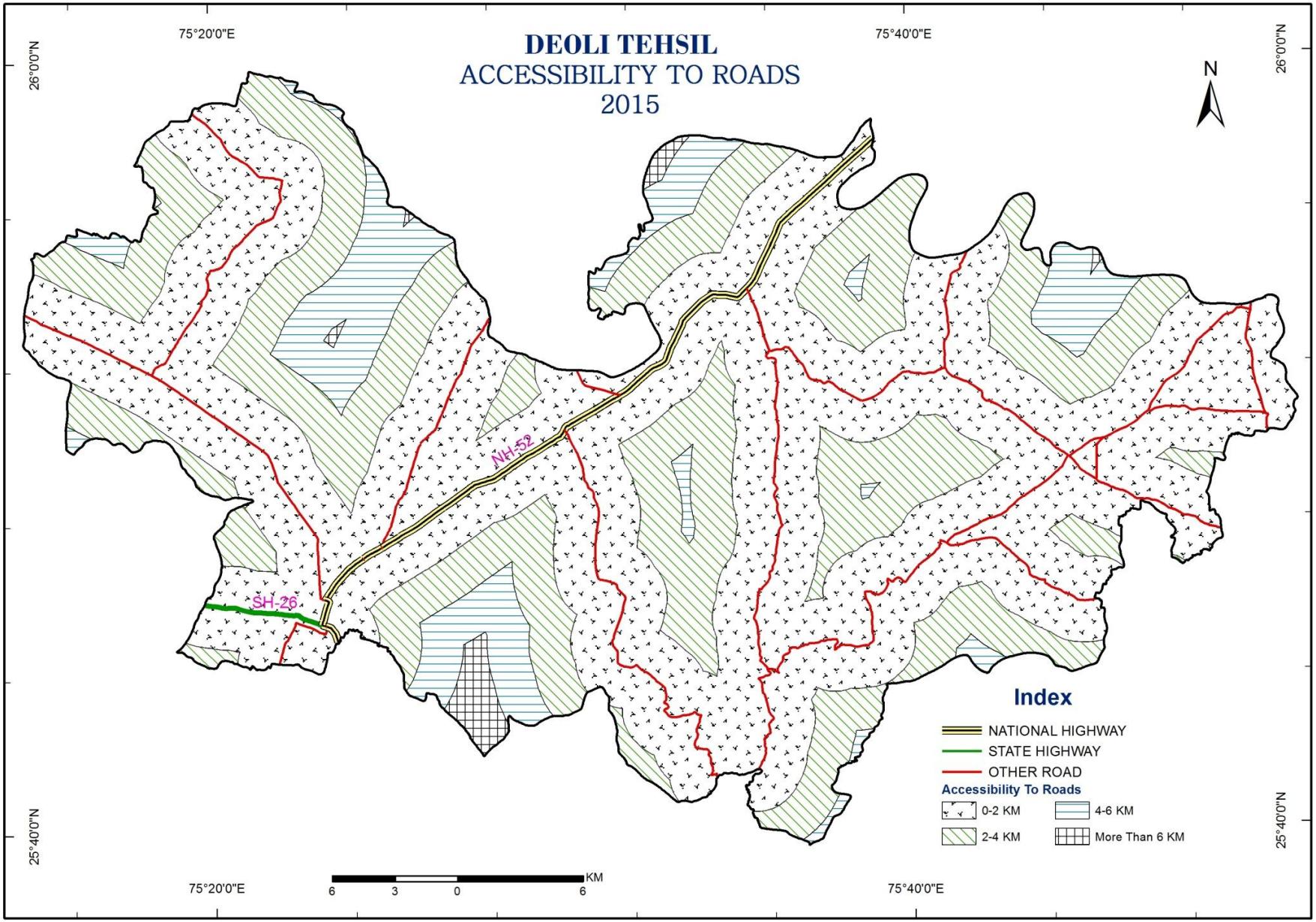
DEOLI TEHSIL
ACCESSIBILITY TO ROADS
2015
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
NH-52
SH-26
Index
NATIONAL HIGHWAY
STATE HIGHWAY
OTHER ROAD
Accessibility To Roads
0-2 KM
2-4 KM
4-6 KM
More Than 6 KM
6 3 0 6
KM

अतः किसी भी क्षेत्र के विकास के लिये, चाहे वो ग्रामीण हो या नगरीय सड़क अभिगम्यता की उच्च स्थिति का होना अत्यन्त आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र में सड़कों की अभिगम्यता को मानचित्र संख्या 4.1 में दर्शाया गया है जिससे स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश भाग पर सड़क मार्गों की गम्यता 0 से 4 किलोमीटर के मध्य है। 6 किलोमीटर से अधिक की सड़क अभिगम्यता बहुत कम है।

**यातायात प्रवाह :–**

अधिकांश यात्री प्रवाह राष्ट्रीय राजमार्ग–52 से गुजरता है। अधिकांश प्रवाह देवली व टोंक के मध्य एवं देवली बून्दी के मध्य दिखाई देता है। लगभग 90 बसें देवली व टोंक के मध्य और 100 बसें देवली व बून्दी के मध्य प्रतिदिन चलती है। लगभग 40 बसें देवली व केकड़ी के मध्य तथा 35 बसें देवली व जहाजपुर के मध्य संचालित होती है। अन्य मार्गों पर बसों का संचालन प्रमुख मार्गों की अपेक्षा कम दिखाई देता है। सड़क मार्गों का विस्तार होना आवश्यक है जिससे ज्यादा से ज्यादा ग्राम राज्य प्रदत्त बस सेवा या निजी बस सेवा से जुड़ सके।

अध्ययन क्षेत्र में निम्न कार्यों को आधार मानकर कार्यात्मक सम्बद्धता को बताने का प्रयास किया गया है :–

**बैंकिंग :–**

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से मात्र 15 अधिवासों में बैंकिंग सुविधा उपलब्ध है। ये 15 अधिवास अपने आस–पास के अधिवासों को सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित घाड़ 20 अधिवासों को, नगर फोर्ट 17 अधिवासों को अपनी सेवाएं दे रहा है। तहसील के पूर्व में स्थित आवां 14 अधिवासों को, पनवाड़ 13 अधिवासों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। तहसील के 23 केन्द्र तहसील के बाहर स्थित उनके निकटवर्ती केन्द्रों से इस सेवा का लाभ उठा रहे हैं।

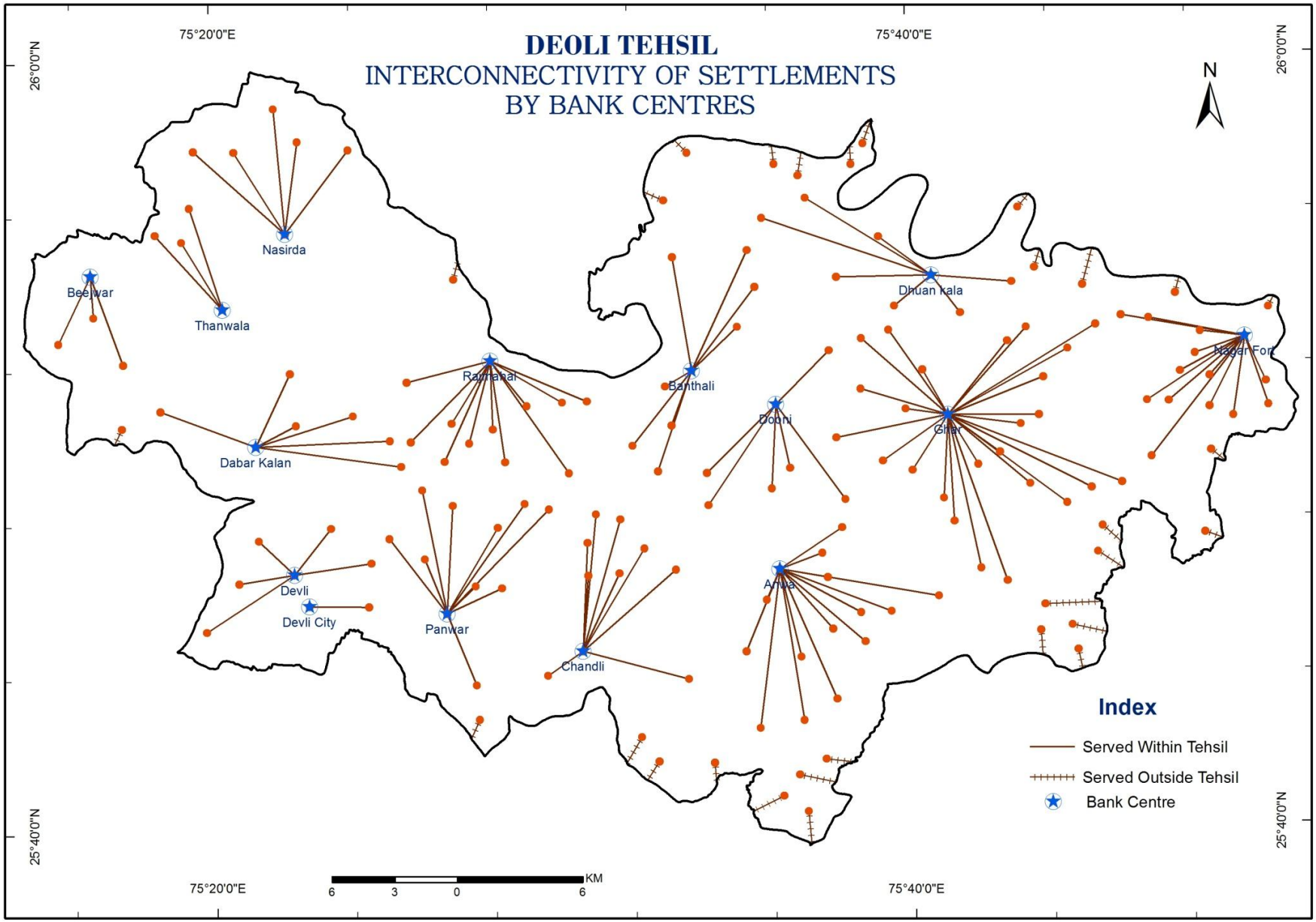

DEOLI TEHSIL
INTERCONNECTIVITY OF SETTLEMENTS
BY BANK CENTRES
N
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
Nasirda
Thanwala
Dabar Kalan
Devli
Devli City
Panwar
Chandli
Banthali
Dhuan kala
Nagar Fort
Index
Served Within Tehsil
Served Outside Tehsil
Bank Centre
KM
6
3
0
6

**उर्वरक एवं कीटनाशक :–**

अध्ययन क्षेत्र में 170 अधिवासों में से 40 अधिवासों में लाईसेंस प्राप्त व्यक्ति उपरोक्त सेवा दे रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पूर्व में स्थित केन्द्र चारनेट सर्वाधिक अधिवासों को इस सेवा का लाभ दे रहा है। तहसील के कुछ अधिवास इस सेवा का लाभ लेने के लिये अध्ययन क्षेत्र के बाहर की तहसीलों को भी जाते हैं।

**सहकारी समितियाँ :–**

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से 29 अधिवासों में सहकारी समितियां स्थित हैं। इनमें कुछ अधिवासों में कृषि सहकारी समिति, कुछ में अकृषि सहकारी समिति, स्थित है। अध्ययन क्षेत्र में इस सुविधा को वितरण सर्वव्यापी है। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित केन्द्र गुरई सर्वाधिक अधिवासों को इस सुविधा का लाभ दे रहा है। तहसील के दक्षिण–पूर्व तथा उत्तर–पूर्व में स्थित कुछ अधिवास निकटता के कारण तहसील के बाहर के केन्द्रों से भी इस सुविधा का लाभ ले रहे हैं।

**पशु चिकित्सा :–**

देवली तहसील के 170 अधिवासों में से 9 अधिवासों में पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित केन्द्र घाड़ में स्थित पशु चिकित्सालय सर्वाधिक अधिवासों को सेवाऐं दे रहा है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पूर्व तथा दक्षिण–पूर्व में स्थित कुछ अधिवास इस सुविधा का लाभ लेने के लिये अध्ययन क्षेत्र की निकटवर्ती तहसीलों के केन्द्रों पर भी जाते हैं।

**ईंधन आपूर्ति :–**

अध्ययन क्षेत्र में परिवहन के साधनों का विकास तो अधिक है, परन्तु ईंधन आपूर्ति की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र पिछड़ा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में मात्र 16 पेट्रोल–डीजल पम्प है जो दस केन्द्रों में अवस्थित है जो देवली नगरीय केन्द्र, दोलता, दूनी, राजमहल, नगरफोर्ट, सरोली, घाड़, सिरोही, भरना, देवड़ावास में स्थित

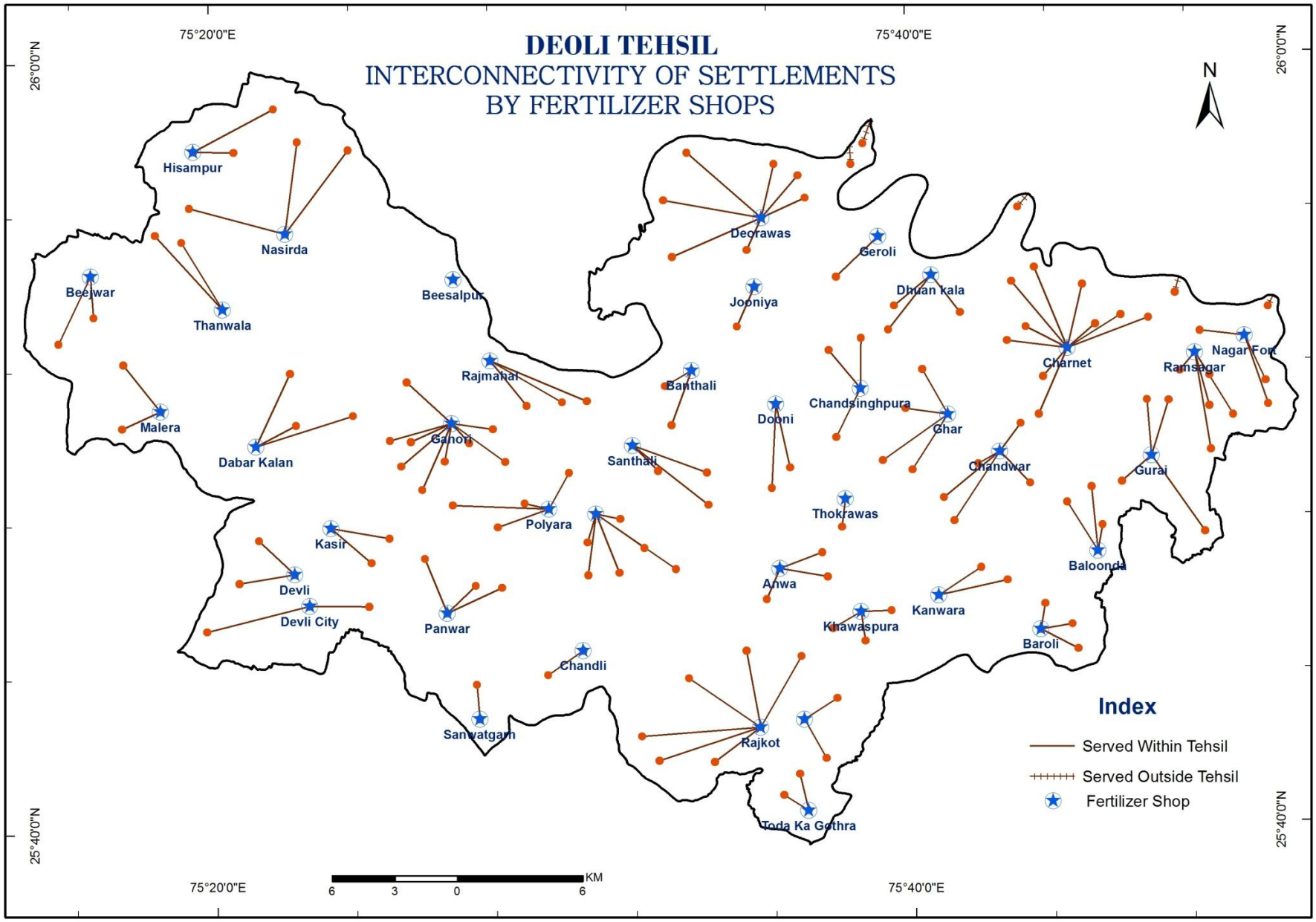
DEOLI TEHSIL
INTERCONNECTIVITY OF SETTLEMENTS
BY FERTILIZER SHOPS
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Hisampur
Nasirda
Beejwar
Thanwala
Beesalpur
Deorawas
Geroli
Jooniya
Dhuan kala
Charnet
Nagar Fort
Ramsagar
Rajmahal
Banthali
Chandsinghpura
Ghar
Malera
Dabar Kalan
Ganori
Dooni
Santhali
Chandwar
Gurai
Thokrawas
Polyara
Kasir
Devli
Devli City
Panwar
Anwa
Kanwara
Khawaspura
Baloonda
Baroli
Chandli
Sanwatgarh
Rajkot
Toda Ka Gothra
Index
Served Within Tehsil
Served Outside Tehsil
Fertilizer Shop
KM
6
3
0
6

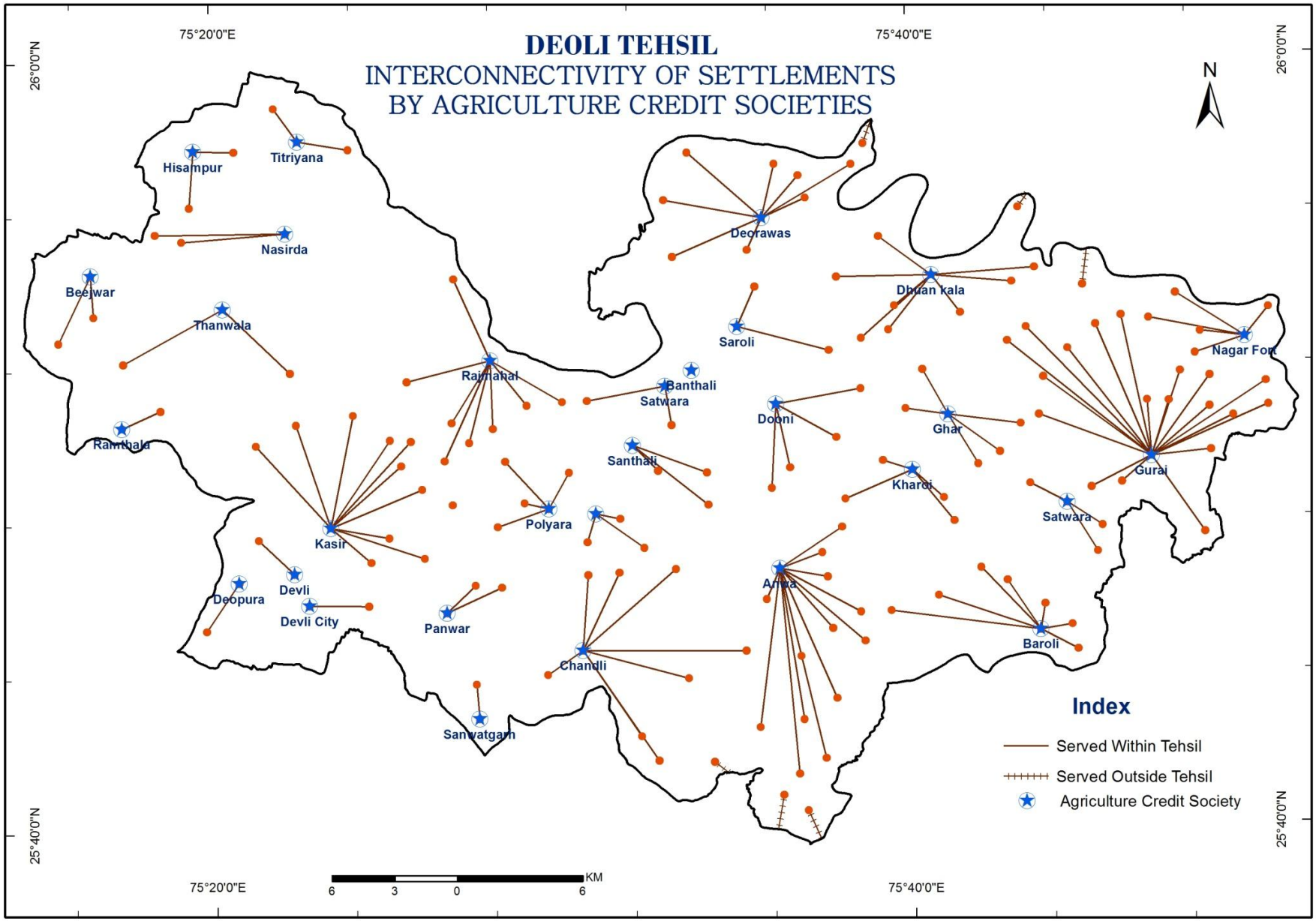

DEOLI TEHSIL
INTERCONNECTIVITY OF SETTLEMENTS
BY AGRICULTURE CREDIT SOCIETIES
N
26°0'0"N
25°40'0"N
75°40'0"E
75°20'0"E
Index
Served Within Tehsil
Served Outside Tehsil
Agriculture Credit Society
KM
6 3 0 6
Nagar Fort
Gurai
Satwara
Baroli
Dhuan kala
Ghar
Kharoi
Deorawas
Saroli
Dooni
Banthali
Satwara
Santhali
Chandli
Polyara
Rajmahal
Panwar
Sanwatgarh
Kasir
Devli
Devli City
Deopura
Titriyana
Nasirda
Thanwala
Hisampur
Beelwar

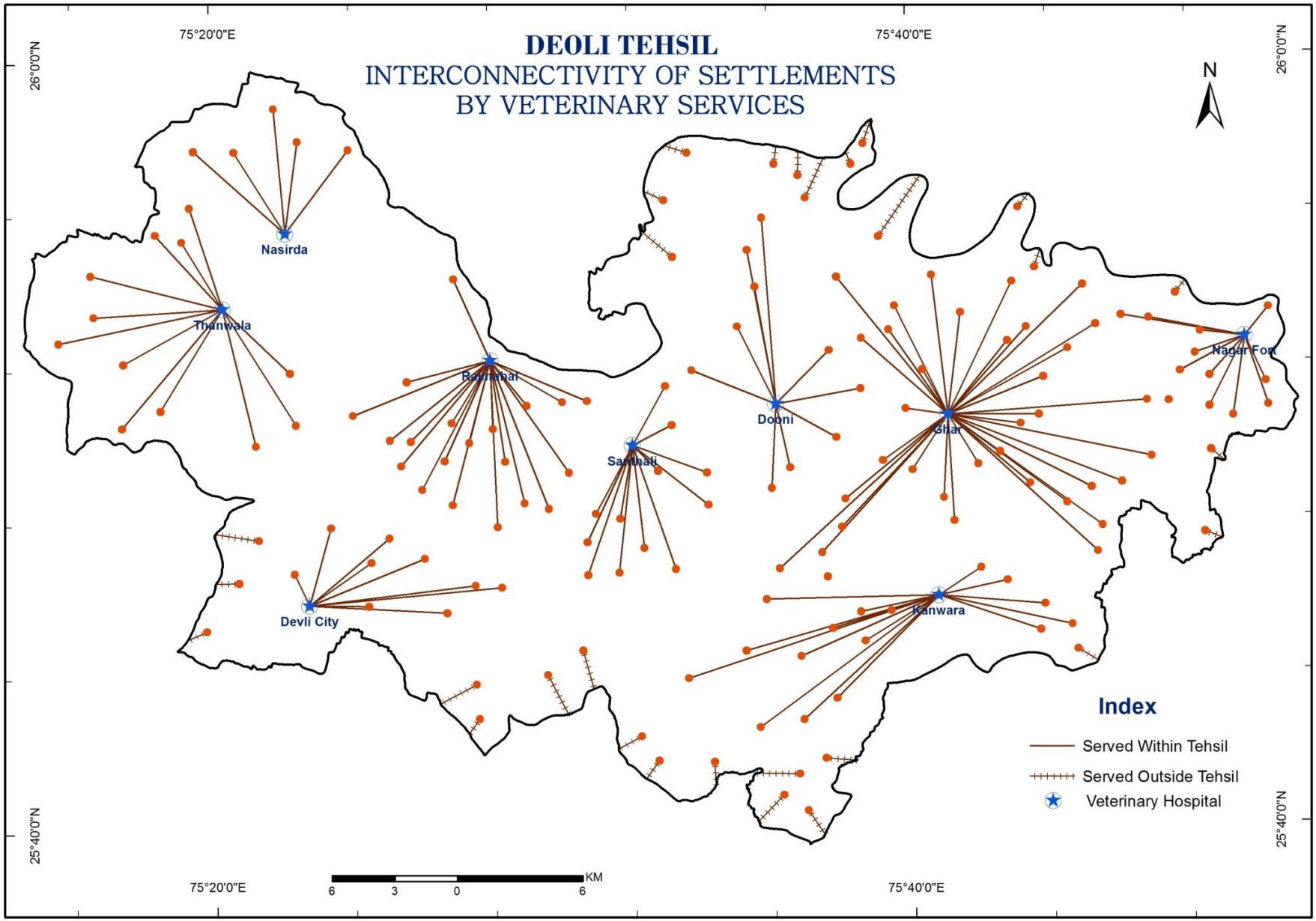

DEOLI TEHSIL
INTERCONNECTIVITY OF SETTLEMENTS
BY VETERINARY SERVICES
Index
Served Within Tehsil
Served Outside Tehsil
Veterinary Hospital
N
Nagar Fort
Ghar
Kanwara
Dooni
Santhali
Rajmahal
Devli City
Nasirda
Thanwala
KM
6 3 0 6
26°0'0"N
25°40'0"N
75°20'0"E
75°40'0"E

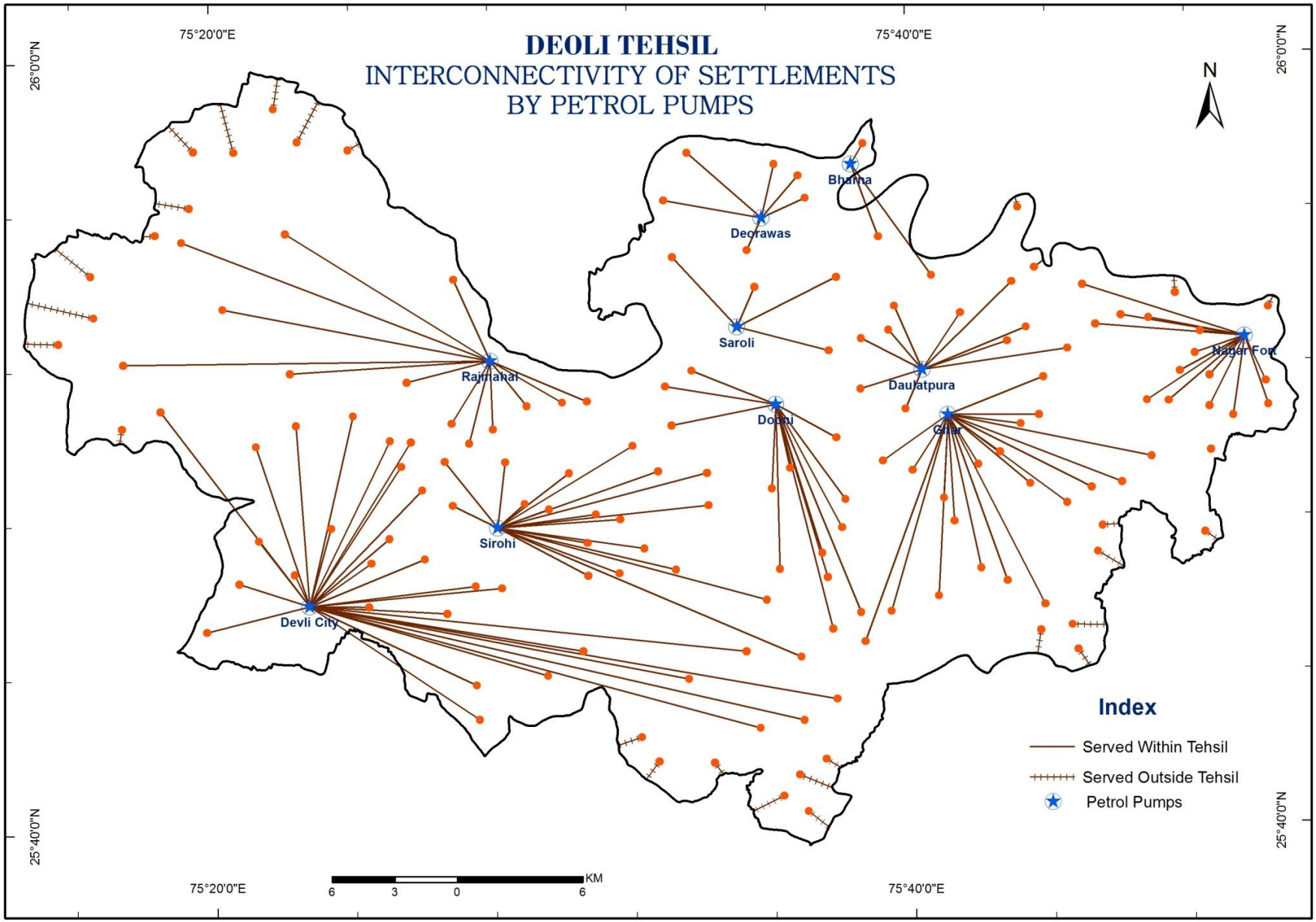

DEOLI TEHSIL
INTERCONNECTIVITY OF SETTLEMENTS
BY PETROL PUMPS
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Bharna
Deorawas
Saroli
Daulatpura
Nagar Fort
Rajmahal
Dooni
Ghar
Sirohi
Devli City
Index
Served Within Tehsil
Served Outside Tehsil
Petrol Pumps
KM
6
3
0
6

है। तहसील मुख्यालय देवली में तीन पेट्रोल पम्प स्थित है जो अपने निकट स्थित 29 अधिवासों को यह सुविधा उपलब्ध करा रहा है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण–पूर्व तथा उ0–पूर्व में स्थित कुछ अधिवास निकटता के कारण अपनी निकटवर्ती तहसीलों के केन्द्रों पर ईंधन आपूर्ति के लिये जाते हैं।

**साप्ताहिक बाजार (हाट बाजार) :–**

हाट बाजार किसी भी अधिवास में लगने वाला साप्ताहिक बाजार होता है। अध्ययन क्षेत्र के 7 अधिवासों में साप्ताहिक बाजार लगता है जहां स्थानीय लोग तथा निकटवर्ती अधिवासों के लोग अपने लिए आवश्यक वस्तुऐं जैसे कपड़े, घरेलू सामान, दरी, चद्दर, टेप–रिकॉर्डर, सब्जियां, जूते–चप्पल आदि खरीदने आते हैं। यह साप्ताहिक बाजार मुख्य सड़क के किनारे–किनारे लगते हैं। अतः जहां सड़क की सुविधा नहीं होती वहां इस तरह के साप्ताहिक बाजार नहीं लगते हैं साथ ही अधिवास की जनसंख्या भी इस तरह के बाजारों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**पेयजल आपूर्ति :–**

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से 35 अधिवासों को नल द्वारा पेयजल आपूर्ति हो रही है।

**विद्युत आपूर्ति :–**

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से 163 अधिवास विद्युतीकृत हैं। जबकि 7 अधिवास (महाराज कंवारपुरा, सुजानपुरा, कल्याणपुरा, संग्रामपुरा, बाजोली, देवड़ावास, नृसिंहपुरा) इस सुविधा से वंचित हैं। विद्युत का उपयोग घरेलू कार्यों के अलावा कृषि कार्य में सिंचाई के लिए किया जाता है। कुछ अधिवासों में विद्युत का उपयोग लघु उद्योगों में भी किया जाता है।

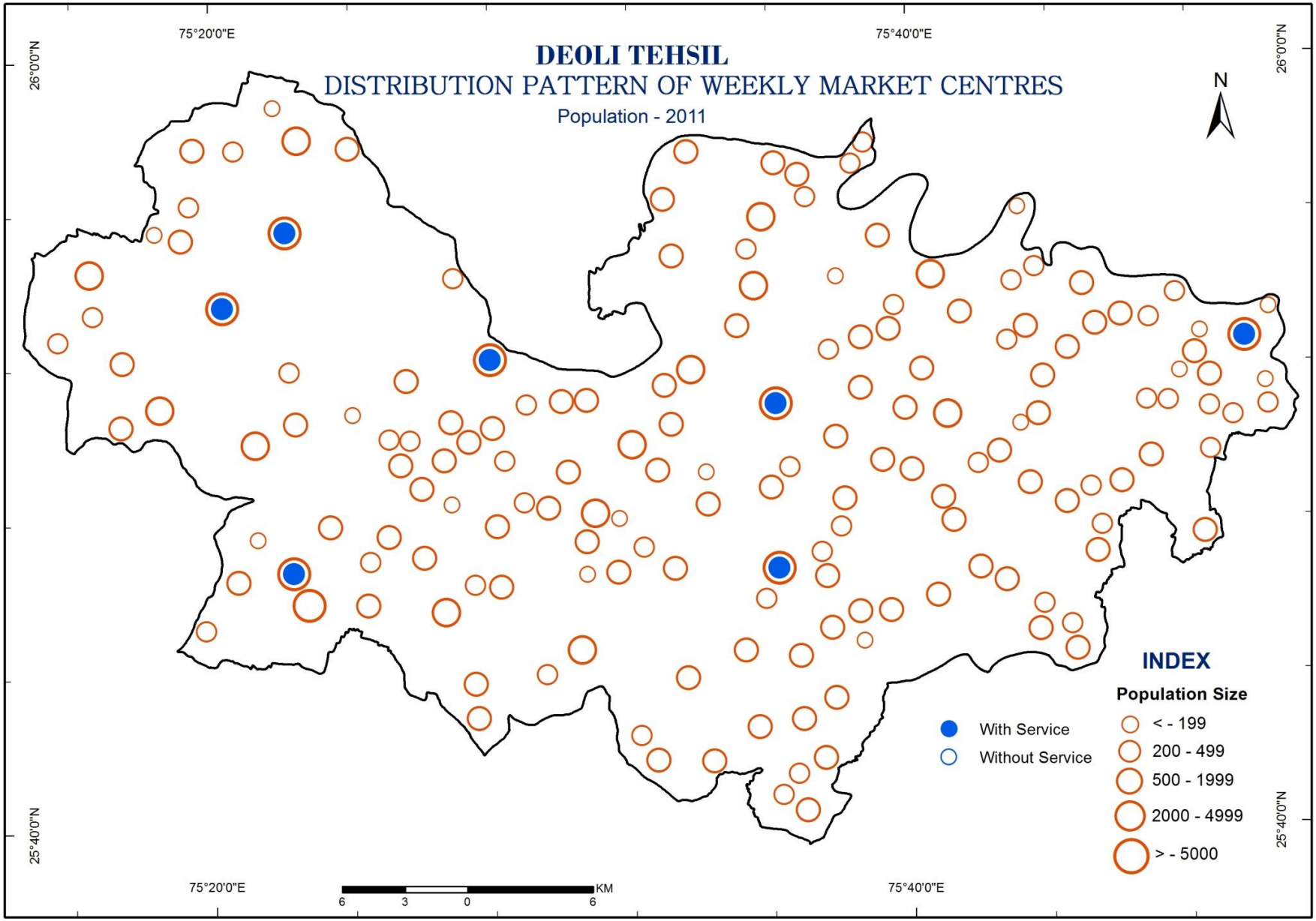
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF WEEKLY MARKET CENTRES
Population - 2011
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
INDEX
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
With Service
Without Service
KM
6 3 0 6

**घरेलू उद्योग :–**

तहसील के 170 अधिवासों में से 32 अधिवासों में लोग घरेलू उद्योगों में संलग्न है। ये घरेलू उद्योग मिट्टी के बर्तन बनाना, गुड़, घी निर्माण, गलीचा, फर्नीचर निर्माण, चमड़ा का काम, जूती निर्माण आदि है।

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से 20 अधिवासों बिसलपुर, रामथला, मालेड़ा, डाबरकलां, संथली, संग्रामपुरा, दूनी, गेरोली, आंवा, राजकोट, सीतापुरा, रामपुरा, दांतुड़ा, धुंआकला, धुंआखुर्द, बरोली, स्यावाता, बालुंदा, चन्दवाड़, गुरई में मिट्टी के बर्तन बनाने का काम किया जाता है। ये अधिवास स्थानीय बाजार में माल बेचने के साथ–साथ मांग अधिक होने के कारण तहसील के बड़े अधिवासों में बड़ी मात्रा में माल का निर्यात भी करते हैं। यह उद्योग कुम्हार जाति के लोगों की आजीविका का प्रमुख आधार है।

अध्ययन क्षेत्र में 170 अधिवासों में से 19 अधिवासों में जूतियाँ तथा जूते बनाने का कार्य किया जाता है। 13 अधिवासों में गुड़ निर्माण का कार्य, 5 अधिवासों थांवला, संग्रामपुरा, धुंआकला, बरोली, घाड़ में गलीचा निर्माण का कार्य किया जाता है।

डाबरकलां, रामथला, मालेड़ा में फर्नीचर निर्माण का कार्य किया जाता है। देवली नगरीय केन्द्र में स्लेट स्टोन, टाइल्स, कपड़ा प्रिंटिंग, सोप स्टोन पाउडर का कार्य किया जाता है।

**वृद्धि केन्द्र और क्षेत्रीय विकास :–**

भारत ने बढ़ते हुए जनसंख्या दबाव के बावजूद आर्थिक प्रगति की है। लेकिन आर्थिक विकास ने अमीर और गरीब के बीच का अन्तर काफी बढ़ा दिया है। आर्थिक विकास का लाभ भारत के हर क्षेत्र में पहुंचना अभी शेष है। भारत के अधिकांश ग्राम आवश्यक सुविधाओं जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और यातायात से वंचित हैं। इन सब ने कुछ बड़े केन्द्रों पर सुविधाओं का जमाव उत्पन्न कर दिया है लेकिन अधिकांश भारत ग्रामों में बसता है अतः एकीकृत ग्रामीण विकास की नयी योजना बनाने की परम आवश्यकता है।

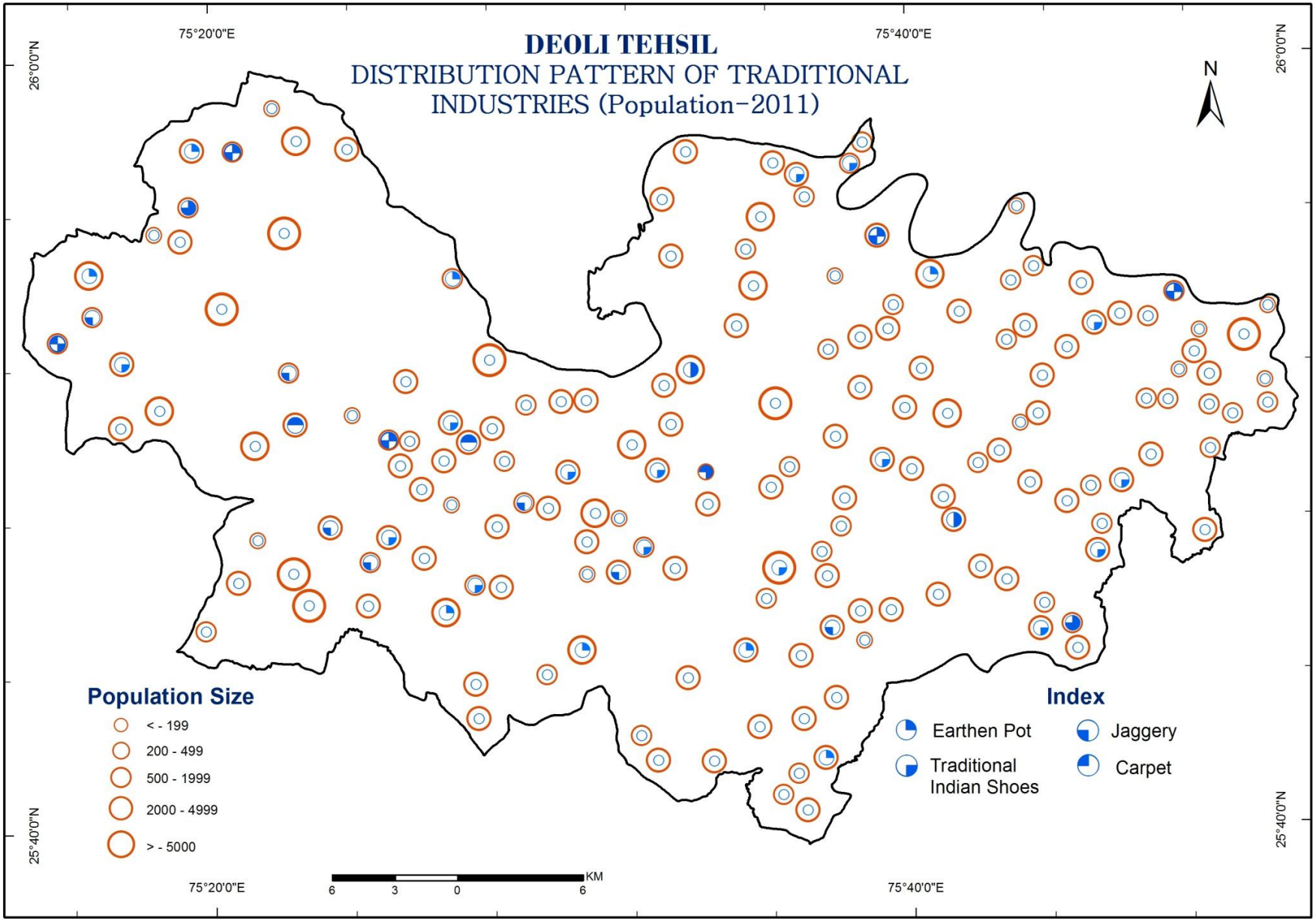
DEOLI TEHSIL
DISTRIBUTION PATTERN OF TRADITIONAL INDUSTRIES (Population-2011)
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
Index
Earthen Pot
Jaggery
Traditional Indian Shoes
Carpet
KM
6
3
0
6

वृद्धि केन्द्र परिकल्पना मुख्यतः क्रिस्टालर के सिद्धान्त पर आधारित है लेकिन इसकी आलोचना हुई और बाद में लॉश ने अपना सिद्धान्त दिया जिसमें उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र में प्रगति को ही आर्थिक विकास में प्रेरक माना। पेरॉक्स का सिद्धान्त गतिशील है। किसी अधिवास में सेवाओं का एकत्रीकरण आर्थिक विकास में सहायक होता है लेकिन समय के साथ ऐसे केन्द्र क्षेत्र में असमानता उत्पन्न करते हैं और इसे दूर करने के लिए आर्थिक विकास से अछूते क्षेत्रों में सेवाओं का विस्तार करने पर आर्थिक वृद्धि को शुरू किया जा सकता है।

अतः वृद्धि केन्द्र उन अधिवासों को कह सकते हैं जहां से अभिकेन्द्रीय शक्तियां निकलती हैं और अपकेन्द्रीय शक्तियां आकर्षित होती हैं। हर अधिवास आकर्षण का केन्द्र व विक्षेपण का केन्द्र बन जाता है।

# संदर्भ सूची


1. Haig R.M., "Major Economic Factors in metropolitan growth and Arrangement. Regional plan of New York and its Environs", New York 1927, P.38 cited in Accessibility in North Bihar, N.G.J.I. by D.N. Singh, Vol.XIII, No.3. Sept. 1967, P.173.
2. Sen, L.K. et. Al., "Growth Centres in Raichur District. An Integrated Rural Development Plan," NICD, Hyderabad, 1975, P.163.

# अध्याय पंचम

## कार्यात्मक पदानुक्रम

**सेवा केन्द्रों का अभिज्ञान :–**

प्रादेशिक नियोजन के संदर्भ में सेवा केन्द्रों की संकल्पना को एक आधारभूत अवधारणा माना जाता है। किसी प्रदेश की अधिवासीय पृष्ठभूमि में ऐसी अवस्थिति जो अपने चारों ओर के समीपवर्ती क्षेत्रों को वस्तुएँ तथा सेवाएँ प्रदान करती है उसे सेवा केन्द्रों के रूप में माना जाता है। सेवा केन्द्र केन्द्रस्थल के लिए प्रयुक्त पर्यायवाची शब्दों में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। बाजार केन्द्र का प्रयोग भी सेवा केन्द्र के अर्थ में ही होता है क्योंकि प्रत्येक सेवा केन्द्र के लिए बाजार का कार्य करना अनिवार्य है।[1] वास्तव में सेवा केन्द्र द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले प्रकार्य एवं समीपवर्ती क्षेत्र को प्रदान की जाने वाली सेवाएँ ही इनके निर्धारण का आधार होती हैं। व्यापार एवं वाणिज्य सेवा केन्द्रों के सर्वव्यापी कार्य होते हैं तथा जनसंख्या एवं उसकी संरचना उनके सापेक्षित महत्व को प्रदर्शित करती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सेवा केन्द्रों का अभिज्ञान सेवाओं की समुपस्थिति एवं अन्योन्याश्रितता के आधार पर किया गया है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अध्ययन क्षेत्र में सेवाओं की मात्रा (संख्या) को ध्यान में नहीं रखकर इस बात का ध्यान रखा गया है कि अध्ययन क्षेत्र में सेवा युक्त अधिवासों की संख्या कितनी है ?

**सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम :–**

पदानुक्रम से अभिप्रायः अधिवासों को उनके आकार तथा उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों तथा उपलब्ध सेवाओं के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित करना है। क्षेत्रीय नियोजन में पदानुक्रम का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यदि किसी क्षेत्र में कोई नई सेवा उपलब्ध करानी हो तो वह किस अधिवास में हो, इसका निर्धारण पदानुक्रम के आधार पर किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में सेवाओं एवं केन्द्रों का पदानुक्रम निर्धारित करने के लिए कुल 170 आबाद अधिवासों तथा 34 प्रकार की सेवाओं का समावेश किया गया है जो 15 समूहों में इस प्रकार है :–

1. शैक्षणिक सेवाएँ

(i) प्राथमिक विद्यालय (ii) उच्च प्राथमिक विद्यालय
(iii) माध्यमिक विद्यालय (iv) उच्च माध्यमिक विद्यालय
(v) महाविद्यालय

2. चिकित्सा सेवाएँ

(i) स्वास्थ्य केन्द्र (ii) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
(iii) प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र (iv) परिवार कल्याण केन्द्र
(v) डिस्पेंसरी (vi) अस्पताल

3. जलापूर्ति

4. विद्युत आपूर्ति

5. खाद्य आपूर्ति

6. विश्राम गृह

7. बैंकिंग सेवाएं

(i) राष्ट्रीयकृत बैंक (ii) सहकारी बैंक

8. मनोरंजन

(i) टेलीविजन (ii) पुस्तकालय
(iii) सिनेमा (iv) खेल का मैदान

9. संचार सेवाएँ

(i) डाकघर (ii) कुरियर सेवा
(iii) दूरभाष (iv) सामान्य सेवा/इन्टरनेट कैफे

10. प्रशासनिक सेवाएँ

(i) तहसील मुख्यालय (ii) ग्राम पंचायत मुख्यालय

11. उर्वरक सेवाएँ

12. पशु चिकित्सा सेवाएँ

13.परिवहन सेवाएँ

14.सहकारिता सेवाएँ

(i) कृषि सहकारी समिति (ii) अकृषि सहकारी समिति

15.वाणिज्य सेवाएँ

(i) थोक बाजार (ii) खुदरा बाजार

## सेवाओं का पदानुक्रम

अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक अधिवास में सेवाओं की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति को सारणीबद्ध किया गया। तत्पश्चात् भट्ट महोदय[2] के कार्यिक भार विधि के आधार पर विभिन्न सेवाओं का भार निर्धारित करके सूचकांक प्राप्त किया गया है।

$$Wi = \frac{N}{Fi}$$

$Wi =$ $i$ कार्य का भार

$N =$ अधिवासों की कुल संख्या

$Fi =$ कार्य/उपकार्य वाले अधिवासों की संख्या

$$Cj = \sum_{i=1}^{k} Wi \times ij$$

$Cj =$ j अधिवास के लिये संयुक्त भार

$Wi =$ i सेवा का भार

$Xij =$ j अधिवास में i सेवा का भार

$K =$ किसी सेवा की उपसेवाओं का योग

अध्ययन क्षेत्र में जिस सेवा की संख्या अधिक है, उसे कम भार प्राप्त हुआ है जबकि कम संख्या होने पर अधिक भार प्राप्त हुआ है। यह तथ्य केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त के अनुरूप है। तहसील में सेवाओं के पदानुक्रम निर्धारण में प्रयुक्त 34 प्रकार की सेवाओं में विद्युत आपूर्ति का कार्यिक भार सबसे कम 1.04 है। इसी प्रकार शिक्षा सेवाओं में कॉलेज शिक्षा तथा प्रशासन सेवाओं में तहसील मुख्यालय का कार्यिक भार

सर्वाधिक क्रमशः 56.6, 170 है क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में मात्र तीन अधिवास में कॉलेज तथा एक ही तहसील मुख्यालय है। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की 34 सेवाओं को निम्न तालिका संख्या 5.1 में दर्शाया गया है।

**तालिका संख्या 5.1**

**देवली तहसील : सेवाओं का कार्यिक भार**

| क्र. | सेवाओं का नाम | कुल अधिवास जहाँ सेवा उपलब्ध है। | कार्यिक भार |
|---|---|---|---|
| 1. | प्राथमिक विद्यालय | 108 | 1.5 |
| 2. | उच्च प्राथमिक विद्यालय | 56 | 3.03 |
| 3. | माध्यमिक विद्यालय | 36 | 4.7 |
| 4. | उच्च माध्यमिक विद्यालय | 14 | 12.1 |
| 5. | महाविद्यालय | 3 | 56.6 |
| 6. | स्वास्थ्य केन्द्र | 7 | 24.2 |
| 7. | प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र | 11 | 15.4 |
| 8. | प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र | 53 | 3.2 |
| 9. | परिवार कल्याण केन्द्र | 8 | 21.2 |
| 10. | डिस्पेंसरी | 13 | 13.07 |
| 11. | अस्पताल | 3 | 56.6 |
| 12. | जलापूर्ति | 35 | 4.8 |
| 13. | विद्युत आपूर्ति | 163 | 1.04 |
| 14. | खाद्य आपूर्ति | 68 | 2.5 |
| 15. | विश्राम गृह | 7 | 24.2 |
| 16. | राष्ट्रीयकृत बैंक | 15 | 11.3 |
| 17. | सहकारी बैंक | 15 | 11.3 |
| 18. | टेलीविजन | 52 | 3.2 |
| 19. | पुस्तकालय | 8 | 21.2 |
| 20. | सिनेमा | 9 | 18.8 |
| 21. | खेल का मैदान | 110 | 1.5 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 22. | डाकघर | 5 | 34 |
| 23. | कुरियर सेवा | 5 | 34 |
| 24. | दूरभाष | 106 | 1.6 |
| 25. | सामान्य सेवा केन्द्र/इंटरनेट कैफे | 50 | 3.4 |
| 26. | कृषि सहकारी समिति | 29 | 5.8 |
| 27. | अकृषि सहकारी समिति | 2 | 85 |
| 28. | तहसील मुख्यालय | 1 | 170 |
| 29. | ग्राम पंचायत मुख्यालय | 39 | 4.3 |
| 30. | खाद एवं उर्वरक केन्द्र | 40 | 4.2 |
| 31. | पशु चिकित्सा केन्द्र | 9 | 18.8 |
| 32. | परिवहन | 58 | 2.9 |
| 33. | थोक बाजार | 21 | 8.09 |
| 34. | खुदरा बाजार | 154 | 1.1 |

**केन्द्रीयता का निर्धारण :–**

सभी सेवाओं का कार्यिक भार ज्ञात करने के पश्चात् प्रत्येक अधिवास के केन्द्रीयता सूचकांक का निर्धारण किया गया। इसके लिए अधिवास में उपलब्ध सभी सेवाओं के भार को जोड़ा गया। उदाहरणार्थ किसी अधिवास में एक प्राथमिक विद्यालय, जलापूर्ति तथा विद्युत आपूर्ति सेवाएँ उपलब्ध हैं तो उस अधिवास का केन्द्रीयता सूचकांक तीनों सेवाओं के कार्यिक भार का योग अर्थात् 1.5 + 4.8 + 1.04 = 7.34 होगा।

**अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीयता का निर्धारण :–**

देवली तहसील में निर्धारित 170 आबाद सेवा केन्द्रों के पदानुक्रम हेतु कार्यों एवं सेवाओं के आधार पर अलग–अलग केन्द्रीयता सूचकांक ज्ञात किया गया। तत्पश्चात् प्रत्येक अधिवास के केन्द्रीयता सूचकांक को अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया। जिसे द्वि–लघुगणकीय ग्राफ पर आलेखित करने से उसमें चार विच्छेदन बिन्दु दिखाई पडते हैं। (आरेख संख्या–5.1) इन्हीं विच्छेदन बिन्दुओं के आधार पर सेवा क्षेत्र

के सेवा केन्द्रों को पांच पदानुक्रमीय वर्गों में विभक्त किया गया। आरेख में अधिवासों की जनसंख्या को x अक्ष पर तथा केन्द्रीयता सूचकांक को y अक्ष पर दर्शाया गया है।

**कार्यात्मक केन्द्रीयता और जनसंख्या आकार :–**

आरेख संख्या 5.1 में अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या आकार तथा केन्दीयता सूचकांक में कार्लपियर्सन विधि द्वारा उच्च सकारात्मक सहसंबंध को दर्शाया गया है।

**तालिका संख्या 5.2**
**देवली तहसील : पदानुक्रम के स्तर के अनुसार अधिवासों की संख्या**
**(कार्यात्मक_केन्द्रीयता सूचकांक)**

| पदानुक्रम स्तर | केन्द्रीयता सूचकांक | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| I | 1000 से अधिक | 1 | 0.59 |
| II | 500 से 1000 | 1 | 0.59 |
| III | 200 से 500 | 7 | 4.12 |
| IV | 20 से 200 | 42 | 24.7 |
| V | 20 से कम | 119 | 70 |
| **Total** | | **170** | **100** |

उपरोक्त तालिका अधिवासों को उनके केन्द्रीयता सूचकांक के आधार पर पदानुक्रम के स्तर को दर्शाती है।

उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट हो रहा है कि जैसे–जैसे पदानुक्रम के स्तर में वृद्धि हो रही है वैसे–वैसे अधिवासों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। अध्ययन क्षेत्र के 17 गैर आबाद अधिवासों को पदानुक्रम के स्तरों में शामिल नहीं किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक 119 अधिवास पदानुक्रम के पाँचवे स्तर में स्थित हैं। जो कि पदानुक्रम में सम्मिलित कुल अधिवासों का 70% है।

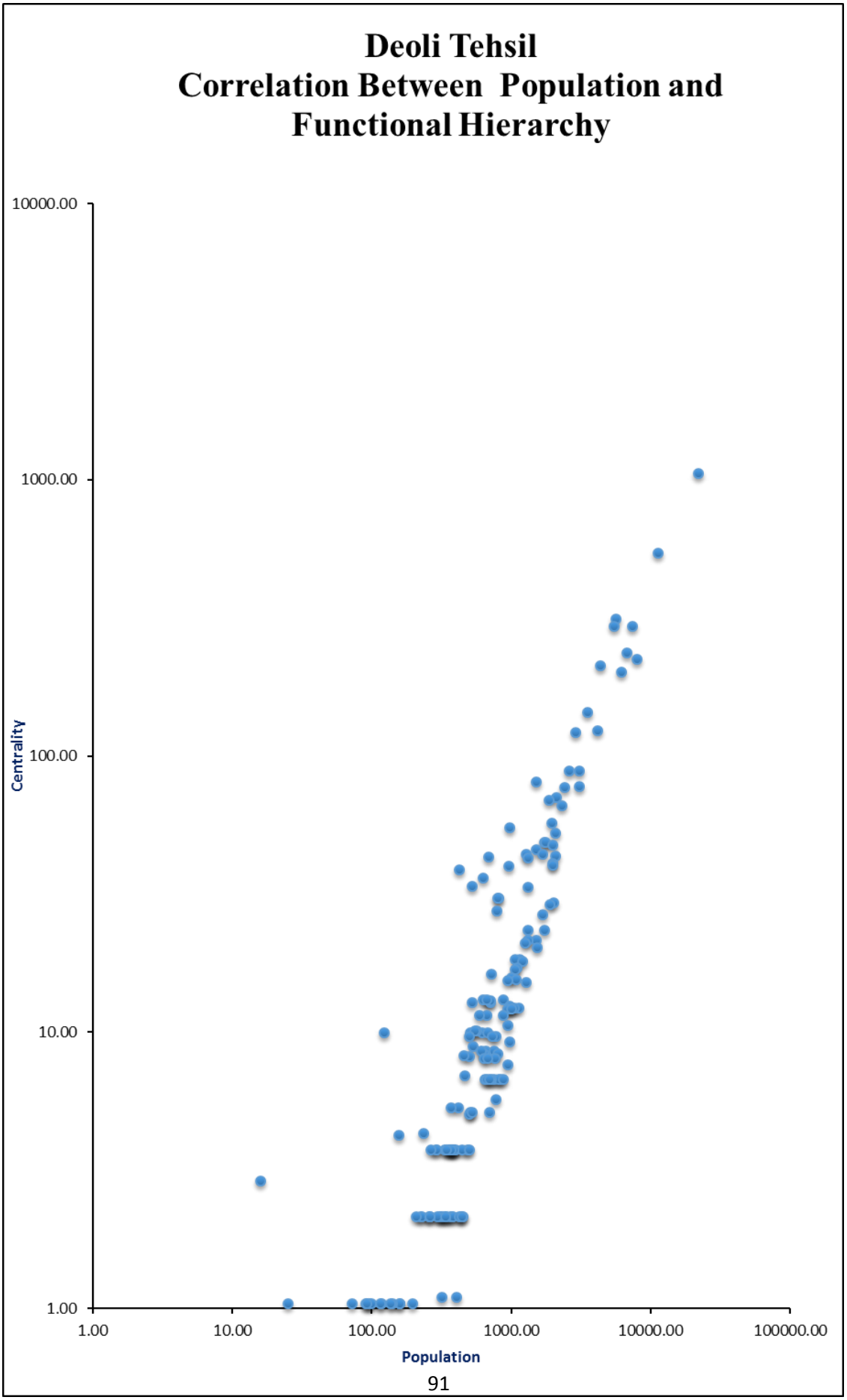

Deoli Tehsil
Correlation Between Population and Functional Hierarchy
10000.00
1000.00
100.00
10.00
1.00
Centrality
1.00
10.00
100.00
1000.00
10000.00
100000.00
Population

अध्ययन क्षेत्र के दो अधिवास देवली नगरीय केन्द्र तथा दूनी क्रमशः पदानुक्रम के प्रथम व द्वितीय स्तर में स्थित है, इन दोनों ही अधिवासों का केन्द्रीयता सूचकांक क्रमशः 1050.72 व 543.46 है। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7 अधिवास तथा चतुर्थ स्तर में 42 अधिवास सम्मिलित हैं। पंचम स्तर में अप्रत्याशित वृद्धि के साथ अधिवासों की संख्या 119 हो गई।

**पदानुक्रमीय तंत्र का स्थानिक वितरण :–**

**प्रथम स्तर के अधिवास :–**

ग्राफ संख्या 5.1 तथा तालिका संख्या 5.2 से स्पष्ट होता है कि पदानुक्रम के प्रथम स्तर में स्थित देवली नगरीय केन्द्र सर्वाधिक 1050.72 केन्द्रीयता सूचकांक वाला अधिवास है। देवली नगरीय केन्द्र हमारे अध्ययन क्षेत्र का मुख्यालय भी है। देवली तहसील मुख्यालय होने के कारण यहाँ सभी 15 प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध हैं। देवली नगर के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका यहां से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 की है जो इसे राज्य के अन्य जिलों से जोड़ता है।

**द्वितीय स्तर के अधिवास :–**

पदानुक्रम के इस स्तर में स्थित अधिवास दूनी का केन्द्रीयता सूचकांक 543.46 है जिसमें सभी 15 प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध है।

**तृतीय स्तर के अधिवास :–**

अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7 अधिवास नगरफोर्ट, आंवा, नासिरदा, राजमहल, देवली, पनवाड़, थांवला स्थित है। उपरोक्त सातों अधिवासों में नगरफोर्ट (312.56) का केन्द्रीयता सूचकांक सर्वाधिक है। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, विद्युत आपूर्ति आदि मौजूद है।

नगरफोर्ट अध्ययन क्षेत्र के उत्तर पूर्व में स्थित सबसे बड़ा केन्द्र है तथा इस क्षेत्र के लगभग सभी अधिवासों को ये अपनी सेवाएँ देता है। इस क्षेत्र का यह

थोकबाजार का एकमात्र केन्द्र है। इस क्षेत्र का यह सर्वाधिक जनसंख्या वाला केन्द्र भी है।

आवां तहसील के पूर्व का सबसे बड़ा केन्द्र है जो इस क्षेत्र के अधिवासों की विभिन्न जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

नासिरदा और थांवला तहसील के उत्तर पश्चिम में स्थित है। यहां 14 प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध है जैसे शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, विद्युत, संचार आदि। लेकिन यहां कॉलेज शिक्षा, विश्रामगृह, गैर कृषि सहकारी समितियों आदि का अभाव है।

देवली तहसील के पश्चिम में देवली नगर के निकट स्थित है जहाँ 14 प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध हैं। यह अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवली नगरीय केन्द्र पर ही निर्भर है।

राजमहल अध्ययन क्षेत्र के उत्तर में स्थित सबसे बड़ा केन्द्र है जहाँ 15 प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध हैं लेकिन कुछ उपसेवाओं जैसे कॉलेज, डाकघर, कूरियर, गैर कृषि सहकारी समिति आदि का अभाव है।

पनवाड़ अध्ययन क्षेत्र के पूर्व में स्थित केन्द्र है जहां 13 प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध हैं। यह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवली नगरीय केन्द्र पर ही निर्भर है।

**चतुर्थ स्तर के अधिवास :–**

पदानुक्रम के इस स्तर में अध्ययन क्षेत्र के 42 अधिवास स्थित है। धुंआकला में 13 प्रकार की सेवाएं उपलब्ध है तथा यह पदानुक्रम के चतुर्थ स्तर में सर्वाधिक केन्द्रीयता सूचकांक (144.23) वाला अधिवास है। इस अधिवास में लगभग सभी जरूरी आवश्यक सेवाएँ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, दूरभाष, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, बैंकिंग, सहकारी समिति आदि उपलब्ध है। इस अधिवास के आस–पास के कई अधिवास अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसी पर निर्भर है। घाड़ पदानुक्रम के इस स्तर में द्वितीय स्थान रखता है जिसमें शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, विद्युत, बैंकिंग, दूरभाष, सहकारी समिति आदि सेवाएं उपलब्ध हैं लेकिन कुछ उपसेवाओं का अभाव भी है।

इस स्तर के अन्य अधिवास हैं– चांदली, बीजवाड़, डाबरकलां, सरोली, बन्थली, निवारिया, संथली, राजकोट, देवडावास, कनवाड़ा, चारनेट, मालेड़ा, हिसामपुर, सावंतगढ़, सीतापुरा, कासीर आदि।

**पंचम स्तर के अधिवास :–**

पदानुक्रम के इस स्तर में तहसील के 119 अधिवास सम्मिलित हैं जिनमें कम से कम 1 तथा अधिक से अधिक 8 प्रकार की सेवाएं उपलब्ध हैं जिनमें शिक्षा, जलापूर्ति, दूरभाष, परिवहन, खाद्य आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, खुदरा बाजार तथा खेल मैदान प्रमुख हैं। अन्य सेवाओं के लिए इन्हें अपने निकटवर्ती केन्द्र जाना पड़ता है।

**जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम :–**

देवली तहसील के सभी अधिवासों में कुल गैर प्राथमिक कार्यों में लगे लोगों की संख्या 30296 हैं। गैर प्राथमिक कार्यों में लगी जनसंख्या का विस्तार मुख्यतः सड़क से लगे हुए बड़े अधिवासों में अधिक हैं। एक अधिवास या केन्द्र जिसमें, गैर प्राथमिक कार्यों में लगे लोगों की संख्या का प्रतिशत अधिक है उसकी सेवा क्षमता भी अधिक है और वे कम गैर प्राथमिक कार्यों में लगी जनसंख्या वाले अधिवासों की अपेक्षा अधिक बड़े क्षेत्र को अपनी सेवाएं दे सकता है। इसलिए यह तरीका किसी क्षेत्र में अधिवासों की केन्द्रीयता तथा पदानुक्रम के स्तर को जानने में सही सिद्ध हो सकता है। क्षेत्र में अधिवासों की केन्द्रीयता निम्न सूत्र से ज्ञात की जा सकती है।

$$C = \frac{N \times 100}{P}$$

C = अधिवासों की केन्द्रीयता

N = उस अधिवास में गैर प्राथमिक कार्य में संलग्न जनसंख्या

P = तहसील में कुल गैर प्राथमिक कार्य में संलग्न जनसंख्या

**केन्द्रीयता व जनसंख्या आकार :–**

यह देखा गया है कि जनसंख्या आकार और केन्द्रीयता सूचकांक में घनिष्ठ सहसंबंध है। r का मूल्य 0.99 है। इसका मतलब यह है कि यदि अधिवास का

आकार बड़ा है तो उसका केन्द्रीयता सूचकांक भी उच्च होगा। तहसील के कुछ अधिवास विपरीत संबंध भी रखते हैं। उनमें जनसंख्या तो कम है परन्तु उनका केन्द्रीयता सूचकांक अधिक है क्योंकि ये अधिवास गैर प्राथमिक कार्यकर्त्ताओं की अधिकता रखते हैं।

## केन्द्रीयता और पदानुक्रम :–

तहसील के सभी अधिवासों को कार्यात्मक अवरोधों के आधार पर पांच वर्गों में रखा गया है। तालिका संख्या 5.3 में अधिवासों की संख्या को उनके स्तर और केन्द्रीयता सूचकांक के आधार पर दर्शाया गया है।

**तालिका संख्या 5.3**
**देवली तहसील : पदानुक्रम के स्तर के अनुसार अधिवासों की संख्या**
**(जनसंख्या केन्द्रीयता सूचकांक)**

| पदानुक्रम स्तर | केन्द्रीयता सूचकांक | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| I | 10.00 से अधिक | 1 | 0.59 |
| II | 3.00 – 10.00 | 7 | 4.12 |
| III | 0.9 – 3.00 | 7 | 4.12 |
| IV | 0.13 – 0.9 | 74 | 43.53 |
| V | 0.003 – 0.13 | 81 | 47.64 |
| | **योग –** | **170** | **100** |

तालिका संख्या 5.3 तथा आरेख संख्या 5.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि तहसील के पांचवें स्तर में स्थित 47.64 प्रतिशत आबाद अधिवासों का केन्द्रीयता सूचकांक 0.003 से 0.13 के मध्य है। देवली नगर अध्ययन क्षेत्र में पदानुक्रम की दृष्टि से शीर्ष पर स्थित है। पदानुक्रम के द्वितीय स्तर में सात अधिवास दूनी, नगरफोर्ट, देवली, घाड़, आवां, राजमहल, नासिरदा है। इन सभी अधिवासों में उच्च सेवाएं जैसे वाणिज्यिक सेवाएं, निर्माण उद्योग आदि स्थित हैं।

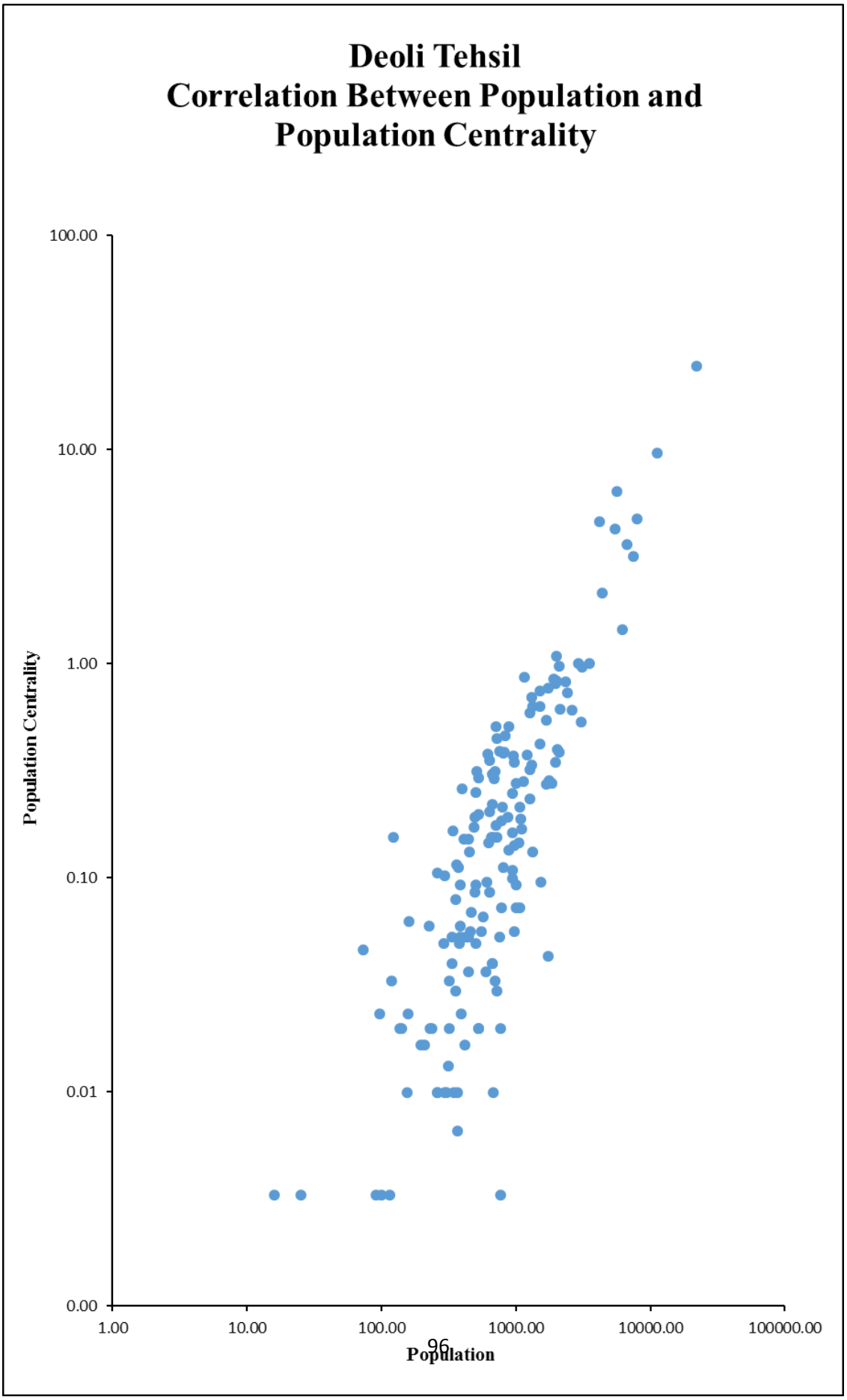
Deoli Tehsil
Correlation Between Population and Population Centrality
100.00
10.00
1.00
0.10
0.01
0.00
Population Centrality
1.00
10.00
100.00
1000.00
10000.00
100000.00
Population

जिनमें गैर प्राथमिक कार्यकर्त्ता लगे हुए हैं। यद्यपि देवली नगर का केन्द्रीयता सूचकांक 24.55 है जो कि तहसील में सर्वाधिक है। क्योंकि यह तहसील मुख्यालय है। अध्ययन क्षेत्र के कुछ ग्रामीण लोग अपनी आजीविका के लिए रोजाना देवली नगर तथा दूनी जाते हैं। उनमें से कुछ घरेलू उद्योगों में भी लगे हुए हैं।

तहसील के 7 अधिवासों को पदानुक्रम के तृतीय स्तर में रखा गया है। इस स्तर में सर्वाधिक केन्द्रीयता सूचकांक (2.13) पनवाड़ की है। सभी अधिवास विकसित है और सामाजिक, आर्थिक, वाणिज्यिक तथा निर्माण उद्योगों से सुसज्जित हैं।

पदानुक्रम के चतुर्थ स्तर में 74 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। इसकी केन्द्रीयता 0.13 से 0.9 के मध्य है। ये सभी अधिवास सेवाओं तथा कार्यों की दृष्टि से गरीब है। इन अधिवासों के गैर प्राथमिक कार्यकर्ता निकट के बड़े कस्बों तथा ग्रामीण अधिवासों में रोजगार के लिये जाते हैं।

पदानुक्रम के पंचम स्तर में अध्ययन क्षेत्र के 81 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं। इन अधिवासों का केन्द्रीयता सूचकांक 0.003 से 0.13 के मध्य है। इन सभी अधिवासों में गैर कृषि कार्यों में लगे लोगों की संख्या सबसे कम है और इनकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र के 17 गैर आबाद अधिवासों को पदानुक्रम के स्तरों में सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः इन्हें तालिका में नहीं दर्शाया गया है।

**पदानुक्रम के स्तरों का स्थानिक वितरण :–**

**प्रथम स्तर के अधिवास :–**

देवली नगर को इस वर्ग के अन्तर्गत रखा गया है।

**द्वितीय स्तर के अधिवास :–**

पदानुक्रम के इस स्तर में अध्ययन क्षेत्र के 7 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। दूनी इस स्तर का सबसे बड़ा केन्द्र है, जिसकी केन्द्रीयता (9.67) इस स्तर के अधिवासों में सर्वाधिक है।

**तृतीय स्तर के अधिवास :–**

पदानुक्रम के इस स्तर में अध्ययन क्षेत्र के 7 अधिवास शामिल हैं। जनसंख्या की दृष्टि से थांवला इस स्तर का सबसे बड़ा अधिवास है जबकि पनवाड़ (2. 13) की केन्द्रीयता इस स्तर के अधिवासों में सर्वाधिक है।

**चतुर्थ स्तर के अधिवास :–**

अध्ययन क्षेत्र में इस स्तर के 74 अधिवास हैं जो तहसील के सभी क्षेत्रों में व्याप्त हैं। ये सभी अधिवास विकसित ग्रामीण केन्द्रों तथा नगरीय केन्द्रों के निकट स्थित है।

**पंचम स्तर के अधिवास :–**

अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक 81 अधिवास पदानुक्रम के इस स्तर में सम्मिलित हैं। यह अधिवास उन क्षेत्रों में स्थित है जहाँ कृषि तथा सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। ये अधिवास विकसित ग्रामीण केन्द्रों तथा नगरीय केन्द्रों से सर्वाधिक दूरी पर स्थित है।

**संयुक्त केन्द्रीयता के आधार पर अधिवासों का पदानुक्रम तथा अन्तिम क्रम :–**

अध्ययन क्षेत्र के अधिवासों की संयुक्त केन्द्रीयता के आधार पर अन्तिम पदानुक्रम निश्चित किया गया। संयुक्त केन्द्रीयता निकालने का तरीका बहुत ही सहज है। उदाहरणार्थ एक अधिवास की कार्यात्मक केन्द्रीयता 200.00 और उसी अधिवास की जनसंख्या केन्द्रीयता 50.25 है तो उस अधिवास की संयुक्त केन्द्रीयता 200.00 + 50.25 = 250.25 होगी।

संयुक्त केन्द्रीयता ज्ञात करने के पश्चात् सभी अधिवासों की जनसंख्या तथा संयुक्त केन्द्रीयता को द्विलघुगणकीय ग्राफ (5.3) पर दर्शाया गया और निम्न तथ्यों को जाँचा गया।

अधिवासों के जनसंख्या आकार तथा केन्द्रीयता में कोई न कोई सहसंबंध जरूर हैं। ग्राफ पेपर पर कोई न कोई अवरोध बिन्दु (ब्रेक पॉइन्ट) जरूर है जिसे

अधिवासों की भिन्नता को पदानुक्रम की श्रेणी में निर्धारित करने के लिए प्रयोग में लिया जाता है।

(i) जनसंख्या आकार और केन्द्रीयता :–

आरेख संख्या 5.3 से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीयता सूचकांक तथा जनसंख्या आकार में उच्च धनात्मक सहसंबंध है जिसका मूल्य r = .95 है।

(ii) केन्द्रीयता व पदानुक्रम :–

जैसा कि तालिका संख्या 5.4 से स्पष्ट होता है कि संयुक्त केन्द्रीयता तथा अधिवासों की जनसंख्या को पांच क्रमबद्ध पदानुक्रम में रखा गया है। जो कि अधिवासों की संख्या को उनके स्तर के अनुसार दर्शाती है।

अध्ययन क्षेत्र के 17 गैर आबाद गांवों को इस तालिका में शामिल नहीं किया गया है।

**तालिका संख्या 5.4**
**देवली तहसील : पदानुक्रम के स्तर के अनुसार अधिवासों की संख्या**
**(संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक)**

| पदानुक्रम स्तर | केन्द्रीयता सूचकांक | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| I | 1000 से अधिक | 1 | 0.59 |
| II | 500 से 1000 | 1 | 0.59 |
| III | 200 से 500 | 7 | 4.12 |
| IV | 15 से 200 | 52 | 30.59 |
| V | 15 से कम | 109 | 64.11 |
| **Total** | | **170** | **100** |

पदानुक्रम के प्रथम स्तर में अध्ययन क्षेत्र का एक अधिवास सम्मिलित हैं जिसमें तहसील मुख्यालय देवली नगर है। देवली नगर 1075.27 संयुक्त केन्द्रीयता के साथ सभी अधिवासों में शीर्ष पर स्थित है। पदानुक्रम के द्वितीय स्तर में एक अधिवास दूनी (553.13) है।

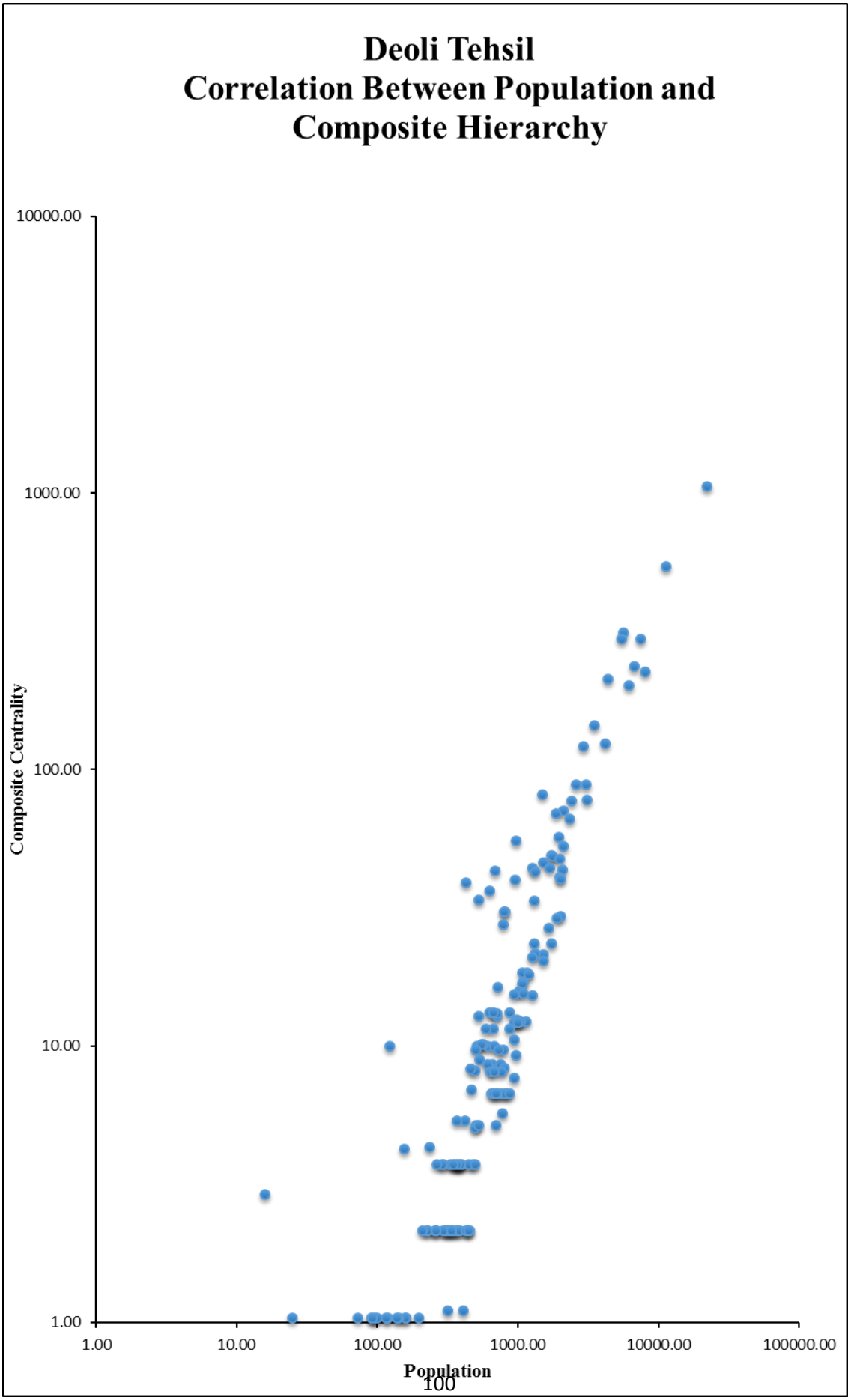
Deoli Tehsil
Correlation Between Population and Composite Hierarchy
10000.00
1000.00
100.00
10.00
1.00
Composite Centrality
1.00
10.00
100.00
1000.00
10000.00
100000.00
Population

पदानुक्रम के तृतीय स्तर में सात अधिवासों नगरफोर्ट (318.95), आवां (299.55), नासिरदा (298.38), राजमहल (239.90), देवली (229.46), पनवाड़ (214.36) तथा थांवला (202.66) को सम्मिलित किया गया है।

पदानुक्रम के चतुर्थ स्तर में अध्ययन क्षेत्र के 52 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है जिसमें सर्वाधिक केन्द्रीयता सूचकांक धुंआकला की 145.23 है।

पदानुक्रम के पंचम स्तर में सर्वाधिक 109 अधिवास शामिल हैं। इन अधिवासों में 1 से 5 तक सेवाएँ मौजूद हैं। इनमें बड़ी सेवाओं जैसे स्वास्थ्य, मनोरंजन, पशु चिकित्सा, खाद्य आपूर्ति, सहकारिता का अभाव है।

**तालिका संख्या 5.5**

**देवली तहसील : कार्यात्मक पदानुक्रम और जनसंख्या पदानुक्रम में अन्तर**

| पदानुक्रम स्तर | कार्यात्मक पदानुक्रम (अधिवासों की संख्या) | जनसंख्या पदानुक्रम (अधिवासों की संख्या) | अन्तर |
|---|---|---|---|
| I | 1 | 1 | 0 |
| II | 1 | 7 | 6 |
| III | 7 | 7 | 0 |
| IV | 42 | 74 | 32 |
| V | 119 | 81 | 38 |
| **Total** | **170** | **170** | |

तालिका संख्या 5.5 में दो पदानुक्रमों में भिन्नता को दर्शाया गया है जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

**प्रथम स्तर :–**

पदानुक्रम के प्रथम स्तर में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। देवली नगर दोनों पदानुक्रम में प्रथम स्तर में मौजूद हैं।

**द्वितीय स्तर :–**

इस वर्ग में कार्यात्मक पदानुक्रम में 1 अधिवास को सम्मिलित किया गया है जबकि जनसंख्या पदानुक्रम में इस वर्ग में अधिवासों की संख्या 7 है अर्थात 6 अधिवास जनसंख्या पदानुक्रम में अधिक हैं। दूनी दोनों ही पदानुक्रमों में द्वितीय वर्ग में स्थित है। नगरफोर्ट, आंवा, नासिरदा, राजमहल, देवली जनसंख्या पदानुक्रम में द्वितीय स्तर में तथा कार्यात्मक पदानुक्रम में तृतीय स्तर में स्थित है इससे स्पष्ट होता है कि इनमें गैर प्राथमिक कार्यकर्ता तो अधिक है परन्तु कुछ सेवाओं की कमी है। घाड़ जनसंख्या पदानुक्रम में द्वितीय स्तर में तथा कार्यात्मक पदानुक्रम में चतुर्थ स्तर में मौजूद है।

**तृतीय स्तर :–**

पदानुक्रम के इस स्तर में किसी प्रकार का अंतर नहीं है। पनवाड़, थांवला दोनों ही पदानुक्रमों में तृतीय वर्ग में स्थित हैं। जबकि नगरफोर्ट, आंवा, नासिरदा, राजमहल, देवली कार्यात्मक पदानुक्रम में तृतीय वर्ग में तथा जनसंख्या पदानुक्रम में द्वितीय वर्ग में स्थित है। धुंआकला, चांदली, बंथली, गैरोली, जूनिया जनसंख्या पदानुक्रम में तीसरे स्तर में तथा कार्यात्मक पदानुक्रम में चतुर्थ स्तर में मौजूद है।

**चतुर्थ स्तर :–**

इस स्तर में कार्यात्मक पदानुक्रम की तुलना में जनसंख्या पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या 32 अधिक हैं। ये सभी अधिवास विकसित ग्रामीण अधिवासों तथा नगरीय केन्द्रों के निकट स्थित हैं। विकसित ग्रामीण अधिवास तथा नगरीय केन्द्र इस स्तर के अधिवासों में कार्यों के विकास तथा सेवाओं की जांच करते हैं।

**पंचम स्तर :–**

पदानुक्रम के इस स्तर में जनसंख्या पदानुक्रम की तुलना में कार्यात्मक पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या 38 अधिक हैं। इन अधिवासों में केवल प्राथमिक सेवाएँ ही मौजूद हैं जैसे शिक्षा, विद्युत आपूर्ति आदि।

तालिका संख्या 5.6

देवली तहसील : कार्यात्मक पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर

| पदानुक्रम स्तर | कार्यात्मक पदानुक्रम (अधिवासों की संख्या) | संयुक्त पदानुक्रम (अधिवासों की संख्या) | अन्तर |
|---|---|---|---|
| I | 1 | 1 | - |
| II | 1 | 1 | - |
| III | 7 | 7 | - |
| IV | 42 | 52 | 10 |
| V | 119 | 109 | 10 |
| **Total** | **170** | **170** | |

उपरोक्त तालिका संख्या 5.6 से स्पष्ट है कि पदानुक्रम के चतुर्थ व पंचम स्तर को छोड़कर शेष सभी स्तरों में दोनों में अधिवासों की संख्या में कोई अन्तर नहीं है। चतुर्थ स्तर में संयुक्त पदानुक्रम में 10 अधिवासों की वृद्धि हुई है तथा पंचम स्तर में कार्यात्मक पदानुक्रम में संयुक्त पदानुक्रम की तुलना में 10 अधिवासों की वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या 5.7

देवली तहसील : जनसंख्या पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर

| पदानुक्रम स्तर | जनसंख्या पदानुक्रम (अधिवासों की संख्या) | संयुक्त पदानुक्रम (अधिवासों की संख्या) | अन्तर |
|---|---|---|---|
| I | 1 | 1 | - |
| II | 7 | 1 | 6 |
| III | 7 | 7 | - |
| IV | 74 | 52 | 22 |
| V | 81 | 109 | 28 |
| **Total** | **170** | **170** | |

उपरोक्त तालिका संख्या 5.7 से कुछ परिणाम प्राप्त होते हैं जो कि जनसंख्या पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम के अन्तर पर आधारित हैं।

पदानुक्रम के केवल पाँचवे स्तर में संयुक्त पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या में 28 अधिवासों की वृद्धि हुई है। इनमें गैर प्राथमिक जनसंख्या नहीं है परन्तु निम्न स्तर की कुछ प्राथमिक सेवाएँ मौजूद हैं।

**सारांश उल्लेख :–**

यह अध्ययन अधिवासों के पदानुक्रम में उपर्युक्त तीनों आधारों के संदर्भ में संदेह उत्पन्न करता है। छोटे अधिवास जो जनसंख्या की विशेषताओं के पदानुक्रम पर आधारित उपयुक्त स्तर नहीं देते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अधिकांश गैर प्राथमिक श्रमिक बड़े केन्द्रीय स्थानों से रोजगार प्राप्त करने के लिए निकटतम अधिवासों से आवागमन करते हैं। इसलिए जनसंख्या की विशेषताओं पर आधारित पदानुक्रम क्षेत्रीय विकास की योजना बनाने में अधिक सहायक नहीं है। सीधे स्त्रोतों से कार्यात्मक उपलब्धता के आधार पर अधिवासों का पदानुक्रम छोटे व बड़े अधिवासों के पदानुक्रम के लिए सही या उचित स्तर प्रदान करते हैं। इन कार्यात्मक आँकड़ों से प्राप्त परिणाम क्षेत्रीय योजना व विकास में काफी सहायक होते हैं।

# संदर्भ सूची


1. Berry, B.J.L., Geography of market centers and retail distribution Englewood cliff's, New Jersey, 1967, P.P. 1-3 and also, p.13.
2. Bhat, L.S., et. Al., Micro Level planning : 'Acase Study of Karnal Area' Haryana India, K.B. Publication, New Delhi 1967, P.60.

# अध्याय षष्ठम

## प्रादेशिक सम्बद्धता का संश्लेषण तथा भावी विकास के लिए व्यूह रचना

**विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिये जनसंख्या का न्यूनतम स्तर :–**

**न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना :–**

न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना किसी क्षेत्रीय अधिवास तंत्र में कार्यात्मक अवस्थिति की रिक्तता के साथ वर्णित की जाती है। किसी क्षेत्र के भविष्य की विकास योजनाओं व सामाजिक आर्थिक कार्यों के संतुलित वितरण में यह अत्यन्त सहायक होती है।

इसे न्यूनतम संख्या के उपभोक्ताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है जो किसी दी गई सेवा के लिए आवश्यक हो[1] और ये वस्तु की न्यूनतम सीमा के चिरसम्मित संकल्पना के समरूप हो।[2] यह सत्य है कि प्रत्येक कार्य के लिए एक निश्चित संख्या के उपभोक्ताओं की आवश्यकता होती है। उपभोक्ताओं की यह संख्या आर्थिक विचार के आधार के अनुसार होती है। वास्तविक जीवन में यह देखा जा सकता है कि कोई कार्य या उपकार्य निश्चित उपभोक्ताओं की संख्या के बिना वृद्धि नहीं कर सकता। इस प्रकार कहा जा सकता है कि एकीकृत क्षेत्रीय विकास की योजना के विभिन्न पहलुओं में न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना बहुत महत्वपूर्ण है। इस संकल्पना का महत्व किसी क्षेत्रीय अधिवास तंत्र में कार्यात्मक रूप से कमजोर अन्तर्सम्बंधित क्षेत्रों की पहचान करना है।[3] न्यूनतम जनसंख्या के लिए कई अन्य शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है जैसे वस्तु की निम्नतम सीमा[4], मध्यका जनसंख्या[5], प्रारंभिक या प्रवेशित जनसंख्या[6]।

उपर्युक्त विचारों से ये साफ है कि जनसंख्या वह स्तर है जो विकास के कार्यों के लिए आवश्यक है।

संकल्पना को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है उदाहरणार्थ– यदि किसी कार्य के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1000 व्यक्ति है तो साधारणतः वह अधिवास जो यह या इससे अधिक जनसंख्या रखते हैं वहां ये कार्य प्रगतिशील हों। इस प्रकार एक योजनाकार के लिए यह देखने में काफी सहायक होते हैं कि कितने क्षेत्र में कार्य चल रहा है और कितने क्षेत्र में कार्य नहीं हुआ है।

न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर योजनाकार इस स्थिति में होता है कि वह यह प्रस्तावित कर सके कि वे सभी अधिवास जो न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या रखते हैं और कार्य नहीं रखते तो इसकी अवश्य पूर्ति की जानी चाहिए।[7]

आवश्यकता के अनुसार योजनाकार उपयोगिता के लिए इसमें बदलाव भी कर सकता है।

यह संकल्पना उस स्थिति में भी उपयोगी है जहाँ कोई एकल अधिवास आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या नहीं रखता हो परन्तु अधिवासों के समूह आपस में जुड़कर न्यूनतम जनसंख्या रखते हों। यदि अधिवासों का समूह न्यूनतम जनसंख्या तथा आवश्यक दूरी दोनों को संतुष्ट करता है तो योजनाकार उन अधिवासों के समूहों में कार्य के विकास की सिफारिश करने की स्थिति में होता है।

**चयनित कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या :–**

विधि तंत्र :–

देवली तहसील में सामाजिक व आर्थिक कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या का निर्धारण रीडमंच विधि (1938)[8] के आधार पर किया गया। इसे निम्न साधारण आलेख विधि द्वारा निर्धारित किया गया है।

OY अक्ष पर कार्यों सहित व कार्यों रहित अधिवासों की कुल संख्या (तालिका संख्या 6.1) को दर्शाया गया है। जबकि इसके विपरीत OX अक्ष पर अधिवासों के जनसंख्या आकारों को दर्शाया गया है। यह तकनीक दो वक्र प्रदान करती है जो कार्यों सहित अधिवासों तथा कार्यों रहित अधिवासों की संख्या को दर्शाते हैं। जब दोनों वक्र किसी एक बिन्दु पर एक दूसरे को काटते हैं तो यह बिन्दु जनसंख्या मापक के रूप में T50 (न्यूनतम जनसंख्या) मूल्य को प्रदर्शित करता है[9]। यह जनसंख्या का ऊपरी स्तर है जहाँ पर इस स्तर के सभी अधिवासों में यह कार्य अवश्य हों। इस प्रकार किसी कार्य की न्यूनतम जनसंख्या उस दिये गये कार्य के प्रवेशित क्षेत्र के मध्य बिन्दु को दर्शाती है।

कई विद्वानों ने कार्यों की आवश्यक जनसंख्या को जानने के लिए कार्य किया परन्तु तार्किक रूप से उनका प्रयास प्रायोगिक नहीं है। इसको जानने के लिए वह कार्य रखने वाले वास्तविक अधिवासों की संख्या में कटौती करनी पड़ती है। वास्तविक कार्यों की संख्या से उनके परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित त्रुटियां हैं।

(i) वे नए अधिवासों की आवश्यकता पर जोर देते हैं जो कि वास्तविक नहीं हैं। वो इस बात पर ध्यान नहीं देते कि अधिवासों की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति की गई है। उदाहरणार्थ – A अधिवास की जनसंख्या 700 है तथा B अधिवास की जनसंख्या 1500 है जबकि दोनों में एक ही प्राथमिक विद्यालय संचालित है। अब प्राथमिक विद्यालय के लिए न्यूनतम जनसंख्या 700 है इनकी विधि में दोनों अधिवासों की आवश्यकताओं की पूर्ति एक–एक प्राथमिक विद्यालय से होनी चाहिए जबकि न्यूनतम जनसंख्या के अनुसार अधिवास A में एक प्राथमिक विद्यालय अवश्य हो लेकिन अधिवास B में बड़े आकार का प्राथमिक विद्यालय हो या दो प्राथमिक विद्यालय हो।

(ii) इनका कार्य यह साफ नहीं करता कि कितने अधिवास न्यूनतम जनसंख्या की श्रेणी में आते हैं और कितने इससे बाहर हैं और इसी प्रकार यह भी स्पष्ट नहीं करता कि कितने अधिवास कार्यों में आते हैं और कितने इससे बाहर हैं।

(iii) उनकी विधि से यह भी स्पष्ट नहीं होता कि जो अधिवास न्यूनतम जनसंख्या स्तर को प्राप्त नहीं करते वहां कार्य क्यों संचालित हैं।

उनके विचारों से वर्णित उपरोक्त कमियों को दूर करने के लिए एक सूत्र परिकलित किया गया जो कि प्रस्तावित कार्यों की सही संख्या बताता है।

$$P_f = \frac{Tp}{T50f}$$

$P_f$ = प्रस्तावित सेवा कार्यों की संख्या

Tp = तहसील की कुल जनसंख्या

$T50_f$ = किसी सेवा केन्द्र के लिए न्यूनतम जनसंख्या

सूत्र के विस्तार के लिए तालिका संख्या 6.2 देखें।

वर्तमान अध्ययन में यह बहुत ही कठिन है कि देवली तहसील के सभी सामाजिक व आर्थिक कार्यों का इस उद्देश्य के लिए विचार किया जा सके क्योंकि उच्चतर कार्य जैसे शिक्षा में स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर, स्वास्थ्य सेवायें जैसे डिस्पेंसरी, अस्पताल, परिवार कल्याण केन्द्र, थोक व्यापार सेवाएँ कुछ ही अधिवासों में केन्द्रित हैं।

सारणी संख्या 6.2 विभिन्न सामाजिक आर्थिक सेवाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या प्रदर्शित करती है। यह आंकिकी मूल्य उस तहसील के अधिवासों में वास्तविक रूप से पाई जाने वाली सामाजिक व अर्थिक सेवाओं के आधार पर परिकलित किया जाता है। केवल वे ही सेवाएँ जो कि अधिसंख्य अधिवासों में पाई गई उन्हीं को इसमें शामिल किया है और वो सेवाएँ जो कि कुछ अधिवासों में पाई गई और जो बड़े आकार के अधिवसों में केन्द्रित है उनका इसमें विचार नहीं किया गया है। यह अधिवास उनके आस–पास के क्षेत्रों में केन्द्रीय अवस्थिति रखते हैं और सभी पक्की सड़कों से जुड़े हैं।

तालिका संख्या 6.1

देवली तहसील : अधिवासों का जनसंख्या आकार सहित कार्यात्मक वितरण और समन्वय

| जनसंख्या आकार | अधिवासों की संख्या | प्राथमिक विद्यालय | | उ0प्रा0विद्यालय | | माध्यमिक विद्यालय | | उ.मा.विद्यालय | | प्राथमिक स्वा. केन्द्र / उपकेन्द्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त |
| 0—199 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 1 | 15 |
| 200—499 | 45 | 0 | 45 | 0 | 45 | 0 | 45 | 0 | 45 | 5 | 40 |
| 500—1999 | 88 | 87 | 1 | 35 | 53 | 16 | 72 | 2 | 86 | 30 | 58 |
| 2000—4999 | 13 | 13 | 0 | 13 | 0 | 12 | 1 | 6 | 7 | 11 | 2 |
| 5000 से अधिक | 8 | 8 | 0 | 8 | 0 | 8 | 0 | 6 | 2 | 7 | 1 |
| | **170** | **108** | **62** | **56** | **114** | 36 | 134 | 14 | 156 | 54 | 116 |

| डिस्पेंसरी | | डाकघर | | पशु चिकित्सा | | खाद्य आपूर्ति | | बैंकिंग | | उर्वरक एवं बीज | | साप्ताहिक बाजार | | कूरियर सेवा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त | सेवाधारक | सेवाविमुक्त |
| 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 | 0 | 16 |
| 0 | 45 | 0 | 45 | 0 | 45 | 1 | 44 | 0 | 45 | 1 | 44 | 0 | 45 | 0 | 45 |
| 0 | 88 | 0 | 88 | 1 | 87 | 46 | 42 | 0 | 88 | 19 | 69 | 0 | 88 | 0 | 88 |
| 5 | 8 | 1 | 12 | 2 | 11 | 13 | 0 | 7 | 6 | 12 | 1 | 0 | 13 | 1 | 12 |
| 8 | 0 | 4 | 4 | 7 | 1 | 8 | 0 | 8 | 0 | 8 | 0 | 7 | 1 | 4 | 4 |
| **13** | **157** | **5** | **165** | **10** | **160** | **68** | **102** | 15 | 155 | 40 | 130 | 7 | 163 | 5 | 165 |

## तालिका संख्या 6.2

### देवली तहसील : सामाजिक आर्थिक कार्य : प्रस्तावित न्यूनतम जनसंख्या सहित प्रस्तावित, वर्तमान तथा आवश्यक कार्यों की संख्या

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्राथमिक विद्यालय | 454 | 472 | 108 | 364 | 115 | 199348 | 439 | 108 | 331 | 55 | 15060 | 33 | 0 | 33 |
| उच्च प्रा0 विद्यालय | 2449 | 88 | 56 | 32 | 15 | 96454 | 39 | 15 | 24 | 155 | 117954 | 48 | 41 | 7 |
| माध्यमिक विद्यालय | 3049 | 70 | 36 | 34 | 13 | 90936 | 30 | 13 | 17 | 157 | 123472 | 40 | 23 | 17 |
| प्रा.स्वा.केन्द्र / उपकेन्द्र | 2749 | 78 | 54 | 24 | 14 | 93846 | 34 | 12 | 22 | 156 | 120562 | 44 | 42 | 2 |
| पशु चिकित्सा | 5299 | 40 | 9 | 31 | 8 | 72764 | 13 | 6 | 7 | 162 | 141644 | 27 | 3 | 24 |
| खाद्य आपूर्ति केन्द्र | 1174 | 182 | 68 | 114 | 44 | 146153 | 124 | 44 | 80 | 126 | 68255 | 58 | 24 | 34 |
| बैंकिंग | 3499 | 61 | 15 | 46 | 11 | 84782 | 24 | 11 | 13 | 159 | 129626 | 37 | 4 | 33 |
| उर्वरक एवं बीज केन्द्र | 3049 | 70 | 40 | 30 | 13 | 90936 | 30 | 13 | 17 | 157 | 123472 | 40 | 27 | 13 |
| साप्ताहिक बाजार | 5449 | 39 | 7 | 32 | 7 | 67319 | 12 | 7 | 5 | 163 | 147089 | 27 | 0 | 27 |

1. कार्य
2. न्यूनतम जनसंख्या
3. प्रस्तावित कार्यों की संख्या
4. वर्तमान कार्यों की संख्या
5. आवश्यक कार्यों की संख्या
6. न्यूनतम जनसंख्या से अधिकतम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या
7. कुल जनसंख्या
8. प्रस्तावित कार्यों की संख्या
9. वर्तमान कार्यों की संख्या
10. आवश्यक कार्यों की संख्या
11. न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या
12. कुल जनसंख्या
13. प्रस्तावित कार्यों की संख्या
14. वर्तमान कार्यों की संख्या
15. आवश्यक कार्यों की संख्या

**कार्यों के आधार पर न्यूनतम जनसंख्या :–**

**शिक्षा :–**

**प्राथमिक विद्यालय –**

तहसील के किसी भी अधिवास में प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 454 होनी चाहिए। इस आधार पर तहसील में 472 विद्यालय प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में तहसील के 108 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में इस कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए 364 प्राथमिक विद्यालय और खोले जाने की आवश्यकता है।

न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तालिका संख्या 6.2 यह दर्शाती है कि तहसील के न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले 115 अधिवासों (जनसंख्या 199348) में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 439 होनी चाहिए जबकि केवल 108 प्राथमिक विद्यालय की उपलब्ध है अतः इस रिक्तता को पूरा करने के लिए 331 प्राथमिक विद्यालयों की और आवश्यकता है।

इसी प्रकार 55 अधिवास (जनसंख्या 15060), जो न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले हैं इनमें एक भी प्राथमिक विद्यालय नहीं हैं जबकि इनकी संख्या 33 होनी चाहिए। अतः इन अधिवासों में इस कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए 33 प्राथमिक विद्यालयों की आवश्यकता है।

**उच्च प्राथमिक विद्यालय –**

तहसील के किसी अधिवास में उच्च प्राथमिक विद्यालय शिक्षा की पूर्ति के लिए न्यूनतम जनसंख्या 2449 होनी चाहिए। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तहसील में प्रस्तावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 88 है जबकि वर्तमान में तहसील में 56 उच्च प्राथमिक विद्यालय ही स्थित हैं। इसका मतलब है कि अध्ययन क्षेत्र में इस कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए 32 उच्च प्राथमिक विद्यालय और खोले जाने की आवश्यकता है।

न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तालिका संख्या 6.2 यह दर्शाती है कि तहसील के न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले 15 अधिवासों

(जनसंख्या 96454) में उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 39 होनी चाहिए जबकि केवल 15 उच्च प्राथमिक विद्यालय ही उपलब्ध हैं अतः इस रिक्तता को पूरा करने के लिए 24 उच्च प्राथमिक विद्यालयों की और आवश्यकता है।

दूसरी तरफ 155 अधिवास (जनसंख्या 117954), जो न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले हैं इनमें 41 उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं, जबकि इनकी संख्या 48 होनी चाहिए। अतः इन अधिवासों में इस कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए 7 उच्च प्राथमिक विद्यालयों की और आवश्यकता है।

**माध्यमिक विद्यालय –**

तहसील के किसी अधिवास में माध्यमिक विद्यालय स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3049 होनी चाहिए। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में 70 माध्यमिक विद्यालय प्रस्तावित है, परन्तु तहसील के 36 अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है। इसका अर्थ यह है कि तहसील में इस कार्यात्मक रिक्तता की पूर्ति के लिए 34 माध्यमिक विद्यालय और होने चाहिए।

न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तालिका संख्या 6.2 दर्शाती है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले 13 अधिवासों (जनसंख्या 90936) में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 30 होनी चाहिए जबकि केवल 13 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है। अतः तहसील में इस कार्यात्मक रिक्तता की पूर्ति के लिए 17 माध्यमिक विद्यालयों की और आवश्यकता है।

इसी प्रकार न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या तहसील में 157 (जनसंख्या 123472) है। इन अधिवासों में 23 माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं जबकि न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर 40 विद्यालय होने चाहिए। अतः तहसील में इस कार्य की रिक्तता को पूरा करने के लिए 17 माध्यमिक विद्यालयों की और आवश्यकता है।

# Threshold Population for Services

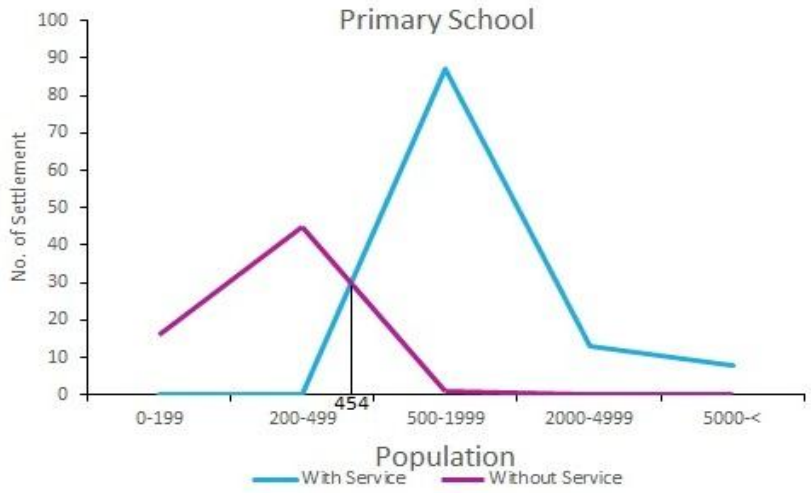


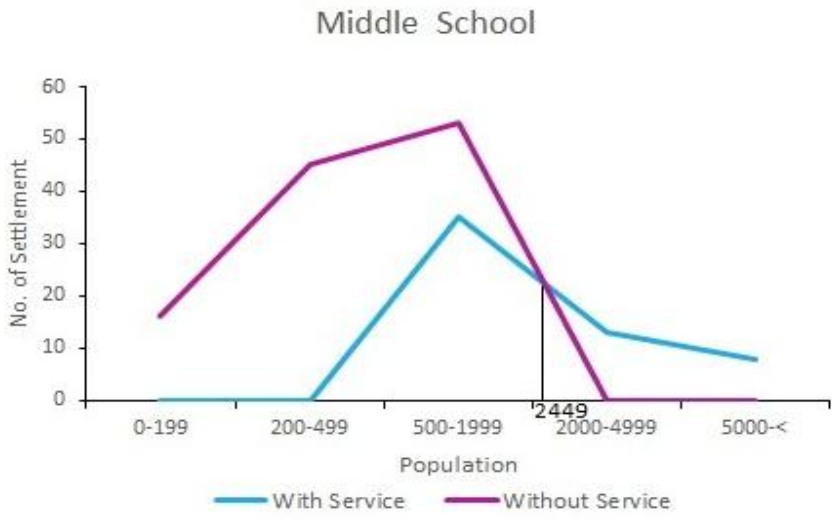


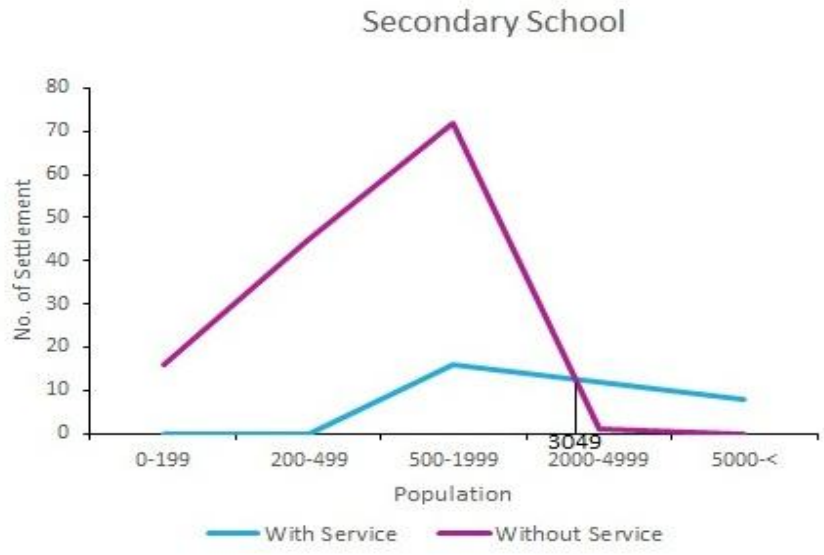

**स्वास्थ्य :–**

**प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र/उपकेन्द्र–**

अध्ययन क्षेत्र के किसी अधिवास में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (उपकेन्द्र सहित) की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 2749 होनी चाहिए। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तहसील में 78 केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 54 केन्द्र ही कार्यरत हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में इस सेवा की कार्यात्मक रिक्तता को पूरा करने के लिए 24 केन्द्र और खोले जाने की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 को देखने से स्पष्ट है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 14 (जनसंख्या 93846) है जिनमें 12 केन्द्र संचालित हैं जबकि न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर 34 केन्द्र प्रस्तावित हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में इस रिक्तता को पूरा करने के लिए 22 केन्द्र और खोले जाने की आवश्यकता है।

दूसरी तरफ तालिका 6.2 से यह भी स्पष्ट होता है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 156 (जनसंख्या 120562) है जिनमें 42 केन्द्र कार्यरत हैं जबकि न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर इन केन्द्रों की संख्या 44 होनी चाहिए। अतः अध्ययन क्षेत्र के इन अधिवासों में इस रिक्तता को भरने के लिए 2 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

**पशु चिकित्सा :–**

तालिका संख्या 6.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि किसी अधिवास में पशु चिकित्सा सेवा की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 5299 होनी चाहिए। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तहसील में 40 केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में तहसील में 9 केन्द्र ही स्थापित हैं अतः तहसील में इस कार्यात्मक रिक्तता को पूरा करने के लिए 31 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तालिका संख्या 6.2 यह दर्शाती है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 8 (जनसंख्या 72764) है। जिनमें 6 पशु चिकित्सा केन्द्र संचालित है। परन्तु न्यूनतम

जनसंख्या के आधार पर इन अधिवासों में 13 केन्द्र स्थित होने चाहिए। अतः अध्ययन क्षेत्र में इस रिक्तता की पूर्ति के लिए 7 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

दूसरी तरफ तालिका 6.2 यह भी दर्शाती है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 162 (जनसंख्या 141644) है जिसमें से मात्र 3 केन्द्र संचालित हैं जिनकी संख्या न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर 27 होनी चाहिए। अतः इस कमी को पूरा करने के लिए 24 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता ळें

**खाद्य आपूर्ति केन्द्र :–**

तहसील में किसी भी अधिवास में खाद्य आपूर्ति केन्द्र की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1174 होनी चाहिए। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तहसील में 182 केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 68 केन्द्र ही संचालित हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में इस सेवा की रिक्तता को पूरा करने के लिए 114 केन्द्र और स्थापित करने की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 44 (जनसंख्या 146153) है। जिनमें 44 केन्द्र स्थापित हैं। परन्तु न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर इन केन्द्रों की संख्या 124 होनी चाहिए अतः 80 केन्द्र और खोले जाने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले 126 अधिवासों (जनसंख्या 68255) में 24केन्द्र ही स्थित है जबकि न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर इनकी संख्या 58 होनी चाहिए। अतः इस कमी को पूरा करने के लिए 34 केन्द्र और स्थापित करने की आवश्यकता है।

# Threshold Population for Services

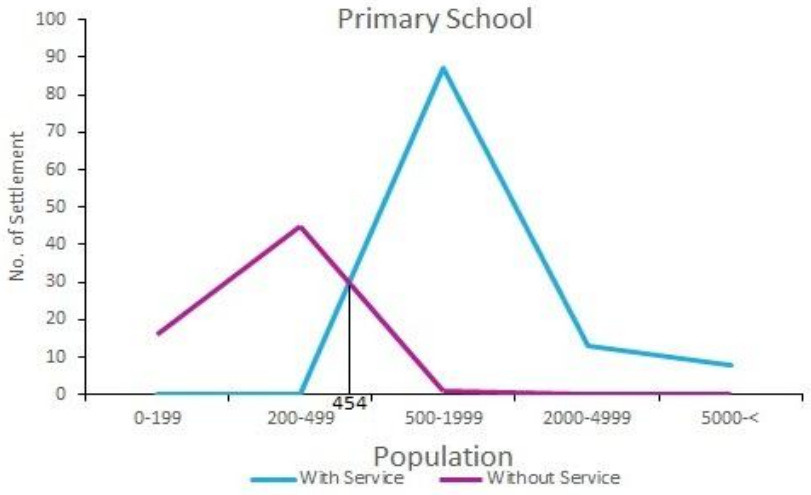


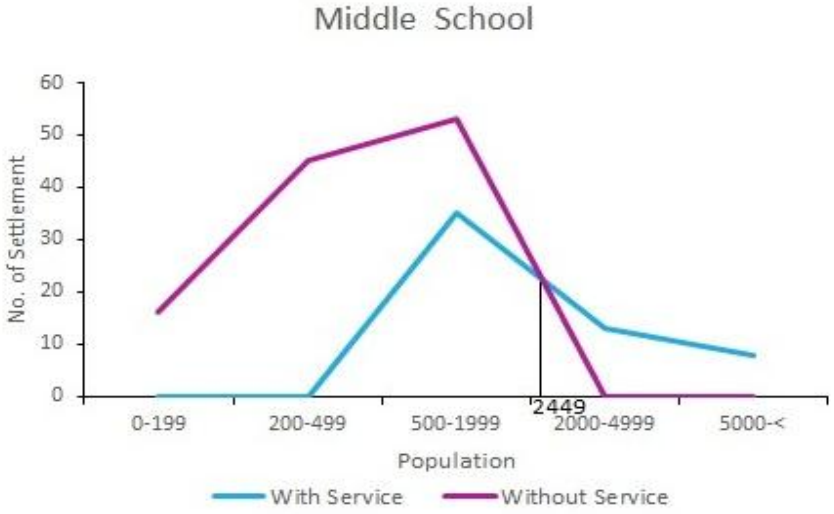


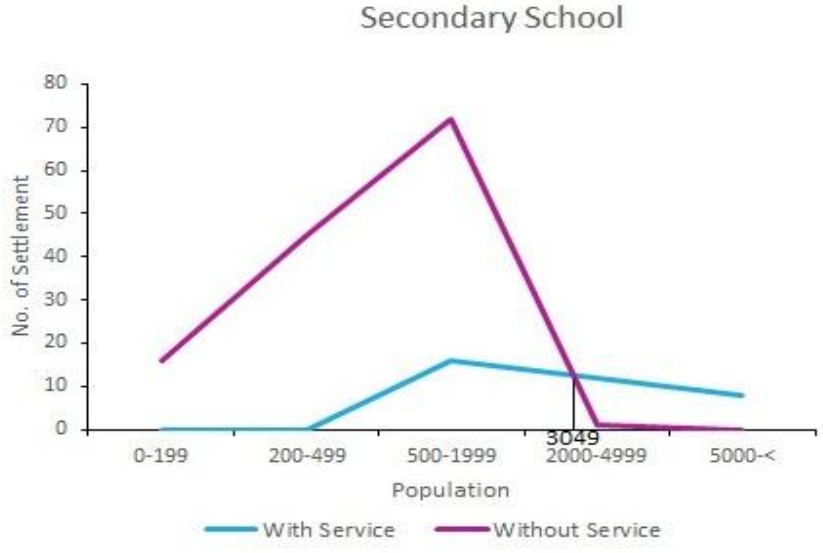

**बैंकिंग :–**

तालिका संख्या 6.2 को देखने से स्पष्ट है कि तहसील में बैंकिंग सुविधा के विकास के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3499 होनी चाहिए। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तहसील में 61 बैंक प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में तहसील में 15 बैंक ही कार्यरत हैं। अतः इस रिक्तता को पूरा करने के लिए 46 बैंक और स्थापित करने की आवश्यकता है।

तालिका से स्पष्ट है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 11 (जनसंख्या 84782) है। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर इनकी संख्या 24 होनी चाहिए परन्तु यह सुविधा 11 अधिवासों में ही उपलब्ध है। अतः इस कार्य की रिक्तता की पूर्ति के लिए 13 बैंक और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

तालिका 6.2 से यह भी स्पष्ट है कि तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 159 (जनसंख्या 129626) है। जिनमें से मात्र 4 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है जबकि 37 बैंकों की आवश्यकता है। अतः इस सेवा की रिक्तता को पूरा करने के लिए 33 बैंक और खोले जाने की आवश्यकता है।

**उर्वरक केन्द्र :–**

तालिका संख्या 6.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में इस कार्य की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3049 होना आवश्यक है। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तहसील में 70 केन्द्र प्रस्तावित है परन्तु तहसील में 40 केन्द्र ही स्थापित हैं। अतः इस कार्यात्मक रिक्तता को पूरा करने के लिए 30 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

तालिका से यह भी स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 13 (जनसंख्या 90936) है और इनमें 13 केन्द्र स्थापित हैं जबकि न्यूनतम  जनसंख्या के आधार पर इन केन्द्रों की संख्या

# Threshold Population for Services

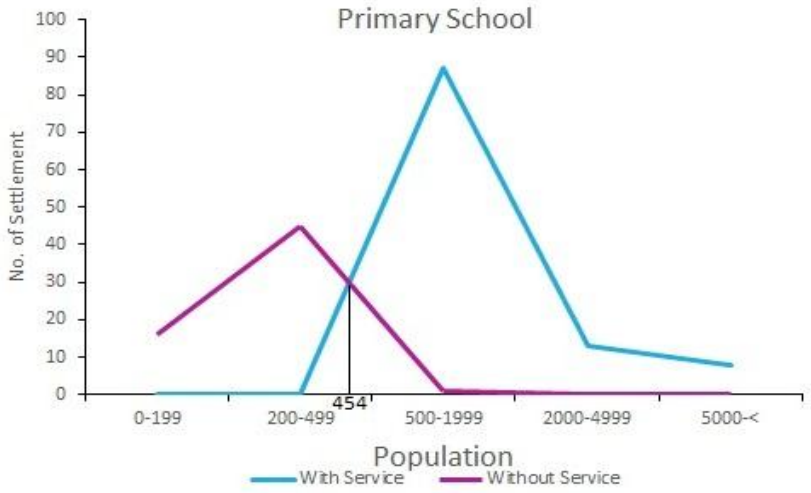


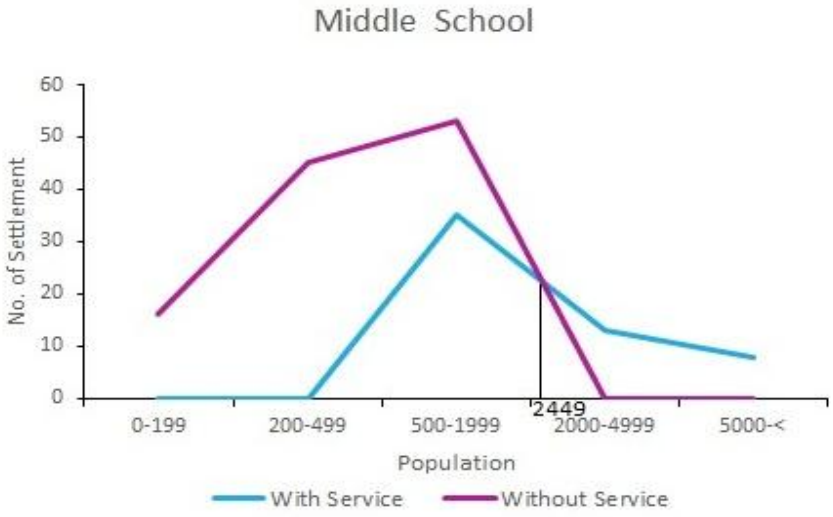


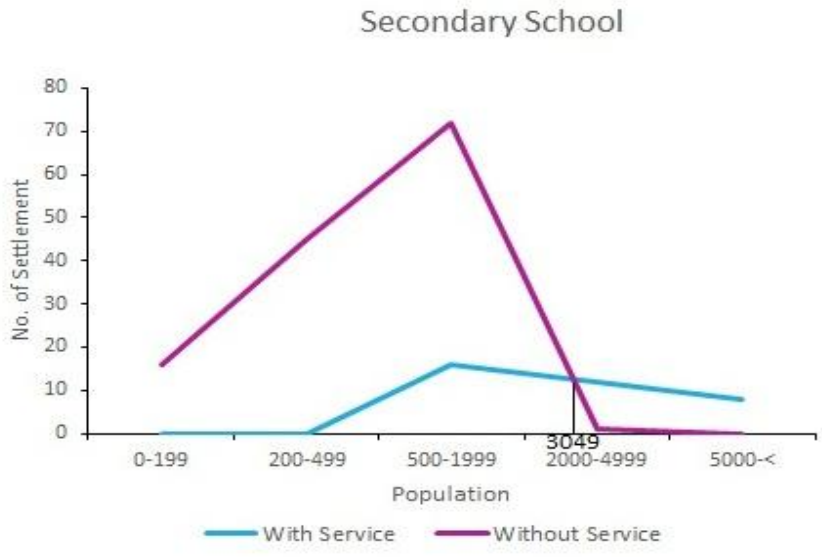

30 होनी चाहिए। अतः इस कार्यात्मक रिक्तता को समाप्त करने के लिए 17 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

दूसरी तरफ अध्ययन क्षेत्र में न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 157 (जनसंख्या 123472) है। इन अधिवासों में न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर 40 केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 27 केन्द्र ही संचालित हैं। अतः अध्ययन के क्षेत्र में इस कार्यात्मक रिक्तता को मिटाने के लिए 13 केन्द्र और स्थापित करने की आवश्यकता है।

**साप्ताहिक बाजार (हाट बाजार) :–**

तालिका संख्या 6.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में साप्ताहिक बाजार की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 5449 होनी चाहिए। अध्ययन क्षेत्र में न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर 39 साप्ताहिक बाजार केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 7 केन्द्र ही कार्यरत हैं। अतः अध्ययन क्षेत्र में इस कार्यात्मक रिक्तता को पूरा करने के लिए 32 और बाजार केन्द्र स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

तालिका 6.2 से यह स्पष्ट होता है कि एक ओर जहाँ तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 7 (जनसंख्या 67319) है वहां न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर 12 केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 7 केन्द्र ही कार्यरत हैं अतः इस रिक्तता को भरने के लिए 5 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

दूसरी तरफ तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 163 (जनसंख्या 147089) है जिनमें एक भी केन्द्र कार्यरत नहीं है जबकि न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर इन केन्द्रों की संख्या 27 होनी चाहिए। अतः इस रिक्तता को मिटाने के लिए 27 केन्द्र और खोले जाने की आवश्यकता है।

उपरोक्त विचारों के आधार पर निम्नलिखित अन्वेषण प्राप्त हुए हैं :–

(i) कुछ एक ऐसे अधिवास हैं जिनमें आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या नहीं है। अतः इसे प्राप्त करने के लिए अधिवासों के समूहों का एकत्रीकरण होना आवश्यक है।

(ii) आस–पास के क्षेत्रों के मध्य केन्द्रीय स्थान में अवस्थित अधिवास जो कि उन्हें सेवा प्रदान करने की स्थिति में हो और जो केन्द्रीय अधिवास के लिए आवश्यक कार्यों को सम्पादित करता हो, केन्द्रीय अधिवास माना जायेगा।

(iii) प्रस्तावित सेवा केन्द्रों व क्षेत्रीय सेवा केन्द्रों के लिए विचार किये गये कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या का आंकलन नहीं हो सका क्योंकि ये कार्य कुछ ही अधिवासों में मिले और इनसे न्यूनतम जनसंख्या आंकलन का आधार भी नहीं मिला।

(iv) ये निर्णय लिया गया कि जिन अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय के लिए आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या है वहाँ एक सामान्य दुकान हो।

**विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं की सीमा :–**

कोई अधिवास अपने कार्य द्वारा अपने समीपवर्ती अधिवासों को भी लाभान्वित करता है जहां उस कार्य की उपलब्धता नहीं होती है। अतः अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों द्वारा निकटवर्ती अधिवासों के लिए किए जाने वाले कार्यों की सीमा को अंकित किया गया है। यह अनुभव किया गया कि कई अधिवास ऐसे हैं जिनको सामान्य सेवाएँ भी उपलब्ध नहीं है। जबकि कुछ अधिवास अपनी मूल अवस्थिति व सरल अभिगम्यता के आधार पर उच्च सेवाएँ जैसे उच्च शिक्षा, चिकित्सा, डाक, बैंकिंग आदि रखते हैं या अपने निकटतम सेवा क्षेत्रों से इनका लाभ उठाने की आसान स्थिति में होते हैं। अध्ययन क्षेत्र में कार्य मुक्त तथा अध्यारोपित क्षेत्रों की जानकारी आवश्यक है ताकि कार्यमुक्त क्षेत्रों के विकास की योजना तैयार की जा सके। इसे तभी प्राप्त किया जा सकता है जब तहसील में उच्च स्तरीय सेवाएँ समान रूप से वितरित हों।

अध्ययन क्षेत्र में यह अनुभव किया गया कि वे अधिवास जिनमें आवश्यक सेवाएँ नहीं हैं, प्रायः अपने निकटतम उच्च सेवा केन्द्रों से उनकी

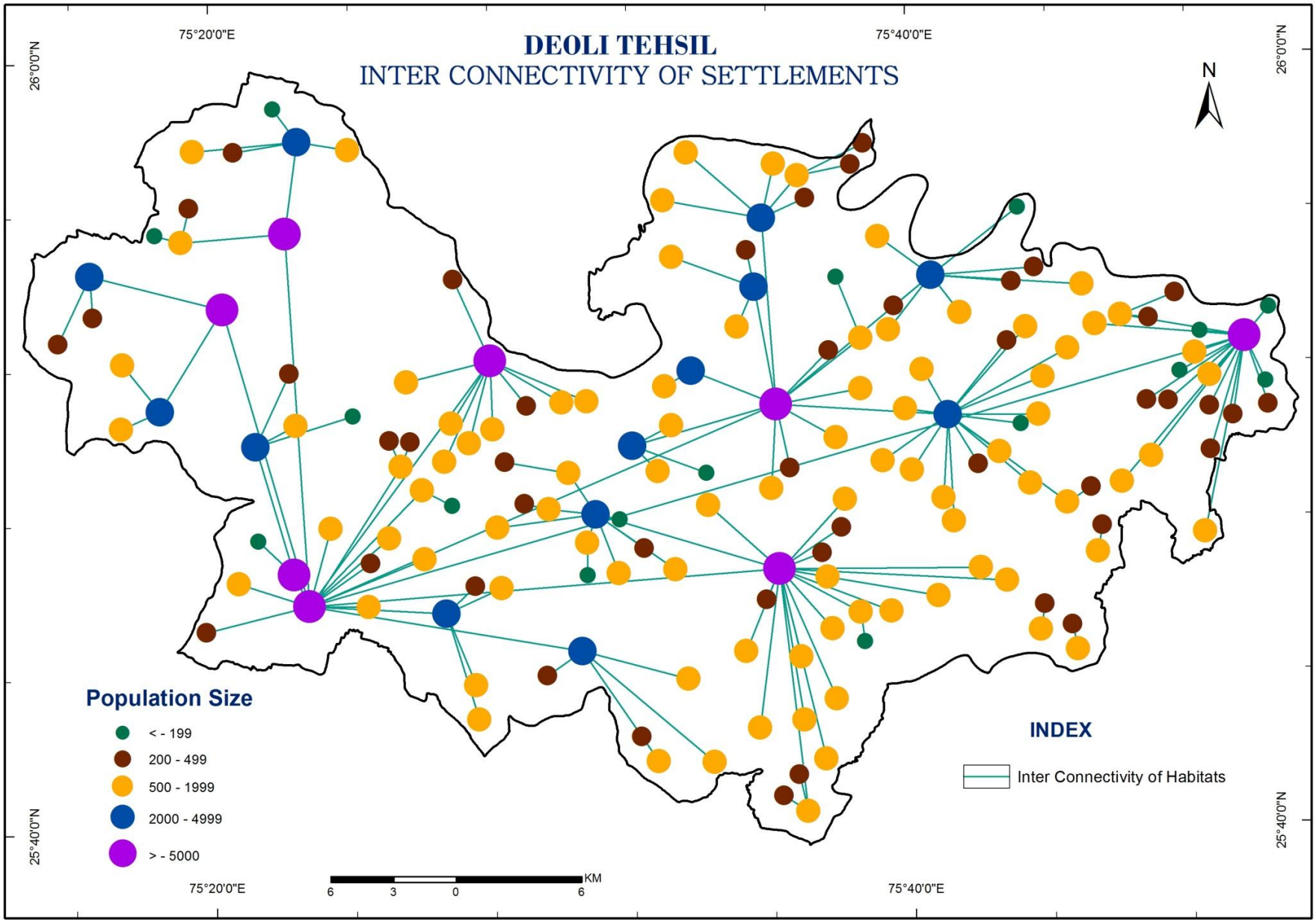
DEOLI TEHSIL
INTER CONNECTIVITY OF SETTLEMENTS
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Population Size
< - 199
200 - 499
500 - 1999
2000 - 4999
> - 5000
INDEX
Inter Connectivity of Habitats
6 3 0 6 KM

सेवाएँ प्राप्त करते हैं। इसलिए ये अधिवास सेवा क्षेत्रों से अन्तर्सम्बंधित होने चाहिए ताकि उन पर आश्रित अधिवास अधिक समय व ऊर्जा को बर्बाद किये बिना सरलता से इनकी सुविधाओं का लाभ उठा सकें। सेवाएँ जैसे उच्च शिक्षा, चिकित्सा, डाक, बैंकिंग, पशु चिकित्सा, बीज व उर्वरक केन्द्र आदि अधिवास को इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित करती है। ग्रामीण क्षेत्र विकसित नहीं होंगे यदि उन्हें ये सुविधाएँ प्राप्त नहीं हुई तो प्रत्येक सेवा केन्द्र जनसंख्या के अतिरिक्त भाग की सेवा करने के लिए तैयार होना चाहिए। सेवाओं के वितरण में दूरी महत्वपूर्ण कारक हैं। जब सेवाओं को उनके आश्रित क्षेत्रों के निवासियों को प्रस्तुत किया जाता है तो वो सेवा आसान पहुँच में होनी चाहिए। प्रो0 जॉनसन[10] ने पूर्ण सेवाकृत व असेवाकृत क्षेत्रों के तुलनात्मक विश्लेषण के लिए Radius Assumption का निर्माण किया जिसका भारतीय विद्वानों[11] ने अनुसरण किया। किस दूरी पर ये केन्द्र अवस्थित हों ये इनकी सेवा की प्रकृति पर निर्भर करता है।

**वर्तमान कार्य के लिए उपयुक्त विधियाँ :–**

अध्ययन क्षेत्र में कार्यात्मक रिक्तता एवं अतिव्यापन के क्षेत्रों को पहचानने के लिये सेवा केन्द्रों को केन्द्र मानकर वृत्त खींचने की विधि को प्रयुक्त किया गया। किसी एक सेवा विशेष के वृत्त का अर्द्धव्यास दो विचारों पर आधारित था। प्रथम कार्य की प्रकृति का आधार व दूसरा उपभोक्ता की प्रभावशीलता पर जिससे वो अधिक समय व ऊर्जा को बर्बाद किये बिना सेवा का लाभ उठा सके। तालिका संख्या 6.3 में कार्यों के अर्द्धव्यासों[12] को दर्शाया गया है।

**तालिका संख्या 6.3**

**देवली तहसील : विभिन्न कार्यों/उपकार्यों का विस्तार**

| कार्य/उपकार्य | कार्यों/ उपकार्यों की त्रिज्या (किमी में) |
|---|---|
| 1. <u>शैक्षिक</u> | |
| (i) प्राथमिक विद्यालय | केवल अधिवास |
| (ii) उच्च प्राथमिक विद्यालय | 3 |
| (iii)माध्यमिक विद्यालय | 5 |

| | |
|---|---|
| (iv)उच्च माध्यमिक विद्यालय | 8 |
| **2. चिकित्सा और स्वास्थ्य** | |
| (i) डिस्पेंसरी | 5 |
| (ii) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र | 8 |
| **3. डाक** | |
| (i) डाकघर | 3 |
| (ii) कूरियर | 8 |
| **4. बाजार** | |
| थोक बाजार | 8 |
| **5. बैंकिंग** | |
| (i) बैंक | 8 |
| (ii) सहकारी समिति | 5 |
| **6. उर्वरक वितरण** | 5 |
| **7. पशु चिकित्सा** | 8 |

**कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र :–**

उपर्युक्त विचारों के आधार पर (तालिका संख्या 6.3) खींचे गए वृत्तों को अधिवासों की सीमाओं के साथ समायोजित किया गया या उनके भीतर खींचा गया। जो अधिवास इन वृत्तों के भीतर समाये उन्हें सेवित माना गया। जो अधिवास खींचे गये किसी भी वृत्त में नहीं आये उन्हें निम्न सेवित माना गया और ऐसे क्षेत्रों को कार्यात्मक रिक्तता या अल्प अन्तः क्रिया का क्षेत्र माना गया। जो अधिवास दो या दो से अधिक वृत्तों में सम्मिलित हुए उन्हें पूर्ण सेवित क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया गया और ऐसे अधिवास कार्यात्मक अतिव्यापन या सुदृढ़ अन्तःक्रिया (Interaction) के क्षेत्र कहलाये। सेवा केन्द्रों के पूरक प्रदेशों के सेवा क्षेत्रों को भी अधिवासों के क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर प्रदर्शित किया गया।

**प्राथमिक विद्यालय :–**

अध्ययन क्षेत्र के 108 अधिवासों में प्राथमिक स्तर की सेवा उपलब्ध है। एक प्राथमिक विद्यालय सिर्फ अपने ही अधिवास को सेवा दे सकता है। अध्ययन क्षेत्र का 83.80 प्रतिशत क्षेत्र तथा 91.40 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा सेवित है। अध्ययन क्षेत्र में यह सेवा समान रूप से वितरित है। अध्ययन क्षेत्र की मात्र 8. 60 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा का सीधा लाभ प्राप्त नहीं कर पा रही है। अतः इस जनसंख्या को इस सेवा का लाभ लेने के लिए अपने निकटवर्ती अधिवासों को जाना पड़ता है।

**उच्च प्राथमिक विद्यालय :–**

देवली तहसील के 56 अधिवासों में इस स्तर की शिक्षा उपलब्ध है। इस प्रकार तहसील में प्रत्येक विद्यालय लगभग 5–6 अधिवासों को अपनी सेवाएँ दे रहा है। तहसील में प्रत्येक उच्च प्राथमिक विद्यालय औसत रूप से 20.77 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र तथा 3828 व्यक्तियों को इस सेवा का लाभ दे रहा है। यह तथ्य ये दर्शाता है कि क्षेत्र में इस सेवा का संकेन्द्रण (Concentration) अच्छा है, परन्तु स्थानिक वितरण बहुत ही असमानता लिये हुए है।

एक उच्च प्राथमिक विद्यालय अपने केन्द्र से आस–पास के 3 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकता है क्योंकि यह दूरी बच्चों द्वारा 1 घण्टे में आराम से तय की जा सकती है। इस आधार पर तालिका संख्या 6.4 में कुछ परिणाम दर्शाये गये हैं।

**तालिका संख्या 6.4**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 104 | 61.17 | 779.98 | 67.06 | 168540 | 78.61 |
| सेवित | 56 | 32.94 | 330.71 | 28.43 | 41549 | 19.38 |
| निम्न सेवित | 10 | 5.89 | 52.44 | 4.51 | 4319 | 2.01 |

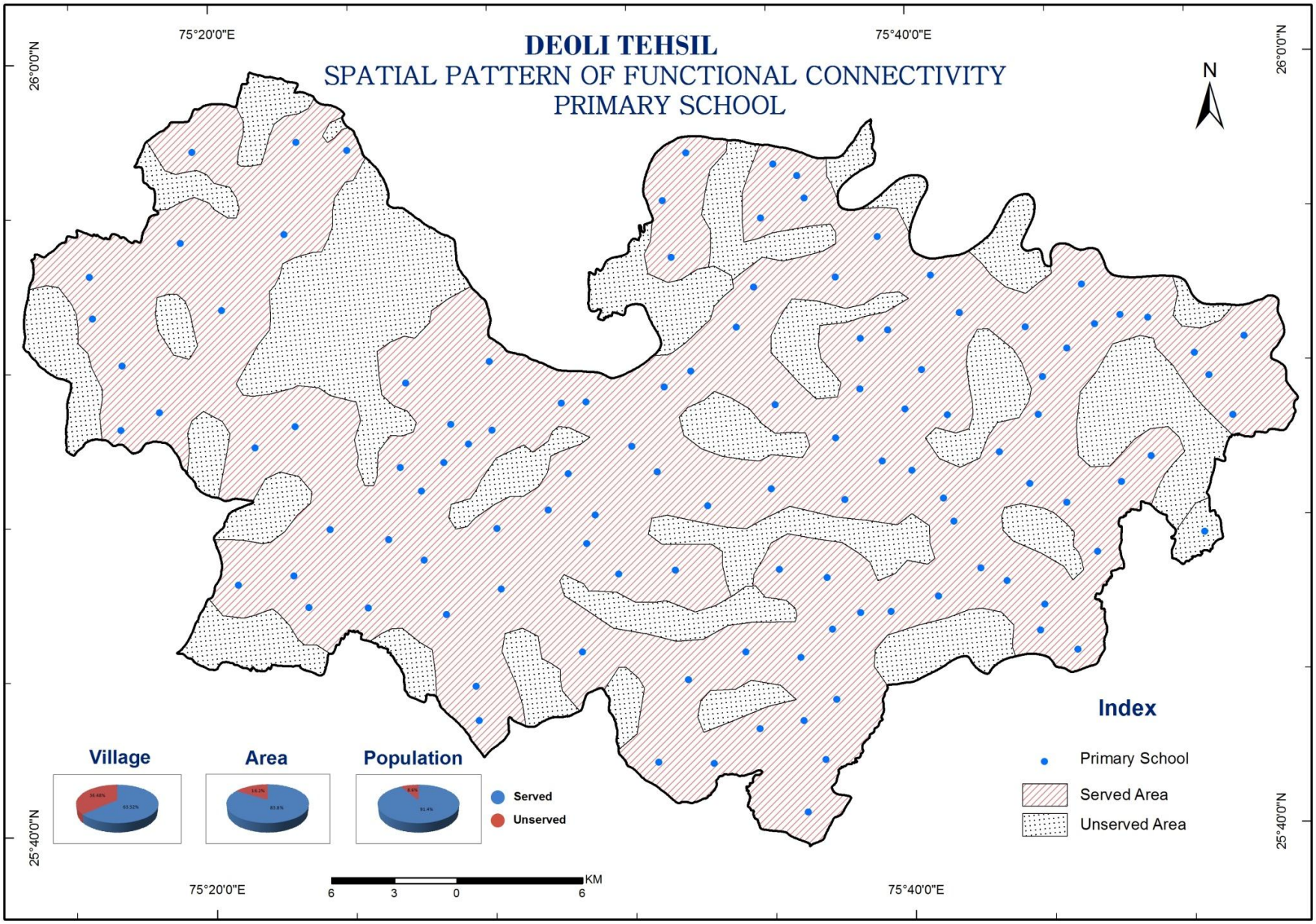
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
PRIMARY SCHOOL
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Village
Area
Population
Served
Unserved
Index
Primary School
Served Area
Unserved Area
KM
6
3
0
6

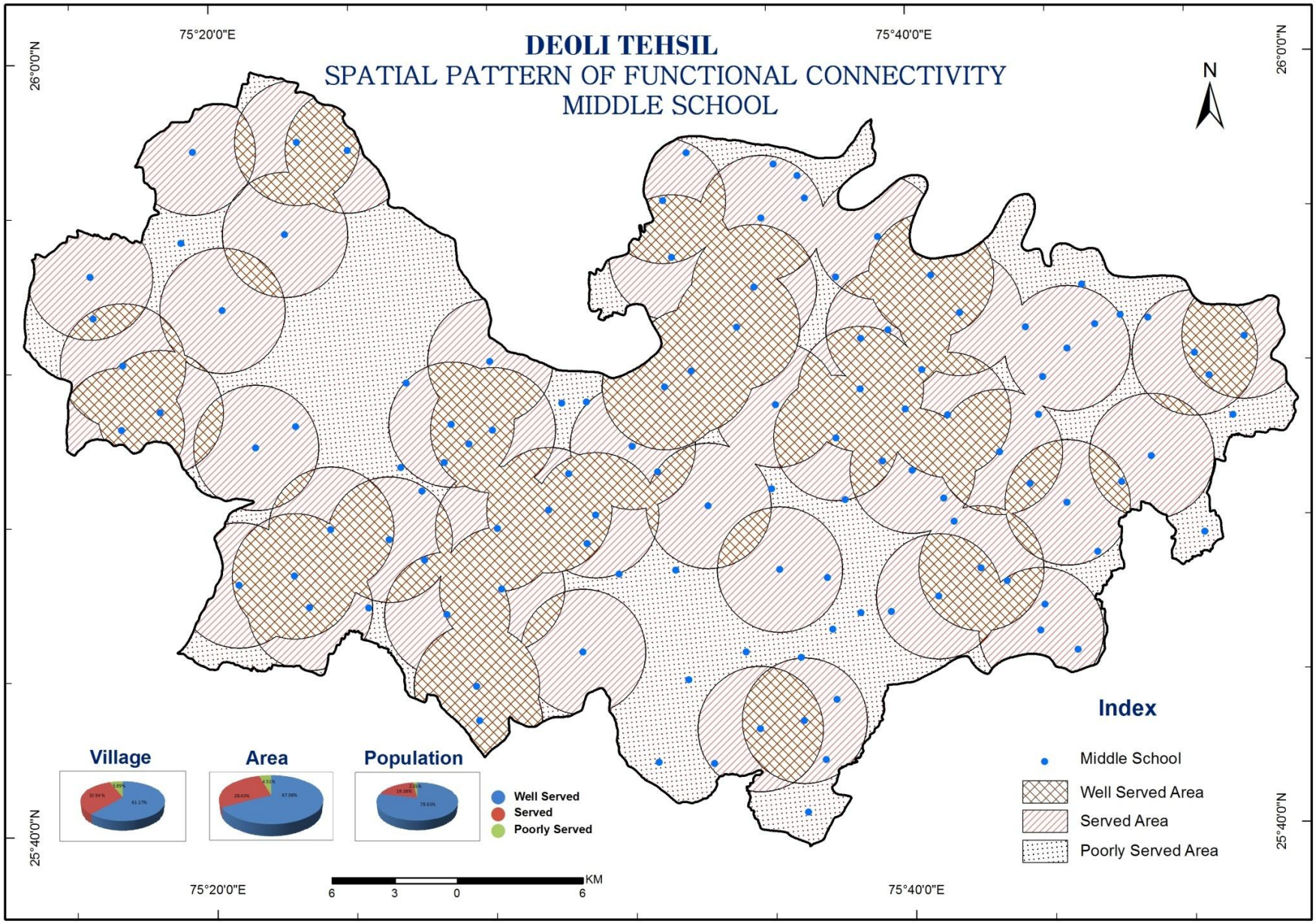
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
MIDDLE SCHOOL
N
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
Index
Middle School
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area
KM
6
3
0
6

तालिका संख्या 6.4 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के 10 अधिवास इस सेवा से निम्न रूप से सेवित है। ये अधिवास तहसील के उत्तरी क्षेत्र, उत्तरी पूर्वी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र में स्थित है और ये सभी सीमावर्ती अधिवास हैं। जो अध्ययन क्षेत्र के बाहर स्थित अपनी निकटवर्ती तहसील के केन्द्रों से इस सेवा का लाभ ले रहे हैं। तालिका से यह भी स्पष्ट है कि तहसील का 67.06 प्रतिशत क्षेत्र तथा 78.61 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं।

**माध्यमिक विद्यालय :–**

तहसील के कुल 170 अधिवासों में से 36 अधिवासों में यह सेवा उपलब्ध है और ये अधिवास अपने आसपास के 5 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। औसत रूप से एक विद्यालय तहसील की 5955 जनसंख्या को अपनी सेवा दे रहा है।

**तालिका संख्या 6.5**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 129 | 75.88 | 894.17 | 76.88 | 177680 | 82.88 |
| सेवित | 38 | 23.35 | 260.06 | 22.35 | 35861 | 16.72 |
| निम्न सेवित | 3 | 1.76 | 8.90 | 0.77 | 867 | 0.40 |

तालिका संख्या 6.5 से स्पष्ट है कि तहसील के 170 अधिवासों में से 129 अधिवास इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं जबकि तहसील के मात्र 3 अधिवास ही निम्न रूप से सेवित है। तालिका से यह भी स्पष्ट है कि तहसील का 76.88 प्रतिशत क्षेत्र तथा 82.88 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं।

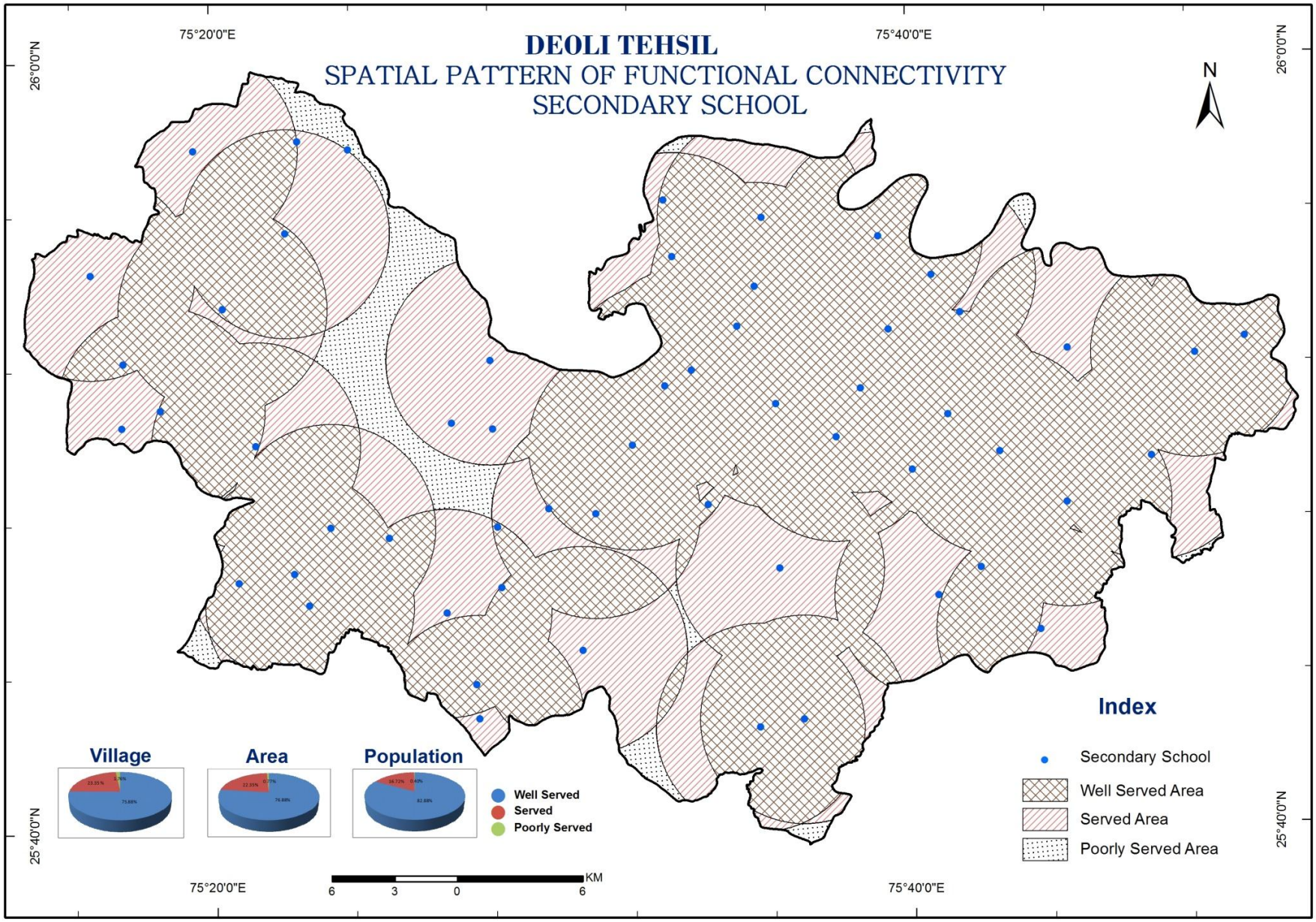
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
SECONDARY SCHOOL
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
Index
Secondary School
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area
KM
6
3
0
6

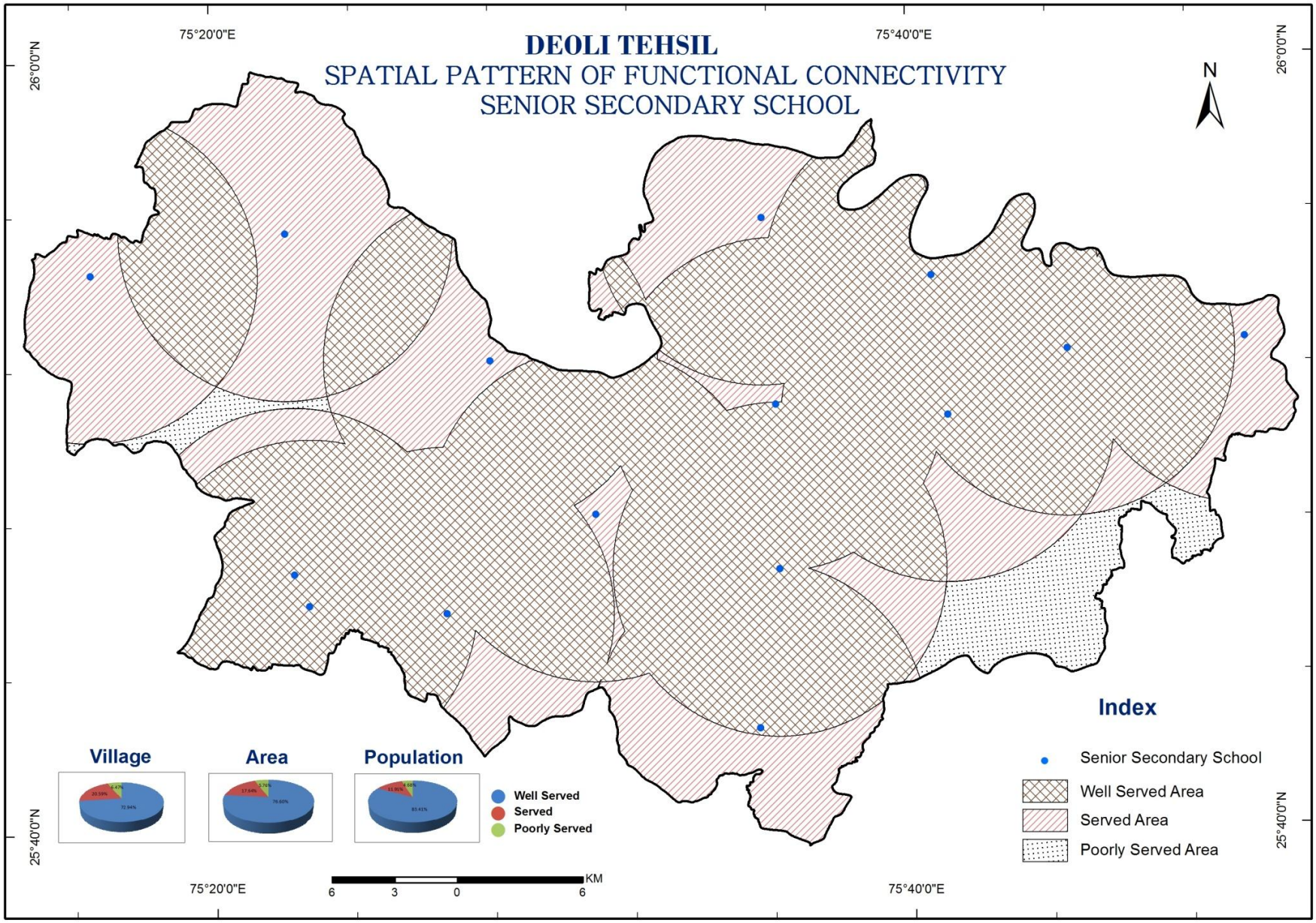
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
SENIOR SECONDARY SCHOOL
N
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
KM
6
3
0
6
Index
Senior Secondary School
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area

**उच्च माध्यमिक विद्यालय :–**

तहसील के मात्र 14 अधिवासों में इस स्तर की शिक्षा उपलब्ध है। तहसील में प्रत्येक उच्च माध्यमिक विद्यालय औसत रूप से 83.08 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र तथा 15315 व्यक्तियों को इस सेवा का लाभ दे रहा है। कोई भी अधिवास जहां उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित है अपने आसपास के 8 किमी के क्षेत्र को अपनी सेवा दे सकता है क्योंकि इस स्तर के छात्र आयु में बड़े होने के कारण साईकिलों या नियमित बसों, जीपों द्वारा विद्यालय पहुंच सकते हैं।

**तालिका संख्या 6.6**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 124 | 72.94 | 891.01 | 76.60 | 178830 | 83.41 |
| सेवित | 35 | 20.59 | 205.18 | 17.64 | 25541 | 11.91 |
| निम्न सेवित | 11 | 6.47 | 66.94 | 5.76 | 10037 | 4.68 |

तालिका संख्या 6.6 को देखने से स्पष्ट है कि तहसील के 170 अधिवासों में से 124 अधिवास इस सेवा द्वारा अच्छी तरह से सेवित है जबकि तहसील की 10037 जनसंख्या जो कि तहसील के 11 अधिवासों में निवास करती है इस सेवा द्वारा निम्न रूप से सेवित हैं। तालिका से यह भी स्पष्ट है कि तहसील के 35 अधिवासों में यह सेवा लोगों की पहुंच में है। अतः ये अधिवास को भी इस सेवा द्वारा सेवित अधिवास है।

**प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र :–**

तहसील में कुल 54 केन्द्र (प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र सहित) है जिनमें मुफ्त इलाज तथा कुछ अंग्रेजी दवाईयाँ दी जाती है। किसी भी अधिवास में स्थित यह केन्द्र अपने आस–पास के 8 किमी. तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकते हैं।

**तालिका संख्या 6.7**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 163 | 95.88 | 1119.6 | 96.26 | 208399 | 97.20 |
| सेवित | 7 | 4.12 | 43.53 | 3.74 | 6009 | 2.80 |
| निम्न सेवित | - | - | - | - | - | - |

तालिका संख्या 6.7 से स्पष्ट है कि तहसील के 95.88 प्रतिशत अधिवास इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं तथा 4.12 प्रतिशत अधिवासों में यह सेवा लोगों की पहुँच में है। एक भी अधिवास इस सेवा से वंचित नहीं है।

## डिस्पेंसरी :–

**तालिका संख्या 6.8**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 34 | 20 | 267.23 | 22.98 | 70970 | 33.10 |
| सेवित | 83 | 48.82 | 570.44 | 49.04 | 95383 | 44.49 |
| निम्न सेवित | 53 | 31.18 | 325.46 | 27.98 | 48055 | 22.41 |

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से 13 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है। अध्ययन क्षेत्र में इस सेवा का वितरण बड़ा ही असमान है। डिस्पेंसरी में किसी मरीज को कुछ प्राथमिक चिकित्सा तथा कुछ दवाईयां ही मिल पाती हैं अतः एक डिस्पेंसरी अपने आसपास के 5किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकती है।

तालिका संख्या 6.8 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र का 22.98 प्रतिशत क्षेत्रफल इस सेवा का अच्छी प्रकार से लाभ ले रहा है जबकि 27.98

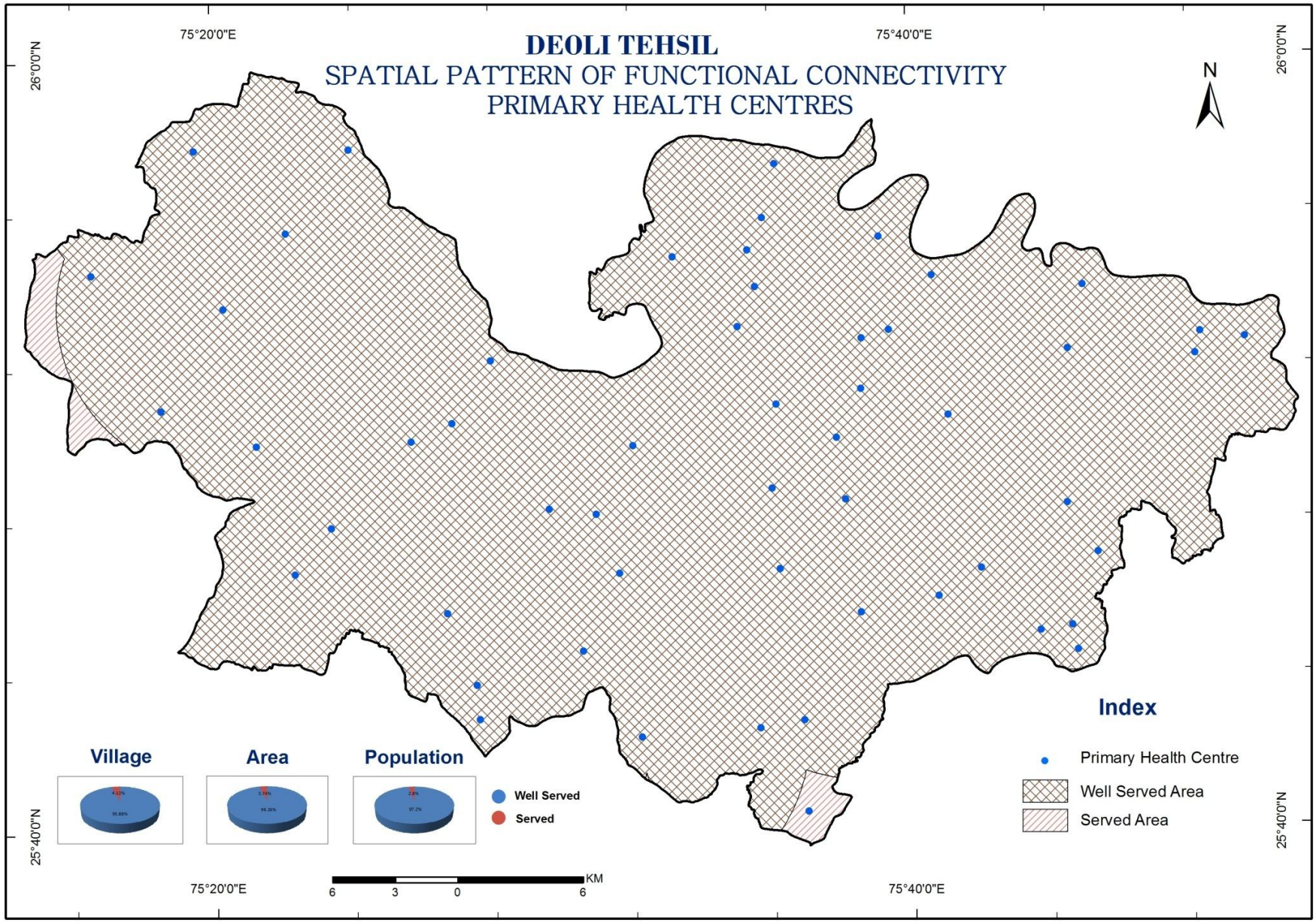
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
PRIMARY HEALTH CENTRES
N
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
Index
Primary Health Centre
Well Served Area
Served Area
Village
Area
Population
Well Served
Served
KM
6
3
0
6

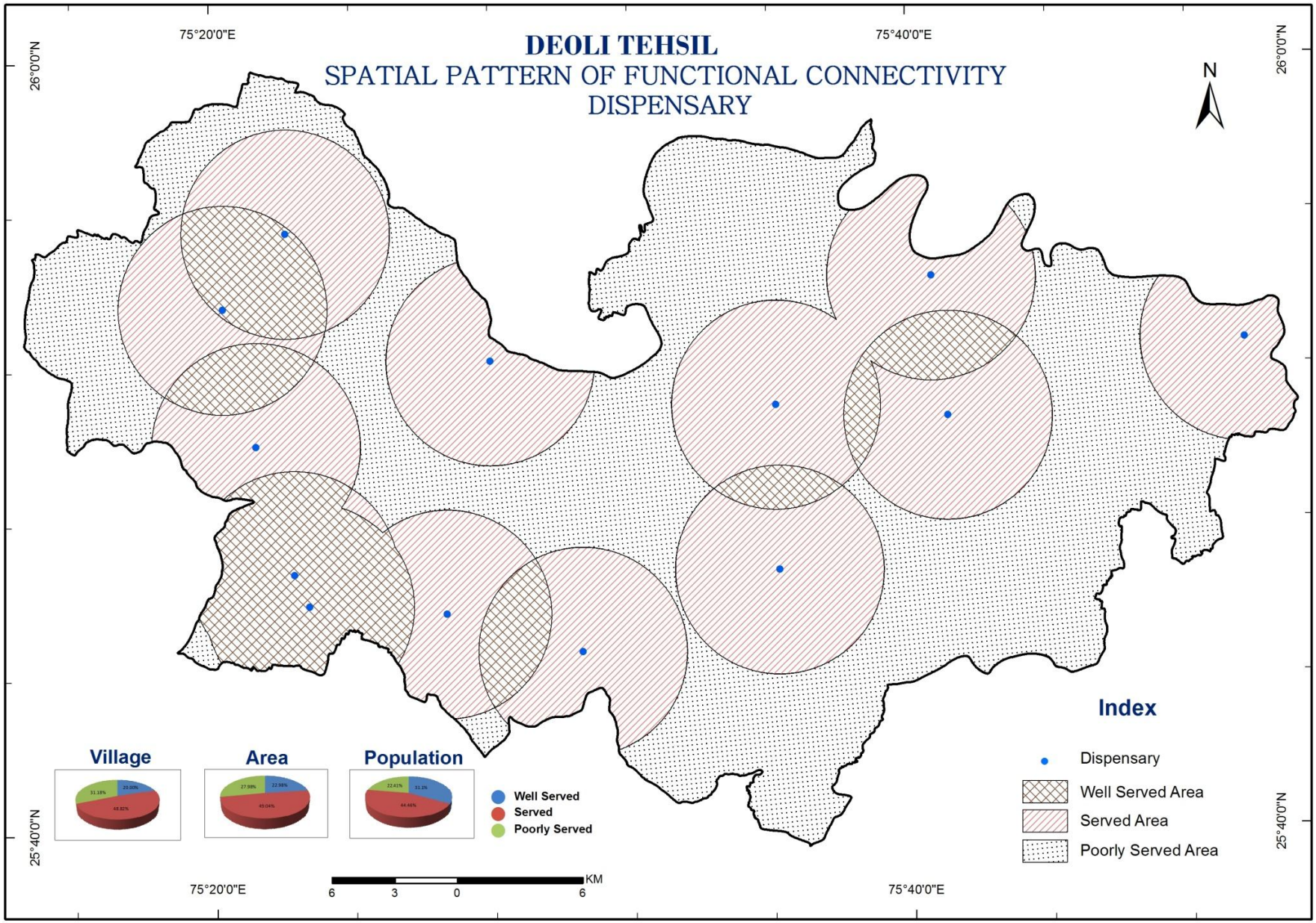
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
DISPENSARY
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Index
Dispensary
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
KM
6
3
0
6

प्रतिशत क्षेत्रफल पर रहने वाली जनसंख्या को इस सेवा का लाभ लेने के लिए काफी दूरी तय करनी पड़ती है।

**डाकघर –**

तहसील के कुल 170 अधिवासों में से मात्र 5 अधिवासों में डाकघर सेवा उपलब्ध हैं किसी भी अधिवास में स्थित एक डाकघर अपने आसपास के 3 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाऐं दे सकता है।

**तालिका संख्या 6.9**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 5 | 2.94 | 40.87 | 3.51 | 32585 | 15.20 |
| सेवित | 22 | 12.94 | 192.21 | 16.53 | 40973 | 19.11 |
| निम्न सेवित | 143 | 84.12 | 930.05 | 79.96 | 140850 | 65.69 |

तालिका संख्या 6.9 को देखने से स्पष्ट होता है कि तहसील की 15.20 प्रतिशत जनसंख्या जो कि तहसील के 5 अधिवासों में निवास करती है इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है। जबकि तहसील की 65.69 प्रतिशत जनसंख्या जो कि 143 अधिवासों में निवास करती है इस सेवा द्वारा निम्न रूप से सेवित ळें

**कूरियर :–**

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से मात्र 5 अधिवासों में ये सेवा उपलब्ध है। एक कूरियर सेवा केन्द्र अपने पास के 8 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपनी सेवाऐं दे सकता है। अध्ययन क्षेत्र में एक केन्द्र औसत रूप से 42881 व्यक्तियों को अपनी सेवाऐं दे रहा है।

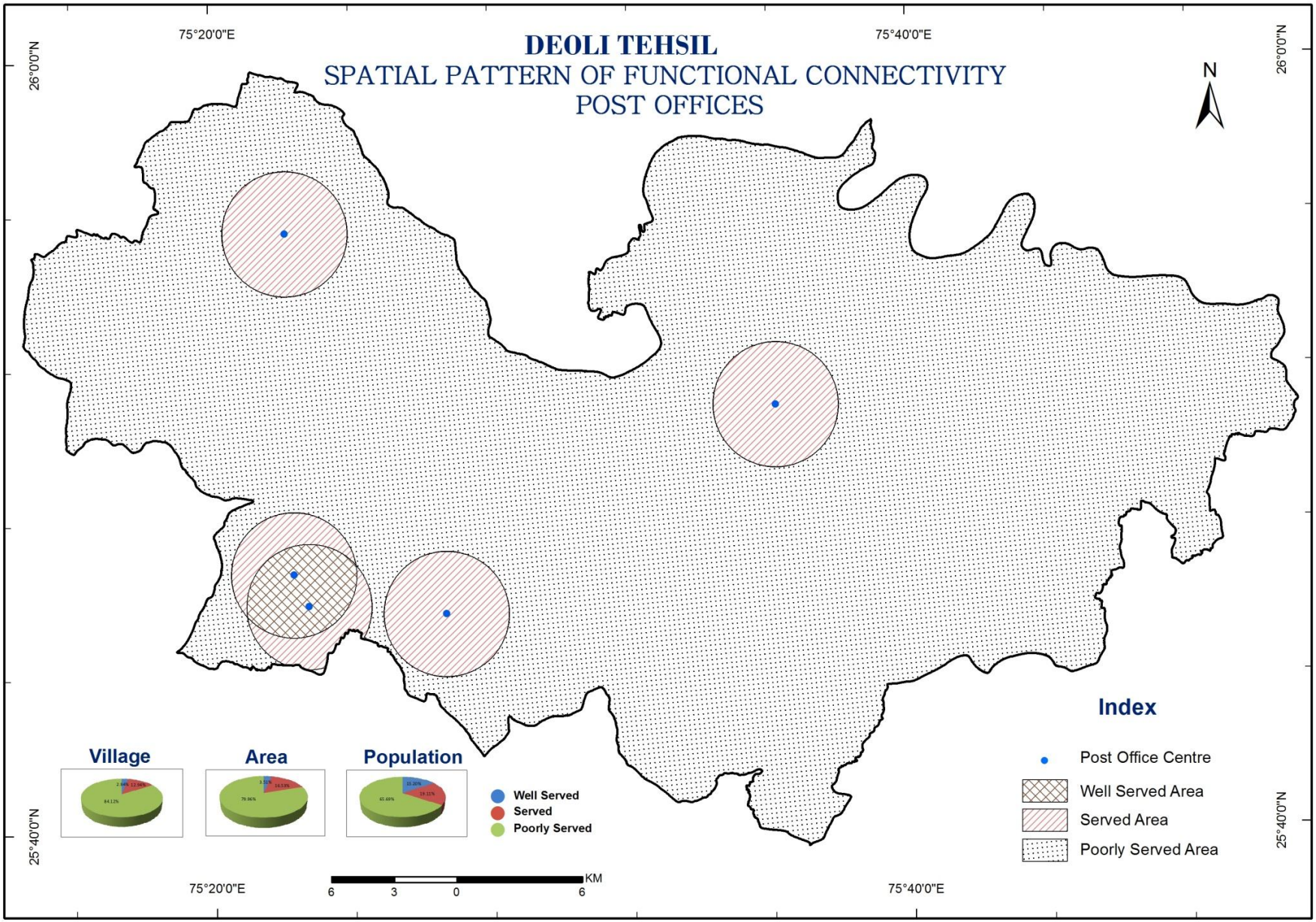
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
POST OFFICES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
KM
6
3
0
6
Index
Post Office Centre
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area

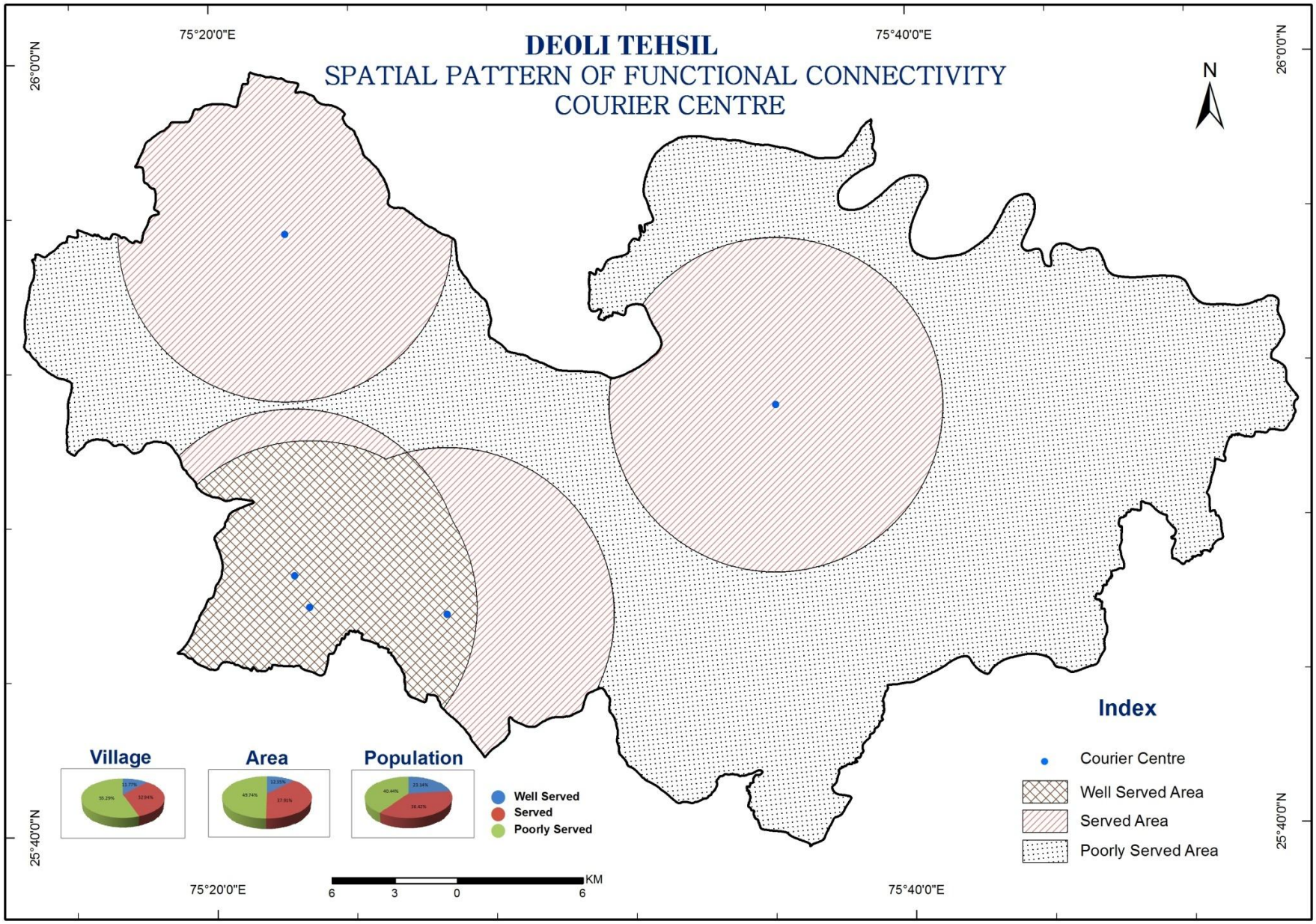
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
COURIER CENTRE
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Index
Courier Centre
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
KM
6
3
0
6

**तालिका संख्या 6.10**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 20 | 11.77 | 143.67 | 12.35 | 49624 | 23.14 |
| सेवित | 56 | 32.94 | 440.99 | 37.91 | 78094 | 36.42 |
| निम्न सेवित | 94 | 55.29 | 578.47 | 49.74 | 86690 | 40.44 |

तालिका संख्या 6.10 को देखने से स्पष्ट होता है कि तहसील के 20 अधिवास इस सेवा का पूर्ण रूप से लाभ ले रहे हैं। जबकि तहसील की 40.44 प्रतिशत जनसंख्या जो कि तहसील के 94 अधिवासों में निवास करती है इस सेवा द्वारा निम्न रूप से सेवित ळें

**उर्वरक केन्द्र :–**

अध्ययन क्षेत्र में कुल 40 अधिवासों में उर्वरक केन्द्र स्थित हैं। एक उर्वरक केन्द्र अपनी परिधि में 5 किमी तक के क्षेत्र में अपनी सेवाऐं दे सकता है। अध्ययन क्षेत्र में औसत रूप से एक केन्द्र 5360 व्यक्तियों तथा 29.07 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में अपनी सेवाऐं दे रहा है।

**तालिका संख्या 6.11**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 153 | 90 | 1049.97 | 90.27 | 198056 | 92.37 |
| सेवित | 15 | 8.82 | 108.18 | 9.30 | 15868 | 7.40 |
| निम्न सेवित | 2 | 1.18 | 4.98 | 0.43 | 484 | 0.23 |

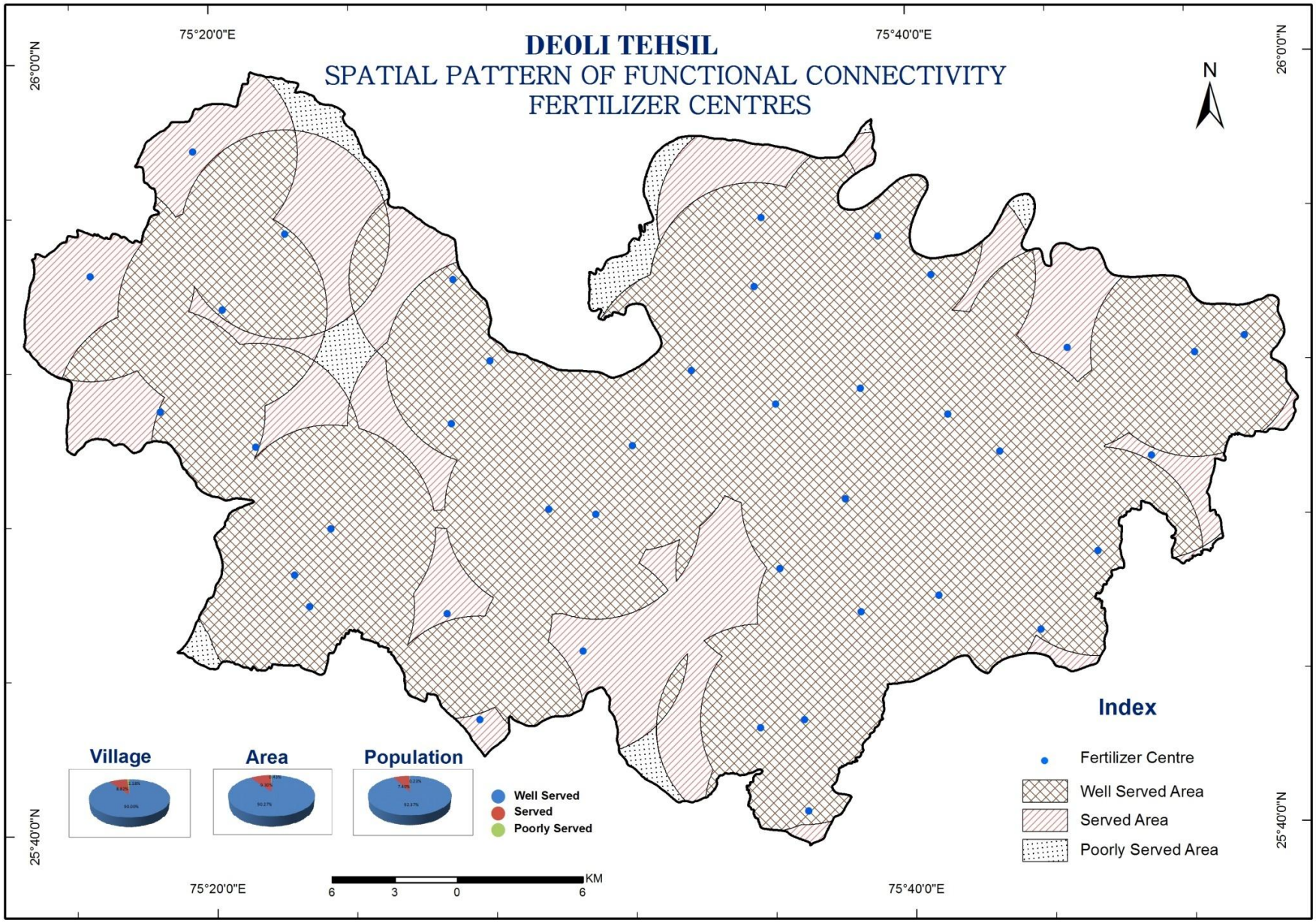
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
FERTILIZER CENTRES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
Index
Fertilizer Centre
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area
KM
6
3
0
6

तालिका संख्या 6.11 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के 153 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है जबकि अध्ययन क्षेत्र के 2 अधिवास इस सेवा द्वारा निम्न रूप से सेवित है।

**बैंकिंग :–**

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से मात्र 15 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है। किसी भी अधिवास में स्थित एक बैंक अपनी परिधि में 8 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकता है।

**तालिका संख्या 6.12**
**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 97 | 57.06 | 785.55 | 67.54 | 153067 | 71.39 |
| सेवित | 58 | 34.12 | 306.34 | 26.34 | 50947 | 23.76 |
| निम्न सेवित | 15 | 8.82 | 71.24 | 6.12 | 10394 | 4.85 |

तालिका संख्या 6.12 को देखने से स्पष्ट है कि तहसील की 71.39 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित हैं जो कि तहसील के 67.54 प्रतिशत क्षेत्र पर निवास करती है जबकि तहसील की 4.85 प्रतिशत जनसंख्या को इस सेवा का लाभ सही रूप से नहीं मिल पा रहा है।

**पशु चिकित्सा :–**

अध्ययन क्षेत्र में कुल 9 अधिवासों में पशु चिकित्सा केन्द्र स्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र में स्थित प्रति एक केन्द्र औसत रूप से 23823 व्यक्तियों की सेवा कर रहा है।

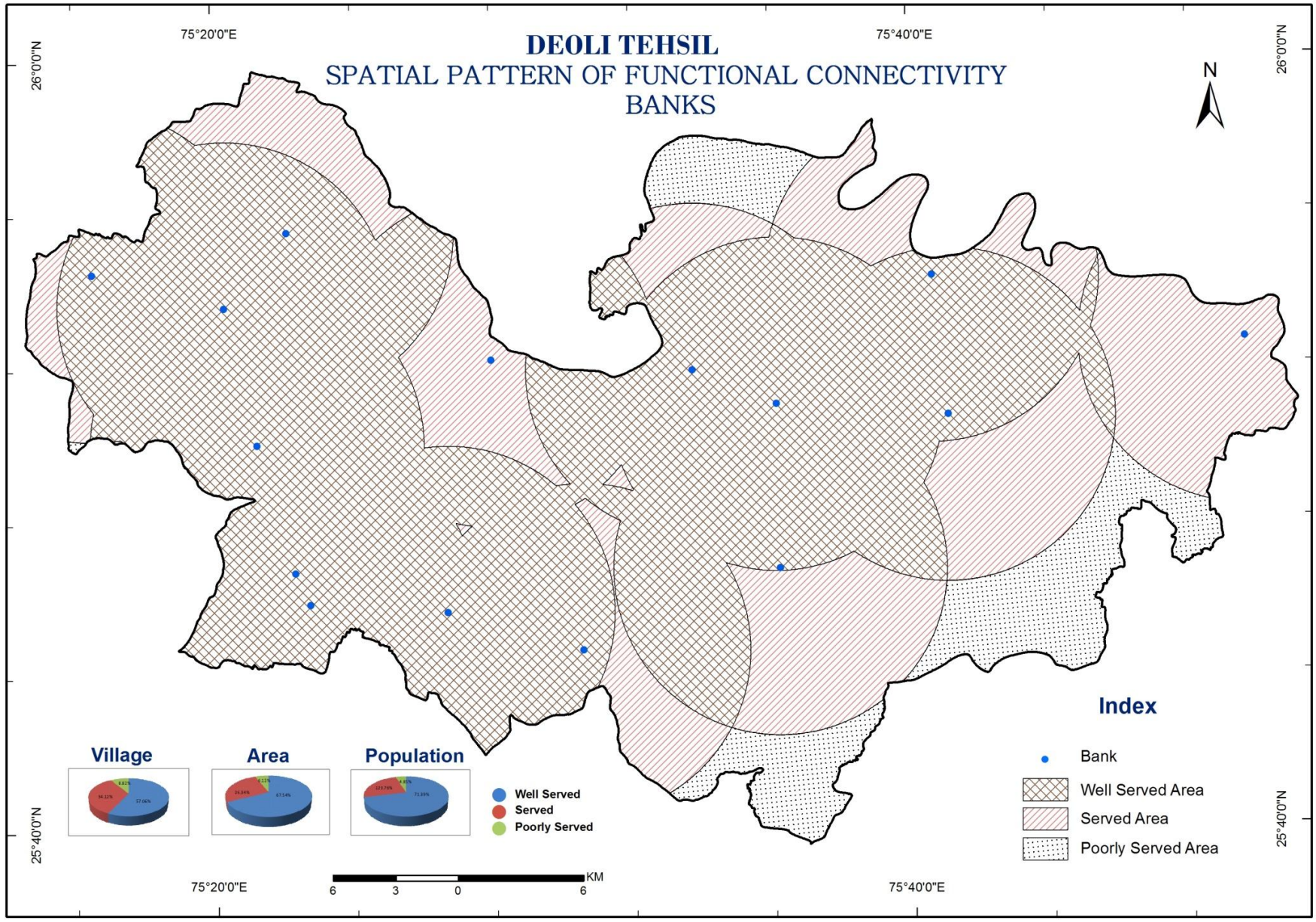
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
BANKS
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
Index
Bank
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area
KM
6
3
0
6

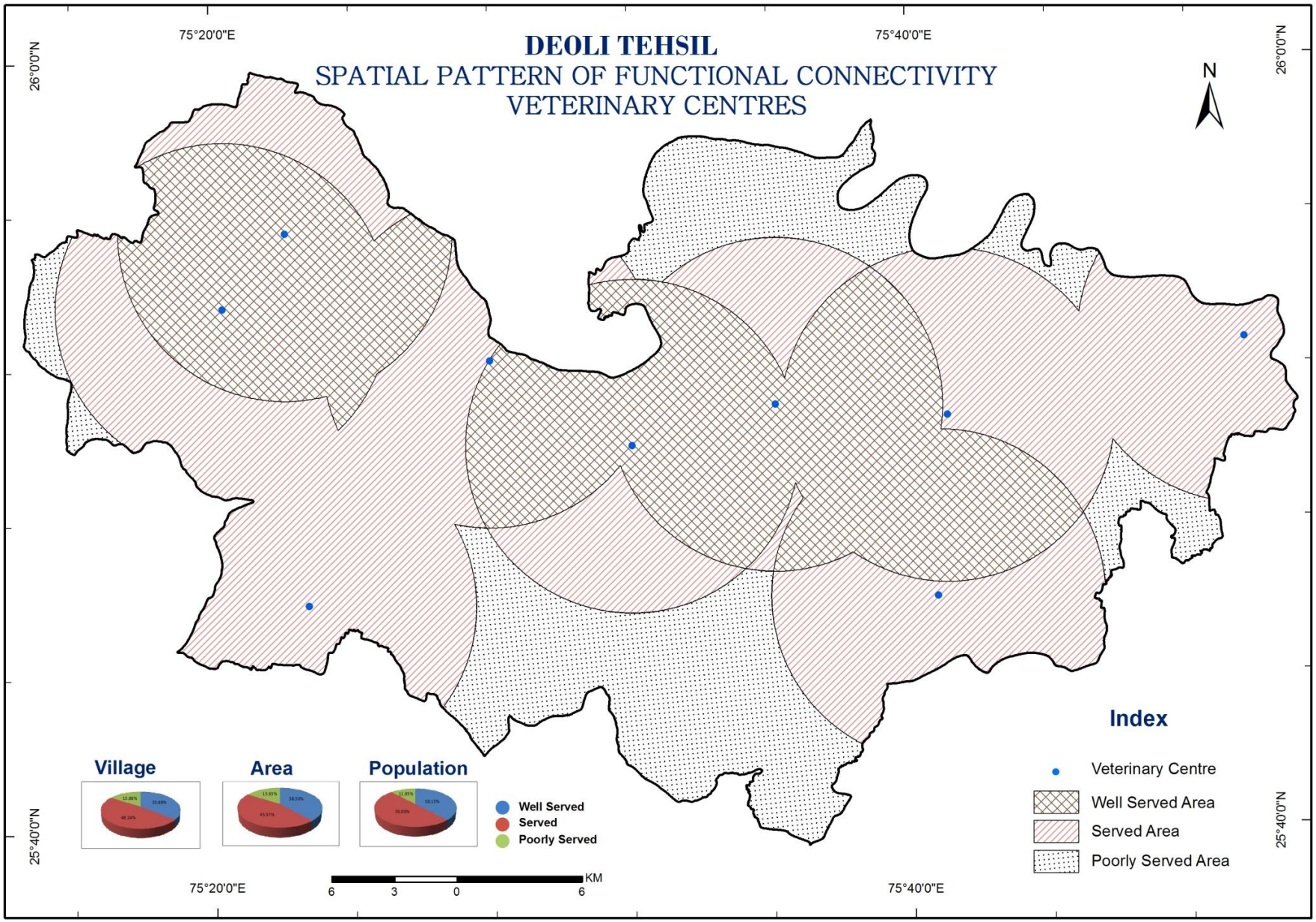

DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
VETERINARY CENTRES
N
Index
Veterinary Centre
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
6 3 0 6
KM
26°0'0"N
25°40'0"N
75°20'0"E
75°40'0"E

**तालिका संख्या 6.13**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की सं. | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 61 | 35.88 | 447.81 | 38.50 | 81805 | 38.15 |
| सेवित | 82 | 48.24 | 530.02 | 45.57 | 107201 | 50 |
| निम्न सेवित | 27 | 15.88 | 185.30 | 15.93 | 25402 | 11.85 |

तालिका संख्या 6.13 को देखने से स्पष्ट होता है कि तहसील की 38. 15 प्रतिशत जनसंख्या जो कि तहसील के 61 अधिवासों में निवास करती है। इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है। जबकि तहसील की 11.85 प्रतिशत जनसंख्या को इस सेवा का लाभ लेने के लिए परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

**सहकारिता :–**

अध्ययन क्षेत्र के 170 अधिवासों में से 29 अधिवासों में सहकारी समितियाँ स्थित हैं। किसी भी अधिवास में स्थित सहकारी समिति अपने आसपास 5 किमी तक के क्षेत्र में अपनी सेवाऐं दे सकती है।

**तालिका संख्या 6.14**

**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 110 | 64.71 | 756.36 | 65.03 | 156417 | 72.95 |
| सेवित | 47 | 27.64 | 328.37 | 28.23 | 47504 | 22.16 |
| निम्न सेवित | 13 | 7.65 | 78.40 | 6.74 | 10487 | 4.89 |

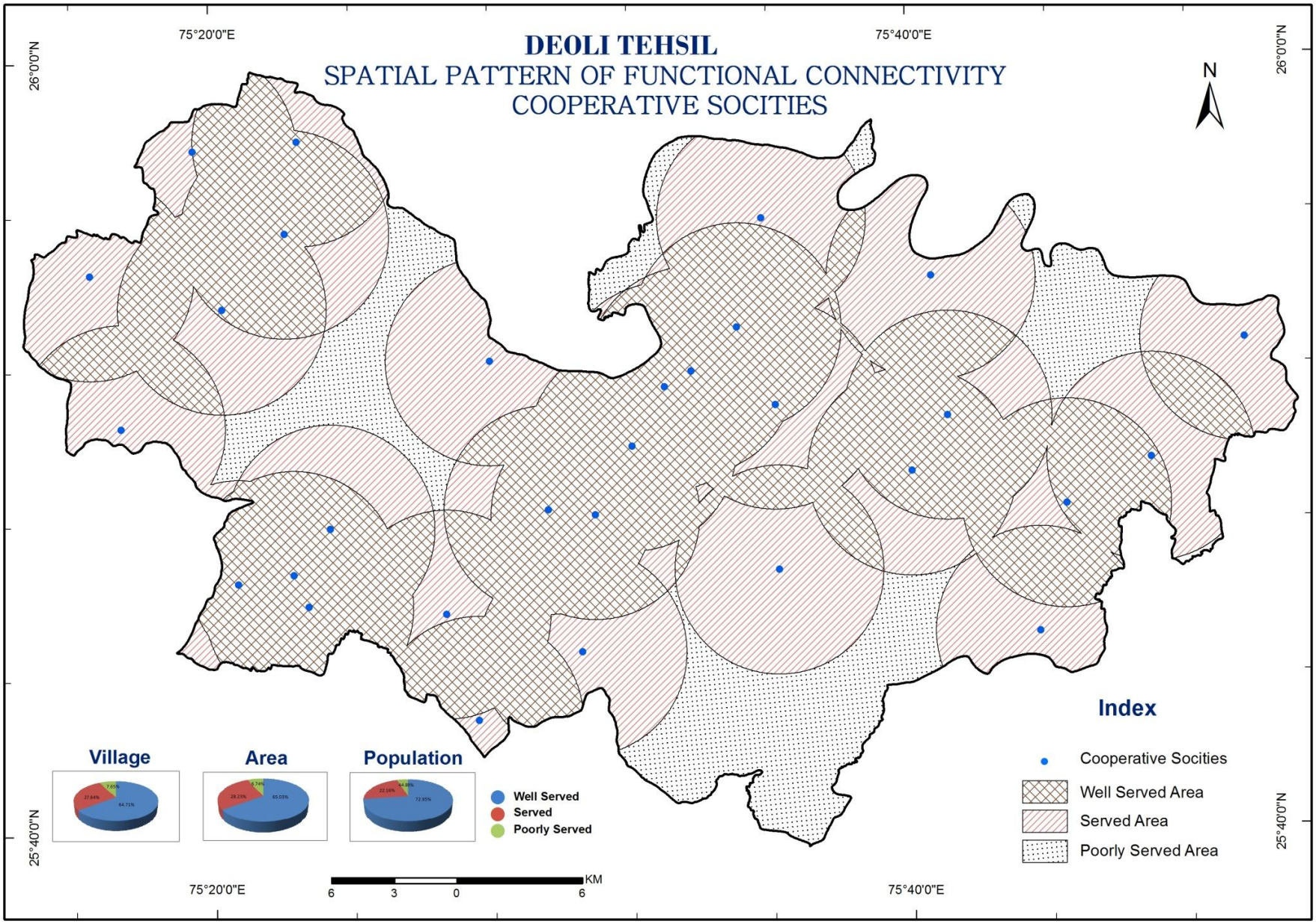
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
COOPERATIVE SOCITIES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
KM
6 3 0 6
Index
Cooperative Socities
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area

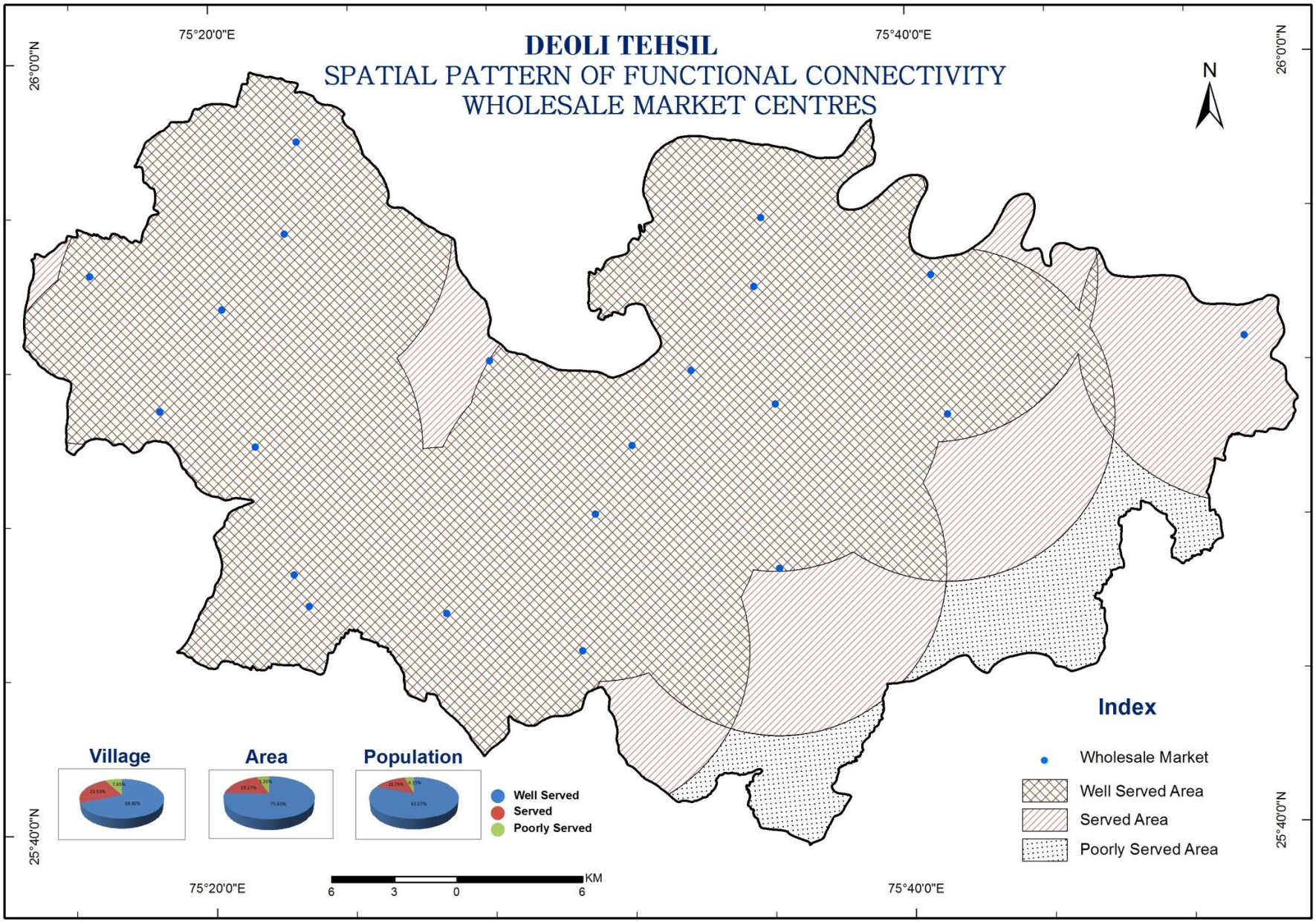
DEOLI TEHSIL
SPATIAL PATTERN OF FUNCTIONAL CONNECTIVITY
WHOLESALE MARKET CENTRES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Village
Area
Population
Well Served
Served
Poorly Served
KM
6
3
0
6
Index
Wholesale Market
Well Served Area
Served Area
Poorly Served Area

तालिका संख्या 6.14 को देखने से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के 110 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित हैं जबकि 13 अधिवास इस सेवा द्वारा निम्न रूप से सेवित हैं।

**थोक बाजार :–**

अध्ययन क्षेत्र के 21 अधिवासों में थोक बाजार केन्द्र स्थित है। किसी भी अधिवास में स्थित थोक बाजार अपने आसपास 8 किमी तक के क्षेत्र में अपनी सेवाऐं दे सकता है।

**तालिका संख्या 6.15**
**देवली तहसील : अधिवासों की संख्या, क्षेत्र तथा जनसंख्या**

| क्षेत्र | अधिवासों की संख्या | कुल अधिवासों का प्रतिशत | क्षेत्र (वर्ग किमी. में) | क्षेत्र का प्रतिशत | कुल जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ण सेवित | 117 | 68.82 | 879.61 | 75.63 | 175947 | 82.07 |
| सेवित | 40 | 23.53 | 223 | 19.17 | 29556 | 13.78 |
| निम्न सेवित | 13 | 7.65 | 60.52 | 5.20 | 8905 | 4.15 |

तालिका संख्या 6.15 को देखने से स्पष्ट होता है कि तहसील की 82. 07 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है जबकि 4.15 प्रतिशत जनसंख्या को इस सेवा का लाभ नहीं मिल पा रहा है।

**कार्यात्मक अल्पता का क्षेत्र :–**

वर्तमान अध्ययन में विभिन्न सेवाओं की अल्पता के क्षेत्रों का निर्धारण तालिका संख्या 6.3 में दर्शाये सभी कार्यों/ उपकार्यों के आधार पर किया गया। सरल चित्र प्रदर्शित करने के लिये उपर्युक्त कार्यों/उपकार्यों को तीन समूहों में श्रेणीबद्ध किया गया। जो उच्च सेवाऐं (अर्द्धव्यास 8 किमी.) मध्यम सेवाऐं (अर्द्धव्यास 5 किमी.) तथा निम्न सेवाऐं (अर्द्धव्यास 3 किमी.) है।

**उच्च सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र :–**

मानचित्र संख्या 6.15 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पूर्वी, पूर्वी, दक्षिणी–पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्र उच्च सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र है।

(i) अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पश्चिम में स्थित अधिवासों मालेड़ा, बड़ला, रामथला, संग्रामपुरा, आरनिया में एक सेवा कूरियर का अभाव है। इसके अलावा दो अधिवासों डाबरकलां, डाबरखुर्द में दो सेवाओं उच्च माध्यमिक विद्यालय व कूरियर का अभाव है।

(ii) अध्ययन क्षेत्र के सीमावर्ती पश्चिमी क्षेत्र में स्थित बोयारा अधिवास में उच्च माध्यमिक विद्यालय का अभाव है।

(iii) अध्ययन क्षेत्र के सीमावर्ती उत्तरी क्षेत्र में स्थित अधिवासों राजमहल, रावता, देवड़ावास, देवीखेड़ा, नयागॉव, लाकोलाई में एक सेवा कूरियर का अभाव है।

(iv) अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पूर्व में स्थित अधिवासों जालेरी, देरावास, सरकावास, जगत्या, गेरोली, आमली, भरना में दो सेवाओं कूरियर व पशु चिकित्सा का अभाव है। इसके अलावा कारसया देवपुरा व नंदपुरा में तीन सेवाओं कूरियर बैंक, पशु चिकित्सा का अभाव है। इसके अलावा कुछ अधिवासों में एक सेवा कूरियर का अभाव है।

(v) अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण–पूर्व में स्थित अधिवासों चांदली, सरदारा, उथारना में पशु चिकित्सा की रिक्तता है। इसके अलावा इसी क्षेत्र में स्थित सीतापुरा, राजकोट, बेनपा, बिशनपुरा, नयागांव, गोपालपुरा में दो सेवाओं कूरियर व पशु चिकित्सा का अभाव है। टोडा का गोथरा, लक्ष्मीपुरा, धन्ना का झोपड़ा, सुजानपुरा, राजनगर अधिवासों में चार सेवाओं कूरियर, बैंक, थोक बाजार, पशु चिकित्सा का अभाव है।

(vi) अध्ययन क्षेत्र के सीमावर्ती पूर्व में स्थित अधिवास जेल में सभी पांचों सेवाओं उच्च माध्यमिक विद्यालय, कूरियर, बैंक, थोक बाजार, पशु चिकित्सा का अभाव है।

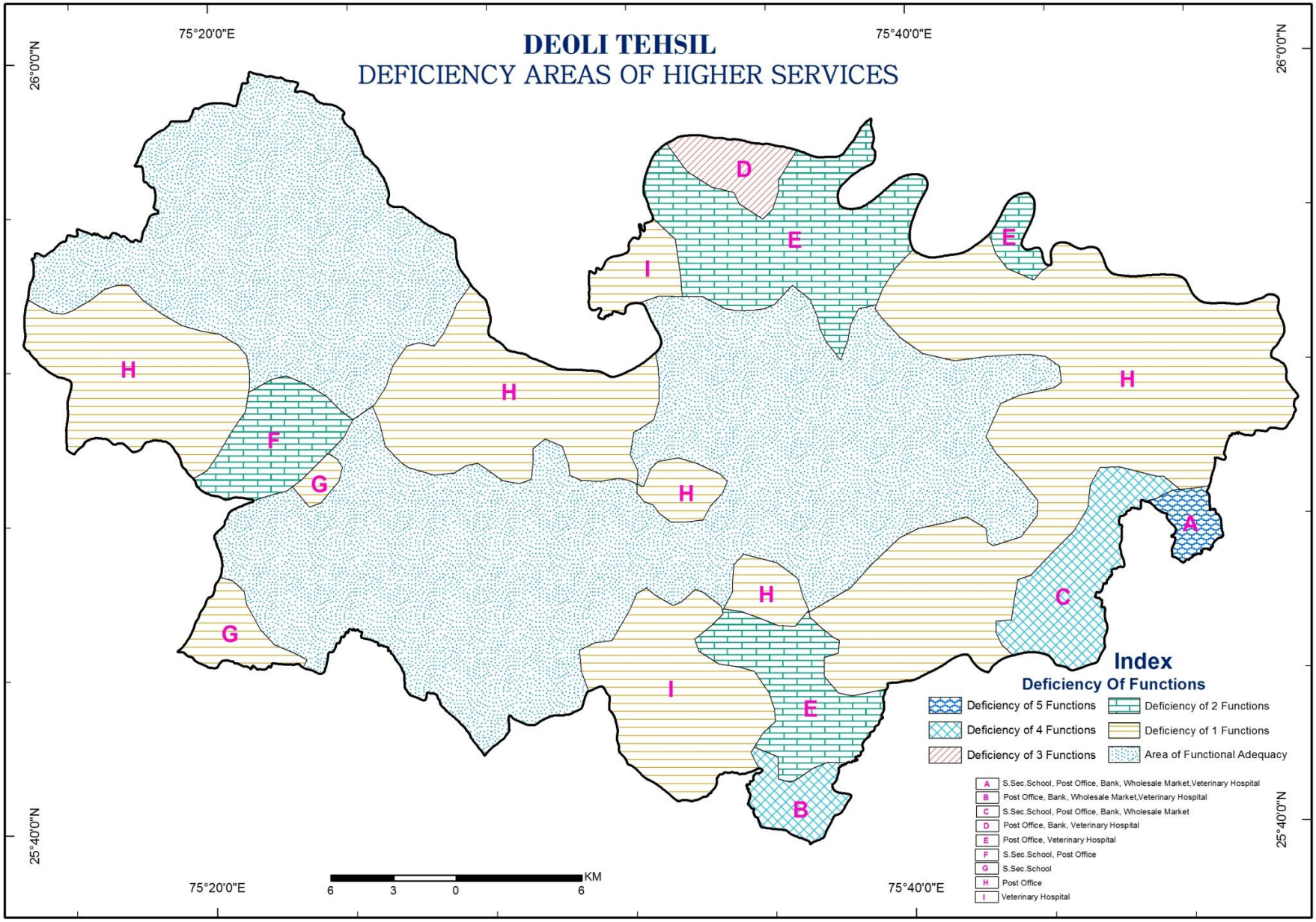
DEOLI TEHSIL
DEFICIENCY AREAS OF HIGHER SERVICES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
KM
6 3 0 6
Index
Deficiency Of Functions
Deficiency of 5 Functions
Deficiency of 4 Functions
Deficiency of 3 Functions
Deficiency of 2 Functions
Deficiency of 1 Functions
Area of Functional Adequacy
A S.Sec.School, Post Office, Bank, Wholesale Market,Veterinary Hospital
B Post Office, Bank, Wholesale Market,Veterinary Hospital
C S.Sec.School, Post Office, Bank, Wholesale Market
D Post Office, Bank, Veterinary Hospital
E Post Office, Veterinary Hospital
F S.Sec.School, Post Office
G S.Sec.School
H Post Office
I Veterinary Hospital

**मध्यम सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र :–**

मानचित्र संख्या 6.16 से कुछ तथ्य उभर कर आते हैं जो निम्न हैं :–

(i) अध्ययन क्षेत्र के उत्तर तथा उत्तर–पश्चिम में स्थित सीतारामपुरा, अरनिया, थली अधिवासों में मात्र एक सेवा डिस्पेंसरी का अभाव है।

(ii) अध्ययन के उत्तर पूर्व में स्थित निवारिया, पोलयारा, सतवारा, गांधीग्राम, नयागांव, जलसीना, जालेरी, अमली, नंदपुरा आदि अधिवासों में एक सेवा डिस्पेंसरी की अल्पता विद्यमान है। इसी क्षेत्र में स्थित हारोती, किशनपुरा अधिवासों में तीन सेवाओं माध्यमिक विद्यालय, सहकारी समिति, उर्वरक केन्द्र का अभाव है तथा बहालरी, गेरोटी अधिवासों में दो सेवाओं डिस्पेंसरी व सहकारी समिति की रिक्तता मौजूद है।

(iii) अध्ययन क्षेत्र के पूर्व में स्थित गुरई, कनवाड़ा, सतवाड़ा, बरोली, ठिकरिया, स्यावाता, बालागढ़, बालूंदा, आकोदिया, जैल, संग्रामपुरा आदि अधिवासों में एक सेवा डिस्पेंसरी की रिक्तता मौजूद है। इसी क्षेत्र में स्थित सुखपुरा अधिवास में दो सेवाओं माध्यमिक विद्यालय व डिस्पेंसरी की अल्पता विद्यमान है।

(iv) अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण पूर्व में स्थित सीतापुरा, राजकोट, बेनपा, टोडा का गोथरा, धारोला, लक्ष्मीपुरा, धन्ना का झोपड़ा, सुजानपुरा, राजनगर अधिवासों में दो सेवाओं डिस्पेंसरी व सहकारी समिति का अभाव है।

**निम्न सेवाओं की अल्पता का क्षेत्र :–**

मानचित्र संख्या 6.17 को देखने पर निम्न तथ्य उभरकर आते हैं :–

(i) अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में स्थित अधिवासों बीसलपुर, दलवासा में निम्न प्रकार की दोनों सेवाएँ उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा डाकघर की रिक्तता मौजूद है। इसी क्षेत्र में स्थित अधिकांश अधिवासों में एक सेवा डाकघर की रिक्तता मौजूद है।

(ii) अध्ययन क्षेत्र के उत्तर–पूर्व व पूर्व में स्थित अधिवासों जगत्या, किशनपुरा, हारोती, गेरोटी, जालिमगंज, जैल में दोनों निम्न सेवाओं की रिक्तता मौजूद

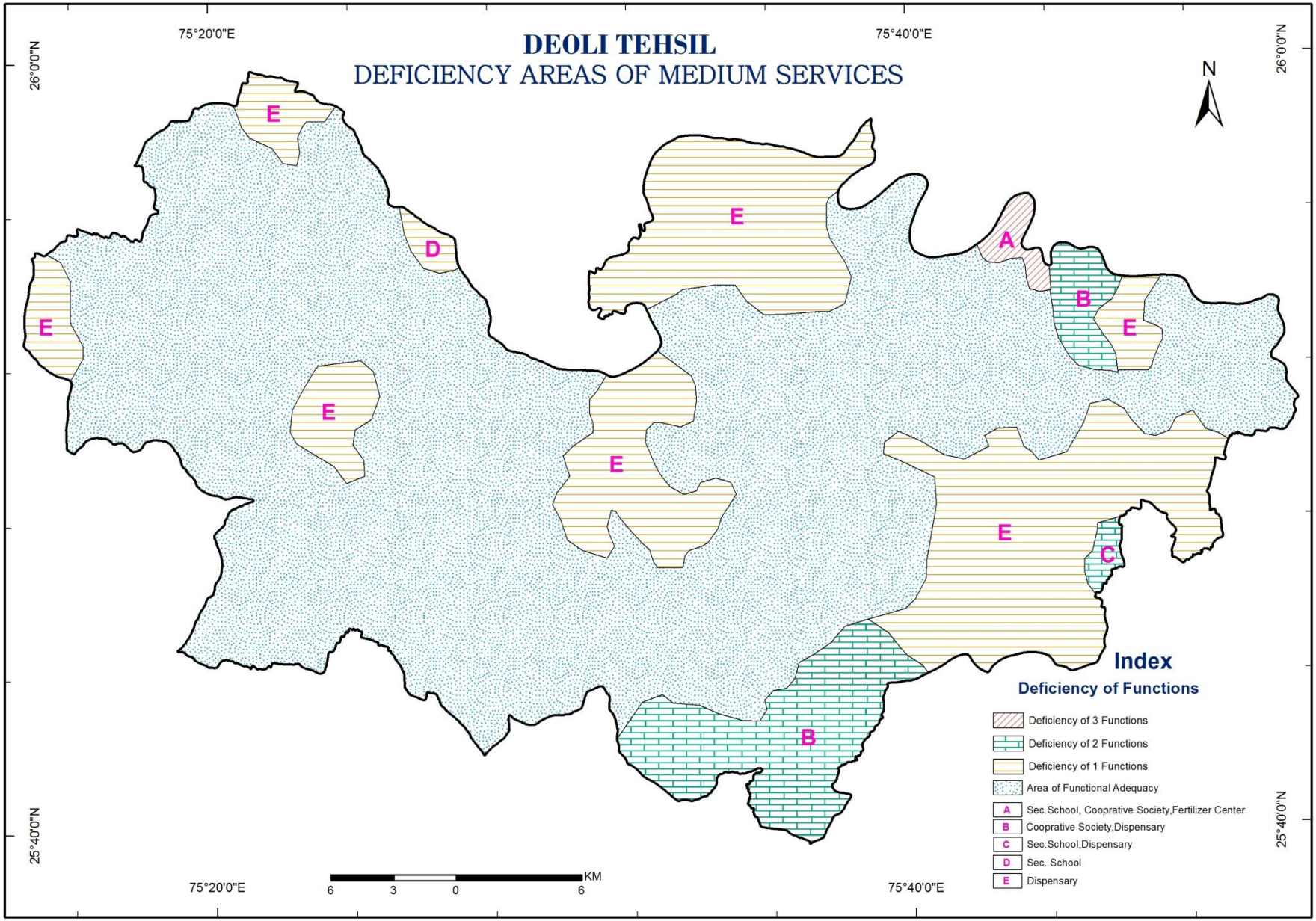

DEOLI TEHSIL
DEFICIENCY AREAS OF MEDIUM SERVICES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
A
B
C
D
E
Index
Deficiency of Functions
Deficiency of 3 Functions
Deficiency of 2 Functions
Deficiency of 1 Functions
Area of Functional Adequacy
A Sec.School, Coopartive Society,Fertilizer Center
B Coopartive Society,Dispensary
C Sec.School,Dispensary
D Sec. School
E Dispensary
6 3 0 6 KM

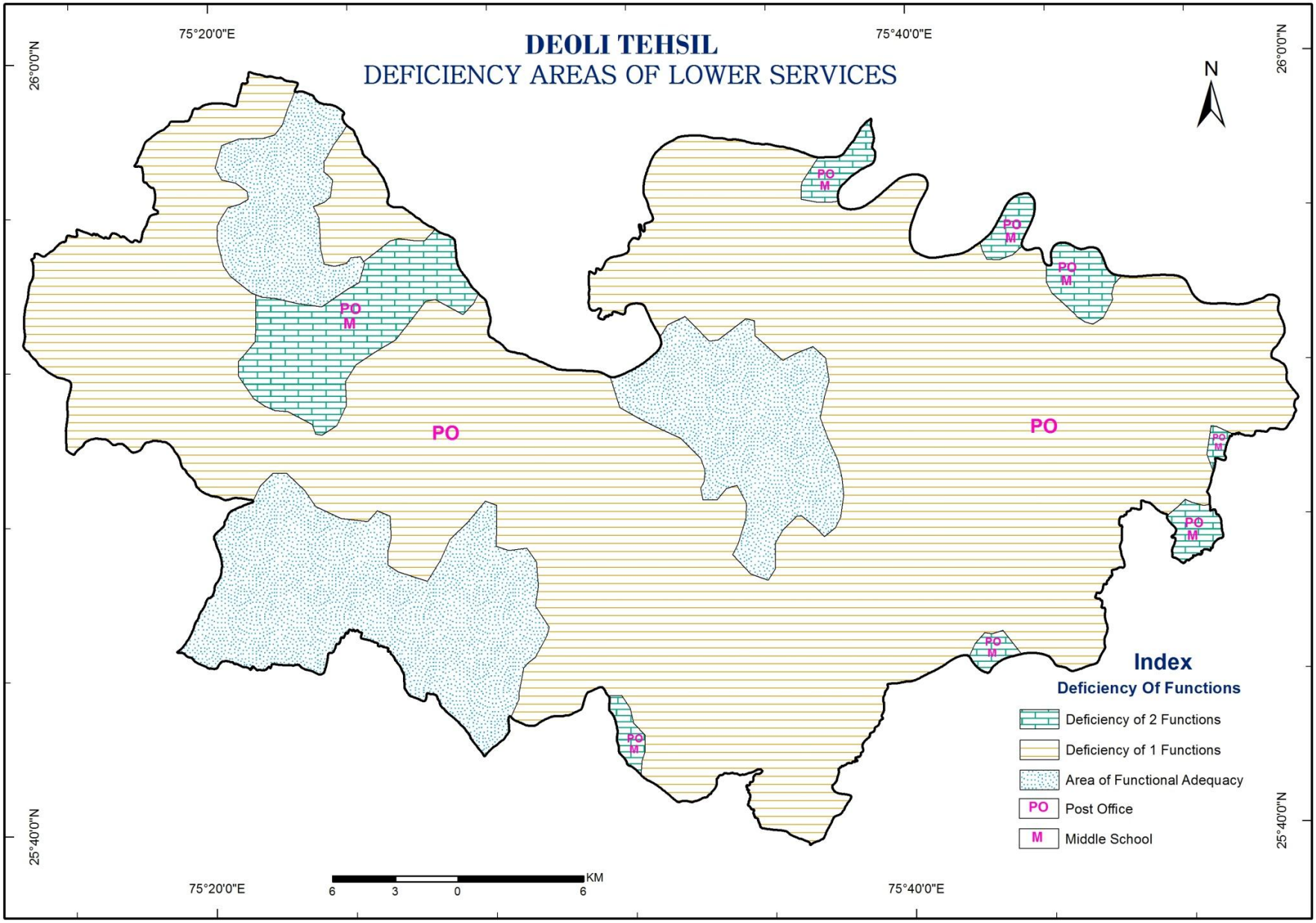
DEOLI TEHSIL
DEFICIENCY AREAS OF LOWER SERVICES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
PO
M
Index
Deficiency Of Functions
Deficiency of 2 Functions
Deficiency of 1 Functions
Area of Functional Adequacy
Post Office
Middle School
6 3 0 6 KM

है। इसी क्षेत्र के कुछ अधिवासों को छोड़कर अन्य अधिवासों में एक सेवा डाकघर की रिक्तता मौजूद है।

(iii) अध्ययन के दक्षिण–पूर्व में स्थित दो अधिवासों भानोली, गोपालपुरा में दोनों निम्न सेवाओं की रिक्तता मौजूद है। इस क्षेत्र के अन्य सभी अधिवासों में एक सेवा डाकघर की रिक्तता है।

**(i) प्रदेश के समग्र विकास में केन्द्र स्थल की भूमिका :–**

सम्भवतः अधिवास अपनी फायदेमंद अवस्थिति के कारण छोटे से गाँव से वृहद नगरों में परिवर्तित हो जाते हैं और अपने आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए केन्द्रीय सेवाएँ प्रदान करते हैं तथा वे अधिवास केन्द्र स्थलों में परिवर्तित हो जाते हैं। इन पर आधारित अधिकांश अधिवास ग्रामीण होते हैं इसलिए ये ग्रामीण केन्द्रीय स्थल कहलाते हैं। कुछ केन्द्र अपने आस–पास के लोगों को स्थानीय सेवाएँ प्रदान करते हैं और इसके बदले में मूलभूत वस्तुएँ व सेवाएँ प्राप्त करते हैं। यदि ये सेवा केन्द्र सम्पूर्ण क्षेत्र में सुयोग्य ढंग से वितरित हो तो यह आदान–प्रदान अधिकारिक रूप से बहुत ज्यादा फायदेमंद हो सकता है। यह आवश्यक नहीं कि कोई सेवा केन्द्र या सेवा क्षेत्र अन्य से आकार व सेवाओं में पूर्णतः समानता रखे जो कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर मांग की तीव्रता व सेवाओं के प्रकार से भिन्न होती है। इस प्रकार सेवा विशेष से सेवित क्षेत्र केन्द्रीकृत सेवाओं की तीव्रता पर आधारित होता है जहाँ लोग अपनी सांस्कृतिक, आर्थिक व सामाजिक आवश्यकताओं के लिए सेवा क्षेत्र विशेष की ओर गमन करते हैं ये आवश्यकताएँ चाहे प्राथमिक हो या द्वितीयक हो तभी संतुष्ट की जा सकती है जब सेवा केन्द्र विभिन्न सेवाओं को उस क्षेत्र विशेष में सम्पादित करें। एक भूगोलवेत्ता के लिए क्षेत्र विशेष में सेवाओं के वितरण का अन्वेषण, केन्द्रीय स्थानों व उनके पड़ौसी क्षेत्रों के मध्य अन्तर्सम्बद्धता तथा असेवित क्षेत्रों की पहचान बहुत रूचिकर कार्य है।

यदि एकीकृत क्षेत्र विकास के अनुकूलतम परिणाम प्राप्त करने हैं तो केन्द्रीय स्थानों का संतुलित वितरण पर्याप्त सुविधाओं व कार्यों की उपलब्धता पूर्ण आवश्यक है। यह केन्द्रीय स्थानों का केवल संयुक्त पदानुक्रम है जहां सेवाएं व कार्य संतोषजनक हो सकते हैं। अधिवासों का स्थानिक पदानुक्रम क्षेत्र विशेष में विकसित सेवाओं के प्रकारों के साथ–साथ घनत्व प्रतिरूप, स्थलाकृतिक स्थिति तथा क्षेत्र की अभिगम्यता पर निर्भर करता है। इस प्रकार किसी क्षेत्र का पूर्ण समन्वित व संतुलित विकास केन्द्रीय स्थानों के कार्यात्मक पदानुक्रम द्वारा सम्भव है। एक क्षेत्र का संतुलित व एकीकृत विकास क्षेत्रीय योजना का वृहद् भाग होता है। ये केन्द्रीय स्थानों के विकास और उनके पदानुक्रमीय क्रम पर निर्भर करता है। केन्द्रीय स्थानों के चारों ओर निवास करने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करते हैं। उदाहरणार्थ दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, शिक्षा, चिकित्सा व डाक सेवाएँ जो उनके लिए अधिक आवश्यक हैं।

केन्द्र व उसके क्षेत्र के मध्य संलग्नताओं के प्रतिरूप के लिए कठोरता आवश्यक हो सकती है लेकिन कार्यों की सही अवस्थिति स्वयं केन्द्रीय स्थान में आवश्यक ळें

**(ii) वर्तमान आर्थिक अवसर :–**

यहाँ यह प्रदर्शित किया गया है कि तहसील में कार्यों व उपकार्यों के बीच संतुलन नहीं है जो कार्य रिक्त क्षेत्रों की पहचान से भी साबित होता है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य देवली तहसील के संतुलित विकास की योजना तैयार करना है। इस प्रकार यह जानना आवश्यक है कि प्रथम तो कौन से कारक जैसे भौतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जो क्षेत्र में असंतुलित वृद्धि को बढावा देते हैं और द्वितीय कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र किस प्रकार सेवा क्षेत्रों के साथ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। यह तभी किया जा सकता है जब किसी क्षेत्र के आर्थिक अवसरों का

ध्यानपूर्वक अध्ययन हो। यदि कोई क्षेत्र विकास के उच्च आर्थिक अवसर रखता हो तो संतुलित आर्थिक विकास की संभावना बढ़ेगी।

**कृषि विकास योजना :–**

देवली तहसील में कृषि एक प्रधान आर्थिक क्रिया और अर्थव्यवस्था का आधार है। बढ़ती हुई जनसंख्या को पौष्टिक और संतुलित आहार उपलब्ध करवाने, कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त करने तथा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए कृषिगत समस्याओं का समुचित मूल्यांकन और नियोजन आवश्यक है।[13]

**कृषि विकास हेतु संस्तुतियाँ :–**

(i) तहसील के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 53.88 प्रतिशत भाग कृषि भूमि के अन्तर्गत आता है जबकि 37.36 प्रतिशत भूमि कृषि के अन्तर्गत नहीं है। अतः कृषि भूमि के प्रतिशत में और वृद्धि की जा सकती है।

(ii) देवली तहसील में खाद्यान्न के प्रतिशत क्षेत्रफल में कमी आयी है अतः भविष्य की मांग को ध्यान में रखते हुए इन फसलों की उत्पादकता में वृद्धि अपेक्षित है।

(iii) तहसील में कृषि भूमि सीमित तथा अपरिवर्तनीय है। अतः गहन पद्धतियों से ही कृषि उत्पादन में वृद्धि किया जाना चाहिए। जिससे पोषण आहार की पर्याप्त मात्रा जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में प्राप्त हो सके।

(iv) सिंचाई कृषि का रक्त है। यहां कुल फसली क्षेत्रफल के केवल 32.79 प्रतिशत भाग पर हीं सिंचाई की जाती है। अतः अध्ययन क्षेत्र में बहुफसली पद्धति को प्रोत्साहित करने एवं प्रति हेक्टेयर उपज में वृद्धि करने के लिए उपलब्ध जल स्त्रोतों का सिंचाई हेतु समुचित उपयोग आवश्यक है।

(v) तहसील के विभिन्न भागों में प्राथमिकता के आधार पर भूसंरक्षण अपेक्षित है।

(vi) प्रत्येक सेवा केन्द्र में कृषि विस्तार सेवा की व्यवस्था की जाये।

(vii) लघु एवं सीमांत कृषकों को शासन द्वारा कृषि कार्य हेतु आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जाऐं।

(viii) कृषकों को अपना कृषि कार्य सहयोगात्मक ढंग से करना चाहिये तथा सम्बन्धित प्रशासनिक अधिकारियों को कृषि कार्य का निरीक्षण समय–समय पर करना अपेक्षित है।

(ix) क्षेत्रीय कृषकों को सहकारी समितियों के माध्यम से एक स्थान पर उर्वरक, बीज एवं कीटनाशक दवाईयां उचित मूल्य पर मिलना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि उपर्युक्त घटकों की मात्रा अनुमानित आवश्यकता के अनुरूप उपलब्ध हो ताकि वे सामग्रियां यथोचित समय में कृषकों के सहायक बन सकें।

(x) कृषि के समुचित विकास हेतु कृषि सम्बन्धी व्यय प्रत्येक स्तर पर होता है। कृषि कार्य हेतु कृषकों को उन्नत बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओं एवं सिंचाई के लिए तकनीकी घटकों की आवश्यकता की पूर्ति साख, सुविधाओं के बिना असंभव है। अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान में 15 अधिवासों में बैंकिंग सेवा तथा 29 अधिवासों में सहकारी समितियाँ कार्यरत हैं जिनके माध्यम से क्षेत्रीय कृषकों को साख सुविधाएँ मिलती हैं।

क्षेत्र में अधिकांश कृषक कृषि संबंधी व्यय को स्वयं ही पूरा करते हैं। जब कभी भी कृषकगण प्राथमिक संसाधन जुटाने में असफल होते हैं तो वे बहुत से कृषि कार्य को करते ही नहीं। अतः उन्नतशील कृषि कार्यों के निष्पादन हेतु यह अनुशंसा की जाती है कि साख ऋण की आवश्यकता को ग्रामीण सहकारी समिति द्वारा सम्पादित किया जाना चाहिये ताकि दूरस्थ यात्रा की पीड़ा व व्यय तथा ग्राम्य महाजनों के चुंगल से कृषकों को बचाया जा सके।

(xi) कृषि क्रिया के साथ पशुपालन का घनिष्ठ संयोजन तहसील की कृषि संरचना का प्रमुख लक्षण है। अतः पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा एवं उन्नत पशु नस्ल के विकास हेतु पशु चिकित्सा एवं प्रजनन संस्थान की सुविधाएँ उपलब्ध करवाना अत्यन्त आवश्यक है। तहसील में वर्तमान में 9 सेवा केन्द्रों

में पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध है। आधारभूत तथ्यों के आधार पर शोधकर्ता ने अध्ययन क्षेत्र में 40 सेवा केन्द्रों में पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवाने का प्रस्ताव किया है। इसका विस्तार पूर्वक अध्ययन इसी अध्याय में पूर्व में किया जा चुका है।

(xii) कृषि का समुचित विकास केवल उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने में ही निहित नहीं है, बल्कि कृषि उत्पादों के लिए उत्तम विपणन संगठन भी होना आवश्यक है जिससे कृषकों को उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त हो सके। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए उचित कीमत का भुगतान आवश्यक है। इससे कृषकों की आर्थिक दशा में सुधार होगा तथा अधिक उत्पादन के लिए प्रेरणा भी मिलेगी। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि भण्डारण की सुविधाएँ केवल व्यापारियों तथा कुछ बड़े कृषकों के पास हैं। अधिकांश कृषकों को अपने उत्पाद कम कीमत में विषम परिस्थितियों जैसे निर्धनता, निकटवर्ती बाजार की असुविधा, यातायात की सुविधाओं का अभाव आदि के कारण मध्यस्थों को बेचना पड़ता है।

अतः अनुशंसा की जाती है कि सभी स्तर के सेवा केन्द्रों में सहकारी विपणन समितियाँ स्थापित की जानी चाहिए।

कृषकों को कृषि अवस्थापन जैसे उर्वरक,बीज, कीटनाशक दवाईयाँ तथा विक्रय योग्य कृषि उत्पादन को सुरक्षित रखने के लिए गोदाम की आवश्यकता होती है। क्षेत्र में उत्तरोत्तर कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा भण्डारण की असुविधा को ध्यान में रखते हुए यह अनुशंसा की जाती है कि सभी स्तर के सेवा केन्द्रों में बहुउद्देश्यीय ग्रामीण गोदाम होने चाहिए एवं सेवा केन्द्रों के आरोही क्रमानुसार गोदामों की संख्या तथा भण्डारण क्षमता को निर्धारित किया जाना चाहिए।

**औद्योगिक विकास योजना :–**

देवली तहसील में एकीकृत ग्रामीण विकास योजना हेतु कृषि के बाद उद्योग को ही महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिये। अतः अध्ययन क्षेत्र में लघु एवं ग्रामीण

औद्योगीकरण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे कृषि पर जनसंख्या के दबाव को कम करके क्षेत्रीय रोजगार एवं आय की संरचना में परिवर्तन लाया जा सके।[14]

## औद्योगिक विकास हेतु संस्तुतियाँ :–

1. देवली तहसील में गेहुँ व सरसों का उत्पादन अधिक होता है अतः आटा मिलें तथा सरसों के तेल की मिलें स्थापित की जा सकती हैं।
2. देवली तहसील में मुख्य खनिजों में गारनेट, फाइलाइट, शिष्ट, पट्टीकटला, स्लेट पत्थर, बलुआ पत्थर प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इन खनिजों के आधार पर तहसील में अनेक उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं।
3. देवली तहसील में निम्न सेवा उद्योगों की संभावना है जैसे :– ऊनी खिलौनों की इकाईयाँ, निर्माण एवं मरम्मत की दुकानें, मोटर–ट्रेक्टर मरम्मत, मोटर बाइंडिंग, टायर मरम्मत इकाई, वेल्डिंग, चमड़े के जूते, चमड़े के अन्य उत्पाद, ऊनी नमदा, ऊनी कालीन, पेकिंग डिब्बे, प्लास्टिक के उत्पाद, बारदाना बैग, सीमेंट जाली व अन्य उत्पाद।
4. सरोली मोड को नया औद्योगिक क्षेत्र बनाया जा सकता है।
5. वन आधारित उद्योगों में आरामशीन, फर्नीचर निर्माण, कृषि औजार आदि उद्योगों की स्थापना की जा सकती है।

## परिवहन विकास योजना :–

यदि कृषि और उद्योग को आर्थिक जीवन का शरीर व हड्डियां माना जाये तो परिवहन तंत्र को उस आर्थिक ढाँचे की स्नायु प्रणाली मानना चाहिये। परिवहन तंत्र की उपस्थिति से न केवल विकासजन्य क्रियायें विकसित होती है, बल्कि क्षेत्र का सर्वांगीण विकास प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार विकास की गति एवं दर इस बात पर निर्भर करती है कि परिवहन प्रणाली कितनी विश्वसनीय, सक्षम और तीव्रगामी है।[15]

**परिवहन विकास हेतु संस्तुतियाँ :–**

देवली तहसील में परिवहन जाल क्षेत्रीय निवासियों की आवश्यकता को पूर्ण करने में सक्षम नहीं है। अध्ययन क्षेत्र में परिवहन विकास हेतु निम्न संस्तुतियाँ तैयार की गई हैं–

(i) अध्ययन क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 की निकटवर्ती सड़कों को राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ा जाना चाहिए।

(ii) लोगों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग पर पड़ने वाले सभी मुख्य अधिवासों में बस स्टॉप सुविधा उपलब्ध करवायी जानी चाहिए।

(iii) तहसील में अभी तक रेल परिवहन की सुविधा उपलब्ध नहीं है अतः परिवहन के साधन के रूप में रेलों का विकास किया जा सकता है।

**प्रस्तावित कार्यात्मक पदानुक्रम का प्रतिरूप :–**

इसी अध्याय में पूर्व में तहसील में कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्रों की पहचान की जा चुकी है। अध्ययन का यह भाग इस तथ्य का प्रतिनिधित्व करता है कि तहसील में कुछ क्षेत्र उच्च विकसित है जबकि कुछ अल्प विकसित है। जहां तक सेवाक्षेत्रों की स्थापना का सम्बन्ध है, यह प्रदर्शित करता है कि तहसील में केन्द्रीय कार्यों व सेवा क्षेत्रों की वृद्धि तथा वितरण विषम है। इनके संतुलित विकास के लिए स्थानिक एकीकरण की आवश्यकता है। यहां स्थानिक एकीकरण से तात्पर्य अधिवासों के क्रमबद्ध वितरण एवं विकास तथा क्षेत्र के विभिन्न भागों को संयुक्त करने के प्रयास से है। यह तंत्र प्रदेशों को संयुक्त प्रतिरूप (Coherent) में ढालता है। अधिवासों का पदानुक्रम तथा कार्य दोनों को तंत्र के रूप में विचार किया जा सकता है।[16]

अधिवासों का प्रस्तावित पदानुक्रमीय क्रम तथा उनके विविध कार्य स्थानिक एकीकरण में सहायक होंगे। यह क्रम तहसील की कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए क्षेत्र प्राथमिकता के साथ संयुक्त होंगे। तहसील में स्थानिक कार्यात्मक समन्वयन के लिए एक योजना प्रस्तुत की जा सकती है जैसा कि बंसल ने प्रस्तावित किया। उसने अधिवासों को कार्यों के स्थानिक एकीकरण के लिए पांच

क्रमों में रखा यथा प्रादेशिक राजधानी, प्रादेशिक सेवा केन्द्र, सेवा केन्द्र, केन्द्रीय गांव, आश्रित गाँव। तहसील में स्थानिक कार्यात्मक एकीकरण के लिए समान आधारों पर पांच स्तरीय पदानुक्रम प्रस्तावित किया गया।

पदानुक्रम का प्रत्येक क्रम उससे उच्च क्रम पर आधारित होगा जैसे आश्रित गांव, केन्द्रीय गाँव पर आधारित होंगे, केन्द्रीय गाँव सेवा केन्द्रों पर, सेवा केन्द्र प्रादेशिक सेवा केन्द्रों पर आधारित होंगे। देवली तहसील में अधिवासों की स्थानिक कार्यात्मक रिक्तता के लिये निम्नलिखित मानदण्ड हैं।

**तहसील के लिए कार्यात्मक सम्बन्ध और स्थानिक एकीकरण का प्रारूप :–**

1. **प्रादेशिक राजधानी :–**

महाविद्यालय, आधुनिक सुविधाओं (एक्सरे, ऑपरेशन थियेटर) से सुसज्जित नागरिक अस्पताल, परिवार नियोजन केन्द्र और मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, डाक एवं कूरियर, दूरभाष केन्द्र (Telephone Exchange), बैंक सहकारी समिति, थोक बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, रेल्वे स्टेशन, होटल, रेस्टोरेन्ट, सिनेमाघर, तहसील स्तरीय प्रशासनिक कार्यालय।

2. **प्रादेशिक सेवा केन्द्र :–**

उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और परिवार नियोजन तथा मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, डाक एवं कूरियर, छोटा दूरभाष केन्द्र, बैंक (व्यापारिक), सहकारी समिति, नियमित बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, सिनेमा हॉल।

3. **सेवा केन्द्र :–**

माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत।

**4. केन्द्रीय गाँव :–**

उच्च प्राथमिक विद्यालय, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन ऑयल, डीजल और केरोसीन और लुहार।

**5. आश्रित गाँव :–**

प्राथमिक विद्यालय, निजी चिकित्सा व्यवसायी, छोटा सामान्य प्रोविजन स्टोर और आटा मिल।

हमारी इस योजना का प्रमुख उद्देश्य है कि तहसील के ग्रामीण क्षेत्र उपरोक्त वर्णित कार्यात्मक कार्यक्रम के द्वारा सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों के साथ तेजी से विकास कर सकते हैं। यह विकास भौतिक स्थिति पर तहसील के संतुलित विकास के लिए सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों की सटीक अवस्थिति से सम्बन्धित हैं। तहसील के कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्रों का ध्यानपूर्वक परीक्षण करने पर यह सुझाव दिया जा सकता है कि तहसील के कार्यात्मक रिक्तता या अल्प अन्तः क्रिया के क्षेत्रों को उनकी सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों द्वारा अवश्य भरा जाना चाहिये ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के लोग शहरी क्षेत्रों के लोगों की तरह सुविधाओं का लाभ प्राप्त कर सकें और अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठा सके।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य क्षेत्र के संतुलित विकास के लिए योजना तैयार करना है। इसलिए यह आवश्यक है कि विभिन्न क्रम के सेवा केन्द्र समान रूप से वितरित हों। सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों का वितरण भी उनकी श्रेणी के अनुसार विभिन्न क्रम के सेवा केन्द्रों में हो और उनकी सामाजिक आर्थिक गतिविधियों का विकास प्रस्तावित योजना के अनुसार हो जैसा कि तालिका संख्या 6.16 में है। यह योजना सभी स्तर की योजना में विचार करती है अर्थात् गाँव के स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक यह अधिवासों के लिए एक पदानुक्रम स्थापित करती है जिसके आधार पर

सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के विभिन्न स्तर तैयार किये जा सकते हैं। यहां गाँव योजना की सबसे छोटी इकाई है जो क्षेत्र में पदानुक्रम का निम्नतम स्तर बनाता है। एकीकृत क्षेत्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि केन्द्रीय कार्य उन अधिवासों में अवस्थित हो जहां वे आस–पास के क्षेत्रों की आसान पहुंच में हो।

यह सिद्ध होता है कि आस–पास के क्षेत्र अर्थात् गाँवों का एक समूह जिसमें एक केन्द्रीय गांव होगा जो लोगों की माँग पर उच्च स्तर की सेवाऐं प्रदान करेगा। ये वे सेवाएं होंगी जो गांवों के एक समूह की कुल जनसंख्या पर आधारित होगी। गांवों का एक समूह इन केन्द्रीय गाँवों के साथ कार्यात्मक समुदाय के रूप में जाना जायेगा। यह भी सिद्ध होता है कि इन कार्यात्मक समुदायों की एक संख्या उप प्रदेश को स्थापित करेगी। जिसे एक सेवा केन्द्र के रूप में ढाला जा सकता है। यह सेवा केन्द्र केन्द्रीय गांव से उच्चक्रम का होगा। केन्द्रीय गाँव द्वारा प्रदान की गई सेवाओं में सेवा केन्द्र अधिक जटिल सेवाओं का समूह भी प्रदान करेगा। इन सेवा केन्द्रों की एक संख्या अगले उच्चक्रम के सेवाकेन्द्रों से प्रभावित होगी जो कि प्रादेशिक केन्द्र कहलायेगा और ये प्रादेशिक केन्द्र सेवा केन्द्रों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं से अधिक सेवाऐं रखेगा।

तहसील में सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक पदानुक्रम पांच क्रमों का बना होगा। ये क्रम दूरी कारक को विचार में रखकर स्थापित किये जायेंगे। पांचवा क्रम आश्रित अधिवासों से बना होगा। उनमें से कुछ अधिवास स्वयं संतुष्ट होंगे। स्वयं संतुष्ट अधिवास उनके आस–पास के क्षेत्रों की सेवा करने में भी संतुष्ट होंगे, यदि आवश्यक कार्य विशेष वहाँ प्रदान किये हों। इस प्रकार से स्वयं संतुष्ट गाँव केन्द्रीय गाँव के रूप में विकसित हो सकते हैं और इसके बाद ये अधिवास केन्द्रीय गांव के प्रभाव में होंगे और केन्द्रीय गांव से पगडण्डी द्वारा जुडे होंगे। एक केन्द्रीय गांव उससे 3 किलोमीटर की परिधि में अवस्थित अधिवासों की सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के लिए उत्तरदायी होगा। इस प्रकार ये 30 वर्ग किमी से अधिक का क्षेत्र नहीं

घेरेंगे और 15000 की जनसंख्या को सेवा देंगे। ये केन्द्र सेवा केन्द्र के प्रभाव क्षेत्र में अवस्थित होंगे।

सरकार के कई प्रयासों के बावजूद ग्रामीण व नगरीय अधिवासों के मध्य कई रिक्तताएं हैं। हमारे देश में यह विषमता दूर की जा सकती है। यदि सेवा केन्द्रों की स्थापना का प्रतिरूप परिवहन व संचार की सेवाओं के संदर्भ में हो। यह एक सामान्य इच्छा है कि ये दोनों एक संगठन का समग्र भाग हो और समान आकर्षण मिले न कि दोनों का भिन्न–भिन्न अस्तित्व हो।

सेवा केन्द्र उनसे 5 किलोमीटर की परिधि से अधिक प्रभावित नहीं होगा और 30 हजार की जनसंख्या के साथ 80 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को न घेरे तथा प्रादेशिक सेवा केन्द्र से प्रभावित होगा। इन सेवा केन्द्रों की अवस्थिति प्रस्तावित परिवहन मार्गों के सहारे होगी और अपने केन्द्रीय गाँवों से अधिकतर कच्चे मार्गों द्वारा जुड़े होंगे। प्रादेशिक सेवा केन्द्र जैसे दूनी, नासिरदा आदि उनके निवासियों की मांग पर आधारित आवश्यक सुविधाओं के लिए जिम्मेदार होंगे। यह केन्द्र पक्के मार्गों के सहारे अवस्थित होंगे। यह द्वितीय क्रम के केन्द्र एक दूसरे से 16 किलोमीटर दूर होंगे। यह 50000 लोगों के साथ 200 वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र को सेवित नहीं करेंगे। ये प्रथम क्रम के केन्द्र से प्रभावित होंगे। जैसे देवली नगरीय केन्द्र जो कि स्वयं की तहसील के लिए प्रादेशिक राजधानी की भूमिका निभायेगा।

दूरी कारक पर पहले विचार किया जा चुका है। केवल वही अधिवास प्रस्तावित किये गये जिनकी किसी क्षेत्र में केन्द्रीय अवस्थिति है। उदाहरणार्थ इनडोडा, दौलतपुरा, कलन्दरपुरा जो कि आश्रित गांव हैं धुआंखुर्द केन्द्रीय गांव के प्रभाव क्षेत्र में होंगे। धुंआखुर्द, घाड़ के प्रभाव क्षेत्र में होगा जो कि एक सेवा केन्द्र है। घाड़ दूनी के प्रभाव क्षेत्र में होगा जो कि प्रादेशिक सेवा केन्द्र है और दूनी, देवली नगरीय केन्द्र के प्रभाव में होगा जोकि एक प्रादेशिक राजधानी के रूप में विकसित हुआ है।

इस प्रकार सेवा केन्द्रों का पंचक्रमीय कार्यात्मक पदानुक्रम कार्यों की रिक्तता को भरने में सक्षम होगा और एक पूर्ण स्थानिक कार्यात्मक तंत्र का निर्माण करेगा। बंसल एवं एन. पी. सिंह ने निम्न तालिका के आधार पर पॉच वर्गों में अधिवासों को रखा था उसी आाधार पर देवली तहसील के अधिवासों को प्रस्तावित किया है।

**तालिका संख्या 6.16**
**सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक पदानुक्रम**

| पदानुक्रमीय क्रम | केन्द्र |
|---|---|
| 1 | प्रादेशिक राजधानी |
| 2 | प्रादेशिक सेवा केन्द्र |
| 3 | सेवा केन्द्र |
| 4 | केन्द्रीय गाँव |
| 5 | आश्रित गाँव |

## समग्र क्षेत्र विकास के लिए प्रस्ताव :–

तहसील में कार्यों के अध्ययन के बाद यह अनुभव किया गया कि कुछ क्षेत्र अधिक विकसित हुए जबकि कुछ अल्प विकसित। अब प्रश्न यह उठता है कि गांवों के समूहों में से कार्यों के सम्पादन के लिए किस गांव का चयन किया जाये जो कि सेवा केन्द्र के रूप में कार्य कर सके। कार्यों तथा उपकार्यों के प्रस्तावित स्थानिक वितरण व उनके क्रम समस्या को समझने में सहायक होंगे। अधिवास की केवल जनसंख्या शक्ति ही कार्यों व उपकार्यों के विकास या नये सेवा केन्द्रों के निर्माण का सही आधार नहीं हो सकती। यहां अधिवासों का पदानुक्रमीय या कार्यों व उपकार्यों का प्रस्तावित स्थानिक प्रतिरूप परिवहन सुविधा व कार्यों की दूरी में प्रस्ताव के लिए विचार किया गया है।

वर्तमान अध्ययन में हम इन्हें योजना के अनुसार विकसित कर सकते हैं जैसा कि प्रस्तावित पदानुक्रम में सुझाव दिया गया है। यह निर्धारित किया गया है कि सेवा केन्द्रों का वितरण विभिन्न क्रमों, उनकी सेवा क्षमता तथा सेवित क्षेत्र के अनुसार होना चाहिए।

तहसील में कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए कुल 56 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है जिनमें से 14 वर्तमान में कार्यरत हैं जबकि 42 नये सेवा केन्द्रों की और आवश्यकता है।

**प्रथम क्रम :–**

देवली नगरीय केन्द्र अध्ययन क्षेत्र की क्षेत्रीय राजधानी है। जो तालिका संख्या 6.16 में दर्शाये गये सभी कार्यों को रखते हैं। परन्तु वर्तमान कार्यों में और ज्यादा विकास की आवश्यकता ळें

**द्वितीय क्रम :–**

अध्ययन क्षेत्र में तीन प्रादेशिक सेवा केन्द्र प्रस्तावित है, इनमें से दो प्रादेशिक सेवा केन्द्र दूनी व नासिरदा है जो वर्तमान में कार्यरत है जबकि तहसील में कार्यात्मक रिक्तता की पूर्ति के लिए एक और प्रादेशिक सेवा केन्द्र की आवश्यकता है। अतः अध्ययन क्षेत्र में द्वितीय क्रम की सेवाओं की पूर्ति करने वाले तथा रिक्तताओं को भरने वाले एक सेवा केन्द्र का प्रादेशिक सेवा केन्द्र के रूप में चयन किया गया है यह एक सेवा केन्द्र, राजमहल है। इस प्रस्तावित तथा वर्तमान में कार्यरत सेवा केन्द्रों में कुछ सेवाओं की कमी है अतः इनमें सेवाओं की पूर्ति कर इनका और अधिक विकास किया जा सकता ळें

**तृतीय क्रम :–**

तहसील में केवल 12 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है। इनमें से 8 वर्तमान में कार्यरत हैं जबकि 4 की और आवश्यकता है। वर्तमान में कार्यरत सेवा केन्द्र थांवला, नगरफोर्ट, घाड़, देवली, आंवा, पनवाड़, धुंआकला, चांदली है। प्रस्तावित सेवा केन्द्र केन्द्रीय गांवों से लिये गये हैं। ये हैं बंथली, डाबरकला, बिजवार, संथली।

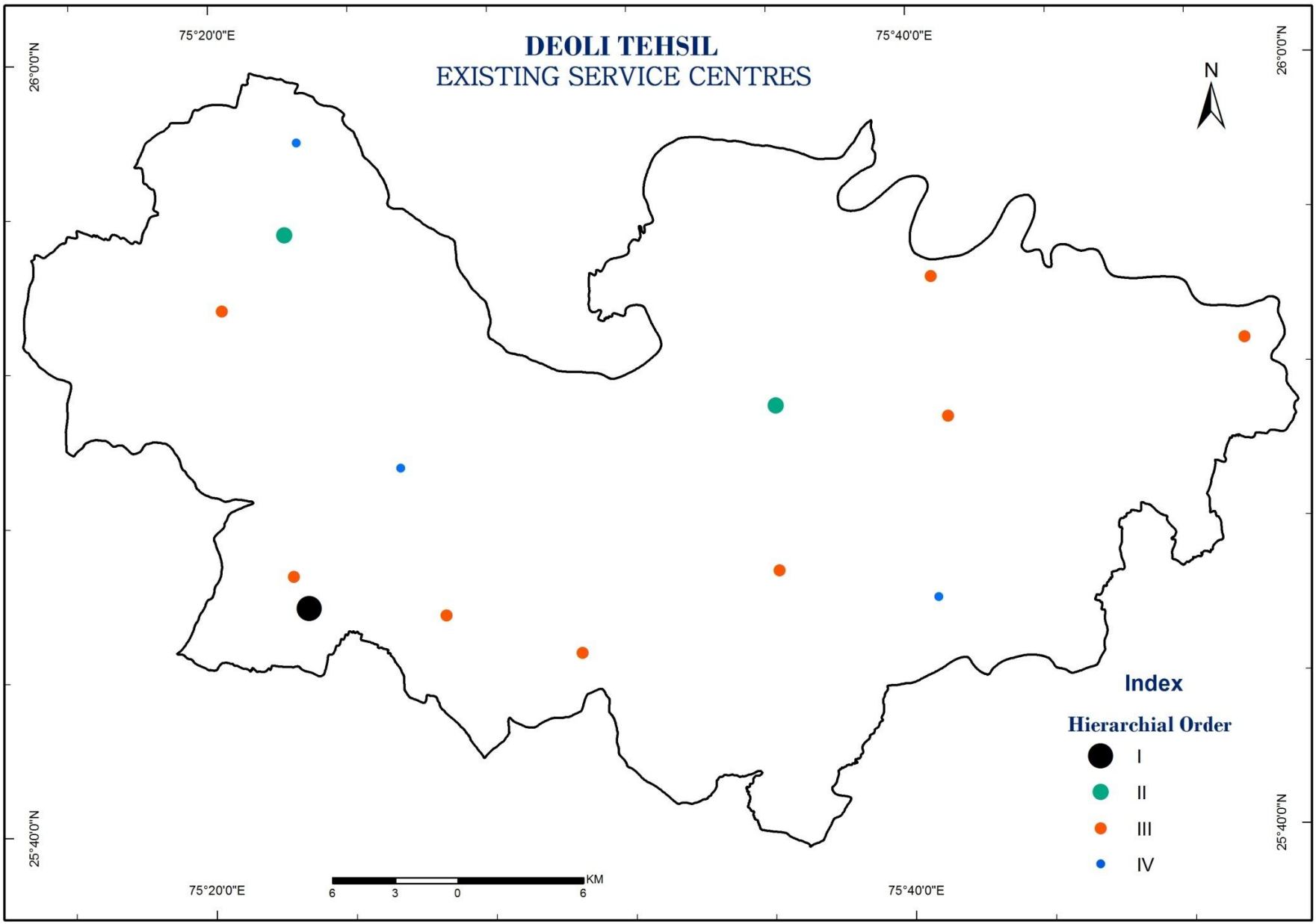
DEOLI TEHSIL
EXISTING SERVICE CENTRES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Index
Hierarchial Order
I
II
III
IV
6
3
0
6
KM

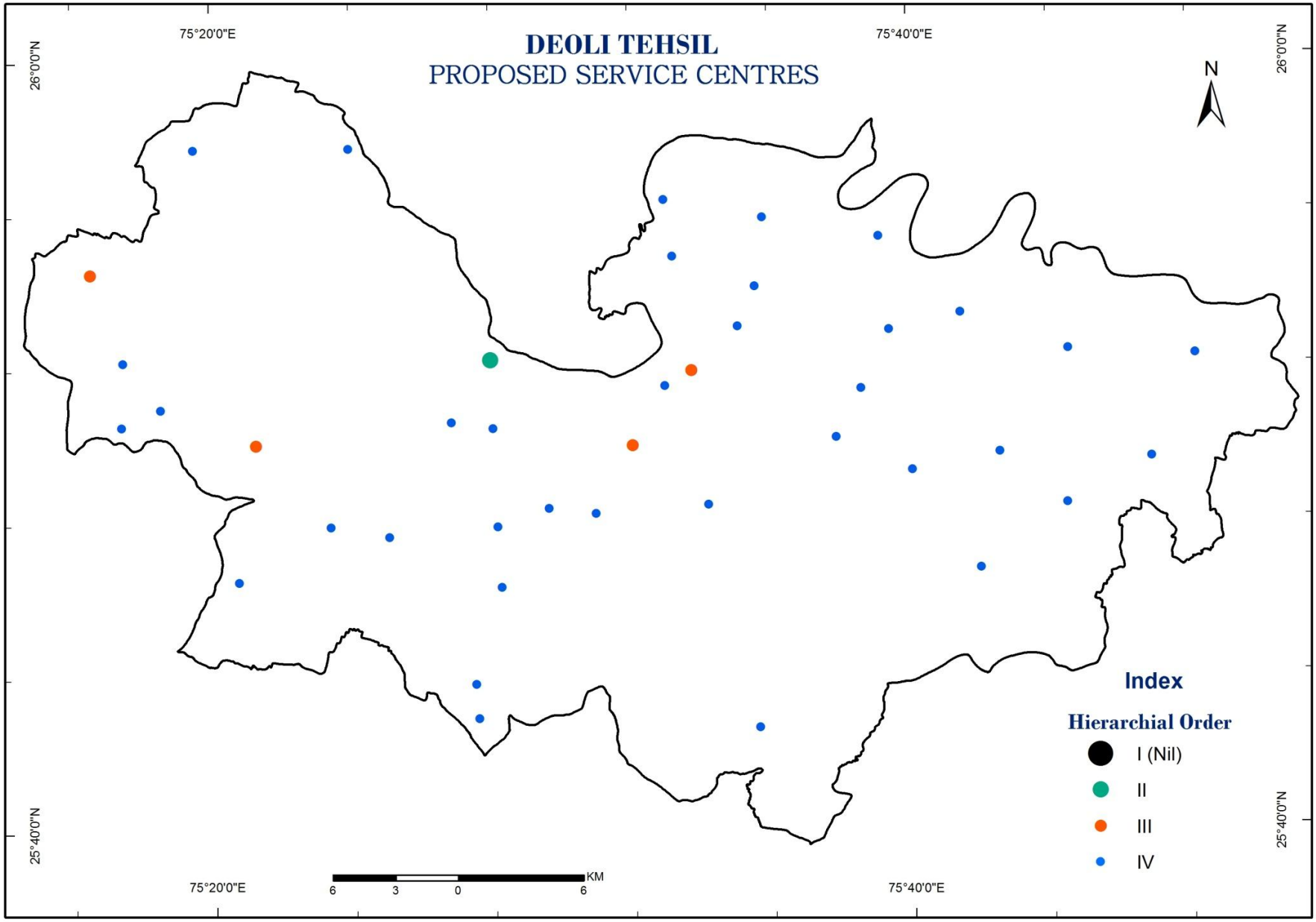
DEOLI TEHSIL
PROPOSED SERVICE CENTRES
75°20'0"E
75°40'0"E
26°0'0"N
25°40'0"N
N
Index
Hierarchial Order
I (Nil)
II
III
IV
6
3
0
6
KM

**चतुर्थ क्रम :–**

अध्ययन क्षेत्र में कुल 40 केन्द्रीय गाँवों की आवश्यकता है इनमें तीन तो वर्तमान में कार्यरत हैं जबकि कार्यात्मक रिक्तता की पूर्ति के लिए 37 की और आवश्यकता है। अतः कुछ बड़े स्तर के आश्रित गांवों को केन्द्रीय गांवों के रूप में चयनित किया जा सकता है। परन्तु उन गांवों में केन्द्रीय गांव की आवश्यक सेवाओं का होना आवश्यक है।

**पंचम क्रम :–**

यह प्रस्तावित है कि अध्ययन क्षेत्र के 114 अधिवास आश्रित गांव होंगे।

**सारांश उल्लेख :–**

प्रस्तावित कार्यात्मक पदानुक्रम और वर्तमान पदानुक्रम द्वारा कुछ परिणाम प्राप्त हुए हैं जो निम्न हैं :–

(i) प्रथम क्रम में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं है। देवली नगरीय केन्द्र में प्रादेशिक राजधानी की सारी सेवाऐं मौजूद हैं। परन्तु वर्तमान कार्यों में और विकास की आवश्यकता है।

(ii) प्रादेशिक सेवा केन्द्र वर्तमान में दो कार्यरत हैं जबकि 1 की और आवश्यकता महसूस की गई है और उसे प्रस्तावित किया गया है।

(iii) सेवा केन्द्र 12 होंगे। इनमें से 8 वर्तमान में कार्यरत हैं जबकि 4 की और आवश्यकता है। ये प्रस्तावित सेवा केन्द्र केन्द्रीय गांवों तथा आश्रित गांवों से उच्च स्थापित होंगे। ये प्रस्तावित सेवा केन्द्र उन सारे कार्यों को रखेंगे जो कि सेवा केन्द्रों के लिए प्रस्तावित हैं।

(iv) केन्द्रीय गांव 40 होंगे। इनमें से 3 वर्तमान में हैं जबकि 37 की और आवश्यकता है। ये प्रस्तावित केन्द्रीय गांव, आश्रित गांवों से उच्च स्थापित होंगे।

इस प्रकार तहसील में पदानुक्रमीय तंत्र की प्रस्तावित योजना पूर्ण होगी। कार्यों/ उपकार्यों से रिक्त क्षेत्र को भरने के लिए 56 सेवा केन्द्र सेवा योग्य होंगे।

## संदर्भ सूची


1. Bunge, K.W., The thetical Geography, Lund Studies in Geography Series C.Lund, P. 142, 1996.
2. Sen, L.K. and other, 'Planning Rural Growth centers for integrated area Development', A Study in miryalgvda Taluka NICD, Hyderabad, P.116. June 1971.
3. Dikinson, R.E., The city region in western Europe, London, P.52, 1967 and Sen, L.K. and others; OP. Cit, P.148.
4. Sen, L.K. and others, OP. cit'.
5. Hagget, P. and Gunnewardena, K.A., 'Determination of population Threshold for settlement functions by the Reed-Munch method' Professional Geographer: 16, P.6-9, 1964.
6. IBid. P.116.
7. IBid. P.148.
8. Hagget, P. and Gunnewardena, K.A.., 'OP.cit'. P. 6-9.
9. Hagget, P. and 'Locational Analysis in Human Geography', OP. cit.,.
10. Johnson, B.A.J., 'Market town and Spatial Development in India' New Delhi, P.69, 1965.
11. Bansal, S.C., 'Town-Country Relationship in Saharanpur city Region, Published Ph.D. Thesis, meerut University, Meerut, P.114, 1975 and Dhiman, R.D.S., 'Service Centres in Moradabad district' and unpublished Ph.D. thesis, meeruth university, meerut, P. 206, 1977.

12. Singh N.P., ‘Spatio-Functional Planning’, A micro level analysis of mawana tehsil’ Published Ph.D. Thesis, P.209, 1989.
13. Dagli, V., :A policy for Agriculture: Commerce Annual Number, 1972 (Bombay), P.2.
14. P. Ray and B.R. Patel (eds); “Manual for block level planning” mack millan 1977, P.75.
15. Owen, W., “Distance and development Transport and Communication”, in India, Transport Research Programme, The Brooking Institution 1964, P.48.
16. Sen L.K. and other “OP. cit”, P.164-164.

# अध्याय सप्तम्

## निष्कर्ष एवं सुझाव

एकीकृत ग्रामीण विकास की संकल्पना से तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष के समग्र विकास को ध्यान में रखकर सामाजिक, आर्थिक सेवाओं को किसी सुविधाजनक स्थल पर स्थापित करने से है जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना तथा दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में उसे अभीष्टतम जीवन स्तर हेतु विविध सेवाऐं एवं सुविधाएँ उपलब्ध कराना है।

प्रस्तुत योजना अध्ययन क्षेत्र के संतुलित विकास से संबंधित है। इसके लिए यह आवश्यक है कि वहां उपलब्ध सभी प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित व समुचित उपयोग हो। अत्यधिक उत्पादन, अधिकतम रोजगार एवं आय के अपेक्षाकृत समान वितरण के साथ ही निम्न आय वर्गों को उत्पादन प्रक्रिया में अधिक सहभागी बनाया जाए तथा विकास कार्यक्रम से होने वाले लाभों का अधिक समान वितरण हो ऐसा प्रयास किया जाए।

प्रस्तुत योजना का उद्देश्य क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों का अधिकाधिक उपयोग करना है ताकि क्षेत्र का कोई भी भाग विकास से अछूता ना रहे। क्षेत्र में विकास की दृष्टि से जो असमानता है उसे कम करने में यह योजना उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

वर्तमान अध्ययन भारत के सबसे बड़े राज्य राजस्थान के टोंक जिले की देवली तहसील के ग्रामीण विकास हेतु एक भौगोलिक प्रयास है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार तहसील में 187 अधिवास (170 अधिवास ही आबाद) है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 214408 है। शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य देवली तहसील के ग्रामीण विकास की विस्तृत योजना तैयार कर केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं का आंकलन व विश्लेषण करना था।

देवली तहसील में एकीकृत ग्रामीण विकास योजना के उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कई बिन्दुओं पर विचार किया गया है जैसे– देवली तहसील के ग्रामीण विकास

में भौगोलिक तत्त्वों की भूमिका का अध्ययन, क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का वहां के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों की पूर्ति का परीक्षण, संसाधनों के संदर्भ में तहसील का क्रमबद्ध स्तरीकरण, कृषि आधारित उद्योगों के विशेष संदर्भ में उपलब्ध आर्थिक अवसरों की क्षमता ज्ञात की गई, तहसील में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मानवीय व भौतिक संसाधनों का क्षेत्रीय विकास के लिये अधिकाधिक आदर्शतम उपयोग करने हेतु सुझाव दिये गये हैं।

तहसील के 170 अधिवासों में से 108 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय हैं। 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या नगण्य है। दूनी में सर्वाधिक 7 प्राथमिक विद्यालय हैं। तहसील के 56 अधिवासों में उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। नगरीय केन्द्र देवली में 4 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। 36 अधिवासों में माध्यमिक विद्यालय हैं। दूनी में 2 और नगरीय केन्द्र देवली में 3 माध्यमिक विद्यालय हैं। मात्र 14 अधिवासों में ही उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं। महाविद्यालय शिक्षा मात्र 3 अधिवासों में ही उपलब्ध है क्रमशः देवली, दूनी व सरोली।

तहसील में स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण बहुत ही पिछड़ा हुआ है। मात्र 7 अधिवास ही इस सुविधा का लाभ उठा पा रहे हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के वितरण की दृष्टि से भी तहसील पिछड़ी हुई है। मात्र 11 अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है। स्वास्थ्य केन्द्रों व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की तुलना में प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों का वितरण थोड़ा अधिक है। 53 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है। परिवार कल्याण केन्द्रों का वितरण बहुत ही दयनीय दशा में है। केवल 5000 से अधिक जनसंख्या वाले आठों अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है।

अध्ययन क्षेत्र में संचार सुविधाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 2000 से अधिक जनसंख्या वाले मात्र 5 अधिवासों में ही डाकघर की सुविधा है। दूरभाष सेवाओं की दृष्टि से स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है। 106 अधिवास इस सुविधा

का लाभ उठा रहे हैं। 5 अधिवासों में कूरियर सेवाएँ उपस्थित हैं। 50 अधिवासों में इंटरनेट कैफे की सुविधा है।

अध्ययन क्षेत्र के 9 अधिवासों में पशु चिकित्सा केन्द्र विद्यमान हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित घाड़ सर्वाधिक अधिवासों को सेवाऐं दे रहा है।

आवश्यक सेवाओं की दृष्टि से देखा जाए तो अध्ययन क्षेत्र के मात्र 35 अधिवासों में ही नल के पानी की सुविधा है। विद्युत सेवा की दृष्टि से स्थिति बेहतर है। 163 अधिवास विद्युत सेवा का लाभ उठा रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र के मात्र 68 अधिवासों में ही उचित मूल्य की दुकानें स्थित हैं। 8 अधिवासों में विश्राम गृह स्थित है। बैंक किसी भी क्षेत्र के विकास में अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैंकों के वितरण की दृष्टि से तहसील बहुत ही पिछड़ी हुई है। 2000 से अधिक जनसंख्या वाले मात्र 15 अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है जो अपने आस–पास के अधिवासों को सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित घाड़ 20 अधिवासों को, नगरफोर्ट 17 अधिवासों को, पूर्व में स्थित आंवा 14, पनवाड़ 13 अधिवासों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है।

29 अधिवासों में सहकारी समितियाँ हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित गुरई सर्वाधिक अधिवासों को इस सुविधा का लाभ दे रहा है।

40 अधिवासों में उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्र जिसमें से चारनेट सर्वाधिक अधिवासों को यह सुविधा दे रहा है। 52 अधिवासों में टेलीविजन की सुविधा, 110 अधिवासों में खेल मैदान, 9 अधिवासों में सिनेमा की सुविधा उपलब्ध है।

परिवहन के साधन के रूप में तहसील में मात्र बस सेवा ही उपलब्ध है। मात्र 58 अधिवास ही सीधी बस सेवा से जुड़े हैं।

तहसील में खुदरा व्यापार की दृष्टि से तो वितरण सर्वव्यापी हैं परन्तु थोक व्यापार की दृष्टि से क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है। मात्र 21 अधिवासों में थोक व्यापार केन्द्र स्थित है।

प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में पंचायत समिति मुख्यालय देवली नगरीय केन्द्र तथा 39 अधिवासों में ग्राम पंचायतें स्थित हैं। देवली नगरीय केन्द्र स्वयं तहसील मुख्यालय है।

अध्ययन क्षेत्र में मात्र 16 पेट्रोल–डीजल पम्प हैं जो दस केन्द्रों में स्थित है। देवली नगरीय केन्द्र में तीन पेट्रोल पम्प स्थित है जो अपने निकट स्थित 29 अधिवासों को यह सुविधा उपलब्ध करा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र के 7 अधिवासों में साप्ताहिक बाजार लगता है जहां स्थानीय लोग तथा निकटवर्ती अधिवासों के लोग अपने लिए आवश्यक वस्तुऐं खरीदने आते हैं।

तहसील के 170 अधिवासों में से 32 अधिवासों में लोग घरेलू उद्योगों में संलग्न हैं। ये घरेलू उद्योग मिट्टी के बर्तन बनाना, गुड़, घी निर्माण, गलीचा, फर्नीचर निर्माण, चमड़े का काम, जूती निर्माण आदि है।

अध्ययन क्षेत्र के अधिवासों में कार्यों के प्रकारों की उपलब्धता में विभिन्नता विद्यमान है। शिक्षा, चिकित्सा, जल, विद्युत, खाद्य आपूर्ति, विश्रामगृह, बैंकिंग, मनोरंजन, संचार, सहकारिता, प्रशासन, उर्वरक तथा कीटनाशक, पशु चिकित्सा, परिवहन, बाजार की 15 सेवाओं को आधार मानकर किए गए अध्ययन के आधार पर ज्ञात हुआ कि 1 अधिवास देवड़ावास में इनमें से किसी भी प्रकार की सेवा उपलब्ध नहीं है। तहसील के 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से सभी अधिवासों में, अध्ययन में शामिल की गई 15 सेवाओं में से कम से कम 14 सेवाऐं उपलब्ध है। देवली नगरीय केन्द्र, दूनी, राजमहल, नगरफोर्ट में सभी 15 सेवाऐं उपलब्ध हैं।

तहसील में सड़क मार्ग ही यातायात का मुख्य साधन है। राष्ट्रीय राजमार्ग 52 सर्वाधिक व्यस्त मार्ग है। यह तहसील के बन्थली, संथली, सरोली, अंबापुरा, पोलीयारा, सिरोही, धान्धोली, माधोसिंहपुरा, गोपीपुरा, विजयगढ, भरना, नरसिंहपुरा गांवों से होकर गुजरता है। ग्रामीण विकास के संदर्भ में सड़क यातायात के प्रभाव को अभिगम्यता के द्वारा मापा जा सकता है। जो प्रदेश जितना अधिक गम्य होगा, वह उतना ही अधिक विकसित होगा। अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश भाग पर सड़क मार्गों की गम्यता 0 से 4 किलोमीटर के मध्य है। अधिकांश यात्री प्रवाह राष्ट्रीय राजमार्ग 52 से गुजरता है। अधिकांश प्रवाह देवली व टोंक के मध्य एवं देवली–बून्दी के मध्य दिखाई देता है।

शोधकर्त्ता ने देवली तहसील में सेवाओं एवं केन्द्रों का पदानुक्रम निर्धारित करने के लिए कुल 170 आबाद अधिवासों तथा 34 प्रकार की सेवाओं का समावेश किया है जो 15 समूहों में विभाजित है।

अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक अधिवास में सेवाओं की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति को सारणीबद्ध करके भट्ट महोदय के कार्यिक भार विधि के आधार पर विभिन्न सेवाओं का भार निर्धारित करके सूचकांक प्राप्त किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में जिस सेवा की संख्या अधिक है, उसे कम भार प्राप्त हुआ है जबकि कम संख्या होने पर अधिक भार प्राप्त हुआ है। सभी सेवाओं का कार्यिक भार ज्ञात करने के पश्चात् प्रत्येक अधिवास के केन्द्रीयता सूचकांक का निर्धारण किया गया।

देवली तहसील में निर्धारित 170 आबाद सेवा केन्द्रों के पदानुक्रम हेतु कार्यों एवं सेवाओं के आधार पर अलग–अलग केन्द्रीयता सूचकांक ज्ञात किया गया। तत्पश्चात् प्रत्येक अधिवास के केन्द्रीयता सूचकांक को अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया जिसे द्वि–लघुगणकीय ग्राफ पर आलेखित करने से उसमें चार विच्छेदन बिन्दु दिखाई पड़ते हैं। इन्हीं विच्छेदन बिन्दुओं के आधार पर सेवा क्षेत्र के सेवा केन्द्रों को पांच पदानुक्रमीय वर्गों में विभक्त किया गया।

अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक 119 अधिवास पदानुक्रम के पाँचवे स्तर में स्थित है। दो अधिवास देवली नगरीय केन्द्र तथा दूनी क्रमशः पदानुक्रम के प्रथम व द्वितीय स्तर में स्थित है। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7 अधिवास तथा चतुर्थ स्तर में 42 अधिवास सम्मिलित है। पंचम स्तर में अप्रत्याशित वृद्धि के साथ अधिवासों की संख्या 119 हो गई।

तहसील के सभी अधिवासों को कार्यात्मक अवरोधों के आधार पर पांच वर्गों में रखा गया है। तहसील के पांचवें स्तर में स्थित 47.64 प्रतिशत आबाद अधिवासों का केन्द्रीयता सूचकांक 0.003 से 0.13 के मध्य है। जिसमें 81 अधिवास सम्मिलित हैं। देवली नगर पदानुक्रम की दृष्टि से शीर्ष पर स्थित है। पदानुक्रम के द्वितीय स्तर में सात अधिवास दूनी, नगरफोर्ट, देवली, घाड़, आंवा, राजमहल, नासिरदा हैं जहां उच्च सेवाऐं स्थित हैं जिनमें गैर प्राथमिक कार्यकर्त्ता लगे हुए हैं। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7 अधिवास, चतुर्थ स्तर में 74 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र के अधिवासों की संयुक्त केन्द्रीयता के आधार पर अन्तिम पदानुक्रम निश्चित किया गया। संयुक्त केन्द्रीयता तथा अधिवासों की जनसंख्या को पांच क्रमबद्ध पदानुक्रम में रखा गया है जो कि अधिवासों की संख्या को उनके स्तर के अनुसार दर्शाती है। पदानुक्रम के प्रथम व द्वितीय स्तर में क्रमशः देवली नगर व दूनी आते हैं। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7, चतुर्थ स्तर में 52, पंचम स्तर में 109 अधिवास शामिल हैं।

अध्ययन क्षेत्र के अधिवासों को कार्यात्मक पदानुक्रम और जनसंख्या पदानुक्रम में अन्तर के आधार पर भी प्रदर्शित किया गया है। पदानुक्रम के प्रथम स्तर में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। देवली नगर दोनों पदानुक्रम में प्रथम स्तर में मौजूद हैं। पदानुक्रम के द्वितीय स्तर में 6 अधिवास जनसंख्या पदानुक्रम में अधिक है। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में किसी प्रकार का अंतर नहीं है। पदानुक्रम के चतुर्थ स्तर में जनसंख्या पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या 32 अधिक हैं। पदानुक्रम के पंचम स्तर में कार्यात्मक पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या 38 अधिक हैं।

कार्यात्मक पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अंतर के आधार पर स्पष्ट है कि पदानुक्रम के चतुर्थ व पंचम स्तर को छोड़कर शेष सभी स्तरों में दोनों में अधिवासों की संख्या में कोई अन्तर नहीं है।

जनसंख्या पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर के आधार पर स्पष्ट है कि पदानुक्रम के केवल पांचवें स्तर में संयुक्त पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या में 28 अधिवासों की वृद्धि हुई है।

देवली तहसील में सामाजिक व आर्थिक कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या का निर्धारण रीडमंच विधि (1938) के आधार पर किया गया है। यदि कार्यों के आधार पर न्यूनतम जनसंख्या पर विचार किया जाए, तो प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 454 होनी चाहिए। इस आधार पर 364 प्राथमिक विद्यालय और खोले जाने की आवश्यकता है। उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 2449 होनी चाहिए, इस आधार पर 32 उच्च प्राथमिक विद्यालय और खोले जाने की आवश्यकता है। माध्यमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3049 होनी चाहिए, इस आधार पर 34 माध्यमिक विद्यालय और होने चाहिए।

अध्ययन क्षेत्र के किसी अधिवास में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (उपकेन्द्र सहित) की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 2749 होनी चाहिए, इस आधार पर 24 केन्द्र और खोले जाने की आवश्यकता है।

पशु चिकित्सा सेवा की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 5299 होनी चाहिए। इस आधार पर 31 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

तहसील में किसी भी अधिवास में खाद्य आपूर्ति केन्द्र की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1174 होनी चाहिए, इस आधार पर 114 केन्द्र और स्थापित करने की आवश्यकता है।

तहसील में बैंकिंग सुविधा के विकास के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3499 होनी चाहिए, इस आधार पर 46 बैंक और स्थापित करने की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र में उर्वरक केन्द्र की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3049 होना आवश्यक है। इस आधार पर 30 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र में साप्ताहिक बाजार की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 5449 होनी चाहिए। इस आधार पर 32 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

कुछ ऐसे अधिवास हैं जिनमें आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या नहीं है। अतः इसे प्राप्त करने के लिए अधिवासों के समूहों का एकत्रीकरण होना आवश्यक है।

कई अधिवास ऐसे हैं जिनको सामान्य सेवाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं जबकि कुछ अधिवास अपनी मूल अवस्थिति व सरल अभिगम्यता के आधार पर उच्च सेवाएँ रखते हैं या अपने निकटतम सेवा क्षेत्रों से इनका लाभ उठाने की आसान स्थिति में होते हैं। अध्ययन क्षेत्र में कार्यमुक्त तथा अध्यारोपित क्षेत्रों की जानकारी आवश्यक है ताकि कार्यमुक्त क्षेत्रों के विकास की योजना तैयार की जा सके।

अध्ययन क्षेत्र में कार्यात्मक रिक्तता एवं अतिव्यापन के क्षेत्रों को पहचानने के लिये सेवा केन्द्रों को केन्द्र मानकर वृत्त खींचने की विधि को प्रयुक्त किया गया। जो अधिवास इन वृत्तों के भीतर समाये उन्हें सेवित माना गया। जो अधिवास खींचे गये किसी भी वृत्त में नहीं आये उन्हें निम्न सेवित माना गया। जो अधिवास दो या दो से अधिक वृत्तों में सम्मिलित हुए उन्हें पूर्ण सेवित क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया गया।

अध्ययन क्षेत्र के 108 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध हैं। अतः यहां 83.80 प्रतिशत क्षेत्र तथा 91.40 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 56 अधिवासों में उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं, एक विद्यालय अपने केन्द्र से 3 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकता है।

अतः तहसील का 67.06 प्रतिशत क्षेत्र तथा 78.61 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा का लाभ ले रही है।

तहसील के 36 अधिवासों में माध्यमिक विद्यालय है जो अपने आसपास के 5 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। तहसील का 76.88 प्रतिशत क्षेत्र तथा 82.88 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं।

तहसील के मात्र 14 अधिवासों में उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं जो अपने आसपास के 8 किलोमीटर के क्षेत्र को अपनी सेवा दे रहे हैं। 124 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण सेवित है, 35 अधिवास सेवित व 11 अधिवास निम्न सेवित हैं।

तहसील के 54 अधिवासों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व उपकेन्द्र हैं जो अपने आस–पास के 8 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। तहसील के 95.88 प्रतिशत अधिवास इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं तथा 4.12 प्रतिशत अधिवासों में यह सेवा लोगों की पहुंच में है।

तहसील के 13 अधिवासों में डिस्पेंसरी की सुविधा है जो अपने आसपास के 5 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकती है। तहसील का 22. 98 प्रतिशत क्षेत्रफल इस सेवा का अच्छी प्रकार से लाभ ले रहा है जबकि 27.98 प्रतिशत क्षेत्रफल पर रहने वाली जनसंख्या को इस सेवा का लाभ लेने के लिए काफी दूरी तय करनी पड़ती है।

तहसील के 5 अधिवासों में डाकघर सेवा उपलब्ध है जो अपने आस–पास के 3 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकता है। तहसील की 15.20 प्रतिशत जनसंख्या पूर्ण रूप से सेवित तथा 65.69 प्रतिशत जनसंख्या निम्न रूप से सेवित है।

तहसील के 5 अधिवासों में कूरियर सेवा उपलब्ध है जो अपने आस–पास के 8 किलोमीटर तक के क्षेत्र को सेवाएँ दे सकता है। तहसील के 20

अधिवास इस सेवा का पूर्ण रूप से लाभ ले रहे हैं जबकि 40.44 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा निम्न रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 40 अधिवास अपने आस–पास के 5 किलोमीटर तक के क्षेत्र को उर्वरक की सुविधा प्रदान कर सकता है। 153 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित व 2 अधिवास निम्न रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 15 अधिवास 8 किलोमीटर तक के क्षेत्र को बैंकिंग की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। तहसील की 71.39 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र में कुल 9 अधिवासों में पशु चिकित्सा केन्द्र स्थित है जो अपने आस–पास के 8 किलोमीटर तक के क्षेत्र को सेवाऐं प्रदान कर रहा है। तहसील की 38.15 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा से पूर्ण रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र में 29 अधिवासों में सहकारी समितियाँ स्थित हैं जो अपने आस–पास के 5 किमी तक के क्षेत्र को सेवाएँ प्रदान कर रहा है। तहसील के 110 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित व 13 अधिवास निम्न रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 21 अधिवासों में थोक बाजार केन्द्र स्थित हैं जो अपने आस–पास के 8 किमी तक के क्षेत्र को सेवाएँ प्रदान कर रहा है। तहसील की 82.07 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है।

वर्तमान अध्ययन में विभिन्न सेवाओं की अल्पता के क्षेत्रों का निर्धारण सभी कार्यों/उपकार्यों के आधार पर किया गया।

**सुझाव :–**

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य देवली तहसील के संतुलित विकास की योजना तैयार करना है। इसके लिए सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि कौन से कारक हैं जो क्षेत्र में असंतुलित वृद्धि को बढावा देते हैं और द्वितीय कार्यात्मक

रिक्तता के क्षेत्र किस प्रकार सेवा क्षेत्रों के साथ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

कृषि विकास हेतु अध्ययन क्षेत्र में अनेक प्रयास किए जा सकते हैं। जैसे– कृषि भूमि के प्रतिशत में और वृद्धि की जा सकती है। खाद्यान्न फसलों की उत्पादकता में भी वृद्धि की जा सकती है। अध्ययन क्षेत्र में बहुफसली पद्धति को प्रोत्साहित करने एवं प्रति हेक्टेयर उपज में वृद्धि करने के लिए उपलब्ध जलस्त्रोतों का सिंचाई हेतु समुचित उपयोग आवश्यक है। लघु व सीमांत कृषकों को शासन द्वारा कृषि कार्य हेतु आवश्यक सुविधाऐं प्रदान की जाऐं। क्षेत्रीय कृषकों को सहकारी समितियों के माध्यम से एक स्थान पर उर्वरक, बीज एवं कीटनाशक दवाईयां उचित मूल्य पर मिलना चाहिए। कृषि क्रिया के साथ पशुपालन का घनिष्ठ संयोजन तहसील की कृषि संरचना का प्रमुख लक्षण है। अतः पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा एवं उन्नत पशु नस्ल के विकास हेतु पशुचिकित्सा एवं प्रजनन संस्थान की सुविधाएँ उपलब्ध करवाना अत्यन्त आवश्यक है। सभी स्तर के सेवा केन्द्रों में सहकारी विपणन समितियाँ स्थापित की जानी चाहिए। चूंकि अध्ययन क्षेत्र में सरसों का उत्पादन अधिक होता है। ऐसे में अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक विकास हेतु सरसों के तेल की मिलें स्थापित की जा सकती है। खनिजों के आधार पर अनेक उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं। सेवा उद्योगों की भी काफी संभावना अध्ययन क्षेत्र में है। वन आधारित उद्योग जैसे आरामशीन, फर्नीचर निर्माण, कृषि औजार आदि उद्योगों की स्थापना की जा सकती है।

घाड़ के गलीचे उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उसे प्रोत्साहन स्वरूप नये–नये डिजाइन और आधुनिक मशीनें उपलब्ध करानी चाहिए। साथ ही उसे देश–विदेश में प्रचारित करने के लिये इन्टरनेट का भी उपयोग होना चाहिए। क्षेत्र में बागाती खेती का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ रहा है ऐसे में उन पर आधारित उद्योगों को स्थापित करने से क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। जैसे कैर आचार, कच्चे आम का आचार, जूस उद्योग आदि स्थापित किये जा सकते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में परिवहन विकास हेतु राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 की निकटवर्ती सड़कों को राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ा जाना चाहिए, मुख्य अधिवासों में बस स्टॉप सुविधा उपलब्ध करवायी जानी चाहिए। रेल परिवहन का विकास किया जाना चाहिए। निवाई से टोंक होते हुए देवली को रेल मार्ग से जोड़ा जाना चाहिए जिससे तहसील मुख्यालय जिले के अन्य भागों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ सकेगा। साथ ही अजमेर–देवली–कोटा रेलमार्ग का कार्य भी जल्दी शुरू किया जाना चाहिए।

तहसील में स्थानिक कार्यात्मक एकीकरण के लिए समान आधारों पर पांच स्तरीय पदानुक्रम प्रस्तावित किया गया जो क्रमशः प्रादेशिक राजधानी, प्रादेशिक सेवा केन्द्र, सेवा केन्द्र, केन्द्रीय गांव तथा आश्रित गाँव है। इस योजना का उद्देश्य यह है कि तहसील के ग्रामीण क्षेत्र उपरोक्त वर्णित कार्यात्मक कार्यक्रम के द्वारा सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों के साथ तेजी से विकास कर सकें।

तहसील में कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए कुल 56 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है जिनमें से 14 वर्तमान में कार्यरत है जबकि 42 नये सेवा केन्द्रों की और आवश्यकता है।

देवली नगरीय केन्द्र अध्ययन क्षेत्र की क्षेत्रीय राजधानी है। तीन प्रादेशिक सेवा केन्द्र प्रस्तावित है जिनमें से दो केन्द्र दूनी व नासिरदा वर्तमान में कार्यरत है अतः कार्यात्मक रिक्तता की पूर्ति के लिए एक और प्रादेशिक सेवा केन्द्र की आवश्यकता है जो कि राजमहल है। तहसील में 12 सेवा केन्द्र प्रस्तावित है जिनमें से 8 वर्तमान में कार्यरत हैं जबकि 4 की और आवश्यकता है जो कि बंथली, डाबरकलां, बिजवार व संथली है। तहसील में 40 केन्द्रीय गांव प्रस्तावित है जिनमें से तीन ट्रिटियन, कनवाड़ा, सीतापुरा तो वर्तमान में कार्यरत है जबकि 37 की और आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र के 114 अधिवास आश्रित गाँव होंगे।

इस प्रकार तहसील में पदानुक्रमीय तंत्र की प्रस्तावित योजना पूर्ण होगी।

# सारांश

एकीकृत ग्रामीण विकास की संकल्पना का अभिप्राय किसी प्रदेश विशेष के समग्र विकास को ध्यान में रखकर सामाजिक, आर्थिक सेवाओं को किसी सुविधाजनक स्थल पर स्थापित करने से है जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना तथा दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में उसे अभीष्टतम जीवन स्तर हेतु विविध सेवाऐं एवं सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

एकीकृत ग्रामीण विकास योजना का उद्देश्य उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाना, उत्पादकता बढ़ाने के न्यूनतम मानदण्ड तय करना, रोजगार के अवसर बढाना तथा वैज्ञानिक जागरुकता पैदा करना है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि अध्ययन क्षेत्र के लिए एक स्पष्ट एवं विस्तृत पंचवर्षीय योजना तैयार की जाए, किसानों के लिए छोटे स्थानीय बाजार स्थापित किये जायें, क्षेत्र में एक स्वायत्त योजना संस्था स्थापित हो जिसमें कुशल क्षेत्रीय कर्मचारियों की नियुक्ति हो, रोजगारोन्मुखी प्रस्ताव उपलब्ध करवाये जाए, ग्रामीण विकास के लिए चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों को पुनः स्थापित किया जाए।

वर्तमान अध्ययन भारत के सबसे बड़े राज्य राजस्थान के टोंक जिले की देवली तहसील के ग्रामीण विकास हेतु एक भौगोलिक प्रयास है। देवली टोंक जिले की 7 तहसीलों में से एक है जो टोंक जिले के दक्षिणी छोर पर $25^0$44' उत्तरी अक्षांश से $25^0$58' उत्तरी आक्षांश तथा $75^0$10' पूर्वी देशान्तर से $75^0$52' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। तहसील के पश्चिम में केकड़ी तहसील अपनी सीमा बनाती है। उत्तर में टोडारायसिंह, उनियारा व टोंक तहसीलों की सीमा अध्ययन क्षेत्र को स्पर्श करती है। पूर्व में हिण्डोली तहसील अपनी सीमा बनाती है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार तहसील में 187 अधिवास (170 अधिवास ही आबाद) है। तहसील 1228.35 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 214408 है। शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य देवली तहसील के ग्रामीण विकास की विस्तृत योजना तैयार कर केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं का आंकलन व विश्लेषण करना था।

देवली तहसील में एकीकृत ग्रामीण विकास योजना के उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कई बिन्दुओं पर विचार किया गया है जैसे– देवली तहसील के ग्रामीण विकास में भौगोलिक तत्त्वों की भूमिका का अध्ययन, क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों का वहां के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों की पूर्ति का परीक्षण, संसाधनों के संदर्भ में तहसील का क्रमबद्ध स्तरीकरण, कृषि आधारित उद्योगों के विशेष संदर्भ में उपलब्ध आर्थिक अवसरों की क्षमता ज्ञात की गई, तहसील में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मानवीय व भौतिक संसाधनों का क्षेत्रीय विकास के लिये अधिकाधिक आदर्शतम उपयोग करने हेतु सुझाव दिये गये हैं।

अध्ययन क्षेत्र की पहाड़ियाँ अरावली श्रृंखला की है। यहाँ दो प्रमुख भू–वैज्ञानिक रचनाएँ– अरावली क्रम व देहली क्रम हैं। यहाँ के नदी और नाले बनास प्रणाली से सम्बद्ध हैं। यहाँ की जलवायु शुष्क है। पादप सम्पदा मुख्यतया शुष्क पर्णपाती है। कुल वन क्षेत्र 11697.05 हैक्टेयर है। देवली तहसील के दक्षिणी पूर्वी भाग में पीली भूरी मिट्टी, पश्चिमी भाग में भूरी क्षारीय मिट्टी पाई जाती है। यहाँ गारनेट, पट्टी कातला, स्लेट स्टोन, फाइलाइट शिष्ट आदि खनिज पाए जाते हैं। सर्वाधिक सिंचाई कुओं व नलकूपों द्वारा की जाती है जो कुल सिंचित क्षेत्रफल का 82.28 प्रतिशत है। पशुगणना 2012 के अनुसार पशुओं की संख्या 240657 थी जिनमें 19.53 प्रतिशत गाय व बैल, 27.82 प्रतिशत भैंसें, 31.37 प्रतिशत बकरियाँ थीं।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार देवली तहसील की जनसंख्या 214408 है। जिसमें 110648 पुरुष तथा 103760 स्त्रियाँ हैं। तहसील की जनसंख्या समस्त जिले की जनसंख्या का 15.08 प्रतिशत है। तहसील की कुल जनसंख्या की 89.70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण तथा 10.30 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है। कुल जनसंख्या वृद्धि दर 13.27 प्रतिशत है। कुल जनसंख्या घनत्व 175 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। लिंगानुपात 938 है। कुल जनसंख्या में 21.12 प्रतिशत व्यक्ति

अनुसूचित जाति के तथा 20.40 प्रतिशत व्यक्ति अनुसूचित जनजाति के हैं। कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या 105918 तथा अकार्यशील जनसंख्या 108490 है।

तहसील के 170 अधिवासों में से 108 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय हैं। 500 से कम जनसंख्या वाले 61 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या नगण्य है। दूनी में सर्वाधिक 7 प्राथमिक विद्यालय हैं। तहसील के 56 अधिवासों में उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। नगरीय केन्द्र देवली में 4 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। 36 अधिवासों में माध्यमिक विद्यालय हैं। दूनी में 2 और नगरीय केन्द्र देवली में 3 माध्यमिक विद्यालय हैं। मात्र 14 अधिवासों में ही उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं। महाविद्यालय शिक्षा मात्र 3 अधिवासों में ही उपलब्ध है क्रमशः देवली, दूनी व सरोली।

तहसील में स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण बहुत ही पिछड़ा हुआ है। मात्र 7 अधिवास ही इस सुविधा का लाभ उठा पा रहे हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के वितरण की दृष्टि से भी तहसील पिछड़ी हुई है। मात्र 11 अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है। स्वास्थ्य केन्द्रों व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की तुलना में प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों का वितरण थोड़ा अधिक है। 53 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध है। परिवार कल्याण केन्द्रों का वितरण बहुत ही दयनीय दशा में है। केवल 5000 से अधिक जनसंख्या वाले आठों अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है।

अध्ययन क्षेत्र में संचार सुविधाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 2000 से अधिक जनसंख्या वाले मात्र 5 अधिवासों में ही डाकघर की सुविधा है। दूरभाष सेवाओं की दृष्टि से स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है। 106 अधिवास इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। 5 अधिवासों में कूरियर सेवाएँ उपस्थित हैं। 50 अधिवासों में इंटरनेट कैफे की सुविधा है।

अध्ययन क्षेत्र के 9 अधिवासों में पशु चिकित्सा केन्द्र विद्यमान हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित घाड़ सर्वाधिक अधिवासों को सेवाऐं दे रहा है।

आवश्यक सेवाओं की दृष्टि से देखा जाए तो अध्ययन क्षेत्र के मात्र 35 अधिवासों में ही नल के पानी की सुविधा है। विद्युत सेवा की दृष्टि से स्थिति बेहतर है। 163 अधिवास विद्युत सेवा का लाभ उठा रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र के मात्र 68 अधिवासों में ही उचित मूल्य की दुकानें स्थित हैं। 8 अधिवासों में विश्राम गृह स्थित है। बैंक किसी भी क्षेत्र के विकास में अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बैंकों के वितरण की दृष्टि से तहसील बहुत ही पिछड़ी हुई है। 2000 से अधिक जनसंख्या वाले मात्र 15 अधिवासों में ही यह सुविधा उपलब्ध है जो अपने आस–पास के अधिवासों को सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित घाड़ 20 अधिवासों को, नगरफोर्ट 17 अधिवासों को, पूर्व में स्थित आंवा 14, पनवाड़ 13 अधिवासों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है।

29 अधिवासों में सहकारी समितियाँ हैं। तहसील के उत्तर–पूर्व में स्थित गुरई सर्वाधिक अधिवासों को इस सुविधा का लाभ दे रहा है।

40 अधिवासों में उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्र जिसमें से चारनेट सर्वाधिक अधिवासों को यह सुविधा दे रहा है। 52 अधिवासों में टेलीविजन की सुविधा, 110 अधिवासों में खेल मैदान, 9 अधिवासों में सिनेमा की सुविधा उपलब्ध है।

परिवहन के साधन के रूप में तहसील में मात्र बस सेवा ही उपलब्ध है। मात्र 58 अधिवास ही सीधी बस सेवा से जुड़े हैं।

तहसील में खुदरा व्यापार की दृष्टि से तो वितरण सर्वव्यापी हैं परन्तु थोक व्यापार की दृष्टि से क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है। मात्र 21 अधिवासों में थोक व्यापार केन्द्र स्थित है।

प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में पंचायत समिति मुख्यालय देवली नगरीय केन्द्र तथा 39 अधिवासों में ग्राम पंचायतें स्थित हैं। देवली नगरीय केन्द्र स्वयं तहसील मुख्यालय है।

अध्ययन क्षेत्र में मात्र 16 पेट्रोल–डीजल पम्प हैं जो दस केन्द्रों में स्थित है। देवली नगरीय केन्द्र में तीन पेट्रोल पम्प स्थित है जो अपने निकट स्थित 29 अधिवासों को यह सुविधा उपलब्ध करा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र के 7 अधिवासों में साप्ताहिक बाजार लगता है जहां स्थानीय लोग तथा निकटवर्ती अधिवासों के लोग अपने लिए आवश्यक वस्तुऐं खरीदने आते हैं।

तहसील के 170 अधिवासों में से 32 अधिवासों में लोग घरेलू उद्योगों में संलग्न हैं। ये घरेलू उद्योग मिट्टी के बर्तन बनाना, गुड़, घी निर्माण, गलीचा, फर्नीचर निर्माण, चमड़े का काम, जूती निर्माण आदि है।

अध्ययन क्षेत्र के अधिवासों में कार्यों के प्रकारों की उपलब्धता में विभिन्नता विद्यमान है। शिक्षा, चिकित्सा, जल, विद्युत, खाद्य आपूर्ति, विश्रामगृह, बैंकिंग, मनोरंजन, संचार, सहकारिता, प्रशासन, उर्वरक तथा कीटनाशक, पशु चिकित्सा, परिवहन, बाजार की 15 सेवाओं को आधार मानकर किए गए अध्ययन के आधार पर ज्ञात हुआ कि 1 अधिवास देवड़ावास में इनमें से किसी भी प्रकार की सेवा उपलब्ध नहीं है। तहसील के 5000 से अधिक जनसंख्या वाले 8 अधिवासों में से सभी अधिवासों में, अध्ययन में शामिल की गई 15 सेवाओं में से कम से कम 14 सेवाऐं उपलब्ध है। देवली नगरीय केन्द्र, दूनी, राजमहल, नगरफोर्ट में सभी 15 सेवाऐं उपलब्ध हैं।

तहसील में सड़क मार्ग ही यातायात का मुख्य साधन है। राष्ट्रीय राजमार्ग 52 सर्वाधिक व्यस्त मार्ग है। यह तहसील के बन्थली, संथली, सरोली, अंबापुरा, पोलीयारा, सिरोही, धान्धोली, माधोसिंहपुरा, गोपीपुरा, विजयगढ, भरना, नरसिंहपुरा गांवों से होकर गुजरता है। ग्रामीण विकास के संदर्भ में सड़क यातायात के प्रभाव को अभिगम्यता के द्वारा मापा जा सकता है। जो प्रदेश जितना अधिक गम्य होगा, वह उतना ही अधिक विकसित होगा। अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश भाग पर सड़क मार्गों की गम्यता 0 से 4 किलोमीटर के मध्य है। अधिकांश यात्री प्रवाह

राष्ट्रीय राजमार्ग 52 से गुजरता है। अधिकांश प्रवाह देवली व टोंक के मध्य एवं देवली–बून्दी के मध्य दिखाई देता है।

शोधकर्त्ता ने देवली तहसील में सेवाओं एवं केन्द्रों का पदानुक्रम निर्धारित करने के लिए कुल 170 आबाद अधिवासों तथा 34 प्रकार की सेवाओं का समावेश किया है जो 15 समूहों में विभाजित है।

अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक अधिवास में सेवाओं की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति को सारणीबद्ध करके भट्ट महोदय के कार्यिक भार विधि के आधार पर विभिन्न सेवाओं का भार निर्धारित करके सूचकांक प्राप्त किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में जिस सेवा की संख्या अधिक है, उसे कम भार प्राप्त हुआ है जबकि कम संख्या होने पर अधिक भार प्राप्त हुआ है। सभी सेवाओं का कार्यिक भार ज्ञात करने के पश्चात् प्रत्येक अधिवास के केन्द्रीयता सूचकांक का निर्धारण किया गया।

देवली तहसील में निर्धारित 170 आबाद सेवा केन्द्रों के पदानुक्रम हेतु कार्यों एवं सेवाओं के आधार पर अलग–अलग केन्द्रीयता सूचकांक ज्ञात किया गया। तत्पश्चात् प्रत्येक अधिवास के केन्द्रीयता सूचकांक को अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया जिसे द्वि–लघुगणकीय ग्राफ पर आलेखित करने से उसमें चार विच्छेदन बिन्दु दिखाई पड़ते हैं। इन्हीं विच्छेदन बिन्दुओं के आधार पर सेवा क्षेत्र के सेवा केन्द्रों को पांच पदानुक्रमीय वर्गों में विभक्त किया गया।

अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक 119 अधिवास पदानुक्रम के पाँचवे स्तर में स्थित है। दो अधिवास देवली नगरीय केन्द्र तथा दूनी क्रमशः पदानुक्रम के प्रथम व द्वितीय स्तर में स्थित है। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7 अधिवास तथा चतुर्थ स्तर में 42 अधिवास सम्मिलित है। पंचम स्तर में अप्रत्याशित वृद्धि के साथ अधिवासों की संख्या 119 हो गई।

तहसील के सभी अधिवासों को कार्यात्मक अवरोधों के आधार पर पांच वर्गों में रखा गया है। तहसील के पांचवें स्तर में स्थित 47.64 प्रतिशत आबाद अधिवासों का केन्द्रीयता सूचकांक 0.003 से 0.13 के मध्य है। जिसमें 81 अधिवास

सम्मिलित हैं। देवली नगर पदानुक्रम की दृष्टि से शीर्ष पर स्थित है। पदानुक्रम के द्वितीय स्तर में सात अधिवास दूनी, नगरफोर्ट, देवली, घाड़, आंवा, राजमहल, नासिरदा हैं जहां उच्च सेवाऐं स्थित हैं जिनमें गैर प्राथमिक कार्यकर्त्ता लगे हुए हैं। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7 अधिवास, चतुर्थ स्तर में 74 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र के अधिवासों की संयुक्त केन्द्रीयता के आधार पर अन्तिम पदानुक्रम निश्चित किया गया। संयुक्त केन्द्रीयता तथा अधिवासों की जनसंख्या को पांच क्रमबद्ध पदानुक्रम में रखा गया है जो कि अधिवासों की संख्या को उनके स्तर के अनुसार दर्शाती है। पदानुक्रम के प्रथम व द्वितीय स्तर में क्रमशः देवली नगर व दूनी आते हैं। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में 7, चतुर्थ स्तर में 52, पंचम स्तर में 109 अधिवास शामिल हैं।

अध्ययन क्षेत्र के अधिवासों को कार्यात्मक पदानुक्रम और जनसंख्या पदानुक्रम में अन्तर के आधार पर भी प्रदर्शित किया गया है। पदानुक्रम के प्रथम स्तर में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। देवली नगर दोनों पदानुक्रम में प्रथम स्तर में मौजूद हैं। पदानुक्रम के द्वितीय स्तर में 6 अधिवास जनसंख्या पदानुक्रम में अधिक है। पदानुक्रम के तृतीय स्तर में किसी प्रकार का अंतर नहीं है। पदानुक्रम के चतुर्थ स्तर में जनसंख्या पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या 32 अधिक हैं। पदानुक्रम के पंचम स्तर में कार्यात्मक पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या 38 अधिक हैं।

कार्यात्मक पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अंतर के आधार पर स्पष्ट है कि पदानुक्रम के चतुर्थ व पंचम स्तर को छोड़कर शेष सभी स्तरों में दोनों में अधिवासों की संख्या में कोई अन्तर नहीं है।

जनसंख्या पदानुक्रम तथा संयुक्त पदानुक्रम में अन्तर के आधार पर स्पष्ट है कि पदानुक्रम के केवल पांचवें स्तर में संयुक्त पदानुक्रम में अधिवासों की संख्या में 28 अधिवासों की वृद्धि हुई है।

देवली तहसील में सामाजिक व आर्थिक कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या का निर्धारण रीडमंच विधि (1938) के आधार पर किया गया है। यदि कार्यों के आधार पर न्यूनतम जनसंख्या पर विचार किया जाए, तो प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 454 होनी चाहिए। इस आधार पर 364 प्राथमिक विद्यालय और खोले जाने की आवश्यकता है। उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 2449 होनी चाहिए, इस आधार पर 32 उच्च प्राथमिक विद्यालय और खोले जाने की आवश्यकता है। माध्यमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3049 होनी चाहिए, इस आधार पर 34 माध्यमिक विद्यालय और होने चाहिए।

अध्ययन क्षेत्र के किसी अधिवास में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (उपकेन्द्र सहित) की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 2749 होनी चाहिए, इस आधार पर 24 केन्द्र और खोले जाने की आवश्यकता है।

पशु चिकित्सा सेवा की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 5299 होनी चाहिए। इस आधार पर 31 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

तहसील में किसी भी अधिवास में खाद्य आपूर्ति केन्द्र की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1174 होनी चाहिए, इस आधार पर 114 केन्द्र और स्थापित करने की आवश्यकता है।

तहसील में बैंकिंग सुविधा के विकास के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3499 होनी चाहिए, इस आधार पर 46 बैंक और स्थापित करने की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र में उर्वरक केन्द्र की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 3049 होना आवश्यक है। इस आधार पर 30 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र में साप्ताहिक बाजार की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 5449 होनी चाहिए। इस आधार पर 32 केन्द्र और स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

कुछ ऐसे अधिवास हैं जिनमें आवश्यक न्यूनतम जनसंख्या नहीं है। अतः इसे प्राप्त करने के लिए अधिवासों के समूहों का एकत्रीकरण होना आवश्यक है।

कई अधिवास ऐसे हैं जिनको सामान्य सेवाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं जबकि कुछ अधिवास अपनी मूल अवस्थिति व सरल अभिगम्यता के आधार पर उच्च सेवाएँ रखते हैं या अपने निकटतम सेवा क्षेत्रों से इनका लाभ उठाने की आसान स्थिति में होते हैं। अध्ययन क्षेत्र में कार्यमुक्त तथा अध्यारोपित क्षेत्रों की जानकारी आवश्यक है ताकि कार्यमुक्त क्षेत्रों के विकास की योजना तैयार की जा सके।

अध्ययन क्षेत्र में कार्यात्मक रिक्तता एवं अतिव्यापन के क्षेत्रों को पहचानने के लिये सेवा केन्द्रों को केन्द्र मानकर वृत्त खींचने की विधि को प्रयुक्त किया गया। जो अधिवास इन वृत्तों के भीतर समाये उन्हें सेवित माना गया। जो अधिवास खींचे गये किसी भी वृत्त में नहीं आये उन्हें निम्न सेवित माना गया। जो अधिवास दो या दो से अधिक वृत्तों में सम्मिलित हुए उन्हें पूर्ण सेवित क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया गया।

अध्ययन क्षेत्र के 108 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध हैं। अतः यहां 83.80 प्रतिशत क्षेत्र तथा 91.40 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 56 अधिवासों में उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं, एक विद्यालय अपने केन्द्र से 3 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकता है। अतः तहसील का 67.06 प्रतिशत क्षेत्र तथा 78.61 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा का लाभ ले रही है।

तहसील के 36 अधिवासों में माध्यमिक विद्यालय है जो अपने आसपास के 5 किलोमीटर तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। तहसील का 76.88 प्रतिशत क्षेत्र तथा 82.88 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं।

तहसील के मात्र 14 अधिवासों में उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं जो अपने आसपास के 8 किलोमीटर के क्षेत्र को अपनी सेवा दे रहे हैं। 124 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण सेवित है, 35 अधिवास सेवित व 11 अधिवास निम्न सेवित हैं।

तहसील के 54 अधिवासों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व उपकेन्द्र हैं जो अपने आस–पास के 8 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। तहसील के 95.88 प्रतिशत अधिवास इस सेवा का अच्छी तरह से लाभ ले रहे हैं तथा 4.12 प्रतिशत अधिवासों में यह सेवा लोगों की पहुंच में है।

तहसील के 13 अधिवासों में डिस्पेंसरी की सुविधा है जो अपने आसपास के 5 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकती है। तहसील का 22. 98 प्रतिशत क्षेत्रफल इस सेवा का अच्छी प्रकार से लाभ ले रहा है जबकि 27.98 प्रतिशत क्षेत्रफल पर रहने वाली जनसंख्या को इस सेवा का लाभ लेने के लिए काफी दूरी तय करनी पड़ती है।

तहसील के 5 अधिवासों में डाकघर सेवा उपलब्ध है जो अपने आस–पास के 3 किमी तक के क्षेत्र को अपनी सेवाएँ दे सकता है। तहसील की 15.20 प्रतिशत जनसंख्या पूर्ण रूप से सेवित तथा 65.69 प्रतिशत जनसंख्या निम्न रूप से सेवित है।

तहसील के 5 अधिवासों में कूरियर सेवा उपलब्ध है जो अपने आस–पास के 8 किलोमीटर तक के क्षेत्र को सेवाएँ दे सकता है। तहसील के 20 अधिवास इस सेवा का पूर्ण रूप से लाभ ले रहे हैं जबकि 40.44 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा निम्न रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 40 अधिवास अपने आस–पास के 5 किलोमीटर तक के क्षेत्र को उर्वरक की सुविधा प्रदान कर सकता है। 153 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित व 2 अधिवास निम्न रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 15 अधिवास 8 किलोमीटर तक के क्षेत्र को बैंकिंग की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। तहसील की 71.39 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र में कुल 9 अधिवासों में पशु चिकित्सा केन्द्र स्थित है जो अपने आस–पास के 8 किलोमीटर तक के क्षेत्र को सेवाऐं प्रदान कर रहा है। तहसील की 38.15 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा से पूर्ण रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र में 29 अधिवासों में सहकारी समितियाँ स्थित हैं जो अपने आस–पास के 5 किमी तक के क्षेत्र को सेवाएँ प्रदान कर रहा है। तहसील के 110 अधिवास इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित व 13 अधिवास निम्न रूप से सेवित है।

अध्ययन क्षेत्र के 21 अधिवासों में थोक बाजार केन्द्र स्थित हैं जो अपने आस–पास के 8 किमी तक के क्षेत्र को सेवाएँ प्रदान कर रहा है। तहसील की 82.07 प्रतिशत जनसंख्या इस सेवा द्वारा पूर्ण रूप से सेवित है।

वर्तमान अध्ययन में विभिन्न सेवाओं की अल्पता के क्षेत्रों का निर्धारण सभी कार्यों/उपकार्यों के आधार पर किया गया।

**<u>सुझाव –</u>**

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य देवली तहसील के संतुलित विकास की योजना तैयार करना है। इसके लिए सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि कौन से कारक हैं जो क्षेत्र में असंतुलित वृद्धि को बढावा देते हैं और द्वितीय कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र किस प्रकार सेवा क्षेत्रों के साथ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

कृषि विकास हेतु अध्ययन क्षेत्र में अनेक प्रयास किए जा सकते हैं। जैसे– कृषि भूमि के प्रतिशत में और वृद्धि की जा सकती है। खाद्यान्न फसलों की उत्पादकता में भी वृद्धि की जा सकती है। अध्ययन क्षेत्र में बहुफसली पद्धति को

प्रोत्साहित करने एवं प्रति हेक्टेयर उपज में वृद्धि करने के लिए उपलब्ध जलस्त्रोतों का सिंचाई हेतु समुचित उपयोग आवश्यक है। लघु व सीमांत कृषकों को शासन द्वारा कृषि कार्य हेतु आवश्यक सुविधाऐं प्रदान की जाऐं। क्षेत्रीय कृषकों को सहकारी समितियों के माध्यम से एक स्थान पर उर्वरक, बीज एवं कीटनाशक दवाईयां उचित मूल्य पर मिलना चाहिए। कृषि क्रिया के साथ पशुपालन का घनिष्ठ संयोजन तहसील की कृषि संरचना का प्रमुख लक्षण है। अतः पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा एवं उन्नत पशु नस्ल के विकास हेतु पशुचिकित्सा एवं प्रजनन संस्थान की सुविधाएँ उपलब्ध करवाना अत्यन्त आवश्यक है। सभी स्तर के सेवा केन्द्रों में सहकारी विपणन समितियाँ स्थापित की जानी चाहिए। चूंकि अध्ययन क्षेत्र में सरसों का उत्पादन अधिक होता है। ऐसे में अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक विकास हेतु सरसों के तेल की मिलें स्थापित की जा सकती है। खनिजों के आधार पर अनेक उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं। सेवा उद्योगों की भी काफी संभावना अध्ययन क्षेत्र में है। वन आधारित उद्योग जैसे आरामशीन, फर्नीचर निर्माण, कृषि औजार आदि उद्योगों की स्थापना की जा सकती है।

घाड़ के गलीचे उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उसे प्रोत्साहन स्वरूप नये–नये डिजाइन और आधुनिक मशीनें उपलब्ध करानी चाहिए। साथ ही उसे देश–विदेश में प्रचारित करने के लिये इन्टरनेट का भी उपयोग होना चाहिए। क्षेत्र में बागाती खेती का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ रहा है ऐसे में उन पर आधारित उद्योगों को स्थापित करने से क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। जैसे कैर आचार, कच्चे आम का आचार, जूस उद्योग आदि स्थापित किये जा सकते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में परिवहन विकास हेतु राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 की निकटवर्ती सड़कों को राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ा जाना चाहिए, मुख्य अधिवासों में बस स्टॉप सुविधा उपलब्ध करवायी जानी चाहिए। रेल परिवहन का विकास किया जाना चाहिए। निवाई से टोंक होते हुए देवली को रेल मार्ग से जोड़ा जाना चाहिए जिससे तहसील मुख्यालय जिले के अन्य भागों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ सकेगा। साथ ही अजमेर–देवली–कोटा रेलमार्ग का कार्य भी जल्दी शुरू किया जाना चाहिए।

तहसील में स्थानिक कार्यात्मक एकीकरण के लिए समान आधारों पर पांच स्तरीय पदानुक्रम प्रस्तावित किया गया जो क्रमशः प्रादेशिक राजधानी, प्रादेशिक सेवा केन्द्र, सेवा केन्द्र, केन्द्रीय गांव तथा आश्रित गाँव है। इस योजना का उद्देश्य यह है कि तहसील के ग्रामीण क्षेत्र उपरोक्त वर्णित कार्यात्मक कार्यक्रम के द्वारा सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों के साथ तेजी से विकास कर सकें।

तहसील में कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए कुल 56 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है जिनमें से 14 वर्तमान में कार्यरत है जबकि 42 नये सेवा केन्द्रों की और आवश्यकता है।

देवली नगरीय केन्द्र अध्ययन क्षेत्र की क्षेत्रीय राजधानी है। तीन प्रादेशिक सेवा केन्द्र प्रस्तावित है जिनमें से दो केन्द्र दूनी व नासिरदा वर्तमान में कार्यरत है अतः कार्यात्मक रिक्तता की पूर्ति के लिए एक और प्रादेशिक सेवा केन्द्र की आवश्यकता है जो कि राजमहल है। तहसील में 12 सेवा केन्द्र प्रस्तावित है जिनमें से 8 वर्तमान में कार्यरत हैं जबकि 4 की और आवश्यकता है जो कि बंथली, डाबरकलां, बिजवार व संथली है। तहसील में 40 केन्द्रीय गांव प्रस्तावित है जिनमें से तीन ट्रिटियन, कनवाड़ा, सीतापुरा तो वर्तमान में कार्यरत है जबकि 37 की और आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र के 114 अधिवास आश्रित गाँव होंगे।

इस प्रकार तहसील में पदानुक्रमीय तंत्र की प्रस्तावित योजना पूर्ण होगी।

# BIBLIOGRAPHY

**A.Books**


Abler, R.E. and Adam, G.P. "Spatial Organization: the Geographer's view of the World", New Jercy, 1971.

Agrwal, P.C. (1973) "Regional Geography and Regional planning" 21st Int. Geo. Cong. proceeding, Nat. Com. for Geo. Calcutta, pp. 198-200.

Agrwal, P.C. (1976) "Geography and planning for Regional Development of Baster District, M.P. in Essays in Applied Geography Mishra, V.C. et al., (Eds), University of Sagar, pp.229-240.

Ali Mohamad "Dynamics of Agricultural Development in India", Concept publishing company, Delhi.

Alam, S.M. "Hyderabad and Secundrabad": A study in urban Geography' Bombay, 1965.

Anderson, N. "Aspect of the Rural and Urban", Sociologial Burlis, Vol. 3, 1963, PP 8-22.

Andrade, p. (1977) "The growth centre concept in Reading Materials", N.I.C.D. Hyderabad (Unpblished).

Arora, R.C. (1976) "Development of Agriculture and Allied Sectors An intergrated Area Approach". S. Chand company, New Delhi.

Aulakh, M.S. "Credit support for I.R.D. programme" Kurkshetra vol.XXX, 19 July, 1-15-1982.

| | |
|---|---|
| Bansal, S.C. | "Town-Country Relationship in Saharanpur city region: A study in rural urban interdependence problem" published Ph.D. Thesis of Meerut University, Meerut, Saharanpur, 1975. |
| Barnum, H.G. | "Market centers and hinterlands in Badenwurttembarg" Chicago, 1966. |
| Berry, B.J.L. | "Geography of markets centers and retail Distribution'' Prentice Hall, 1967. |
| Berry, B.J.L. and Garrison, | "A note on central place theory and the range of a W.L.good economic geography'', 34, p. 304-311, 1958. |
| Berry, B.J.L and Garrison, | "The functional Basis of central place hierarchy in W.L. economic Geopraphy''. |
| Bhat, S. (1976) | "Micro-level-planning'' : A case study of Karnal area, (haryana) India:1976. |
| Bhat, L.S. | "Regional planning in India'' statistical publishing society, Calcutta, 1972. |
| Bhat, L.S. | "Aspects of regional planning in India" in R.M. steel and R.M. Prothero (Eds), Geographers and the tropics Liverpool, Essays, London, 1964. |
| Bhattacharya, B. | "Factors determining the central functions and urban hierarchy of North Bengal'' G.R.I., 34, p. 327-338, 1972. |
| Boesch, H. | "Central Funetion, As Basis for systematic Graping Localities'', I.G.U., 17TH Abstract of papers, the national Geographical society, Washington, 1952. |

| | |
|---|---|
| Brush, J.C. | "The urban hierarchy in europe'' The geographical review, vol. 43, p. 414-416, 1953. |
| Brush, J.E. and Howard E.B.(1955) | "Rural service center in south western Wisconsin and southern England" Geographical review 45.Brush, J.E. "The hierarchy of central places in south western Wisconsin'' geographical review vol. 43, p. 380-402, 1953. |
| Brush, J.E. and cunthier, H.L. | "Service centers and consumer trips'' Research paper, No. 113, deptt. Of geography, University of Chicago, 1968. |
| Carol, H. | "Hierarchy of central functions with in the city'' A.A.A.G. vol. P. 419-438, 1960. |
| Carruthers, W.I. | "A classification of service centers in England and Wales'' Geographical Journal, Vol. 23, p. 371-386, 1957. |
| Chaturvedi, R.B. | "Spatio-Functional Re-Organization of central places of chhibramau tehsil'', Farukhabad District, U.P., A case study of Micro level planning, 1984. |
| Chrristaller, W. (1933) | "The central places in southern germany". Translated by C.W. bosken (1966) New-Jersey. |
| Clark, C. (1975) | "Inegrated Approach to Agriculture and Rural Development Asia and the Far East". Training for Agricultural and Rural Development, F.A.O. Rome. |
| Coal, A.J. and Moover. E.M.(1958) | "Population Growth and Economic Development in Low income countries" Princeton University Press, Princeton. |

David, M.H. "Society and population'' new delhi, 1969.

Dhiman, R.P.S. "Identification and Spacing of service centers''; A case study of Morabad District' The Geographical Observer, Meerut, Vol. 12, March, p. 20-28, 1976.

Dhar, R. (1982) "Rural development for eradication of rural poverty". An introduction Indian journal of regional science.

Dickinson, G.C. "Statistical Mapping and the presentation of Statistics'' London, 1963.

Dickinson, R.E. "City and Region: A Geographical Interpretation'' London, 1967.

Dol, K. (1957) "The industrial structure of Japanese Prefecture''. Proceeding I.G.Y. Regional Conference in Japan.

Freeman, T.W. (1982) "Geography and Regional Planning" National Geographer Vol. 5.

Friedman, J. (1957) "Regional Planning: A problem in spatial interaction", Journal of Regional science vol V.

Gadgil D.R. (1967) "District development planning Gokhale institute of politics and economics'', Poona. Government of India, sixth five year plan (1980-85) planning commission, New Delhi.

Galpin, C.G. "Rural Life'' New York, 1918.

Garnier, B.J. "Practical work in Geography'' London, 1963.

Garrison, W.L. "The Benefits of Rural Roads to Rural Property'' 1965.

Gibbs, J.P. (Ed.) "Urban Research Methods'' New York, 1961.

Guglani, P.L. and Pandey, R.K. (1983) "Financing the neglected sector, Agriculture", YOJANA, Vol XXVII, No. 13 July 16-31.

Gunewardena, K.A. "Service Centres in Southern Ceylon'' University of Cambridge, Ph.D. 11. Thesis, 1964.

Haggett, P. and Chorley, R.J. "Network Analysis in Geography London'',1969.

Haggett, P-Etal, (1964) "Determination of population thresholds for settlements functions by reed-muench methods''. Professional geographer, vol. 16.

Hanson, N. (Ed.), "Growth Centres in Regional Development'' New York, 1970.

Hoover, E.M. "The Location of Economic Activity'' New York, 1948.

Jain, O.P. "Rural Industrialization'' New Delhi, 1975.

Jayaswal, S.N.P. " Hierarchical grading of service centers of Eastern Part of Ganga-Yamuna Doab'', U.P., and their role in Regional Planning Paper presented in Autumn School in Geography, Nainital, 1967.

Jain N.G. (1977) "Integrated rural development: A geographical approach in Mandel'' R.B. (ds) recent trends and concept in Geography, New Delhi.

Janson, E.A.J. (1965) "Market Towns and Spatial Development in India". N.C.E.A.R., New Delhi.

Kayastha, S.L. and A Singh B.N. (1981) "Spatial strategy for IntegratedRural Development case study of Ghazipur tehsil'' (U.P.) India" N.G.J.I.

Kayastha, S.L. and singh B.N. (1981) "Regional development through social planning: A micro level case study from India". Indian journal of Regional Science 13.

Kenyon, J.B. "A Relationship between Central functions and size of place'' A.A.A.G. 57, 1967.

Khan, W. and Tripathy "Plan for integrated rural development in Pauri-Garhwal". N.I.C.D. Hyderabad.

Krishnan, G. and Agarwal, S.K. "Umland of planned City: Chandigarh'' N.G.J.I., Vol. XVI, Pt. 1, Varanasi, p. 31-43, 1970.

Kumar, N. (1983) "Training managers for rural development'' YOJANA vol. 27, No. 4 March 4-15 1983.

Lakshman T.K. "Rural Development in India" Himalaya Publishing House Bombay.

Lal, Amrit. "Some Aspects of Fictional Classification of Cities and a proposed scheme for classifying Indian Cities'' N.G.J.I. Vol. V, Pt. 1, p. 12-24, 1959.

Lal, R.S. "Dighwara: A Urban Service Centre in the Lower Ghagna-Gandak Daob'' N.G.J.I Vol. XIV, Pt. 2-3, 1968, p. 202-213.

Livingeton, I — "On the concept of Integrated Rural Development Planning in Less Development Countries". Journal of Agriculture Economics 30.

Lioyed, D.E. and — "Location in space: A theoretical approach to Economic Dicken P. (1972) Geography" Harper and row, publishers, New York, Evanston, San Francisco, London.

Mandal, R.B. — "Urban Centres in Bihar Plain'' Indian Geographical Studies, Research Bulletin No.1, p. 11-23, Sept. 1973.

Mathur, G.C. (Ed). — "Proceedings of the Seminar on Rural Housing and Village Planning'' New Delhi 1960.

Mathur, G.D. — "Rural Urban Integration and need for Regional Development Policy'', J.I.T.P., No. 61-62, p. 45-49, March 1970 Dec. 1969.

Mayfield, R.C. — "A Central Place Hierarchy in Northern India'' Quantitative Geography, Pt. 1, Economic and Cultural Topics, Iiinois, p. 120-166, 1963.

Misra, G.K. — "A Service Classification of Rural Settlements'' Journal of Behavioral Science and Community Development, Vol. 6, p. 64-75, 1972.

Mishra, G.K. (1972) — "A methodology for identifying service center in rural area''behavioral sciences and community development.

Mishra, R.P.etal (1974) "Regional development planning in India'': A new strategy, vikas publication, Delhi.

Mishra, R.P. & R.N. Achyutha (1976) "Regional development planning Publisher New Delhi.

Mukerji, A.B. "Spacing of Rural Settlements in Rajasthan-A Spatial Analysis'' Geographical Outlook, Journal of Agra Geographical Society, Agra, Vol. 1, No. 1, p. April, 1970.

Nath, V. "The Village and Community in India's Urban Future'' Bombay, 1962.

Nagi, D.S. "Functional Analysis and Hierarchy of Service Centers in District Bijnor'' an unpublished Ph. D. Thesis, Meerut, 1974.

N.C.A., E.R., India "Market town of spatial planning", New Delhi, 1965.

Nelson, H.J. "A Services Classification of American Cities'' Economic Geography, Vol. 31, p. 189-210, 1955.

Nigam, M.N. "Urban Geography of Lucknow'' an unpublished Ph. D. Thesis, Aligarh, 1960.

Pande, G.C. "Standard Operation Technique for Block Level Planning'', published in Rural India, Feb. p. 43-47, 1979.

Pandey B.P. (1981) "A strategy of planning through rural growth centers in developing countries''. National sysmposiumon regional planning and rural development G.B. pant social science institute, allahabad.

Patnaik, N. and Bose, "I.T.D. plan for keonjhar district'', Orissa, N.I.C.D. (1976) Hyderabad.

Prakasha Rao, V.L.S. "Development of growth points and Factors responsible for their rebardation in Muzzaffar Nagar District'', National Planning Commission, Research Programme Committee, New Delhi.

Prassd, T. "Dispersion spacing and size of Rural Settlements in Visakapattnam Taluka''. The Deccan Geographer, Vol. XV, Jan-June, No.1, p. 191-197, 1977.

Ram, L.N. "Cartographic Analysis of Central Functions'': A Case Study of South East Chhota Nagpur Indian Geographical Studies, 1 Sep. 1973, Patna, p. 82-91.

Rao, V (1985) "Facets of rural development in India'' Ashish publishing house 8/81, Panjabi Bagh, New-Delhi.

Reddy, B.H. (1972) "Possibilities of new small scale agro-based industries in Dharwar distt. In massod'', M.s. (Etal.) Urban System and Rural Development.

Roy, P. and Patil B.R. (1979) "Manual for block level planning'', Millian company, New delhi.

Saxena H.M. "Rural markets & development (A case study of Rajasthan State)'': Rawat Publications, Jaipur.

Sen, L.K. "Reading on Micro level Planning and Rural growth Centres'' NICD Hyderbad, 1972.

| | |
|---|---|
| Sen L.K. Wanmail, | "Planning rural growth centers for integrated area |
| S. and others (1971) | development'': A study of Mirjalgude Taluka. NICD Hyderabad. |
| Shafi, M (1960) | "Measurement of Agricultural Efficiency in Uttar Pradesh'', Economic Geography vol. 36 No 4. |
| Sharma S.L. | "Origin and growth of rural service centers'': Criterion publications New Delhi. |
| Shah, S.M. (1974) | "Growth centers as a strategy for rural development for weaker section". The Indian society of agricultural economics, seminar series 12, Bombay. |
| Sharma, S.K. and Mahotra. S.L. (1977) | "Integrated rural development: Approach, strategy and perspective". Abhinav publication New Delhi. |
| Sharma, R.C. (1984) | "Resource management in Dryland''. Rajesh publication, New Delhi. |
| Singh, K.N. | "Functions and functional Classification of towns in Uttar Pradesh'' Vol. V, Pt. 3, p. 121-148, 1959. |
| Singh, N.P. | "Spatio functional planning" A case Study of Mawana Tehisl (Utter Pradesh). |
| Singh, R.L. | "Evolution of Settlements in the middle Ganga Valley'' N.G.J.I. (2), p. 69-114. |
| Singh, T.P. | "Dispersion spacing and localization of Settlements in Hussainabad Anchal'' Geographical Out look, Vol. X, Ranchi, p. 85-94, 1973-75. |

Singh, U. "Umland of Allahabad'' N.G.J.I., Vol VII, Pt. 1, p. 37-51, 1961.

Singh, Jagdish (1979) "Central places and spatial organization in backward economy Region'': A study in integrated regional development U.B.B.P. Gorakhpur.

Singh, Jasbir (1976) "An Agriculture Geography of Haryana" vishal publishers, university campus, Kurukshetra, Haryana, India.

Singh, R.L. (1975) "Readings in rural settlements geography''. National geography society in India. Varanasi.

Singh, S. Ghose, B. "The application of Aerial-Photo-Interpretation in the geomorphologocial surveys of Western Rajasthan". The Deccan geog. 7 (i) 1-13

Singh, R.C. (1972) "Settlement geography of Indian Desert", Delhi.

Singh, S.B. "UBBP Research Series no 2 rural settlement geography" A case study of Sultanpur District Uttar Bharat Bhoogol Parishad, Gorakhpur.

Sundaram, K.V. (1971) "Regional Planning in India'' in Symposium on Regional Planning (21st I.G.C.) Calcutta pp109-123

Tiwari, P.C., (1988) "Regional Development and Planning in India"Criterion Publications, New Delhi.

Ullman, E.L. "A Theory of Location of Cities'' A.J.S. 46, p. 853-864.

| | |
|---|---|
| Wanmali, S. | Regional planning of Social facilities-an Examination of Central Place concepts and their Application''- A Case Study of Maharashtra' N.I.C.D., Hyderabad 1971. |
| Wanmali, S. | "Ranking of Settlements: A Suggestion'' Journal of Behavioral Science and Community Development, Vol. 5, No. 2, p. 97-1111, 1971. |
| Wanmali, S. and Khan Waheeduddi. | "Conceptual and methodological dimensions of Central Place Theory'' published in Readings on Micro level Planning and Rural growth centers, p. 177-188. |
| World Bank (1975) | "The Assault for work poverty problems of Rural Development Education and Health''. Baltimore London. |
| Yadav, S. | "Spatio Functional Planning in Rajasthan'', A Micro Regional Analytical Study of Beawer Tehsil – unpublished Thesis 2001. |

**Census Publications**

District census hand book of Tonk 2011.

Census of India, district Tonk 2011.

**Gazetters**

Imperial Gazetters of India

District Gazetters of India 1971.

**Journals**

National Geographical journal of India.

Deccan Geographer.

Indian journal of agricultural economics.

Uttar Bharat Bhoogol patrika.

Professional geographer.

The Geographical review of India.

# परिशिष्ट तालिका – 1

| क्र.सं. | अधिवास का नाम | जनसंख्या | क्षेत्रफल | जनसंख्या घनत्व |
|---|---|---|---|---|
| 1 | देवली नगरीय केन्द्र | 22065 | 3.75 | 5884 |
| 2 | दूनी | 11295 | 32.9699 | 343 |
| 3 | देवली | 8007 | 28.7335 | 279 |
| 4 | नासिरदा | 7440 | 32.8926 | 226 |
| 5 | राजमहल | 6722 | 20.2 | 333 |
| 6 | थांवला | 6143 | 27.47 | 224 |
| 7 | नगरफार्ट | 5647 | 14.01 | 403 |
| 8 | आवां | 5445 | 24.76 | 220 |
| 9 | पनवाड़ | 4352 | 15.22 | 286 |
| 10 | घाड़ | 4160 | 15.42 | 270 |
| 11 | धुंआकला | 3506 | 19.31 | 182 |
| 12 | बंथली | 3084 | 13.9768 | 221 |
| 13 | डाबरकलां | 3070 | 15.95 | 192 |
| 14 | चांदली | 2910 | 18.92 | 154 |
| 15 | बीजवाड़ | 2608 | 18.47 | 141 |
| 16 | निवारियां | 2422 | 7.9048 | 306 |
| 17 | देवड़ावास | 2326 | 15.9841 | 146 |
| 18 | संथली | 2118 | 6.8452 | 309 |
| 19 | मालेड़ा | 2093 | 10.3 | 203 |
| 20 | जूनिया | 2080 | 12.44 | 167 |
| 21 | टिट्रियन | 2027 | 8.72 | 232 |
| 22 | गेरोली | 1999 | 13.23 | 151 |
| 23 | सीतापुरा | 1995 | 8.42 | 237 |
| 24 | गुरई | 1973 | 14.34 | 138 |
| 25 | कनवाड़ा | 1968 | 22.48 | 88 |
| 26 | सतवाड़ा | 1910 | 6.32 | 302 |
| 27 | राजकोट | 1861 | 13.67 | 136 |
| 28 | सांवतगढ़ | 1766 | 14.05 | 126 |
| 29 | जलसीना | 1730 | 7.8782 | 220 |
| 30 | हिसामपुर | 1726 | 11.57 | 149 |
| 31 | बरोली | 1681 | 11.62 | 145 |
| 32 | दंता | 1671 | 7.63 | 219 |
| 33 | मुगलना | 1528 | 8.95 | 171 |
| 34 | खारोई | 1514 | 8.77 | 173 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 35 | कासीर | 1512 | 14.65 | 103 |
| 36 | सरोली | 1504 | 8.6099 | 175 |
| 37 | चांदसिंहपुरा | 1324 | 11.3 | 117 |
| 38 | ठिकरिया कलां | 1321 | 9.18 | 144 |
| 39 | अंबापुरा | 1316 | 0.92 | 1430 |
| 40 | गांवड़ी | 1312 | 5.93 | 221 |
| 41 | बड़ला | 1278 | 11.88 | 108 |
| 42 | पोलीयारा | 1277 | 5.68 | 225 |
| 43 | रामथला | 1263 | 8.26 | 153 |
| 44 | देवपुरा | 1204 | 6.01 | 200 |
| 45 | रतनपुरा | 1155 | 4.06 | 284 |
| 46 | धुंआखुर्द | 1136 | 7.76 | 146 |
| 47 | देवीखेड़ा | 1101 | 6.35 | 173 |
| 48 | जालेरी | 1089 | 7.88 | 138 |
| 49 | सिरोही | 1074 | 10.84 | 99 |
| 50 | सैन्दियावास | 1071 | 5.66 | 189 |
| 51 | सतवाड़ा | 1045 | 5.96 | 175 |
| 52 | गांधीग्राम | 1010 | 4.0642 | 249 |
| 53 | स्यावाता | 999 | 6.37 | 157 |
| 54 | बालागढ | 998 | 7.99 | 125 |
| 55 | सरदारपुरा | 979 | 7.68 | 127 |
| 56 | चारनेट | 974 | 6.82 | 143 |
| 57 | कनवाड़पुरा | 972 | 9.2353 | 105 |
| 58 | चंदवाड़ | 956 | 10.98 | 87 |
| 59 | नयागांव गोथड़ा | 947 | 15.08 | 63 |
| 60 | बेनपा | 947 | 8.73 | 108 |
| 61 | खेड़ा गांवडी | 945 | 6.2 | 152 |
| 62 | नयागॉव | 944 | 4.57 | 207 |
| 63 | आमली | 878 | 5.62 | 156 |
| 64 | दातुँडा | 878 | 8.02 | 109 |
| 65 | कारेस्या देवपुरा | 873 | 5.636 | 155 |
| 66 | सरदारा | 833 | 5.6 | 149 |
| 67 | बालून्दा | 817 | 6.463 | 126 |
| 68 | नयागाँव (ढिगरिया) | 808 | 2.76 | 293 |
| 69 | ख्वासपुरा | 805 | 4.34 | 185 |
| 70 | गेरोटी | 799 | 6.7 | 119 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 71 | टोडा का गोठडा | 785 | 5.11 | 154 |
| 72 | रूपारेल | 783 | 3.98 | 197 |
| 73 | महाराज कनवाड़पुरा | 773 | 4.99 | 155 |
| 74 | इन्डोडा | 764 | 8.32 | 92 |
| 75 | धारोला | 759 | 12.45 | 61 |
| 76 | अकोदिया | 752 | 5.6384 | 133 |
| 77 | काकोडिया | 727 | 6.31 | 115 |
| 78 | धान्धोली | 723 | 4.19 | 173 |
| 79 | संग्रामपुरा | 720 | 5.41 | 133 |
| 80 | भानोली | 720 | 4.59 | 157 |
| 81 | माधोसिंहपुरा | 712 | 4.1 | 174 |
| 82 | गोपीपुरा | 708 | 2.62 | 270 |
| 83 | बिशनपुरा | 700 | 10.88 | 64 |
| 84 | ठीकला | 697 | 3.79 | 184 |
| 85 | टोकडावास बून्दी | 690 | 3.68 | 188 |
| 86 | ज्योतिपुरा | 681 | 1.28 | 532 |
| 87 | बहालरी | 674 | 5.11 | 132 |
| 88 | अकोदिया | 671 | 2.44 | 275 |
| 89 | रंगविलास | 670 | 2.42 | 277 |
| 90 | लक्ष्मीपुरा | 668 | 4.22 | 158 |
| 91 | दौलतपुरा | 663 | 2.87 | 231 |
| 92 | रावता | 652 | 15.56 | 42 |
| 93 | नयागाँव | 641 | 10.86 | 59 |
| 94 | जैल | 641 | 5.89 | 109 |
| 95 | टोकरावास उनियारा | 632 | 3.46 | 183 |
| 96 | डाबरखुर्द | 630 | 5 | 126 |
| 97 | नंदपुरा | 616 | 5.08 | 121 |
| 98 | फतेहपुरा | 609 | 1.89 | 322 |
| 99 | धन्ना का झोपडा | 594 | 2.43 | 244 |
| 100 | मानपुरा | 567 | 7.92 | 72 |
| 101 | कोटडा | 551 | 5.03 | 110 |
| 102 | सुजानपुरा | 531 | 4.73 | 112 |
| 103 | रामपुरा | 527 | 3.78 | 139 |
| 104 | सीतारामपुरा | 525 | 2.75 | 191 |
| 105 | रामसागर | 525 | 3.78 | 139 |
| 106 | केदार | 508 | 5.61 | 91 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 107 | जगन्नाथपुरा | 506 | 3.73 | 136 |
| 108 | मुंडियाखुर्द | 505 | 5.95 | 85 |
| 109 | विजयगढ़ | 500 | 2.3018 | 217 |
| 110 | भरना | 499 | 3.22 | 155 |
| 111 | हनुमानपुरा | 498 | 3.66 | 136 |
| 112 | कालानाड़ा | 485 | 3.36 | 144 |
| 113 | रघुनाथपुरा | 466 | 3.07 | 152 |
| 114 | संग्रामपुरा | 460 | 1.93 | 238 |
| 115 | कुशलपुरा | 454 | 3.25 | 140 |
| 116 | भीवाड़ावास | 445 | 3.82 | 116 |
| 117 | गेरोटा | 445 | 2.96 | 150 |
| 118 | उथारना | 441 | 6.82 | 65 |
| 119 | बीसलपुर | 426 | 16.96 | 25 |
| 120 | खेड़ा बालाजी | 425 | 2.7314 | 156 |
| 121 | सरकावास | 419 | 3.6208 | 116 |
| 122 | कल्याणपुरा | 408 | 1.37 | 298 |
| 123 | बोयाड़ा | 400 | 3.8 | 105 |
| 124 | राजनगर | 390 | 1.85 | 211 |
| 125 | संग्रामपुरा | 388 | 2.67 | 145 |
| 126 | जालिमगंज | 384 | 3.7 | 104 |
| 127 | सुखपुरा | 383 | 3.9256 | 98 |
| 128 | स्यालासुखपुरा | 381 | 3 | 127 |
| 129 | बालापुरा | 374 | 2.1219 | 176 |
| 130 | गोपालपुरा | 369 | 1.9878 | 186 |
| 131 | हारोती | 369 | 2.96 | 125 |
| 132 | कनवाड़पुरा | 364 | 2.18 | 167 |
| 133 | मुगलानी | 358 | 2.26 | 158 |
| 134 | हरिपुरा | 358 | 5 | 72 |
| 135 | बसलाचमन | 346 | 3.13 | 111 |
| 136 | गोरधनपुरा | 340 | 2.49 | 137 |
| 137 | एलेक्सेंडरपुरा | 339 | 3.68 | 92 |
| 138 | गुलाबपुरा | 337 | 1.46 | 231 |
| 139 | पोल्याड़ी | 333 | 4.01 | 83 |
| 140 | लाकोलाई | 318 | 3.84 | 83 |
| 141 | संग्रामपुरा | 317 | 2.49 | 127 |
| 142 | दलवासा | 313 | 5.57 | 56 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 143 | संग्रामगंज | 303 | 2.26 | 134 |
| 144 | कल्याणपुरा | 295 | 2.11 | 140 |
| 145 | गोपालपुरा | 293 | 2.6 | 113 |
| 146 | रघुराजपुरा | 292 | 2.22 | 132 |
| 147 | इकबालगंज | 264 | 2.06 | 128 |
| 148 | लक्ष्मीपुरा | 262 | 2.68 | 98 |
| 149 | कलन्दरपुरा | 261 | 1.8 | 145 |
| 150 | जगत्या | 259 | 1.45 | 179 |
| 151 | बाजोली | 236 | 1.4 | 169 |
| 152 | सारंगपुरा | 230 | 0.49 | 469 |
| 153 | बासखेरीया | 226 | 3.34 | 68 |
| 154 | अरनिया | 210 | 4.98 | 42 |
| 155 | हीरापुरा | 196 | 2.85 | 69 |
| 156 | चाकनंदपुरा | 159 | 0.65 | 245 |
| 157 | कांची चंदपुरा | 158 | 1.13 | 140 |
| 158 | फूलसागर | 156 | 1.39 | 112 |
| 159 | श्रीनगर | 142 | 0.76 | 187 |
| 160 | बालापुरा | 137 | 3.429 | 40 |
| 161 | मुचकन्दपुरा | 118 | 1.88 | 63 |
| 162 | किशनपुरा | 115 | 2.02 | 57 |
| 163 | उदयपुरा | 100 | 1.96 | 51 |
| 164 | रतनपुरा | 97 | 0.91 | 107 |
| 165 | इन्द्रपुरा | 92 | 3.6 | 26 |
| 166 | कनवाड़पुरा | 91 | 2.76 | 33 |
| 167 | देवड़ावास | 84 | 6.72 | 13 |
| 168 | रामनगर | 73 | 1.64 | 45 |
| 169 | थली | 25 | 7.34 | 3 |
| 170 | नृसिंहपुरा | 16 | 0.7 | 23 |
| 171 | नयावास | 0 | 2.66 | 0 |
| 172 | श्रीमानसिंहपुरा | 0 | 1.76 | 0 |
| 173 | सनकरवाड़ा | 0 | 10.31 | 0 |
| 174 | सुजानपुरा | 0 | 4.42 | 0 |
| 175 | भँवरथला | 0 | 4.32 | 0 |
| 176 | सरसरी | 0 | 4.5 | 0 |
| 177 | बनेरिया खुर्द | 0 | 9.68 | 0 |
| 178 | सांड़ला | 0 | 8.66 | 0 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 179 | बास जोधा | 0 | 1.35 | 0 |
| 180 | छतरी | 0 | 6.62 | 0 |
| 181 | कुन्डेरा | 0 | 4.99 | 0 |
| 182 | महाराजपुरा | 0 | 1.9226 | 0 |
| 183 | भीमपुरा | 0 | 1.0975 | 0 |
| 184 | राजेन्द्रपुरा | 0 | 0.9 | 0 |
| 185 | चकअवान | 0 | 1.38 | 0 |
| 186 | ठिकरिया खुर्द | 0 | 3.13 | 0 |
| 187 | बहादुरगंज | 0 | 1.27 | 0 |

# परिशिष्ट तालिका – 2

| क्र.सं. | अधिवास का नाम | कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक | जनसंख्या केन्द्रीयता सूचकांक | संयुक्त केन्द्रीयता सूचकांक |
|---|---|---|---|---|
| 1 | देवली नगरीय केन्द्र | 1050.72 | 24.55 | 1075.271 |
| 2 | दूनी | 543.46 | 9.68 | 553.1378 |
| 3 | देवली | 224.73 | 4.74 | 229.4666 |
| 4 | नासिरदा | 295.23 | 3.16 | 298.3855 |
| 5 | राजमहल | 236.29 | 3.61 | 239.901 |
| 6 | थांवला | 201.23 | 1.44 | 202.6691 |
| 7 | नगरफार्ट | 312.56 | 6.39 | 318.9536 |
| 8 | आवां | 295.29 | 4.26 | 299.5546 |
| 9 | पनवाड़ | 212.23 | 2.14 | 214.3689 |
| 10 | घाड़ | 123.43 | 4.62 | 128.0478 |
| 11 | धुंआकला | 144.23 | 1.00 | 145.2301 |
| 12 | बंथली | 77.76 | 0.96 | 78.72382 |
| 13 | डाबरकलां | 88.23 | 0.53 | 88.76472 |
| 14 | चांदली | 121.26 | 1.01 | 122.2667 |
| 15 | बीजवाड़ | 88.26 | 0.61 | 88.86734 |
| 16 | निवारियां | 76.66 | 0.73 | 77.38947 |
| 17 | देवड़ावास | 66.06 | 0.82 | 66.88189 |
| 18 | संथली | 70.86 | 0.61 | 71.47394 |
| 19 | मालेड़ा | 52.56 | 0.39 | 52.94619 |
| 20 | जूनिया | 43.36 | 0.98 | 44.33703 |
| 21 | टिट्रियन | 29.36 | 0.40 | 29.75609 |
| 22 | गेरोली | 40.07 | 1.09 | 41.15925 |
| 23 | सीतापुरा | 47.47 | 0.83 | 48.30179 |
| 24 | गुरई | 40.77 | 0.81 | 41.57869 |
| 25 | कनवाड़ा | 56.97 | 0.35 | 57.31658 |
| 26 | सतवाड़ा | 28.87 | 0.85 | 29.715 |
| 27 | राजकोट | 69.07 | 0.28 | 69.34726 |
| 28 | सांवतगढ़ | 48.5 | 0.28 | 48.78387 |
| 29 | जलसीना | 23.37 | 0.77 | 24.14238 |
| 30 | हिसामपुर | 48.77 | 0.04 | 48.81291 |
| 31 | बरोली | 43.97 | 0.54 | 44.51463 |
| 32 | दंता | 26.57 | 0.27 | 26.84396 |
| 33 | मुगलना | 20.27 | 0.10 | 20.36572 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 34 | खारोई | 21.47 | 0.75 | 22.21597 |
| 35 | कासीर | 45.87 | 0.42 | 46.2925 |
| 36 | सरोली | 80.77 | 0.63 | 81.40375 |
| 37 | चांदसिंहपुरा | 42.7 | 0.13 | 42.83203 |
| 38 | ठिकरिया कलां | 21.57 | 0.63 | 22.20375 |
| 39 | अंबापुरा | 23.37 | 0.70 | 24.06646 |
| 40 | गांवड़ी | 33.47 | 0.34 | 33.80668 |
| 41 | बड़ला | 15.17 | 0.59 | 15.75754 |
| 42 | पोलीयारा | 44.07 | 0.32 | 44.39017 |
| 43 | रामथला | 20.97 | 0.23 | 21.20435 |
| 44 | देवपुरा | 18.07 | 0.38 | 18.44629 |
| 45 | रतनपुरा | 18.37 | 0.86 | 19.2315 |
| 46 | धुंआखुर्द | 12.27 | 0.28 | 12.55057 |
| 47 | देवीखेड़ा | 17.07 | 0.17 | 17.23834 |
| 48 | जालेरी | 15.47 | 0.19 | 15.65814 |
| 49 | सिरोही | 18.37 | 0.21 | 18.58455 |
| 50 | सैन्दियावास | 16.8 | 0.07 | 16.87262 |
| 51 | सतवाड़ा | 12.27 | 0.15 | 12.41523 |
| 52 | गांधीग्राम | 15.67 | 0.09 | 15.76242 |
| 53 | स्यावाता | 12.14 | 0.07 | 12.21262 |
| 54 | बालागढ | 12.14 | 0.28 | 12.41726 |
| 55 | सरदारपुरा | 12.44 | 0.14 | 12.58193 |
| 56 | चारनेट | 55.07 | 0.35 | 55.41658 |
| 57 | कनवाड़पुरा | 9.24 | 0.06 | 9.296113 |
| 58 | चंदवाड़ | 39.77 | 0.37 | 40.14299 |
| 59 | नयागांव गोथड़ा | 15.34 | 0.16 | 15.50174 |
| 60 | बेनपा | 7.64 | 0.25 | 7.887557 |
| 61 | खेड़ा गांवडी | 10.54 | 0.11 | 10.64893 |
| 62 | नयागॉव | 12.14 | 0.10 | 12.23902 |
| 63 | आमली | 11.54 | 0.51 | 12.04832 |
| 64 | दातुँडा | 6.74 | 0.14 | 6.875331 |
| 65 | कारेस्या देवपुरा | 13.14 | 0.19 | 13.33144 |
| 66 | सरदारा | 6.74 | 0.46 | 7.202107 |
| 67 | बालून्दा | 30.44 | 0.39 | 30.82619 |
| 68 | नयागाँव (ढिगरिया) | 6.74 | 0.38 | 7.122889 |
| 69 | ख्वासपुरा | 30.44 | 0.11 | 30.55223 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 70 | गेरोटी | 8.34 | 0.21 | 8.55455 |
| 71 | टोडा का गोठडा | 27.54 | 0.18 | 27.72484 |
| 72 | रूपारेल | 9.64 | 0.07 | 9.712617 |
| 73 | महाराज कनवाड़पुरा | 5.7 | 0.00 | 5.703301 |
| 74 | इन्डोडा | 8.04 | 0.02 | 8.059805 |
| 75 | धारोला | 6.74 | 0.39 | 7.12949 |
| 76 | अकोदिया | 8.54 | 0.05 | 8.592812 |
| 77 | काकोडिया | 9.64 | 0.03 | 9.669707 |
| 78 | धान्धोली | 16.24 | 0.45 | 16.6856 |
| 79 | संग्रामपुरा | 6.74 | 0.16 | 6.895136 |
| 80 | भानोली | 13.04 | 0.17 | 13.21494 |
| 81 | माधोसिंहपुरा | 12.84 | 0.51 | 13.34832 |
| 82 | गोपीपुरा | 5.14 | 0.31 | 5.453573 |
| 83 | बिशनपुरा | 6.74 | 0.03 | 6.773008 |
| 84 | ठीकला | 42.94 | 0.29 | 43.23047 |
| 85 | टोकडावास बून्दी | 9.94 | 0.16 | 10.09514 |
| 86 | ज्योतिपुरा | 8.04 | 0.01 | 8.049902 |
| 87 | बहालरी | 13.14 | 0.04 | 13.17961 |
| 88 | अकोदिया | 11.54 | 0.22 | 11.76115 |
| 89 | रंगविलास | 6.74 | 0.04 | 6.779609 |
| 90 | लक्ष्मीपुरा | 8.54 | 0.30 | 8.84367 |
| 91 | दौलतपुरा | 6.74 | 0.16 | 6.895136 |
| 92 | रावता | 8.34 | 0.35 | 8.693182 |
| 93 | नयागाँव | 8.04 | 0.09 | 8.12582 |
| 94 | जैल | 36.27 | 0.20 | 36.47465 |
| 95 | टोकरावास उनियारा | 13.14 | 0.15 | 13.28523 |
| 96 | डाबरखुर्द | 9.94 | 0.38 | 10.31959 |
| 97 | नंदपुरा | 8.54 | 0.10 | 8.635722 |
| 98 | फतेहपुरा | 11.54 | 0.04 | 11.57631 |
| 99 | धन्ना का झोपडा | 10.14 | 0.07 | 10.20602 |
| 100 | मानपुरा | 10.14 | 0.06 | 10.19611 |
| 101 | कोटडा | 8.9 | 0.20 | 9.098046 |
| 102 | सुजानपुरा | 12.84 | 0.29 | 13.13377 |
| 103 | रामपुरा | 33.67 | 0.02 | 33.6898 |
| 104 | सीतारामपुरा | 5.14 | 0.02 | 5.159805 |
| 105 | रामसागर | 9.94 | 0.31 | 10.25357 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 106 | केदार | 5.14 | 0.09 | 5.232421 |
| 107 | जगन्नाथपुरा | 9.64 | 0.05 | 9.689511 |
| 108 | मुंडियाखुर्द | 8.14 | 0.25 | 8.390858 |
| 109 | विजयगढ़ | 5.04 | 0.19 | 5.231444 |
| 110 | भरना | 3.74 | 0.09 | 3.82582 |
| 111 | हनुमानपुरा | 3.74 | 0.17 | 3.91164 |
| 112 | कालानाड़ा | 6.94 | 0.07 | 7.009316 |
| 113 | रघुनाथपुरा | 8.24 | 0.06 | 8.296113 |
| 114 | संग्रामपुरा | 2.14 | 0.13 | 2.272031 |
| 115 | कुशलपुरा | 3.74 | 0.15 | 3.891835 |
| 116 | भीवाड़ावास | 2.14 | 0.04 | 2.176308 |
| 117 | गेरोटा | 2.14 | 0.05 | 2.192812 |
| 118 | उथारना | 38.84 | 0.00 | 38.84 |
| 119 | बीसलपुर | 2.14 | 0.05 | 2.192812 |
| 120 | खेड़ा बालाजी | 5.34 | 0.02 | 5.356504 |
| 121 | सरकावास | 1.1 | 0.15 | 1.251835 |
| 122 | कल्याणपुरा | 3.74 | 0.26 | 4.00076 |
| 123 | बोयाड़ा | 3.74 | 0.02 | 3.763105 |
| 124 | राजनगर | 3.74 | 0.05 | 3.792812 |
| 125 | संग्रामपुरा | 2.14 | 0.06 | 2.199414 |
| 126 | जालिमगंज | 3.74 | 0.09 | 3.832421 |
| 127 | सुखपुरा | 3.74 | 0.05 | 3.789511 |
| 128 | स्यालासुखपुरा | 2.14 | 0.11 | 2.252226 |
| 129 | बालापुरा | 5.34 | 0.01 | 5.346602 |
| 130 | गोपालपुरा | 3.74 | 0.01 | 3.749902 |
| 131 | हारोती | 2.14 | 0.12 | 2.255527 |
| 132 | कनवाड़पुरा | 3.74 | 0.08 | 3.819218 |
| 133 | मुगलानी | 3.74 | 0.03 | 3.769707 |
| 134 | हरिपुरा | 3.74 | 0.01 | 3.749902 |
| 135 | बसलाचमन | 2.14 | 0.17 | 2.305038 |
| 136 | गोरधनपुरा | 2.14 | 0.00 | 2.14 |
| 137 | एलेक्सेंडरपुरा | 2.14 | 0.04 | 2.179609 |
| 138 | गुलाबपुरा | 3.74 | 0.05 | 3.792812 |
| 139 | पोल्याड़ी | 2.14 | 0.03 | 2.173008 |
| 140 | लाकोलाई | 1.1 | 0.02 | 1.119805 |
| 141 | संग्रामपुरा | 2.14 | 0.01 | 2.153203 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 142 | दलवासा | 2.14 | 0.01 | 2.149902 |
| 143 | संग्रामगंज | 2.14 | 0.01 | 2.149902 |
| 144 | कल्याणपुरा | 3.74 | 0.10 | 3.842324 |
| 145 | गोपालपुरा | 3.74 | 0.05 | 3.789511 |
| 146 | रघुराजपुरा | 3.74 | 0.00 | 3.74 |
| 147 | इकबालगंज | 2.14 | 0.01 | 2.149902 |
| 148 | लक्ष्मीपुरा | 2.14 | 0.01 | 2.149902 |
| 149 | कलन्दरपुरा | 2.14 | 0.11 | 2.245625 |
| 150 | जगत्या | 4.3 | 0.02 | 4.319805 |
| 151 | बाजोली | 2.14 | 0.02 | 2.159805 |
| 152 | सारंगपुरा | 2.14 | 0.06 | 2.199414 |
| 153 | बासखेरीया | 2.14 | 0.02 | 2.156504 |
| 154 | अरनिया | 1.04 | 0.02 | 1.056504 |
| 155 | हीरापुरा | 1.04 | 0.06 | 1.102715 |
| 156 | चाकनंदपुरा | 1.04 | 0.02 | 1.063105 |
| 157 | कांची चंदपुरा | 4.24 | 0.01 | 4.249902 |
| 158 | फूलसागर | 1.04 | 0.02 | 1.059805 |
| 159 | श्रीनगर | 1.04 | 0.02 | 1.059805 |
| 160 | बालापुरा | 9.94 | 0.16 | 10.09514 |
| 161 | मुचकन्दपुरा | 1.04 | 0.03 | 1.073008 |
| 162 | किशनपुरा | 1.04 | 0.00 | 1.043301 |
| 163 | उदयपुरा | 1.04 | 0.00 | 1.043301 |
| 164 | रतनपुरा | 1.04 | 0.02 | 1.063105 |
| 165 | इन्द्रपुरा | 1.04 | 0.00 | 1.04 |
| 166 | कनवाड़पुरा | 1.04 | 0.00 | 1.043301 |
| 167 | देवड़ावास | 0 | 0.00 | 0 |
| 168 | रामनगर | 1.04 | 0.05 | 1.086211 |
| 169 | थली | 1.04 | 0.00 | 1.043301 |
| 170 | नृसिंहपुरा | 2.9 | 0.00 | 2.903301 |
| 171 | नयावास | 0 | 0 | 0 |
| 172 | श्रीमानसिंहपुरा | 0 | 0 | 0 |
| 173 | सनकरवाड़ा | 0 | 0 | 0 |
| 174 | सुजानपुरा | 0 | 0 | 0 |
| 175 | भँवरथला | 0 | 0 | 0 |
| 176 | सरसरी | 0 | 0 | 0 |
| 177 | बनेरिया खुर्द | 0 | 0 | 0 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 178 | सांड़ला | 0 | 0 | 0 |
| 179 | बास जोधा | 0 | 0 | 0 |
| 180 | छतरी | 0 | 0 | 0 |
| 181 | कुन्डेरा | 0 | 0 | 0 |
| 182 | महाराजपुरा | 0 | 0 | 0 |
| 183 | भीमपुरा | 0 | 0 | 0 |
| 184 | राजेन्द्रपुरा | 0 | 0 | 0 |
| 185 | चकअवान | 0 | 0 | 0 |
| 186 | ठिकरिया खुर्द | 0 | 0 | 0 |
| 187 | बहादुरगंज | 0 | 0 | 0 |

## परिशिष्ट तालिका 3

## वर्तमान एवं प्रस्तावित सेवा केन्द्र उनके कार्यों सहित

| क्र. सं. | सेवा केन्द्र का नाम | वर्तमान कार्य | प्रस्तावित कार्य |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रादेशिक राजधानी | | |
| | देवली नगरीय केन्द्र | महाविद्यालय, आधुनिक सुविधाओं (एक्सरे, ऑपरेशन थियेटर) से सुसज्जित अस्पताल, परिवार नियोजन केन्द्र और मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, डाक एवं कूरियर, दूरभाष केन्द्र, बैंक, सहकारी समिति, थोक बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, होटल, रेस्टोरेंट, सिनेमाघर, तहसील स्तरीय प्रशासनिक कार्यालय। | रेल्वे स्टेशन |
| 2 | प्रादेशिक सेवा केन्द्र | | |
| | दूनी | उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और परिवार नियोजन तथा मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, डाक एवं कूरियर, छोटा दूरभाष केन्द्र, बैंक, सहकारी समिति, नियमित बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, सिनेमाघर। | |
| | नासिरदा | उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और परिवार नियोजन तथा मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, डाक एवं कूरियर, बैंक, सहकारी समिति, नियमित बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, सिनेमाघर। | छोटा दूरभाष केन्द्र |
| | राजमहल* | उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और परिवर नियोजन तथा मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, छोटा दूरभाष केन्द्र, बैंक, सहकारी समिति, नियमित बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, सिनेमाघर। | डाक एवं कूरियर |
| 3. | सेवा केन्द्र | | |
| | देवली | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | पशु चिकित्सा केन्द्र |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | थाँवला | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | |
| | नगरफोर्ट | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | |
| | आंवा | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | पशु चिकित्सा केन्द्र |
| | पनवाड़ | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | पशु चिकित्सा केन्द्र |
| | घाड़ | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | |
| | धुंआकला | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | पशु चिकित्सा केन्द्र |
| | चांदली | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | पशु चिकित्सा केन्द्र |
| | बंथली* | माध्यमिक विद्यालय, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, पशु चिकित्सा केन्द्र |
| | डाबरकलां* | माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, खुदरा बाजार केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | सहकारी समिति, पशु चिकित्सा केन्द्र |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | बीजवाड़* | माध्यमिक विद्यालय, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप ग्राम पंचायत। | ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, पशु चिकित्सा केन्द्र |
| | संथली* | माध्यमिक विद्यालय, उपडाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत। | ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र |
| 4. | केन्द्रीय गाँव | | |
| | टिट्रियन | उच्च प्राथमिक विद्यालय, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र | शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन ऑयल, डीजल, केरोसीन और लुहार। |
| | सीतापुरा | उच्च प्राथमिक विद्यालय, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र | शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन ऑयल, डीजल, केरोसीन और लुहार। |
| | कनवाड़ा | उच्च प्राथमिक विद्यालय, पशु चिकित्सा केन्द्र | मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन, ऑयल, डीजल और केरोसीन और लुहार। |
| | निवारिया* | उच्च प्राथमिक विद्यालय | मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन, ऑयल, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | डीजल और केरोसीन और लुहार। |
| | देवड़ावास* | उच्च प्राथमिक विद्यालय | मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र, जैसे वाहन ऑयल, डीजल और केरोसीन और लुहार। |
| | मालेड़ा* | ——''—— | ——''—— |
| | जूनिया* | ——''—— | ——''—— |
| | गेरोली* | ——''—— | ——''—— |
| | गुरई* | ——''—— | ——''—— |
| | सतवाड़ा* | ——''—— | ——''—— |
| | राजकोट* | ——''—— | ——''—— |
| | सांवतगढ़* | ——''—— | ——''—— |
| | जलसीना* | ——''—— | ——''—— |
| | हिसामपुर* | ——''—— | ——''—— |
| | बरोली* | ——''—— | ——''—— |
| | दंता* | ——''—— | ——''—— |
| | मुगलना* | ——''—— | ——''—— |
| | खारोई* | ——''—— | ——''—— |
| | कासीर* | उच्च प्राथमिक विद्यालय, शाखा डाकघर | मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, साप्ताहिक बाजार, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन ऑयल, डीजल और केरोसीन और लुहार। |
| | सरोली* | उच्च प्राथमिक विद्यालय | मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन ऑयल, डीजल और केरोसीन और लुहार। |
| | चांदसिंहपुरा* | ––''–– | ––''–– |
| | ठिकरिया कलां* | ––''–– | ––''–– |
| | अंबापुरा* | उच्च प्राथमिक विद्यालय, शाखा डाकघर | मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन ऑयल, डीजल और केरोसीन और लुहार। |
| | गाँवड़ी* | ––''–– | ––''–– |
| | बरला* | उच्च प्राथमिक विद्यालय | मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग केन्द्र, रेडियो, कृषि औजार सेवा केन्द्र जैसे वाहन ऑयल, डीजल और केरोसीन और लुहार। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | पोल्याड़ा* | ——''—— | ——''—— |
| | रामथला* | ——''—— | ——''—— |
| | देवपुरा* | ——''—— | ——''—— |
| | रतनपुरा* | ——''—— | ——''—— |
| | धुंआखुर्द* | ——''—— | ——''—— |
| | देवी खेड़ा* | ——''—— | ——''—— |
| | जालेरी* | ——''—— | ——''—— |
| | सिरोही* | ——''—— | ——''—— |
| | सैंदियावास* | ——''—— | ——''—— |
| | सतवाड़ा* | ——''—— | ——''—— |
| | गांधीग्राम* | ——''—— | ——''—— |
| | चारनेट* | ——''—— | ——''—— |
| | चंदवाड़* | ——''—— | ——''—— |
| | टोकरावास उनियारा* | ——''—— | ——''—— |
| | रामसागर* | ——''—— | ——''—— |

* प्रस्तावित सेवा केन्द्र

# शोधपत्रों के प्रकाशन एवं वाचन की सूची

## प्रकाशित शोधपत्र

1. टोंक जिले में स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण में क्षैत्रीय असमानताऐं– देवली तहसील का अध्ययन (*041 Shodhshree / January-March 2016 ISSN 2277-5587*)

## टोंक जिले में स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण में क्षेत्रीय असमानताऐं-देवली तहसील का अध्ययन

**डॉ सन्दीप यादव**
व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय बून्दी

**निकिता मंगल**
शोध छात्रा, राजकीय महाविद्यालय बून्दी

shodhshree@gmail.com

हमारे पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने नई स्वास्थ्य नीति अवलोकन करते हुये टिप्पणी की थी कि देश का विकास लोगों की कार्य क्षमता पर निर्भर करता है जिसके लिये स्वास्थ्य एक प्राथमिक आवश्यकता है। एक स्वस्थ आदमी ही अपने कार्य का ठीक तरीके से निष्पादन करेगा। अत: स्वास्थ्य सेवाओं को ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में एक उचित दूरी पर स्थापित करना हमारी विकास परियोजनाओं का हिस्सा बन गया है। पर हम देखते हैं कि हमारी अधिकतर जनसंख्या अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और इन सुविधओं से वंचित हैं। इसी कारण से हमने देवली तहसील में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का अध्ययन किया है।

### उद्देश्य

- तहसील में उपलब्ध विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं के वितरण का अध्ययन करना।
- तहसील में ठीक ढंग से सेवा प्रदत व अन्तरक्षेत्रों को सीमांकित करना।
- तहसील में अन्तरक्षेत्रों को सेवा प्रदान कराने के लिये योजना प्रस्तुत करना।

### विधि तन्त्र

यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों जो कि टोंक जिला जनगणना हैण्डबुक 2011 व सी.एम.एच.ओ. कार्यालय से प्राप्त सूचना पर आधारित है। इस अध्ययन में सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं की लोगों से पहुँच व दूरी के सम्बन्ध में कुछ मान्यताओं को आधार माना है। इस अध्ययन में यह माना कि बिना शैया वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र 3 कि.मी तक के अर्द्धव्यास के क्षेत्र को सेवायें दे सकता है क्योंकि यहाँ एक प्रशिक्षित चिकित्सक व कम्पाउन्डर पद स्थापित होते हैं जो सामान्य बीमारियों में इलाज कर सकने में सक्षम होते हैं। इसी तरह 4 से 6 शैया वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र 5 कि.मी. के अर्द्धव्यास के क्षेत्र को सेवायें दे सकता है क्योंकि इनमें सुविधायें अधिक होने से लोगों का इलाज व बचाव दोनों कार्य हो सकते हैं। एक अस्पताल जिसमे 20 शैया या अधिक हो, 10 कि.मी. अर्द्धव्यास के क्षेत्र को अपनी सेवायें दे सकता है। इसी मान्यता के आधार पर ऐसे केन्द्रों से 3,5 व 10 कि.मी. अर्द्धव्यास के गोले खींचे गये। बाद में इन्हें गाँव की सीमा के अनुसार समायोजित किया गया। गाँव जो गोले के अन्दर पड़े उन्हें ठीक ढंग से सेवा प्रदत्त व जो परिधि के बाहर रहे उन्हें सेवा के अन्तरक्षेत्र माना।

### अध्ययन क्षेत्र

देवली तहसील टोंक जिले के दक्षिणी छोर पर 25°44' उत्तरी अक्षांश से 25°58' उत्तरी अक्षांश तथा 75°10' पूर्वी देशान्तर से 75°52' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। अध्ययन क्षेत्र की दक्षिणी सीमा पर जहाजपुर तहसील स्थित है। तहसील के पश्चिमी में केकड़ी तहसील अपनी सीमा बनाती है। उत्तर में टोडारायसिंह, उनियारा व टोंक तहसीलों की सीमा अध्ययन क्षेत्र को स्पर्श करती है। पूर्व में हिन्डोली तहसील अपनी सीमा बनाती है। तहसील 1228.35 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 214408 है।

मानचित्र - 1

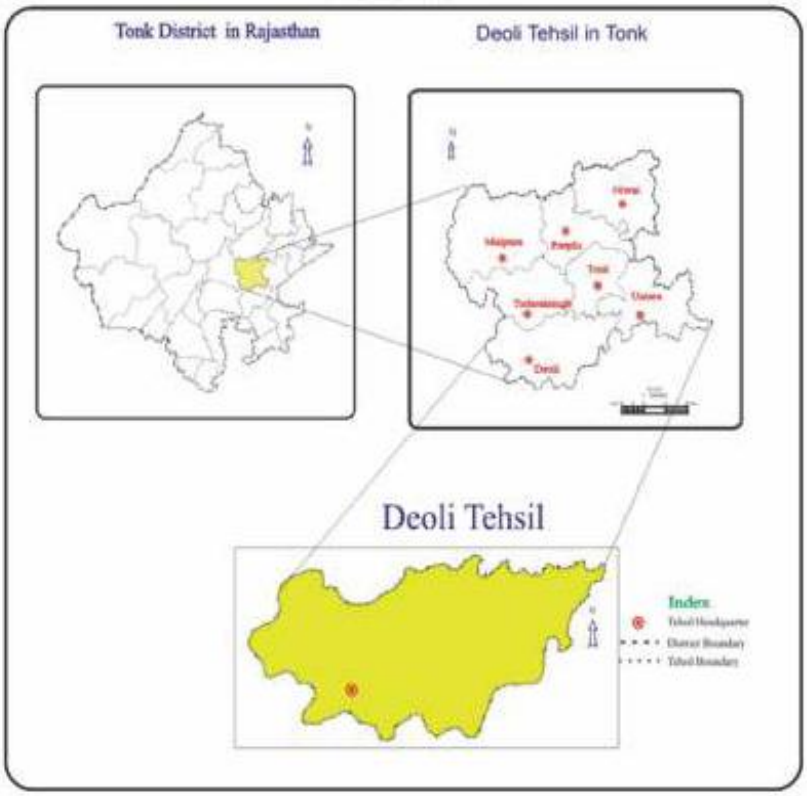


वितरण प्रारुप-

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा घोषित 'स्वास्थ्य सबके लिये सन 2000 तक' की नीति के अनुरुप ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाएं योजनाबद्ध रूप से उपलब्ध करवाने के लिये निम्न मानदण्ड निर्धारित किये गये हैं-

- प्रति 3000 जनजाति जनसंख्या या 5000 अन्य जनसंख्या के लिये एक उप केन्द्र।
- प्रति 20000 जनजाति जनसंख्या या 30000 अन्य जनसंख्या के लिये एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र।
- प्रति 100000 जनसंख्या के लिये एक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र।

स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण अपने आप में विभिन्न विविधतायें लिये हुये है, जहाँ शहरों में ये व्यवस्थित हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में काफी पिछड़ा हुआ है। मानचित्र-2 से स्पष्ट है कि इनका वितरण असमान है। देवली तहसील में 53 प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र हैं, 6 शैया वाले 11 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 10 से 50 शैया वाले 7 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र और 3 अस्पताल हैं जिसमे 200 शैया हैं। ये स्वास्थ्य केन्द्र लगभग 2.14 लाख जनसंख्या को सेवा प्रदान कर रहे हैं।

मानचित्र-2 से स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि देवली तहसील में स्वास्थ्य सुविधाओं की असमानता है। तहसील स्तर पर असमानतायें दर्शाने के लिये कम्पोजिट सेन्ट्रेलिटी मूल्य निम्न सूत्र से निकाले गये हैं।

$$CCV = \frac{10000*C}{TP}$$

यहाँ, CCV = कम्पोजिट सेन्ट्रेलिटी मूल्य

C = सेन्ट्रेलिटी मूल्य

TP = तहसील की कुल जनसंख्या

सेन्ट्रेलिटी मूल्य विभिन्न इकाइयों को भार दे कर भट्ट (1976) के निम्न सूत्र से ज्ञात किया है।

$$C = \frac{N}{Fi}$$

यहाँ, C = सेन्ट्रेलिटी मूल्य

N = गाँवों की कुल संख्या

Fi = अधिवास जहाँ सुविधा है

सारणी 1

जिला टोंक : स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण

| तहसील | जनसंख्या | गावों की संख्या | प्रा.स्व. उप केन्द्र C = 4.05 | प्रा.स्व. केन्द C = 15.67z | सा.स्व. केन्द्र C = 74.44 | अस्पताल C = 99.25 | C | CCV |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मालपुरा | 240909 | 161 | 38 | 11 | 4 | 1 | 723.32 | 30.02 |
| पीपलू | 117644 | 126 | 38 | 14 | 3 | 0 | 596.65 | 50.72 |
| निवाई | 245787 | 211 | 45 | 10 | 2 | 3 | 785.63 | 31.96 |
| टोंक | 286806 | 133 | 45 | 18 | 0 | 2 | 662.87 | 23.11 |
| टोडारायसिंह | 146870 | 149 | 44 | 7 | 0 | 1 | 387.19 | 23.36 |
| देवली | 214408 | 187 | 53 | 11 | 7 | 3 | 1205.9 | 56.24 |
| उनियारा | 168900 | 224 | 31 | 5 | 0 | 2 | 402.44 | 23.83 |
| योग | 1421326 | 1191 | 294 | 76 | 16 | 12 | 4764 | 33.52 |

उपरोक्त सूत्र के आधार पर प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र का सेन्ट्रेलिटी मूल्य 4.05, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का 15.67, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का 74.44 व अस्पताल का 99.25 है। इससे सभी तहसीलों का सेन्ट्रेलिटी मूल्य निकाला गया साथ ही सबका CCV भी ज्ञात किया गया है। सारणी दर्शाती है कि सबसे अधिक CCV (56.24) देवली तहसील का है, उससे कम पीपलू (50.72) सबसे कम CCV (23.11) टोंक तहसील का है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 7 तहसीलों में से 2 का CCV जिले के CCV से अधिक है। CCV की यह तस्वीर स्पष्ट करती है कि स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण जनसंख्या के अनुरुप नहीं है। जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं का संतुलित वितरण देखने को नहीं मिलता क्योंकि वर्तमान नीतियां सम्पर्क आधारित हैं। अत: इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि हम स्थानिक असंतुलन को दूर करने के लिये जिले के CCV से कम CCV वाली तहसीलों पर विशेष ध्यान दें।

मानचित्र-2

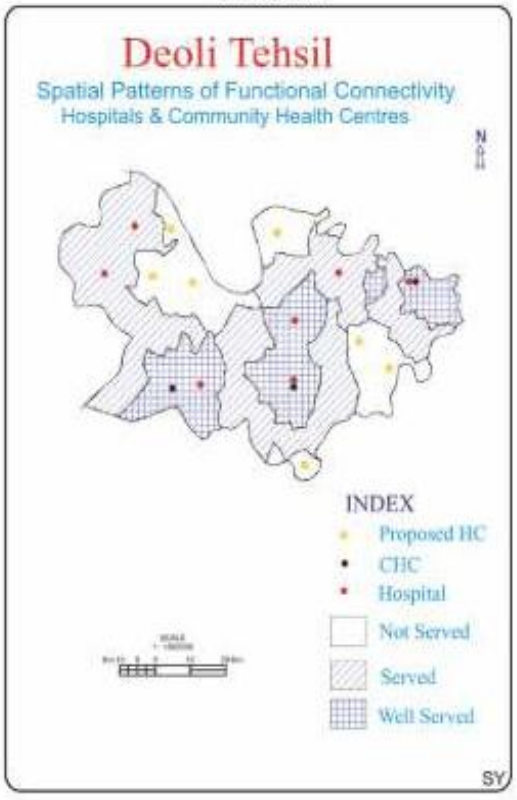

**प्रस्ताव**

देवली तहसील का CCV सर्वाधिक है लेकिन स्वास्थ्य सुविधाओं का संतुलित वितरण नहीं है और अन्तरक्षेत्र देखने को मिलते है। अन्तरक्षेत्र के आधार पर हम इन्हें सुविधा प्रदान करने के लिये निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

पूरे अध्ययन क्षेत्र में केवल 11 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र 2.14 लाख जनसंख्या को सेवा दे रहे हैं। हमें अन्तरक्षेत्र में कम से कम 7 स्थानों पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करने होंगे। ऐसे केन्द्र मानचित्र पर दर्शाये गये हैं।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के स्थानीयकरण में दो बातों का ध्यान रखा गया है-

- जिन स्थानों पर ये केन्द्र प्रस्तावित हैं, वो एवं उसके समीपस्थ क्षेत्र में पर्याप्त जनसंख्या हो।
- प्रस्तावित केन्द्र लोगों की पहुँच में होने चाहिए अर्थात् 3 से 5 कि.मी. की परीधि में हों।

सर्वेक्षण के दौरान यह देखा गया कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सकों का अभाव है। अधिकांश केन्द्रों पर चिकित्सकों के पद रिक्त चल रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला चिकित्सक भी नहीं के बराबर हैं व ग्रामीणों को ए.एन.एम पर निर्भर रहना पड़ता है। अत: महिला चिकित्सकों की नियुक्ति प्रत्येक बड़े प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर होनी चाहिए।

स्वास्थ्य सुविधाओं के संतुलित वितरण से सम्पूर्ण क्षेत्र में खुशहाली व स्वस्थ्य जीवन जीने में मदद मिलेगी व क्षेत्र के समग्र विकास में आसानी होगी।

***संदर्भ ग्रन्थ सूची***


1. *District census handbook, Tonk, 2011*
2. *PMO Office, Tonk*
3. *जिला सांख्यिकीय रुपरेखा, 2001, 2009*
4. *District census handbook, Village release 0800*

# 2. Regional Planning in Rajasthan: A Micro Level Study of Deoli Tehsil (*144 Shodhshree / October-December 2017 ISSN 2277-5587*)

## Regional Planning in Rajasthan: A Micro Level Study of Deoli Tehsil

**Dr. Sandeep Yadav**
Lecturer, Government College, Bundi

**Nikita Mangal**
Research Scholar, Government College, Bundi

***Abstract***

*The present study is an attempt to analyse the socio economic development of Deoli Tehsil of Tonk district of Rajasthan. An in-depth study and detailed analysis of existing pattern of physical, cultural environment and local rural resources has been undertaken to seek a balanced and speedy development for the Deoli Tehsil through optimum utilization of available resources. Attainment of aforesaid purpose is attempted by identification of existing urban hierarchy, network linkages, service centres and by proposing new ones which can fill in the functional gaps and have the potential of becoming the nuclei for future development.*

***Keywords:*** *Centrality, Hierarchy, Weightage, service center*

Today every nation of the world, whatever its political social and economic system, favours a policy of balanced economic, social political and regional development. Planning and development as it exists today at micro level in the Indian context, does not seem to have any specific or special consideration, it operates within the mainstream of national and state planning principles, without a proper analysis of the problems, prospects, potentialities and requirements of the people and the economy concern of the sub region. The present study is an effort to find out effective solution of different problems under micro level planning plan.

**Objectives of the study**

The present research work aims to seek the balanced development of the relatively smaller area such as the Deoli tehsil. This aim can be achieved by sound micro regional planning of the Deoli tehsil by using following objectives;

- To test the value for each central function.
- Present study attempts to find the existing transport linkage in different production and market centres.
- To find out the existing potential of economic opportunities and to provide encouragement to possible industries which depend directly or indirectly on agriculture so that avenues for employment may be opened in the tehsil.
- To find the gaps and problems in sectoral and spatial regions.

## Methodology

In the present study different methods have been employed from sister disciplines such as economics, statistics and other sciences. It is based on field survey. The information was later analysed by various quantitative methods.

## The Study Area

Deoli tehsil predominantly lies in the Southern portion of Tonk district. The study area extends from 25° 44'N to 25° 58' N Latitudes and from 75° 10' E to 75° 52' E Longitudes. It is bounded in the North by Todaraisingh tehsil in the East by Hindoli tehsil and in the West by Kekri tehsil and Jahazpur tehsils in the South.

Deoli tehsil has a total area of 1228.35 sq.km. with a population of 214408 persons. The tehsil has its headquarters at Deoli. There are 186 villages and one urban centre in the tehsil. Out of the 186 villages only 169 are inhabited.

## The Concept of Central Functions

Central functions are those which by their nature are available in a few settlements but are availed of by a number of settlements. The central place theory, therefore, has classified central functions as higher and lower order functions. According to detailed observation of the study area, we have considered here those functions which have influenced the social and economic status of people such as education, medical, postal, marketing, banking and other aspects of their day to day life have been chosen as shown in Table 1.

**Table 1**

**Population size of settlements with their functional distribution**

| Pop. Size | No. of Settl. | Pr.Sc | Upp Pri Sch. | High Sch. | H.Sc Sch. | Health Cent | Disp. | Hosp. | Ferti. | Ration | Bank | Who Mark | Vete. | Bus serv. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0-199 | 16 | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | 1 |
| 200-499 | 45 | 24 | 2 | - | - | - | - | - | 1 | 1 | - | - | - | 2 |
| 500-1999 | 88 | 90 | 38 | 16 | 2 | - | - | - | 19 | 46 | - | - | 1 | 38 |
| 2000-4999 | 13 | 18 | 14 | 12 | 6 | 2 | 5 | - | 12 | 13 | 7 | 13 | 2 | 9 |
| 5000-above | 8 | 33 | 17 | 11 | 9 | 5 | 8 | 3 | 8 | 8 | 8 | 8 | 7 | 8 |
| Total | 170 | 141 | 69 | 39 | 17 | 7 | 13 | 3 | 40 | 68 | 15 | 21 | 10 | 58 |

## Clustering of Central Functions and Sub-Functions

Clustering of functions is directly influenced by the population of the centres. Therefore, the settlements have been categorized according to their population size in the table 2.

Total number of functions considered here are

1.Education, 2.Medical, 3.Drinking water, 4.Electricity, 5.Public Distribution System 6.RestHouses,7.Banking,8.Entertainment,9.Telecommunications,10.Cooperatives, 11.Administrative,12. Fertilizer,13. Veterinary, 14. Transportations and 15.Market.

| Size of Settlements (Population) | Total No. of Settlements | Total No. of functions available in individual settlements | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Nil | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 0-199 | 16 | 1 | 14 | 1 | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - |
| 200-499 | 45 | - | 2 | 21 | 19 | 2 | - | - | 1 | - | - | - | - | - | - | - | - |
| 500-1999 | 88 | - | - | - | - | 8 | 21 | 22 | 10 | 6 | 6 | 8 | 5 | 2 | - | - | - |
| 2000-4999 | 13 | - | - | - | - | - | - | - | 1 | - | 1 | 1 | 2 | 4 | 2 | 2 | - |
| 5000-above | 8 | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | 4 | 4 |
| Total | 170 | 1 | 16 | 22 | 19 | 10 | 21 | 22 | 12 | 6 | 7 | 9 | 7 | 6 | 2 | 6 | 4 |

The following observation can be made here

(a) Higher functions and sub-functions like education up to higher secondary, hospitals, post office, banks, veterinary hospitals, entertainment institutions and police facility are found in those settlements with population above 2000 persons. It is a remarkable point to note that there is a wide gap in the distribution of functions on the basis of population size of settlements. There are few settlements with population 500-1999 having any of the above facilities.

(b) Settlements below 500 populations are lacking in the functions and services. Some of these settlements are decorated with a telegraph, electricity, bus services.

(c) Settlements between 500-1999 population sizes are decorated further with education, primary health sub center, internet café, bus services, veterinary services, drinking water, electricity public distribution system and panchayat centres.

**Functional Hierarchy**

The term settlement hierarchy denotes a ranking of settlements into successive groups on the basis of their population or functions. In the present study central places, hierarchy and their classification have been determined on the basis of central functions. In this exercise the weights to different sub-functions are assigned according to their distribution among all the settlements, on the basis of the principle, the fewer the settlements having a particular function the greater importance in terms of centrality and therefore higher the weightage. The weightage of functions/sub functions has been determined on the basis of Bhat's formula i.e. $Wi = \frac{N}{Fi}$ *Where*

Wi = Weightage to the ith sub-function.

Fi = Number of settlements haying the function/sub function

N = Total number of settlements.

**Table 3.**
**Weight scores for the Variables**

| S.No | Functions & sub functions | No. of settlements where they occur | Weightage |
|---|---|---|---|
| 1. | Educational | | |
| | i) Primary school | 108 | 1.5 |
| | ii) Middle school | 56 | 3.03 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | iii) High school | 36 | 4.7 |
| | iv) Higher secondary school | 14 | 12.1 |
| | v) College | 3 | 56.6 |
| 2. | Medical | | |
| | i) Health centers | 7 | 24.2 |
| | ii) Primary Health center | 11 | 15.4 |
| | iii) Medical dispensary | 13 | 13.07 |
| | iv) Medical hospitals | 3 | 56.6 |
| 3. | Veterinary hospitals | 9 | 18.8 |
| 4. | Public utility services | | |
| | i) Drinking water | 35 | 4.8 |
| | ii) Electricity | 163 | 1.04 |
| | iii.) Ration shops | 68 | 2.5 |
| | iv) Lodging facility | 7 | 24.2 |
| 5. | Banking | 15 | 11.3 |
| 6. | Entertainment | | |
| | i.) Dish antennas | 52 | 3.2 |
| | ii) Cinema houses | 9 | 18.8 |
| | iii) Library | 8 | 21.2 |
| 7. | Fertilizer and seed shop | 40 | 4.2 |
| 8. | Administration | | |
| | (a) Tehsil headquarter | 1 | 170 |
| | (b) Panchayat headquarter | 39 | 4.3 |
| 9. | Markets | | |
| | i) Retail markets | 154 | 1.1 |
| | ii) Wholesale markets | 21 | 8.09 |
| 10. | Transportations | 58 | 2.9 |
| 11. | Communications | | |
| | i) Post offices | 5 | 34 |
| | ii) Couriers | 5 | 34 |

**Determination of Centrality**

The centrality of settlements has been calculated with the help of the following formula.

$$C_j = \sum_{i=1}^{k} a_i x_{ij}$$

Where, Cj = Composite value for that function for jth settlement.

k= total number of sub functions under a given function.

Wi = Weightage to the ith sub function.

Xij= Value of ith sub function in jth settlement

**HierarchicalOrder**

After having calculated the centrality of all the settlements, they are plotted on a double log graph because as the settlements vary in population size from 16 (Narsinghpura) to 22065 (Deoli town) and centrality vary from 1.0 (Thali etc.) to 1050.72 (Deoli town).

**Functional Centrality and Population Size**

The centrality score and population size have a positive high correlation (r =0.94) in the study area which has been worked out with the help of Karl Pearson's method. The area under study has 170 inhabited settlements including one urban settlement. These settlements have been categorized into five groups on the basis of functional gaps of double log graph. The following table shows the number of settlements with their levels according to their centrality score.

**Table 4.**
Number of settlement according to Hierarchical Order

| Hierarchical level | Centrality score | No.of settlements | Percent of total |
|---|---|---|---|
| I | More than 500 | 2 | 1.18 |
| II | 200-500 | 7 | 4.11 |
| III | 50-200 | 14 | 8.23 |
| IV | 25-50 | 22 | 12.94 |
| V | Less than 25 | 125 | 73.54 |
| Total | | 170 | 100.00 |

It is evident from table 4 that with the increase in the order of hierarchy, the number of settlements shows decline in number. The maximum number of settlements comes in the fifth category, which includes 125 settlements. Most of these settlements have either of any one or two functions. The fourth category is formed by large villages, which by virtue of central location in their respective regions have become important service centres. The third category of hierarchy includes only 14 settlements. The second hierarchical level includes seven settlements. The first category of hierarchy includes only two settlements i.e., Deoli town and Dooni with 1050.72 and 543.46 centrality scores respectively.

**Final ranking and Hierarchy of Settlements on the basis of Composite Indices**

The final hierarchy of settlements has been determined on the basis of composite centrality of the settlements of the Deoli tehsil. The composite centrality is calculated by adding the centrality values of functions and occupation.

This study reveals that the hierarchy of settlements on above basis has lead to confusing

conclusions. Small size settlements, based on population hierarchy do not give the correct level. It is because most of the non-primary workers, employed in a large central place, come daily from the near by villages. So hierarchy based on population is not so much helpful in making the plan for regional development. The hierarchy of settlements based on functions obtained from direct sources gives a right level of hierarchy and the results derived from this functional data are therefore useful for the regional planning and development.

**Areas of Functional Deficiency**

For simplification of study the functions have been divided into 3 groups according to accessibility the higher services (radius 8km), medium services (radius 5km) and lower services (radius 3km).

**Deficiency areas of higher Services**

The study reveals that only the areas around major centres are of functional adequacy while other parts of the tehsil form the deficiency areas. This is due to concentration of major services at regional centres viz. Deoli town and Dooni. All these centres are situated along the metalled road.

**Deficiency Areas of Medium Services**

It is clear from the study that deficient areas are more in comparison to the areas of adequate services in Deoli tehsil. It means that the spatial distribution of such services is highly unbalanced which has revealed the maximum deficient areas.

**Proposals for Spatio Functional Planning**

Functional hierarchy of service centres in the tehsil consists of five orders (Map1). After a careful examination of functions, we find that few of the areas are highly developed whereas others are less developed. It has been decided that the service centres should be distributed according to the various orders, their serving capacity and served area. The table 5. shows the average spacing, proposed, existing and required number of service centres according to their hierarchical order. The Deoli tehsil will have 56 proposed service centres to fill up the areas of functional gaps, on the basis of above considerations. Out of these 14 centres are existing centres. So 42 new centres will be required (Map2).

map-1

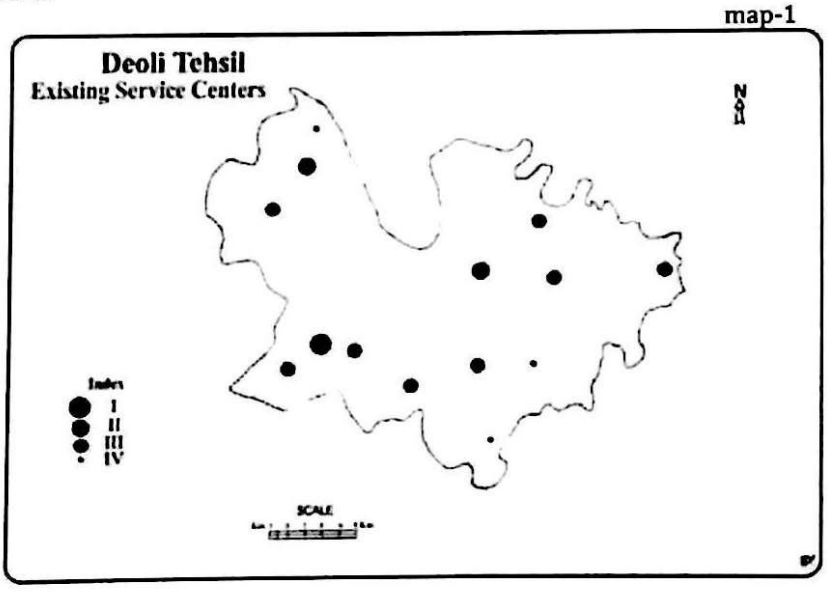

map-1

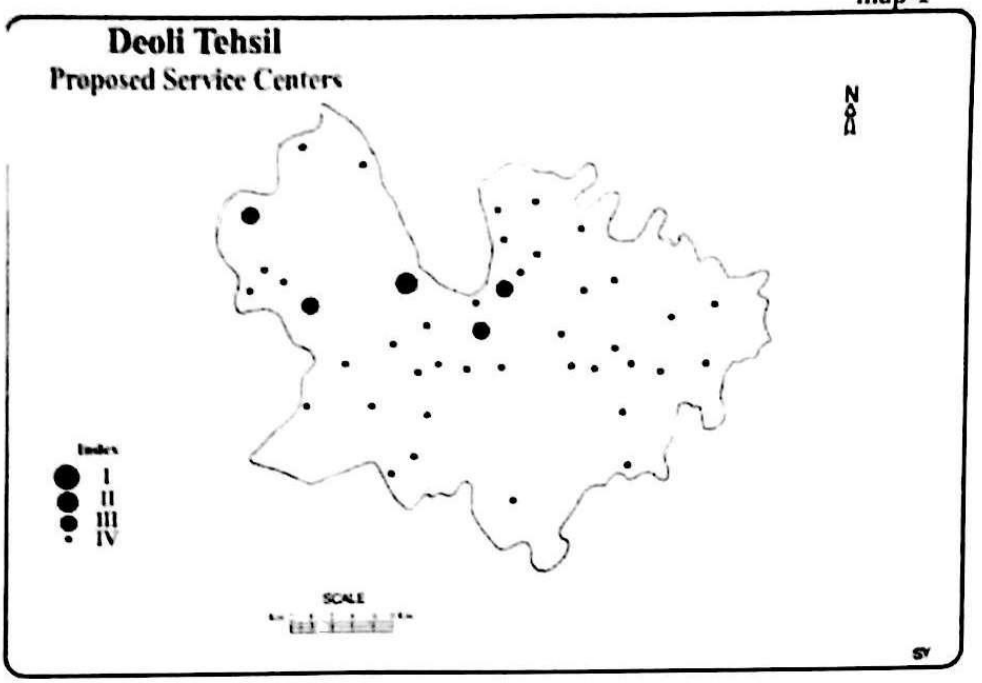


**Table5**
**Proposed, Existing and Required Number of Service centres**

| Hierarchical Order | Centres | Proposed Centres | Existing Centres |
|---|---|---|---|
| I | Regional capital | 1 | 1 |
| II | Reg. service centres | 3 | 2 |
| III | Service centres | 12 | 8 |
| IV | Central villages | 40 | 3 |
| V | Dependent villages | 114 | 156 |

**Conclusion**

The existence of settlement hierarchy and distribution of service centres in any region depends to a large extent upon physical, economic and cultural factors. We find that in the region under study, physical and socio-economic constraints have suppressed economic development. The region is backward in all respects. Agriculture, being the main occupation and base of economy, needs special plans for development in terms of more land for cultivation and increase in inputs like hybrid seeds, fertilisers, irrigation and mechanization.

Agro based industries can form the basis of

industrial development. Special attention needs to be paid to provision of better social and infrastructure services like education, health, drinking water, electricity and entertainment. All this would be possible only when transport network is enhanced and improved. To conclude all the above steps would be fruitful and optimum results of balanced development of a micro region like Deoli would be attained only by a planned and balanced distribution of rural and urban settlements and provision of adequate organisational facilities.

***References***


1. *Animal Census, 1986, Revenue Board Ajmer.*
2. *Basu, S.C. 'Intensive Rural Development in Selected Areas', Yojana (1 March 1973)*
3. *Bhat, L.S. 'Micro Level Planning: A case study of Karnal Area' India 1976.*
4. *Budhraja, J.C. 'Micro Level Development Planning' (Rural Growth Centre Strategy) Common wealth publishers, Delhi, 1987.*
5. *Berry, BJL & WL Garrison - 'The functional Bases of Central Place Hierarchy, Economic Geography, 34, 1953, PP 145-154*
6. *Bracey, H.E., "Towns as Rural service Centre", Trans. Institute of British Geographers, 19, 1953, PP 95-105*
7. *District Gazetteer, Tonk 1971.*
8. *District Census, Tonk, 2011*
9. *Mishra, H.N., - Contributions to Indian Geography*
10. *Mandal, R.B., Sinha, VN.P. - Recent Trends & Concepts in Geog Vol. III Concept Publishing Company New Delhi.*
11. *Negi, D.S. 'Functional Analysis and Hierarchy of service centres in District Bijnor' an unpublished Ph.D. Thesis, Meerut, 1974.*

## प्रस्तुत शोधपत्र

**1. Regional Disparites in the Distribution of Medical Facilities- A Case Study of Deoli Tehsil** (43rd R.G.A. National Conference, Ajmer)

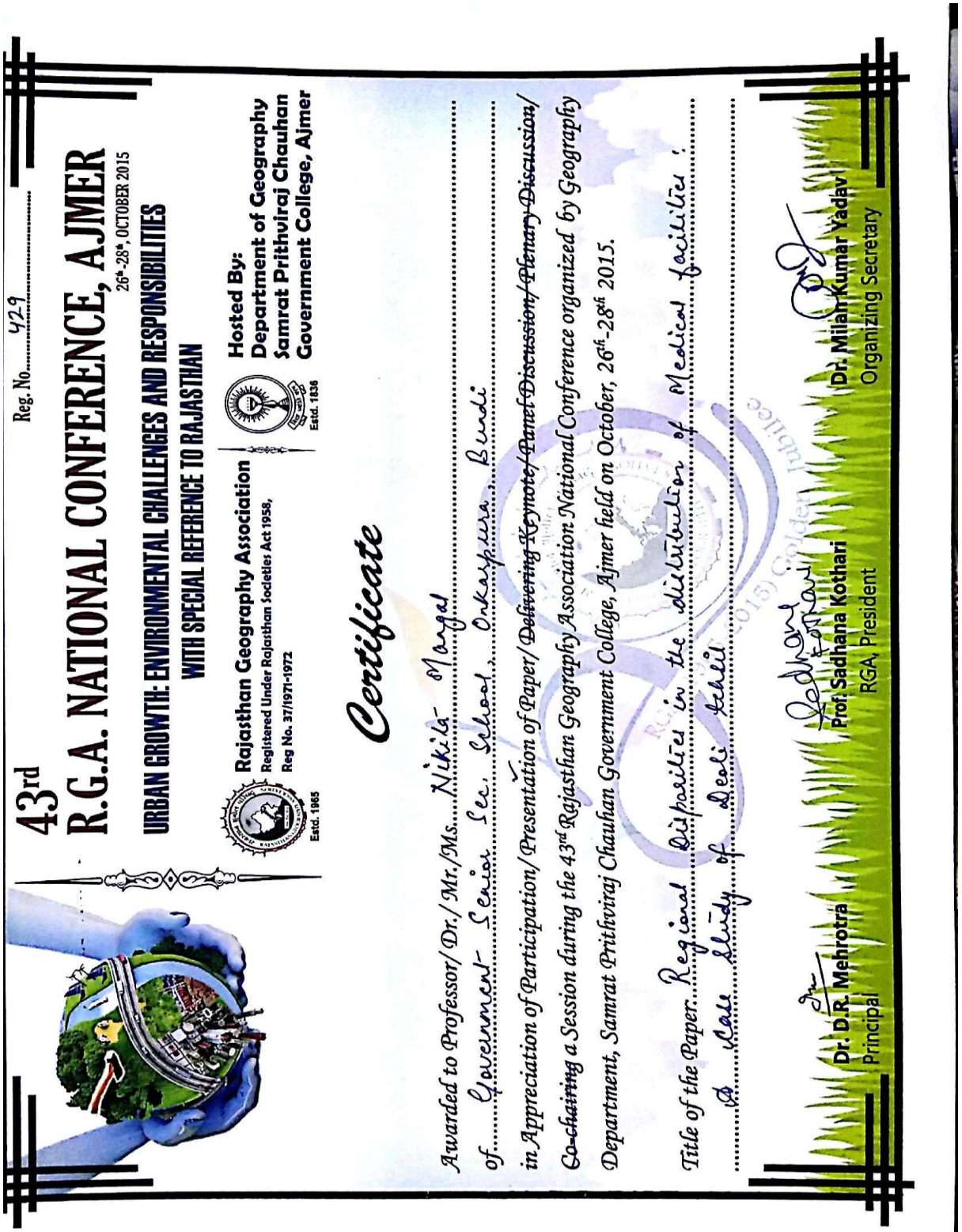

**2. National Seminar on Biodiversity, Human Rights and Sustainable Development** (S.R.K. Patni Govt. P.G. College, Kishangarh, Ajmer)